कर्मकाण्ड प्रदीप

संकलन-सम्पादन
ब्रह्मवर्चस
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

हे परमात्मा ! हम सबको सद्‌बुद्धि दें,
उज्ज्वल भविष्य के मार्ग पर आगे बढ़ायें ।

लघु सर्वतो भद्र

तत्त्व वेदी

विषय सूची

7 संस्करण के सन्दर्भ में

11 सङ्केत-विवरण

14 प्रारम्भिक यज्ञीय कर्मकाण्ड

122 गायत्री माता की आरती

125 यज्ञ महिमा

128 युग निर्माण सत्संकल्प

137 शक्तिपीठ दैनिक पूजा

149 विशिष्ट कलश-पूजन

158 सर्वतोभद्र वेदिका पूजन

186 पुरुष सूक्त

- त्रिदेव पूजन
- पञ्चवेदी पूजन
- पञ्चभू संस्कार
- कुशकण्डिका
- मेखला पूजन

221 पञ्चामृतकरण

232 दसविध स्नान

245 स्फुट प्रकरण
अभिषेक, आशीर्वचन
260 भूमि पूजन प्रकरण
276 गृह प्रवेश- वास्तु शान्ति प्रयोग
282 प्राण प्रतिष्ठा प्रकरण
295 विश्वकर्मा पूजन
302 एकादशी उद्यापन
307 वाहन-उद्योग-कारखाना पूजन
309 गोदान संकल्प (गो पूजन विधि)
314 रस्म पगड़ी
319 मूल शान्ति
345 पुंसवन संस्कार
357 नामकरण संस्कार
373 अन्नप्राशन संस्कार
381 मुण्डन संस्कार
396 विद्यारम्भ संस्कार
407 यज्ञोपवीत-दीक्षा संस्कार
457 विवाह संस्कार
521 वानप्रस्थ संस्कार

548 जन्मदिवस संस्कार
562 विवाहदिवस संस्कार
576 आशौच (सूतक) विचार
607 जीवित श्राद्ध विधान
693 मातृषोडशी
701 दीपयज्ञ- युगयज्ञ विधान
707 नवग्रह स्तोत्र
712 गायत्री मन्त्र के 24 देवता
718 वेद एवं देव स्थापना
721 विशेष आहुतिः
723 लोकप्रिय मन्त्र
735 शिवाभिषेकः
- आरती शिव जी की
- शिव स्तुति

संस्करण के सन्दर्भ में

युग निर्माण योजना (मिशन) की पहुँच प्रबुद्ध वर्ग से लेकर सुदूर ग्रामाञ्चल के जन-सामान्य तक है, सामान्य लोगों को यज्ञीय मन्त्रों का भावार्थ समझने में असुविधा होने से परिजनों की ओर से बार-बार भावार्थ सहित पुस्तक प्रकाशित करने की माँग आ रही थी। अतः अपने आत्मीय परिजनों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, युगद्रष्टा पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं परम वन्दनीया स्नेहसलिला माता भगवती देवी शर्मा जी के सूक्ष्म संरक्षण में उन्हीं की प्रेरणा से 'कर्मकाण्ड प्रदीप' भावार्थ सहित प्रकाशित की जा रही है। प्रस्तुत संस्करण में उन सभी कर्मकाण्डों को शामिल किया गया है, जिनकी परिजनों

को प्रायः जरूरत पड़ती है। जैसे-गृह प्रवेश, विवाह से पूर्व तिलक, वरीक्षा, हरिद्रा-लेपन, द्वार पूजा, विश्वकर्मा पूजा, मूलशान्ति, एकादशी उद्यापन, वाहन पूजन, गोदान, रस्म पगड़ी, आशौच विचार (सूतक आशौच की अवधि कितनी हो इस सम्बन्ध में बहुत से मत-मतान्तर मान्यताएँ हैं। महामना डॉ. पी.वी.काणे ने 'धर्मशास्त्र का इतिहास' के तीसरे खण्ड में आशौच, आशुच्य पर विभिन्न धर्म ग्रन्थों के उद्धरणों के साथ विस्तृत विवेचना की है, उसमें से कुछ आवश्यक समझा जाने वाला सामयिक समाधान भी इस पुस्तक में दिया गया है) आदि के सहित जीवितश्राद्ध, मातृशोडषी, दीपयज्ञ, संस्कार सूत्र पद्धति एवं शिवाभिषेक को भी शामिल किया गया है। प्रत्येक कर्मकाण्ड से सम्बन्धित मन्त्रों के पूर्व

क्रमशः क्रिया निर्देश एवं भाव संयोग के सूत्रों के संकेत भी दिए गए हैं, उन्हें जान-समझकर अपने एवं समय-वातावरण के अनुरूप सन्तुलन बना लेना चाहिए।

आशा है, यह संस्करण सभी सुधीजनों, खासकर अपने परिजनों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा। कर्मकाण्डों का विस्तृत स्वरूप समझने के लिए शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित 'कर्मकाण्ड भास्कर' का सहारा भी लिया जा सकता है। कर्मकाण्ड कैसे प्रभावशाली बनायें, किन-किन तथ्यों का ध्यान रखें, आदि। महत्त्वपूर्ण सूत्र संक्षेप में स्पष्ट रूप से प्रत्येक कर्मकाण्ड के शुरू में ही दिए गए हैं। इन्हें मात्र पढ़ना ही पर्याप्त नहीं; वरन् जितना हृदयंगम किया जा सके, अनुभूतिगम्य बनाया जा सके, उतना ही

प्रभावशाली एवं सजीव वातावरण उपस्थित किया जा सकेगा।

-प्रकाशक

भाद्रपद पूर्णिमा, संवत् 2072

सङ्केत-विवरण

अथर्व.	अथर्ववेद
आ.गृ.सू.	आश्वलायन-गृह्य सूत्र
आ.हृ.स्तो.	आदित्य हृदय स्तोत्र
ईश.	ईशावास्योपनिषद्
ऋ.	ऋग्वेद
ऐत.बा.	ऐतरेय ब्राह्मण
का.श्रौ.सू.	कात्यायन-श्रौत सूत्र
कृ.गा.	कृष्ण गायत्री
गा.गी.	गायत्री गीता
गा.पु.प.	गायत्री पुरश्चरण-पद्धति
गु.गी.	गुरु गीता
गो.गृ.सू.	गोभिल गृह्यसूत्र
जै.सू.	जैमिनीय सूत्र
तै.आ.	तैत्तिरीय आरण्यक
तैत्ति.सं.	तैत्तिरीय संहिता
दु.गा.	दुर्गा गायत्री
दे.भा.	देवी भागवत

नृ.गा.	नृसिंह गायत्री
पा.गृ.सू.	पारस्कर गृह्य सूत्र
प्र.म.	प्रतिष्ठा महोदधि
बृह.उ.	बृहदारण्यक उपनिषद्
ब्र.गा.	ब्रह्मा गायत्री
ब्र.पु.	ब्रह्म पुराण
मं.ब्रा.	मन्त्र ब्राह्मण
मा.गृ.सू.	मानव गृह्य सूत्र
मा.पु.	मार्कण्डेय पुराण
य.गा.	यम गायत्री
रा.गा.	राम गायत्री
रा.च.मा.	राम चरित मानस
रा.रह.	राम रहस्योपनिषद्
रु.गा.	रुद्र गायत्री
ल.गा.	लक्ष्मी गायत्री
लौगा.स्मृ.	लौगाक्षि स्मृति
व.गा.	वरुण गायत्री
वा.पु.	वामन पुराण
वि.गा.	विष्णु गायत्री

श्री.	श्री सूक्त
सं.प्र.	सन्ध्या प्रयोग
सी.गा.	सीता गायत्री
हं.गा.	हंस गायत्री
ह.गा.	हनुमान् गायत्री

नोट-

1 जिन मन्त्रों के नीचे केवल अङ्क लिखे हैं, वे यजुर्वेद के हैं।

2 यज्ञ सञ्चालन के समय की जाने वाली संक्षिप्त व्याख्या हेतु मन्त्र के ठीक ऊपर वाले अनुच्छेद (पैराग्राफ) को प्रयोग में ला सकते हैं।

परिजन प्रायः पूछते हैं- दम्पति को कहाँ कैसे बैठायें? विभिन्न धर्मग्रन्थों में जो उल्लेख है, वह यहाँ दे रहे हैं-

व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थ्यां सहभोजने।
व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे।
सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा।
अभिषेके विप्रपादप्रक्षालने चैव वामतः।
अपि च-संस्कार्यः पुरुषो वाऽपि स्त्री वा दक्षिणतः सदा।
संस्कारकर्ता सर्वत्र तिष्ठेदुत्तरतः सदा॥

-धर्मसिन्धु-3/516

कर्मकाण्ड की व्यवस्था बनाकर, जाँचकर जब कर्मकाण्ड प्रारम्भ करना हो, तो सञ्चालक को सावधान होकर वातावरण को अनुकूल बनाना चाहिए। कुछ जयघोष बोलकर शान्त रहने की अपील करके कार्य प्रारम्भ किया

जाए। सञ्चालक-आचार्य का काम करने वाले स्वयंसेवक को नीचे दिये गये अनुशासन के साथ कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

1 **व्यासपीठ नमन**

2 **गुरुवन्दना**

3 **सरस्वती वन्दना**

4 **व्यास वन्दना**

ये चारों कृत्य कर्मकाण्ड के पूर्व के हैं। यजमान के लिए नहीं, सञ्चालक-आचार्य के लिए हैं। कर्मकाण्ड ऋषियों, मनीषियों द्वारा विकसित ज्ञान-विज्ञान से समन्वित अद्‍भुत कृत्य हैं, उस परम्परा का निर्वाह हमसे हो सके, इसलिए उस स्थान को तथा अपने आपको संस्कारित करने, उस दिव्य प्रवाह का माध्यम बनने की पात्रता पाने के लिए ये कृत्य किये जाते हैं।

व्यासपीठ नमन-

व्यासपीठ पर-सञ्चालक के आसन पर बैठने के पूर्व उसे श्रद्धापूर्वक नमन करें। यह हमारा आसन नहीं, व्यासपीठ है। इसके साथ एक पुनीत परिपाटी जुड़ी है। उस पर बैठकर उस परिपाटी के साथ न्याय कर सकें, इसके लिए उस पीठ की गरिमा-मर्यादा को प्रणाम करते हैं, तब उस पर बैठते हैं।

॥गुरु-ईश वन्दना॥

गुरु-

गुरु व्यक्ति तक सीमित नहीं, एक दिव्य चेतन प्रवाह- ईश्वर का अंश है। चेतना का एक अंश जो अनुशासन व्यवस्था बनाता, उसका फल देता है- ईश्वर कहलाता है, दूसरा अंश जो अनुशासन की मर्यादा सिखाता है, उसमें प्रवृत्त करता है, वह गुरु है। आइये, गुरुसत्ता

को नमन-वन्दन करें।

ॐ ब्रह्मानन्दं परमसुखदं,
केवलं ज्ञानमूर्तिं,
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं,
तत्त्वमस्यादि-लक्ष्यम्॥
एकं नित्यं विमलमचलं,
सर्वधीसाक्षिभूतं,
भावातीतं त्रिगुणरहितं,
सद्गुरुं तं नमामि॥1॥

अखण्डानन्दबोधाय,
शिष्यसन्तापहारिणे।
सच्चिदानन्दरूपाय,
तस्मै श्री गुरवे नमः॥2॥

अर्थात्- ब्रह्मानन्द स्वरूप, परम सुख देने वाले, केवल ज्ञान मूर्ति, द्वन्द्व (सुख-दुःख, लाभ-हानि आदि) से परे, आकाश के समान (व्यापक), तत्त्वमसि आदि महावाक्य के लक्ष्य भूत, एक,

नित्य, विमल, अचल, सदा साक्षी स्वरूप, भाव (शुभ-अशुभ) से अतीत, तीनों गुणों (सत, रज, तम) से रहित (परे) उस सद्गुरु को नमस्कार करते हैं।

सरस्वती-

माँ सरस्वती विद्या एवं वाणी की देवी हैं। बोले गये शब्द में अन्तःकरण को प्रभावित करने योग्य प्राण पैदा हो, इस कामना-भावना के साथ माँ सरस्वती की वन्दना करें।

लक्ष्मीर्मेधा धरापुष्टिः,
गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः।
एताभिः पाहि तनुभिः,
अष्टाभिर्मां सरस्वति ॥1॥

अर्थात्-लक्ष्मी,मेधा,धरा,पुष्टि, गौरी, तुष्टि, प्रभा, धृति-इन आठ रूपों वाली देवी सरस्वती हमारी रक्षा करें।

सरस्वत्यै नमो नित्यं,

भद्रकाल्यै नमो नमः।
वेदवेदान्तवेदाङ्ग,
विद्यास्थानेभ्य एव च॥2॥

अर्थात्- वेद-वेदान्त तथा वेदाङ्ग-विद्या के स्वरूप वाली माता सरस्वती एवं भद्रकाली को बारम्बार नमस्कार है।

मातस्त्वदीय-पदपङ्कज - भक्तियुक्ता,
ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय।
ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण,
भू-वह्नि-वायु-गगनाम्बु
विनिर्मितेन॥3॥

अर्थात्- हे माँ सरस्वति! जो लोग अन्य जनों का आश्रय त्याग कर, भक्ति-भाव-पूरित हृदय से आपके चरण कमलों का भजन (सेवन) करते हैं, वे पञ्चतत्त्व-(पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश-) निर्मित शरीर से मुक्ति पा जाते हैं।

व्यास-

व्यासपीठ पर बैठकर कर्मकाण्ड सञ्चालन का जो उत्तरदायित्व उठाया है, उसके अनुरूप अपने मन, वाणी, अन्तःकरण, बुद्धि आदि को बनाने की याचना इस वन्दना के साथ करें।

व्यासाय विष्णुरूपाय,
व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये,
वासिष्ठाय नमो नमः ॥1॥

अर्थात्- ब्रह्मनिधि (ब्रह्मज्ञान से परिपूर्ण) वसिष्ठ वंशज (वसिष्ठ के प्रपौत्र) विष्णु रूपी व्यास और व्यास रूपी विष्णु को नमस्कार है।

नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे,
फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र।
येन त्वया भारततैलपूर्णः
प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः।

-ब्र.पु.245.7.11

अर्थात्- अत्यधिक बुद्धिशाली, विकसित कमल की तरह नेत्रों वाले, हे महर्षि व्यास! आपको नमस्कार है। आपने महाभारत रूपी तेल से परिपूर्ण ज्ञानमय प्रदीप प्रज्वलित किया है।

॥साधनादिपवित्रीकरणम्॥

सत्कार्यों, श्रेष्ठ उद्देश्यों के लिये यथाशक्ति साधन, माध्यम भी पवित्र रखने पड़ते हैं। कर्मकाण्ड में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों, साधनों में सन्निहित अशुभ संस्कार हटाये जाते हैं, उन्हें मन्त्र शक्ति से नष्ट किया जाता है एवं देवत्व का संस्कार जगाया जाता है। एक प्रतिनिधि जल लेकर मंत्र पाठ के साथ पल्लवों/ कुशाओं या पुष्पों से सभी उपकरणों, साधकों, पूजन सामग्रियों पर जल सिंचन करें। भावना करें मन्त्र शक्ति के प्रभाव से

उनमें कुसंस्कारों के पलायन और सुसंस्कारों के उभार स्थापन का क्रम चल रहा है।

ॐ पुनाति ते परिस्रुतꣳ
सोमꣳ सूर्यस्य दुहिता।
वारेण शश्वता तना। -19.4

अर्थात्- हे यजमान ! जिस प्रकार सूर्यपुत्री उषा सोम को शाश्वत छन्ना (प्रकृतिगत शोधन प्रक्रिया) से पवित्र करती है, उसी प्रकार श्रद्धा तुम्हें पवित्र करती है। (देवशक्तियों के लिए उपयोगी बनाती है।)

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः
पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि
जातवेदः पुनीहि मा।-19.39

अर्थात्- देवगण हमें पवित्र बनाएँ। सुविचारों से सुवासित मन एवं बुद्धि हमें

पवित्र बनाएँ। सम्पूर्ण प्राणी हमें पवित्र बनाएँ। हे जातवेदः (अग्निदेव)! आप भी हमें पवित्र बनाएँ।

ॐ यत्ते पवित्रमर्चिषि अग्ने विततमन्तरा।
ब्रह्म तेन पुनातु मा॥-19.41

हे अग्ने! आपकी तेजस्वी ज्वालाओं के मध्य में जो परम पवित्र, सत्य, ज्ञान एवं अनन्त रूप विविध लक्षणों से युक्त ब्रह्म विस्तृत हुआ है, उससे हमारे जीवन को पवित्र करें।

ॐ पवमानः सो अद्य नः
पवित्रेण विचर्षणिः।
यः पोता स पुनातु मा।-19.42

अर्थात्-ज ोप वित्रताप्रदानक रने वाले विलक्षण द्रष्टा वायुदेव सर्वज्ञाता और स्वयं पवित्र हैं, वे आज अपनी पवित्रता से हमारे जीवन को पवित्र करें।

ॐ उभाभ्यां देव सवितः

पवित्रेण सवेन च।
मां पुनीहि विश्वतः॥-19.43

अर्थात्- हे सर्वप्रेरक सविता देव! आप अपने दोनों प्रकार के स्वरूपों से अर्थात् अपनी (यज्ञ के लिए) आज्ञा से और प्रत्यक्ष पवित्र स्वरूप से, सब ओर से हमारे जीवन को पवित्र बनाएँ।

॥मङ्गलाचरणम्॥

प्रत्येक शुभ कार्य को सम्पन्न करने से पहले वाले याजकों, साधकों के कल्याण,उत्साह अभिवर्धन, सुरक्षा और प्रशंसा की दृष्टि से पीले अक्षत और पुष्प की वर्षा कर स्वागत किया जाता है। मन्त्र के साथ भावना की जाय, देव अनुग्रह की वर्षा हो रही है, देवत्व के धारण तथा निर्वाह की क्षमता का विकास हो रहा है।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा

भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिः
व्यशेमहि देव हितं यदायुः॥ -25.21

अर्थात्- याजकों के पोषक हे देवताओ! हम सदैव कल्याणकारी वचनों को ही अपने कानों से सुनें, नेत्रों से सदैव कल्याणकारी दृश्य ही देखें। हे देव! परिपुष्ट अंगों से युक्त सुदृढ़ शरीर वाले हम आपकी वन्दना करते हुए-लोक हितकारी कार्यों को करते हुए पूर्ण आयु तक जीवित रहें।

॥ पवित्रीकरणम् ॥

देवत्व से जुड़ने की पहली शर्त पवित्रता है। उन्हें शरीर और मन से, आचरण और व्यवहार से शुद्ध व्यक्ति ही प्रिय होते हैं। इसीलिये यज्ञ जैसे श्रेष्ठ कार्य में भाग लेने के लिये शरीर और मन को पवित्र बनाना होता है। बायें हाथ की हथेली में

एक चम्मच जल लें, दायें हाथ से ढकें, मन्त्र से अभिपूरित जल शरीर पर छिड़कें, भाव करें हम अन्दर और बाहर से पवित्र हो रहे हैं।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा,
सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं,
स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः,
पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु।

-वा.पु. 33.6

अर्थात्- पवित्र अथवा अपवित्र किसी भी अवस्था में कोई क्यों न हो, जो पुण्डरीकाक्ष (कमलवत् निर्लिप्त नेत्रों वाले भगवान्-विष्णु) का स्मरण करता है, वह अन्तर्बाह्य (शरीर-मन) से पवित्र हो जाता है। हे परमात्मन्! हमें पवित्र करो, हे पुण्डरीकाक्ष ! हमें पवित्र करो, हे पुण्डरीकाक्ष! हमें पवित्र करो।

॥ आचमनम् ॥

आचमन का अर्थ है क्रियाशक्ति, विचारशक्ति और भावशक्ति का परिमार्जन इन तीनों ही केन्द्रों में शान्ति, शीतलता, सात्विकता और पवित्रता का समावेश हो। इन्हीं भावनाओं के साथ तीन आचमनी जल स्वाहा के साथ मुख में डालें।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ 1 ॥

ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ 2 ॥

ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि,

श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ 3 ॥

-आश्व.गृ.सू. 1.24 मा.गृ.सू.1.9

अर्थात्- हे अमृत स्वरूप जल (देवता) तुम मेरे बिस्तर (आधार) हो। हे अमृत स्वरूप जल (देवता) तुम मेरे आच्छादन (उपकारक) हो। हे देव! मुझे सत्य, यश और श्री-समृद्धि से सम्पन्न बनाओ।

॥ शिखावन्दनम् ॥

शिखा का दूसरा नाम चोटी भी है। चोटी शिखर स्तर की होती है। हम भी शिखर स्तर के उच्च विचारों, भावनाओं और आदर्शों से युक्त हों। इन्हीं भावनाओं के साथ बायें हाथ की हथेली में जल लेकर दायें हाथ की उँगलियों को गीलाकर शिखा स्थान का स्पर्श करें।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये,
दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये,
तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥ -सं.प्र.

अर्थात्- हे चैतन्य-स्वरूपे महामाये! (ब्रह्म की पराशक्ति) दिव्य तेज से सम्पन्न देवि! मेरे शिखा स्थान पर विराजमान होकर मुझे दिव्य तेज प्रदान कीजिए।

॥ प्राणायामः ॥

श्रेष्ठता के संवर्धन और निक्रिष्टता के निष्कासन के लिये विशिष्ट प्राण शक्ति की जरूरत होती है। प्राणायाम की क्रिया द्वारा उसी शक्ति को अन्दर धारण किया जाता है। कमर सीधी करके बैठें, धीरे-धीरे गहरी श्वास अन्दर खींचें, यथाशक्ति अन्दर रोकें, धीरे-धीरे बाहर निकालें, थोड़ी देर बिना श्वास के रहें। भावना करें शरीरबल, मनोबल और आत्मबल में वृद्धि हो रही है।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः,
ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं,
ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॐ। -तै.आ. 10.27

अर्थात्- ॐ अर्थात् परमात्मा भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम् -इन सात लोकों में संव्याप्त है। उस वरण

करने योग्य भर्ग स्वरूप (पापनाशक) दिव्य सविता देवता का ध्यान करता हूँ, जो (वह) हमारी बुद्धि को (सत्कर्म में) प्रेरित करे। ब्रह्म (परमात्मा) आपः (जल) रूप, ज्योति (तेज) रूप, रस (आनन्द) रूप तथा अमृतरूप है, भूः भुवः आदि समस्त लोकों में विद्यमान है।

॥न्यासः॥

न्यास का अर्थ होता है धारण करना, हम भी ऋषि-देवताओं की तरह देवत्व धारण कर सकें, इसके लिये न्यास किया जाता है। बायें हाथ की हथेली में जल लें, दायें हाथ की उँगलियों को गीला कर, मन्त्र के साथ निर्दिष्ट अंगों को बायें से दायें स्पर्श करते चलें। भावना करें हमारी इन्द्रियों में देवत्व की स्थापना हो रही है।

ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु।

(मुख को)

ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु।
(नासिका के दोनों छिद्रों को)
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।
(दोनों नेत्रों को)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।
(दोनों कानों को)
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु।
(दोनों भुजाओं को)
ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु।
(दोनों जंघाओं को)
ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि,
तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।
(समस्त शरीर पर) -पा. गृ. सू. 1.3.25

अर्थात्- हे परमात्मन्! मेरे मुख में वाणी (वाक् शक्ति) हो। मेरी नासिका में प्राण तत्त्व हो। मेरी आँखों में चक्षु (दर्शन शक्ति) हो। मेरे कानों में श्रवण (की शक्ति) हो। मेरी भुजाओं में बल (बलिष्ठता) हो। मेरे समस्त अङ्ग

दोषरहित होकर मेरे साथ सहयोग करें।

॥ पृथ्वीपूजनम् ॥

वेदों में कहा गया है '**माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः**' अर्थात् धरती हमारी माता है और हम सब इसके पुत्र हैं। धरती माता के ऋण से उऋण होने और उनके जैसी उदारता, सहनशीलता, विशालता के गुणों को धारण करने के भाव से एक आचमनी जल धरती पर छोड़ें तथा प्रणाम करें।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका,
देवि ! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि !
पवित्रं कुरु चासनम् ॥ -सं.प्र.

अर्थात्- हे पृथ्वी ! तुम भगवान् विष्णु के द्वारा धारण की गयी हो और तुमने सभी लोकों को धारण किया है। हे देवि! तुम मुझे भी धारण करो और मेरे आसन को पवित्र करो।

॥सङ्कल्पः॥

सङ्कल्प करने से मनोबल बढ़ता है। मन के ढीलेपन के कुसंस्कार पर अंकुश लगता है। स्थूल घोषणा से सत्पुरुषों का तथा मन्त्रों द्वारा की गई घोषणा से देवशक्तियों का मार्गदर्शन और सहयोग मिलता है। दाहिने हाथ में अक्षत, पुष्प, जल लेकर श्रद्धा-निष्ठापूर्वक अभीष्ट कार्य सम्पादन हेतु सङ्कल्प लें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य, अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैकदेशान्तर्गते.........क्षेत्रे.........स्थले मासानां मासोत्तमेमासे ....मासे.........पक्षे.........तिथौ.........वासरे......... गोत्रोत्पन्नः

.........नामाऽहं सत्प्रवृत्ति-संवर्द्धनाय, दुष्प्रवृत्ति-उन्मूलनाय, लोककल्याणाय, आत्मकल्याणाय, वातावरण-परिष्काराय, उज्ज्वलभविष्य-कामनापूर्तये च प्रबलपुरुषार्थं करिष्ये, अस्मै प्रयोजनाय च कलशादि-आवाहितदेवता-पूजनपूर्वकम् ....कर्मसम्पादनार्थं सङ्कल्पं अहं करिष्ये।

अर्थात्- विष्णु स्वरूप परमात्मा की आज्ञा से प्रवर्तित (प्रारम्भ) होने वाले श्री ब्रह्माजी के आज दूसरे परार्द्ध (दिन के अपराह्न काल) में, श्री श्वेत वाराहकल्प में, वैवस्वत मन्वन्तर में, भूलोक में, भरतखण्ड के आर्यावर्त्त (भारत) देश के अन्तर्गत क्षेत्र में............स्थान में............मासोत्तम मास में.............पक्ष में............तिथि

में............दिन में...........गोत्र में उत्पन्न हुआ ....नाम वाला मैं, सत्प्रवृत्ति संवर्धन के लिए, दुष्प्रवृत्ति का उन्मूलन करने के लिए लोककल्याण और आत्मकल्याण के लिए, वातावरण को परिष्कृत करने के लिए उज्वल भविष्य की कामना-पूर्ति के लिए प्रबल पुरुषार्थ करूँगा और इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए कलश आदि आवाहित देवता के पूजन पूर्वक ....कर्म सम्पन्न करने के लिए सङ्कल्प करता हूँ।

॥यज्ञोपवीतधारणम् ॥

यज्ञीय दर्शन को सदा-सर्वदा स्मरण रखने, धारण करने के लिये तथा व्रतशील जीवन जीने की प्रेरणा लेते हुये मन्त्र के साथ यज्ञोपवीत धारण करें।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं,

प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं,
यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

-पार.गृ.सू.2.2.11

अर्थात्- परम पवित्र यज्ञोपवीत को प्रजापति ने सहजतया (सबके लिए) सर्वप्रथम विनिर्मित किया है। यह (यज्ञोपवीत) आयुष्य, अग्रय (श्रेष्ठता), यश, बल और तेजस्विता देने वाला है।

॥जीर्णोपवीत-विसर्जनम्॥

नया यज्ञोपवीत धारण करने के बाद मन्त्र के साथ पुराना यज्ञोपवीत निकाल दें। पुराने यज्ञोपवीत को किसी देववृक्ष पर लटका दें या जमीन में गाड़ दें।

ॐ एतावद्दिनपर्यन्तं,
ब्रह्मत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्ते परित्यागो,
गच्छ सूत्र यथा सुखम्॥

अर्थात्- हे ब्रह्मसूत्र- यज्ञोपवीत! इतने दिनों तक मैंने तुम्हें धारण किया, अब जीर्ण हो जाने से तुम्हारा परित्याग कर रहा हूँ। तुम सुखपूर्वक अभीष्ट स्थान को चले जाओ।

॥ चन्दनधारणम् ॥

शरीर की सारी क्रियाओं का सञ्चालन विचारों से, मस्तिष्क से होता है। हमारा मस्तक सदा शान्त और विवेकयुक्त बना रहे। विचारों में देवत्व का, श्रेष्ठता का सञ्चार होता रहे; ताकि हमारे क्रियाकलाप श्रेष्ठ हों। इसी भाव से दायें हाथ की अनामिका उँगली के सहारे मस्तक पर तिलक लगायें।

ॐ चन्दनस्य महत्पुण्यं,
पवित्रं पापनाशनम्।
आपदां हरते नित्यं,
लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा॥

अर्थात्- चन्दन धारण करना महान् पुण्यदायक, पवित्रतावर्धक, पाप नाशक, आपत्ति निवारक और नित्य प्रति समृद्धिवर्धक है।

॥रक्षासूत्रम्॥

यह वरण सूत्र है। आचार्य की ओर से प्रतिनिधियों द्वारा बाँधा जाना चाहिए। पुरुषों तथा अविवाहित कन्याओं के दायें हाथ में तथा महिलाओं के बायें हाथ में कलावा बाँधा जाता है। जिस हाथ में रक्षा सूत्र बँधवायें, उसकी मुट्ठी बाँधकर रखें, दूसरा हाथ सिर पर रखें। इस पुण्य कार्य केि लएव् तशीलब नकरउ त्तरदायित्व स्वीकार करने का भाव रखा जाय।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति
दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति
श्रद्धया सत्यमाप्यते॥-19.30

अर्थात्- व्रतपूर्वक यज्ञानुष्ठान सम्पन्न करने पर मनुष्य (दीक्षा) दक्षता को प्राप्त करता है, दक्षता से प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है, प्रतिष्ठा से श्रद्धा की प्राप्ति होती है और श्रद्धा से सत्य (रूप परमेश्वर) को प्राप्त करता है।

॥कलशपूजनम्॥

भारतीय संस्कृति में कलश का बड़ा महत्व है। वैदिक काल से ही शुभ अवसरों पर कलश स्थापना एवं पूजन का प्रचलन रहा है। कलश विश्व ब्रह्माण्ड का प्रतीक है, इसमें सभी देव शक्तियाँ निवासक रतीहैं ।स भीम ेंज लजै सी शीतलता एवं कलश जैसी पात्रता का विकास हो इस भाव से एक प्रतिनिधि जल, गन्ध- अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, नैवेद्य से पूजन करें।

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानः

तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ
स मा नऽ आयुः प्र मोषीः।-18.49

अर्थात्- वेद मन्त्रों द्वारा अभिनन्दित हे वरुणदेव! हवियों का दान देकर यजमान लौकिक सुखों की आकांक्षा करता है। हम वेद-वाणियों के ज्ञाता (ब्राह्मण) यजमान की तुष्टि एवं प्रसन्नता के निमित्त स्तुतियों द्वारा आपकी प्रार्थना करते हैं। सबके द्वारा स्तुत्य देव! इस स्थान में आप क्रोध न करके हमारी प्रार्थना सुनें। हमारी आयु को किसी प्रकार क्षीण न करें।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य
बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ
समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽ इह
मादयन्तामो3म्प्रतिष्ठ। -2.13

अर्थात्- हे सवितादेव! आपका

वेगवान् मन आज्य (घृत) का सेवन करे। बृहस्पति देव इस यज्ञ को अनिष्ट रहित करके इसका विस्तार करें, इसे धारण करें। सभी देवी- शक्तियाँ प्रतिष्ठित होकर आनन्दित हों- सन्तुष्ट हों। (सविता देव की ओर से कथन) तथास्तु-प्रतिष्ठित हों।

॥ कलश प्रार्थना ॥

सभी परिजन कलश में प्रतिष्ठित देव शक्तियों की हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः,
कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्यस्थितो ब्रह्मा,
मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥1॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे,
सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः,
सामवेदो ह्यथर्वणः ॥2॥

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे,
कलशन्तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री,
शान्ति पुष्टिकरी सदा ॥3॥

त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि,
त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।
शिवः स्वयं त्वमेवासि,
विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥4॥

आदित्या वसवो रुद्रा,
विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि,
यतः कामफलप्रदाः ॥5॥

त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं,
कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव!
प्रसन्नो भव सर्वदा ॥6॥

अर्थात्- कलश के मुख स्थान पर विष्णु, कण्ठ स्थान में रुद्र, मूल (पेंदी)

स्थान में ब्रह्मा, मध्य स्थान में मातृका गण (षोडश मातृका), कुक्षि (गर्भ-पेट) स्थान में सभी सागर, सातों द्वीपों वाली धरती, ऋग्, यजु, साम और अथर्ववेद तथा छहों अङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष) सभी कलश में विद्यमान हैं। यहीं (कलश मध्य में) गायत्री, सावित्री, शान्ति, पुष्टिदायी-शक्ति सर्वदा निवास करती है। हे कलश! तुममें सभी प्राणी और सभी प्रजापति ब्रह्मा हो। हे कलश देवता! आदित्यगण (12 सूर्य), वसुगण (8 वसु), रुद्रगण (11 रुद्र), विश्वेदेवगण (9 विश्वे देव), समस्त पितृगण आदि तुममें निवास करते हैं, जो कामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं। हे जल से उत्पन्न कलश! आपकी प्रसन्नता से यह यज्ञ सम्पन्न करना चाहता हूँ। हे देव! आप यहाँ उपस्थित रहें और सदा-सर्वदा हम सब

पर प्रसन्न रहें।

॥दीपपूजनम्॥

दीपक को सर्वव्यापी चेतना का प्रतीक माना गया है। दीपक का गुण है ऊर्ध्वगमन और सबको प्रकाशित करना। हम भी दीपक की तरह महानता के पथ पर चलें और सबको ज्ञान का आलोक बाँटे और सबके जीवन के दुःख और अँधेरे को मिटाने का प्रयास करें, इसी भावना के साथ दीप देवता का पञ्चोपचार पूजन करें।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा
सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा
अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा
सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥-3.9

अर्थात्- अग्नि तेजरूप है तथा तेज अग्निरूप है, हम तेजरूपी अग्नि में हवि

देते हैं। सूर्य ज्योतिरूप है एवं ज्योति सूर्यरूप है, हम ज्योतिरूपी अग्नि में आहुति देते हैं। अग्नि वर्चस्‌रूप है और ज्योति वर्चस्‌रूप है, हम वर्चस्‌रूपी अग्नि में हवन करते हैं। सूर्य ब्रह्म तेज का रूप है तथा ब्रह्मवर्चस सूर्यरूप है, हम उसमें हवि प्रदान करते हैं।ज्योति ही सूर्य है और सूर्य ही ज्योति है, हम उसमें (इस मन्त्र से) आहुति समर्पित करते हैं।

॥देवावाहनम्॥

निरन्तर दैवी अनुदान प्रदान करने वाली देवशक्तियों का, सद्‌गुणों और सत्कर्मों में अभिवृद्धि के लिये आवाहन-पूजन किया जाता है।

गुरु-

प्रत्येक शुभ कार्य में दैवी अनुग्रह आवश्यक है। इस यज्ञीय कार्य में सर्वप्रथम गुरुसत्ता का आवाहन करते

हैं। वे हमारे अन्दर के अज्ञान को हटा कर ज्ञान को प्रतिष्ठित करें। हे गुरुदेव! आप ही शिव हैं, आप ही विष्णु हैं। आप हमारे सद्ज्ञान और सद्भाव को बढ़ाते रहें और हम सब इस यज्ञीय कार्य को सफल और सार्थक बना सकें।

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः,
गुरुरेव महेश्वरः। गुरुरेव परब्रह्म,
तस्मै श्री गुरवे नमः ॥1॥

अर्थात्- गुरु ब्रह्मा हैं, गुरु विष्णु हैं, गुरुदेव ही महेश्वर हैं। गुरु ही परब्रह्म हैं, उन श्रीगुरु को नमस्कार है।

अखण्डमण्डलाकारं,
व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन,
तस्मै श्री गुरवे नमः ॥2॥ -गु.गी. 43,45

अर्थात्- जिस (परब्रह्म) ने अखण्डमण्डलाकार चराचर जगत् को

व्याप्त कर रखा है, उस (ब्रह्म) पद को जिनने दिखला दिया है, उन श्री गुरु को नमस्कार है।

मातृवत् लालयित्री च,
पितृवत् मार्गदर्शिका।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै,
श्रद्धा-प्रज्ञायुता च या॥3॥

अर्थात्- माता के समान लालन-पालन करने वाली, पिता के समान मार्गदर्शन प्रदान करने वाली, श्रद्धा और प्रज्ञा के स्वरूप वाली उस गुरुसत्ता को नमस्कार है। **गायत्री-** शास्त्रों में कहा गया है गायत्री सर्वकामधुक् अर्थात् गायत्री समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली है। हे माँ! हमें सद्‌बुद्धि देना, जिससे हम सत्कर्म करें और सद्‌कार्यों से सद्गति को प्राप्त कर सकें। इस भाव से पूजन करें।

ॐ आयातु वरदे देवि!

त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि!
गायत्रिच्छन्दसां मातः!
ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते ॥4॥ -सं.प्र.

अर्थात्- हे वरदायिनि देवि! त्र्यक्षर स्वरूपा (अ, उ, म्) ब्रह्मवादिनी (मन्त्र प्रवक्ता), ब्रह्म की उद्भाविका गायत्री देवि! आप छन्दों (वेदों) की माता हैं! आप यहाँ आयें, आपको नमस्कार है।

ॐ स्तुता मया वरदा
वेदमाता प्रचोदयन्तां
पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं
कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।
मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।

-अथर्व. 19.71.1

अर्थात्- हम साधकों द्वारा स्तुत (पूजित) हुई, अभीष्ट फल प्रदान करने वाली, वेदमाता (गायत्री) द्विजों को पवित्रता और प्रेरणा प्रदान करने वाली हैं। आप

हमें दीर्घ जीवन, प्राणशक्ति, सुसन्तति, श्रेष्ठ पशु (धन), कीर्ति, धन-वैभव और ब्रह्मतेज प्रदान करके ब्रह्मलोक के लिए प्रस्थान करें।

गणेश-

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं,
पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै,
गणाधिपतये नमः ॥5॥

अर्थात्- जो अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति के लिए देवताओं-दैत्यों द्वारा पूजे गये हैं और सम्पूर्ण विघ्नों को समाप्त कर देने वाले हैं, उन गणाधिपति (प्रमथादि गणों के स्वामी) को नमस्कार है।

गौरी-

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये,
शिवे सर्वार्थसाधिके!
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि,

नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥6॥

अर्थात्- सभी का सब प्रकार से मङ्गल करने वाली शिवा (कल्याणकारिणि)! सभी कार्यों को पूर्ण करने वाली, शरणदात्री, त्रिनेत्रधारिणी, गौरी, नारायणी देवि! (महादेवि) आपको नमस्कार है।

हरि-

शुक्लाम्बरधरं देवं,
शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् ,
सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ 7॥

सर्वदा सर्वकार्येषु,
नास्ति तेषाममंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान्,
मङ्गलायतनो हरिः ॥ 8॥

अर्थात्- शुक्ल (श्वेत) वस्त्र धारण करने वाले, दिव्य गुणों से युक्त, चन्द्र

सदृश (आह्लादक) वर्ण वाले, चतुर्भुज, प्रसन्न मुख (भगवान् श्रीहरि) का सम्पूर्ण विघ्नों की परिसमाप्ति के लिए ध्यान करना चाहिए। सर्वदा, सभी कार्यों में उसका अमङ्गल नहीं होता है, जिसके हृदय में मंगल स्वरूप भगवान् श्रीहरि विराजमान होते हैं।

सप्तदेव-

विनायकं गुरुं भानुं,
ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणौम्यादौ,
शान्तिकार्यार्थसिद्धये॥ 9॥

अर्थात्- शान्तिपूर्वक सभी कार्यों की पूर्णता के लिये सर्वप्रथम विनायक (गणेश), गुरु, सूर्यदेव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर और देवी सरस्वती को प्रणाम करता हूँ।

पुण्डरीकाक्ष-

मङ्गलं भगवान् विष्णुः,
मङ्गलं गरुडध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो,
मङ्गलायतनो हरिः॥ 10॥

अर्थात्- भगवान् विष्णु मङ्गलदायक हैं। गरुडध्वज (गरुडाङ्कित ध्वज वाले भगवान् विष्णु) मङ्गलकारी हैं। पुण्डरीकाक्ष (निर्लिप्त नेत्र वाले भगवान् विष्णु) मङ्गल स्वरूप हैं। हरि (पापों को हर लेने वाले भगवान् विष्णु) मङ्गल के आयतन (आश्रय) हैं।

ब्रह्मा-

त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा,
सत्यलोकपितामहः।
आगच्छ मण्डले चास्मिन्,
मम सर्वार्थसिद्धये॥ 11

अर्थात्- आप निश्चित रूप से

चतुर्मुख ब्रह्मा (सृष्टिकर्त्ता), सत्यलोक (सत्य पर दृढ़ रहने वाले) पितामह (सभी के पोषणकर्ता) हैं। मेरे सर्वार्थसिद्धि (सभी अभीष्ट की पूर्ति) के लिए आप इस मण्डल (स्थान) में आकर विराजमान हों।

विष्णु-

शान्ताकारं भुजगशयनं,
पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं,
मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं,
योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं,
सर्वलोकैकनाथम् ॥12॥

अर्थात्-श ान्ताकार(शान्तप्रकृति वाले), भुजगशायी (शेष नाग पर शयन करने वाले), सुरेश (देवों के स्वामी),

विश्वाधार (संसार के आधारभूत), गगन सदृश (आकाशवत्- सर्वत्र व्याप्त रहने वाले), मेघ के समान वर्ण वाले, शुभाङ्ग (श्रेष्ठ अंग-अवयव वाले), लक्ष्मीकान्त (लक्ष्मी के स्वामी), कमलनयन (कमल जैसे नेत्र वाले), योगियों द्वारा ध्यान किये जाने वाले, भवसागर का भय दूर करने वाले तथा सभी लोकों के एकमात्र स्वामी विष्णु की (मैं) वन्दना करता हूँ।

शिव-

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं,
वन्दे जगत्कारणम्,
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं,
वन्दे पशूनाम्पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं,
वन्दे मुकुन्दप्रियम् ,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं,

वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ 13 ॥

अर्थात्- उमापति, देवताओं के गुरु, देव (शिव) की वन्दना करता हूँ, जगत् के कारणभूत (भगवान् शङ्कर) की वन्दना करता हूँ, सर्पों के आभूषण वाले, मृग (चर्म) धारण करने वाले (शङ्कर) की वन्दना करता हूँ। पशुओं (जीवात्मा) के स्वामी (महेश) की वन्दना करता हूँ। सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि रूप नेत्र वाले (त्रिनेत्र) की वन्दना करता हूँ, मुकुन्द (विष्णु के) प्रिय (महेश्वर) की वन्दना करता हूँ। भक्तजनों को आश्रय देने वाले (आशुतोष) की वन्दना करता हूँ तथा कल्याणकारी शुभदाता (अवघढ़ दानी) की वन्दना करता हूँ।]

त्र्यम्बक-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे,

सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्,
मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ 14 ॥ 3.60

अर्थात्- सुगन्धि (सद्‌गुण) और पुष्टिवर्धक (पोषण करने वाले) त्र्यम्बक (त्रिनेत्र शिव) का मैं यजन (पूजन) करता हूँ, (वे देव) मुझे अपने अमृत (गुणों) से उर्वारुक (पकने के बाद फल के द्वारा डण्ठल छोड़ देने) के समान मृत्यु के बन्धन से मुक्त करें, अमृतत्त्व से नहीं।

दुर्गा-

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ 15 ॥

अर्थात्- हे देवि दुर्गे! (समस्त) प्राणियों के द्वारा स्मृत (पूजित) हुई तुम उनके समस्त भय को दूर कर देती हो। स्वस्थजनों के द्वारा स्मृत होने पर उन्हें

सद्बुद्धि तथा अत्यधिक शुभ-कल्याण प्रदान करती हो। हे दारिद्र्य, दुःख और भय दूर करने वाली देवि! सभी का उपकार करने के लिए सदैव सरस हृदय वाली तुम्हारे अतिरिक्त और कौन है? अर्थात् कोई नहीं।

सरस्वती-

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमां,
आद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां,
जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं,
पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं,
बुद्धिप्रदां शारदाम्॥ 16॥

अर्थात्- जो शुक्लवर्ण वाली, ब्रह्म विचार (वेदों का ज्ञान) के सार स्वरूप, अत्यधिक श्रेष्ठ, आद्यशक्ति, जगत् में

(सर्वत्र)व याप्तर हनेव ाली,व ीणाअ ौर पुस्तक धारण करने वाली, अभयदान देने वाली, अज्ञानान्धकार को दूर करने वाली, हाथ में स्फटिक की माला धारण करने वाली, (श्वेत) कमल के आसन पर विराजमान तथा सद्बुद्धि प्रदान करने वाली हैं, उन परमेश्वरी (सर्वसमर्थ) भगवती (ऐश्वर्य शालिनी) देवी सरस्वती को नमस्कार है।

लक्ष्मी-

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं,
सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं,
जातवेदो मऽआवह॥17॥

अर्थात्- सरस हृदय वाली, हाथी पर सवारी करने वाली, पोषण प्रदान करने वाली, सुवर्ण (सुन्दर वर्ण) वाली, सोने की माला धारण करने वाली, सूर्य शक्ति

स्वरूपा अर्थात् सूर्य की पत्नी (संज्ञा) स्वरूपा, स्वर्णमयी (समृद्धिशाली) अग्नि की शक्ति स्वरूपा लक्ष्मी देवि! मैं आपका आवाहन करता हूँ।

काली-

कालिकां तु कलातीतां,
कल्याणहृदयां शिवाम्।
कल्याणजननीं नित्यं,
कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥18॥

अर्थात्-मैं सदा कलाओं से परे, कल्याणकारी हृदय वाली, शिवास्वरूपा,कल्याणों की जन्मदात्री, कल्याणमयी देवी कालिका (काली) की पूजा करता हूँ।

गङ्गा-

विष्णुपादाब्जसम्भूते,
गङ्गे त्रिपथगामिनि।
धर्मद्रवेति विख्याते,

पापं मे हर जाह्नवि॥ 19॥

अर्थात्-भगवान् विष्णु के चरण कमल से निःसृत, त्रिपथगामी (आकाश, भू, पाताल में गमन करने वाली),धर्म-द्रव (सजल धर्म) के नाम से विख्यात हे जाह्नवि! (राजा जह्नु के कान से निष्पन्न गङ्गे!) मेरे पापों का हरण करो।

तीर्थ-

पुष्करादीनि तीर्थानि,
गङ्गाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि,
पूजाकाले सदा मम॥ 20॥

अर्थात्- पुष्कर आदि तीर्थ तथा गङ्गा आदि नदियाँ पूजा के समय, मुझे पवित्र करने के लिए सदैव यहाँ उपस्थित रहें।

नवग्रह-

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी,
भानुः शशीभूमिसुतो बुधश्च।

गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः,
सर्वेग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥ 21 ॥

अर्थात्- ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, चन्द्र, भूमिसुत (मङ्गल) बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु सभी ग्रह शान्तिदायक हों।

षोडशमातृका-

गौरी पद्मा शची मेधा,
सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा,
मातरो लोकमातरः ॥ 22 ॥

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः,
आत्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता,
वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥ 23 ॥

अर्थात्- गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, माताएँ, लोक माताएँ, धृति,

पुष्टि, तुष्टि तथा अपनी कुल देवी ये सोलह पूजनीया मातृकाएँ गणेश से भी अधिक वृद्धि प्रदान करने वाली हैं।

सप्तमातृका-

कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा,
सिद्धिः प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्याश्च,
सप्तैता दिव्यमातरः॥24॥

अर्थात्- कीर्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, सिद्धि, प्रज्ञा और सरस्वती- ये सातों दिव्य माताएँ सभी माङ्गलिक कृत्यों में पूजनीय होती हैं।

वास्तुदेव-नागपृष्ठसमारूढं,
शूलहस्तं महाबलम्।
पातालनायकं देवं,
वास्तुदेवं नमाम्यहम्॥25॥

अर्थात्- हाथी की पीठ पर आसीन, हाथ में शूल (त्रिशूल) धारण किये हुए,

महान् बलशाली पाताल के नायक (स्वामी) वास्तुदेव को मैं नमस्कार करता हूँ।

क्षेत्रपाल-

क्षेत्रपालान्नमस्यामि,
सर्वारिष्टनिवारकान्।
अस्य यागस्य सिद्ध्यर्थं,
पूजयाराधितान् मया॥ 26॥

अर्थात्- इस यज्ञ की सिद्धि (सफलता) के लिए मेरी पूजा (सम्मान) से आराधित (आवाहित-प्रार्थित) हुए सभी अरिष्टों (विघातकों) को दूर करने वाले क्षेत्रपालों को (मैं) नमस्कार करता हूँ।

॥सर्वदेवनमस्कारः॥

नमस्कार का अर्थ है सम्मान, हमारा झुकाव देवत्व (आदर्शों) की ओर हो, इसी भाव से सभी देव शक्तियों को नमन करें।

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

अर्थात्- सिद्धि और बुद्धि के सहित श्रीगणेश जी को नमस्कार है।

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।

अर्थात्- लक्ष्मी और नारायण को नमस्कार है।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।

अर्थात्- उमा और महेश्वर को नमस्कार है।

ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।

अर्थात्- वाणी और हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा जी) को नमस्कार है।

ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः।

अर्थात्- शची इन्द्राणी और पुरन्दर (इन्द्र को) नमस्कार है।

ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।

अर्थात्- माता-पिता के चरण कमलों

को नमस्कार है।

ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।

अर्थात्- कुल (वंश) के देवताओं को नमस्कार है।

ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।

अर्थात्- इष्ट (इच्छित) फल प्रदाता देवताओं को नमस्कार है।

ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।

अर्थात्- ग्राम (समूह या गाँव) के देवताओं को नमस्कार है।

ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।

अर्थात्- स्थानीय देवताओं को नमस्कार है।

ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः।

अर्थात्- वास्तु (वस्तुओं के अधिष्ठाता) देवताओं को नमस्कार है।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

अर्थात्- समस्त देवों को नमस्कार है।

ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।

अर्थात्- सभी ब्राह्मणों (ब्रह्मपरायणों) को नमस्कार है।

ॐ सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यो नमः।

अर्थात्- सभी तीर्थों (तार देने वालों) को नमस्कार है।

ॐ एतत्कर्मप्रधान श्रीगायत्रीदेव्यै नमः।

अर्थात्- इस (देवयजन) कार्य की प्रधान देवी गायत्री माता को नमस्कार है।

ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

अर्थात्- उपर्युक्त पुण्याहवाचन पुण्य एवं दीर्घायु प्रदान करे।

॥षोडशोपचारपूजनम्॥

देवशक्तियाँ पदार्थों की भूखी नहीं। पदार्थों को समर्पण के समय जो श्रद्धा-भावना उमड़ती है, भगवान् उसी से

सन्तुष्ट होते हैं। ऐसी भावनाओं को सँजोये हुये, प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन, देवशक्तियों का पूजन क्रमशः बताये गये पदार्थों से करें।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि ॥ 1 ॥

अर्थात्- सभी देवताओं को नमस्कार है। सभी देवताओं को आवाहित एवं स्थापित करता हूँ।

आसनं समर्पयामि ॥ 2 ॥

अर्थात्- आसन प्रदान करता हूँ।

पाद्यं समर्पयामि ॥ 3 ॥

अर्थात्- पाद्य (पैर धोने का जल) प्रदान करता हूँ।

अर्घ्यं समर्पयामि ॥ 4 ॥

अर्थात्- अर्घ्य (सम्मानार्थ जल) प्रदान करता हूँ।

आचमनं समर्पयामि ॥ 5 ॥

अर्थात्- आचमन (मुख प्रक्षालनाादि के निमित्त जल) प्रदान करता हूँ।

स्नानं समर्पयामि ॥ 6 ॥

अर्थात्- स्नान हेतु जल प्रदान करता हूँ।

वस्त्रं समर्पयामि ॥ 7 ॥

अर्थात्- वस्त्र समर्पित करता हूँ।

यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ 8 ॥

अर्थात्- यज्ञोपवीत प्रदान करता हूँ ।

गन्धं विलेपयामि ॥ 9 ॥

अर्थात्- गन्ध (चन्दन या रोली) लगाता हूँ।

अक्षतान् समर्पयामि ॥ 10 ॥

अर्थात्- अक्षत प्रदान करता हूँ।

पुष्पाणि समर्पयामि ॥ 11 ॥

अर्थात्- पुष्प समर्पित करता हूँ।

धूपं आघ्रपयामि ॥ 12 ॥

अर्थात्- धूप सुवासित करता हूँ।

दीपं दर्शयामि ॥ 13 ॥

अर्थात्- दीपक दिखाता हूँ।

नैवेद्यं निवेदयामि ॥ 14 ॥

अर्थात्- नैवेद्य (मिष्टान्न आदि) का भोग लगाता हूँ।

ताम्बूलपूगीफलानि समर्पयामि ॥ 15 ॥

अर्थात्- पान-सुपारी समर्पित करता हूँ।

दक्षिणां समर्पयामि ॥ 16 ॥

अर्थात्- दक्षिणा प्रदान करता हूँ।

सर्वाभावे अक्षतान् समर्पयामि ॥

अर्थात्- अन्य किसी भी पदार्थ के अभाव में अक्षत प्रदान करता हूँ।

ततो नमस्कारं करोमि ।

अर्थात्- तत्पश्चात् सभी देव शक्तियों को नमस्कार करता हूँ।

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये,
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

अर्थात्- हे अनन्तरूप वाले! सहस्र आकृतियों वाले, सहस्र पैरों, नेत्रों, सिरों, जङ्घाओं, भुजाओं वाले, सहस्र नामों वाले तथा सहस्र-करोड़ों युगों को धारण (पोषण) करने वाले शाश्वत पुरुष! आपको बार-बार नमस्कार है।

॥स्वस्तिवाचनम्॥

स्वस्ति का तात्पर्य है कल्याणकारी, वाचन अर्थात् वचन बोलना । सभी के कल्याण की कामना करते हुये प्रत्येक परिजन दायें हाथ में अक्षत, पुष्प, जल लें, बायाँ हाथ नीचे लगायें। मन्त्र पूरा हो जाने पर माथे से लगाकर पूजा की तश्तरी पर रख लें।

ॐ गणानां त्वा गणपतिᳬ हवामहे
प्रियाणां त्वा प्रियपतिᳬ हवामहे
निधीनां त्वा निधिपतिᳬ हवामहे
वसो मम। आहमजानि गर्भधमा
त्वमजासि गर्भधम्॥ -23.19

अर्थात्- हे गणों के बीच रहने वाले सर्वश्रेष्ठ गणपते! हम आपका आवाहन करते हैं। हे प्रियों के बीच रहने वाले प्रियपते! हम आपका आवाहन करते हैं। हे निधियों के बीच रहने वाले सर्वश्रेष्ठ निधिपते! हम आपका आवाहन करते हैं। हे जगत् को बसाने वाले! आप हमारे हों। आप समस्त जगत् को गर्भ में धारण करते हैं, पैदा (प्रकट) करते हैं, आपकी इस क्षमता को हम भली प्रकार जानें।

ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योअरिष्टनेमिः

स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।-25.19

अर्थात्- महान् ऐश्वर्यशाली, इन्द्रदेव हमारा कल्याण करें, सब कुछ जानने वाले पूषादेवता हमारा कल्याण करें, अनिष्ट का नाश करने वाले गरुड़ देव हमारा कल्याण करें तथा देवगुरु बृहस्पति हम सबका कल्याण करें।

ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥-18.36

अर्थात्- हे अग्ने! आप इस पृथ्वी पर समस्त पोषक रसों को स्थापित करें। ओषधियों में जीवन रूपी रस को स्थापित करें। द्युलोक में दिव्य रस को स्थापित करें। अन्तरिक्ष में श्रेष्ठ रस को स्थापित करें। हमारे लिए ये सब दिशाएँ एवं उपदिशाएँ अभीष्ट रसों को देने वाली हों।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो

विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥-5.21

अर्थात्- भगवान् विष्णु (सर्वव्यापी परमात्मा) का प्रकाश फैल रहा है, उन (विष्णु) के द्वारा यह जगत् स्थिर है तथा विस्तार को प्राप्त हो रहा है, सम्पूर्ण जगत् परमात्मा से व्याप्त है, उन (विष्णु) के द्वारा यह जड़-चेतन दो प्रकार का जगत् उत्पन्न हुआ है, उन्हीं भगवान् विष्णु के लिए यह देवकार्य किया जा रहा है।

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ -14.20

अर्थात्- अग्निदेवता, वायुदेवता, सूर्यदेवता, चन्द्रमादेवता, आठों वसु-देवता, ग्यारह रुद्रगण, बारह

आदित्यगण, उनचास मरुद्‌गण, नौ विश्वेदेवागण, बृहस्पतिदेवता, इन्द्रदेवता और वरुणदेवता आदि सम्पूर्ण दिव्य शक्तिधाराओं को हम अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति के लिए स्थापित करते हैं।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥-36.17

अर्थात्- द्युलोक (स्वर्ग), अन्तरिक्षलोक तथा पृथिवीलोक हमें शान्ति प्रदान करे। जल शान्ति प्रदायक हो, ओषधियाँ तथा वनस्पतियाँ शान्ति प्रदान करने वाली हों। विश्वेदेवागण शान्ति प्रदान करने वाले हों। ब्रह्म (सर्वव्यापी परमात्मा) सम्पूर्ण जगत् में शान्ति

स्थापित करे, शान्ति ही शान्ति हो, शान्ति भी हमें परम शान्ति प्रदान करे।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न ऽ आ सुव।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

सर्वारिष्टसुशान्तिर्भवतु।-30.3

अर्थात्- हे सर्व-उत्पादक सवितादेव! आप हमारी समस्त बुराइयों (पाप कर्मों) को दूर करें तथा हमारे लिए जो कल्याणकारी हो, उसे प्रदान करें।

॥रक्षाविधानम्॥

जहाँ उत्कृष्ट बनने, शुभ कार्य करने की आवश्यकता है, वहाँ यह भी आवश्यक है कि दुष्टों की दुष्प्रवृत्ति से सतर्क रहा जाय। इसीलिये रक्षाविधान किया जाता है। इसके लिये प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन बायें हाथ में पीले अक्षत लेकर खड़े हो जायें और मन्त्र

के साथ निर्देशित दशों दिशाओं में चावल प्रक्षेपित करें।

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः,
आग्नेय्यां गरुडध्वजः।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु,
नैर्ऋत्यां मधुसूदनः॥1॥

पश्चिमे चैव गोविन्दो,
वायव्यां तु जनार्दनः।
उत्तरे श्रीपती रक्षेद्,
ऐशान्यां हि महेश्वरः॥2॥

ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो,
ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु।
अनुक्तमपि यत्स्थानं,
रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक्॥3॥

अपसर्पन्तु ते भूता,
ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारः,

ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥ 4 ॥

अपक्रामन्तु भूतानि,
पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन,
यज्ञकर्म समारभे ॥ 5 ॥

अर्थात्- पूर्व दिशा में वाराह भगवान् रक्षा करें, आग्नेय में विष्णु भगवान् रक्षा करें, दक्षिण में पद्मनाभ (शेषशायी विष्णु) रक्षा करें, उत्तर में श्रीपति रक्षा करें, नैर्ऋत्य में मधुसूदन रक्षा करें, पश्चिम में गोविन्द रक्षा करें, वायव्य में जनार्दन रक्षा करें, ईशान में महेश्वर रक्षा करें, ऊपर धाता (धारण तथा रक्षण करने वाले विष्णु) रक्षा करें, नीचे अनन्त भगवान् रक्षा करें,इसके अतिरिक्त जिन स्थानों का कथन नहीं हुआ, उसकी रक्षा परमेश्वर करें। भगवान् शिव की आज्ञा से वे सभी भूत-प्रेतगण दूर हट

जायें, जो इस यज्ञ स्थल पर विद्यमान हैं और विघ्न डाला करते हैं। सभी भूत-प्रेत पिशाचगण यहाँ से सभी दिशाओं की ओर चले जाएँ। इस प्रकार सभी के अविरोध पूर्वक (बिना किसी वैर-विरोध के) मैं इस यज्ञ कृत्य को प्रारम्भ करता हूँ।

॥ अग्निस्थापनम् ॥

अग्नि को ब्रह्म का प्रतिनिधि मानकर यज्ञ कुण्ड में उनकी प्रतिष्ठा की जाती है। अग्नि का स्वभाव है आगे बढ़ना निरन्तर ऊपर उठना। सभी की प्रगति की कामना से यज्ञ कुण्ड में अग्निदेव का आवाहन करें। किसी समिधा या चम्मच में, रुई की घी में डुबोई फूल बत्ती या कपूर को प्रज्वलित कर अग्नि प्रतिष्ठित करें और अग्निदेव का पञ्चोपचार विधि से पूजन करें।

ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव

वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे। अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ2आ सादयादिह। -3.5, 22.17

ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। गन्धाक्षतं, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि।

अर्थात्- (हे अग्निदेव!) आप भूः (पृथिवीलोक में अग्निरूप), भुवः (अन्तरिक्ष में विद्युत् रूप) एवं स्वः (द्युलोक में सूर्यरूप) में सर्वत्र विद्यमान हैं। देवताओं के निमित्त यज्ञ सम्पादन के लिए उत्तम स्थान प्रदान करने वाली हे पृथिवि! हम देवों को हवि प्रदान करने के लिए आपके ऊपर बनी हुई यज्ञ-वेदी पर अग्निदेव को प्रतिष्ठित करते हैं। (इस अग्निस्थापन के द्वारा) हम (पुत्र-पौत्रादि तथा इष्ट-मित्रों से युक्त होकर) द्युलोक के समान सुविस्तृत तथा (यश,

गौरव, ऐश्वर्यादि से युक्त होकर) पृथिवी के समान महिमावान् हों। हवि को देवों तक के जाने वाले देवदूत रूप अग्निदेव को हम अपने समक्ष स्थापित करते हैं और उन्हीं से प्रार्थना करते हैं कि वे अन्य देवताओं को भी लाकर यहाँ उपस्थित करें।

॥गायत्रीस्तवनम् ॥

जड़ चेतन सभी में प्राण का सञ्चार करने वाले सविता देवता हम सभी में दिव्य प्राण का सञ्चार करें, इसी भाव से सविता देवता का स्तवन करें।

यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं,
रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम्।
दारिद्र्य-दुःखक्षयकारणं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥1॥

शुभ ज्योति के पुञ्ज,
अनादि, अनुपम।

ब्रह्माण्डव्यापी आलोककर्त्ता।
दारिद्र्य, दुःख भय से मुक्त कर दो।
पावन बना दो हे देव सविता! ॥ 1 ॥

अर्थात्- जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल प्रकाश उत्पन्न करने वाला, विशाल रत्नों की तीव्र प्रभा वाला, अनादि रूप वाला तथा दरिद्रता और दुःख को नष्ट करने वाला है, वह मुझे पवित्र करे।

यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितं,
विप्रैः स्तुतं मानवमुक्तिकोविदम्।
तं देवदेवं प्रणमामि भर्गं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ 2 ॥

ऋषि देवताओं से नित्य पूजित।
हे भर्ग भवबन्धन मुक्तिकर्त्ता!।
स्वीकार कर लो वन्दन हमारा।
पावन बना दो हे देव सविता! ॥ 2 ॥

अर्थात्- जो श्रेष्ठ सविता का (तेज)

मण्डल देवगणों से भली-भाँति पूजित है, ब्राह्मणों के द्वारा मानव-मुक्ति दाता के रूप में स्तुत है, उस देवों के देव भर्ग (तेज) को मैं प्रणाम करता हूँ, वह मुझे पवित्र करे।

यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं,
त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम्।
समस्त-तेजोमय-दिव्यरूपं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ 3 ॥

हे ज्ञान के घन, त्रैलोक्य पूजित!
पावन गुणों के विस्तारकर्त्ता।
समस्त प्रतिभा के आदिकारण।
पावन बना दो हे देव सविता! ॥3 ॥

अर्थात्- जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल ज्ञान का घनीभूत रूप है, अगम्य (अबाध) है, तीनों लोकों में पूजित है, त्रिगुण रूप है तथा समस्त दिव्य तेजों से समन्वित है, वह मुझे पवित्र करे।

यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं,
धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम् ।
यत् सर्वपापक्षयकारणं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ 4 ॥

हे गूढ़ अन्तःकरण में विराजित!
तुम दोष-पापादि संहारकर्त्ता ।
शुभ धर्म का बोध हमको करा दो ।
पावन बना दो हे देव सविता! ॥4 ॥

अर्थात्-जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल गूढ़मति (अज्ञान से आच्छादित बुद्धि) का प्रकाशक है, लोगों के अन्तस् में धर्म तत्त्व की वृद्धि करने वाला है तथा जो समस्त पापों के क्षय का कारण है, वह मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं,
यदृग्यजुः सामसु सम्प्रगीतम् ।
प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ 5 ॥

हे व्याधिनाशक, हे पुष्टिदाता!
ऋग् साम यजु वेद सञ्चारकर्त्ता।
हे भूर्भुवः स्वः में स्व-प्रकाशित।
पावन बना दो हे देव सविता! ॥5॥

अर्थात्- जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल व्याधियों (शारीरिक कष्टों) को विनष्ट करने में दक्ष है। ऋग्, यजुः तथा सामवेद के द्वारा प्रशंसित है तथा जिससे भूः, भुवः और स्वः लोक प्रकाशित हैं, सविता का वह मण्डल हमें पवित्र करे।

यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति,
गायन्ति यच्चारण सिद्धसङ्घाः।
यद्योगिनो योगजुषां च सङ्घाः,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥6॥

सब वेदविद्, चारण, सिद्ध योगी।
जिसके सदा से हैं गानकर्त्ता।
हे सिद्ध सन्तों के लक्ष्य शाश्वत!
पावन बना दो हे देव सविता! ॥ 6 ॥

अर्थात्- जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल वेदज्ञों द्वारा व्याख्यायित है, जो सिद्ध-चारणों द्वारा गाया (प्रशंसित किया) जाता है। जो योगी जनों और योगस्थ जनों द्वारा प्रशंसित है, वह मुझे पवित्र करे।

यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं,
ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके।
यत्काल-कालादिमनादिरूपं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥7॥

हे विश्वमानव से आदि पूजित!
नश्वर जगत् में शुभ ज्योतिकर्त्ता।
हे काल के काल अनादि ईश्वर!
पावन बना दो हे देव सविता!॥7॥

अर्थात्- जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल सभी लोगों द्वारा पूजित है, इस मर्त्यलोक में ज्योति-स्वरूप है तथा जो देशकाल से परे अनादि रूप वाला है, वह मुझे पवित्र करे।

यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखास्यं,
यदक्षरं पापहरं जनानाम्।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥8॥

हे विष्णु ब्रह्मादि द्वारा प्रचारित!
हे भक्तपालक, हे पापहर्त्ता!।
हे काल कल्पादि के आदिस्वामी!
पावन बना दो हे देव सविता!॥8॥

अर्थात्- जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल ब्रह्मा, विष्णु के मुख मण्डल सदृश है, जो अक्षर (नष्ट न होने वाला) तथा लोगों के पापों को दूर करने वाला है, जो काल और कल्प के क्षय का कारण भी है, वह मुझे पवित्र करे।

यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धं,
त्पत्ति-रक्षा प्रलयप्रगल्भम्।
यस्मिन् जगत्संहरतेऽखिलं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥9॥

हे विश्वमण्डल के आदिकारण!
उत्पत्ति-पालन-संहारकर्त्ता।
होता तुम्हीं में लय यह जगत् सब।
पावन बना दो हे देव सविता! ॥ 9 ॥

अर्थात्- जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल सृजन के लिए प्रसिद्ध है, सृष्टि की रक्षा, उत्पत्ति और संहार-कार्य में सक्षम है, जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रलयकाल में समाहित-लीन हो जाते हैं, वह मुझे पवित्र करे।

यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोः,
आत्मा परंधाम विशुद्धतत्त्वम्।
सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥10 ॥

हे सर्वव्यापी, प्रेरक नियन्ता!
विशुद्ध आत्मा, कल्याणकर्त्ता।
शुभ योग पथ पर हमको चलाओ।
पावन बना दो हे देव सविता! ॥ 10 ॥

अर्थात्- जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल सर्वगत, सर्वत्र संव्याप्त-विष्णु की आत्मा है, सर्वशुद्ध एवं पर (श्रेष्ठ) धाम है। जो योग मार्ग द्वारा सूक्ष्म अन्तःकरण से ज्ञात होने वाला है, वह मुझे पवित्र करे।

यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति,
गायन्ति यच्चारण-सिद्धसंघाः।
यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥11॥

हे ब्रह्मनिष्ठों से आदिपूजित!
वेदज्ञ जिसके गुणगानकर्त्ता।
सद्भावना हम सबमें जगा दो।
पावन बना दो हे देव सविता! ॥11॥

अर्थात्- जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल ब्रह्मज्ञानियों द्वारा प्रशंसित है, जिसका चारण और सिद्ध समुदायों द्वारा गुण-गान किया जाता है तथा वेदज्ञानी जिस मण्डल को नित्य स्मरण

करते हैं, वह मुझे पवित्र करे।

यन्मण्डलं वेद विदोपगीतं,
यद्योगिनां योगपथानुगम्यम्।
तत्सर्ववेदं प्रणमामि दिव्यं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्॥ 12॥

हे योगियों के शुभ मार्गदर्शक!
सद्ज्ञान के आदि सञ्चारकर्त्ता।
प्रणिपात स्वीकार लो हम सभी का।
पावन बना दो हे देव सविता!॥ 12॥

अर्थात्- जो श्रेष्ठ सविता का (तेज) मण्डल वेदज्ञानियों द्वारा गेय है तथा योगियों द्वारा योग मार्ग से प्राप्तव्य है, उस सर्वज्ञ दिव्यतत्त्व को हम प्रणाम करते हैं, वह मुझे पवित्र करे।

॥अग्निप्रदीपनम्॥

अग्नि को भली प्रकार प्रज्वलित करके आहुतियाँ समर्पित करने का विधान है। हमारे जीवन का प्रत्येक क्षण सद्ज्ञान के

प्रकाश से आलोकित हो, पूर्णता की प्राप्ति के लिये जागरूक हो, ऐसी भावना से प्रत्येक कुण्ड से एक- एक परिजन पंखे से अग्नि को प्रदीप्त करें।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि
त्वमिष्टा पूर्ते स ँ सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्
विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

-15.54, 18.61

अर्थात्- हे अग्निदेव! आप जाग्रत् हों और प्रतिदिन यजमान को भी जाग्रत् करें। इस यज्ञ में यजमान के लिए इष्ट (अग्निहोत्र, वेदाध्ययन, अतिथि सत्कार आदि)अ ौरप ूर्त्त(देवालय,ध र्मशाला, चिकित्सालय आदि निर्माण) कर्मों को करने और उसका फल प्राप्त करने की स्थिति बनाएँ। आपके अनुग्रह से इस यजमान की श्रेष्ठ इच्छाओं की पूर्ति हो।हे विश्वेदेवागण! याजकों को देवताओं के

योग्य सर्वश्रेष्ठ निवास-स्थान देवलोक में चिरकाल तक निवास प्रदान करें।

॥समिधाधानम्॥

जीवन में साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा का अवलम्बन लेकर अपने अन्तःकरण चतुष्टय- मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार को शुद्ध और शक्तिसम्पन्न बनाने की प्रार्थना के साथ चार समिधाएँ यज्ञ भगवान् को समर्पित की जाती हैं। प्रत्येक कुण्ड से एक-एक परिजन समिधाओं के दोनों छोरों को घी में डुबोकर एक-एक करके स्वाहा के साथ आहुतियाँ समर्पित करें।

1 **ॐ अयन्त इध्म आत्मा**
जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व।
चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया
पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन अन्नाद्येन
समेधय स्वाहा।-आश्व.गृ.सू. 1.10

इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम।

अर्थात्- जातवेदा इध्ममान हों, बढ़ें और वृद्धि को प्राप्त होकर हमको प्रजा से, पशुओं से, ब्रह्मवर्चस से और अन्नादि से समेधित (संवर्द्धित) करें।

2 **ॐ समिधाऽग्निं दुवस्यत**
घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा।
इदं अग्नये इदं न मम॥-3.1

अर्थात्- हे ऋत्विजो! आप घृतसिक्त समिधा से (यज्ञ में) अग्नि को प्रज्वलित करें। घृत की आहुति प्रदान करके, सब कुछ आत्मसात् करने वाले अग्निदेव को प्रदीप्त करें। इसके बाद अग्नि में हवि-द्रव्य की आहुतियाँ प्रदान करें।

3 **ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे**
घृतं तीव्रं जुहोतन।

अग्नये जातवेदसे स्वाहा।
इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम॥
अर्थात्- हे ऋत्विजो! श्रेष्ठ, भली-भाँति प्रज्वलित, जाज्वल्यमान, सर्वज्ञ (जातवेद), देदीप्यमान यज्ञाग्नि में शुद्ध पिघले हुए घृत की आहुतियाँ प्रदान करें।]

4 **ॐ तं त्वा समिद्‌भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदं अग्नये अङ्गिरसे इदं न मम॥** -3.3
अर्थात्- हे अग्निदेव! हम आपको घृत और (उससे सिक्त) समिधाओं से प्रदीप्त करते हैं। हे नित्य तरुण (तेजस्वी) अग्निदेव! (घृत आहुति प्राप्त होने के बाद) आप ऊँची उठने वाली ज्वालाओं के माध्यम से प्रकाश युक्त हों।

॥जलप्रसेचनम्॥

यज्ञीय ऊर्जा का दुरुपयोग न हो, इसलिये इसकी सीमा मर्यादा निर्धारित करने के लिये जलप्रसेचन किया जाता है। प्रत्येक कुण्ड से एक-एक प्रतिनिधि प्रोक्षणी पात्र में जल भरकर, कुण्ड के बाहर मन्त्र के साथ निर्देशित दिशा में जल का घेरा बनायें।

ॐ अदितेऽनुमन्यस्व॥

(इति पूर्वे) -गो.गृ.सू. 1.3.1

ॐ अनुमतेऽनुमन्यस्व॥

(इति पश्चिमे) -गो.गृ.सू. 1.3.2

ॐ सरस्वत्यनुमन्यस्व॥

(इति उत्तरे)-गो.गृ.सू. 1.3.3

ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः, केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः

स्वदतु ॥ (इति चतुर्दिक्षु)-11.7

अर्थात्- हे अदिते! आप मुझे इस कर्म को करने की अनुमति दें।

हे अनुमते! आप इस कर्म को करने की मुझे अनुमति प्रदान करें।

हे सरस्वति देवि! मुझे आप इस कर्म को करने की अनुमति दें।

अर्थात्- हे सवितादेव! आप यज्ञीय कर्मों की प्रेरणा सभी को दें। यज्ञ-कर्म सम्पादित करने वालों को ऐश्वर्य-सम्पदा से युक्त करके सत्कर्म की ओर प्रेरित करें। (हे सवितादेव! आप) दिव्यज्ञान के संरक्षक, वाणी के अधिपति हमारे ज्ञान में पवित्रता का सञ्चार करें और हमारी वाणी में मधुरता का समावेश करें।

॥ आज्याहुतिः ॥

सर्वप्रथम घी की सात आहुतियाँ दी जाती

हैं। घी स्नेह, प्रेम का प्रतीक है। हमारा प्रेम देवत्व के प्रति हो, यज्ञीय जीवन के प्रति हो इस भाव से आहुति समर्पित करें। प्रत्येक कुण्ड से एक-एक प्रतिनिधि स्रुवा पात्र के सहारे, स्वाहा के साथ आहुति समर्पित करें, लौटाते समय घी की एक बूँद जल से भरे प्रणीता पात्र में टपकायें।

1 **ॐ प्रजापतये स्वाहा।**
इदं प्रजापतये इदं न मम॥ -18.28
अर्थात्- यह आहुति प्रजापति (प्रजापालक) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

2 **ॐ इन्द्राय स्वाहा।**
इदं इन्द्राय इदं न मम॥
अर्थात्- यह आहुति इन्द्र (श्रेष्ठता) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

3 **ॐ अग्नये स्वाहा।**

इदं अग्नये इदं न मम॥

अर्थात्- यह आहुति अग्नि (तेजस्विता) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

4 **ॐ सोमाय स्वाहा।**

इदं सोमाय इदं न मम॥ -22.27

अर्थात्- यह आहुति सोम (आह्लादकता) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

5 **ॐ भूः स्वाहा।**

इदं अग्नये इदं न मम॥

अर्थात्- यह आहुति भूः (पृथ्वी) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

6 **ॐ भुवः स्वाहा।**

इदं वायवे इदं न मम॥

अर्थात्- यह आहुति भुवः (अन्तरिक्ष) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

7 ॐ स्वः स्वाहा।

इदं सूर्याय इदं न मम॥

-गो.गृ.सू. 1.8.15

अर्थात्- यह आहुति स्वः (स्वर्ग) के लिए है, मेरे लिए नहीं है।

॥ गायत्री मन्त्राहुतिः ॥

जिस प्रकार अति सम्माननीय अतिथि को प्रेम और सम्मानपूर्वक भोजन कराया जाता है।उसी श्रद्धा, भक्ति और सम्मान से यज्ञ भगवान् को दायें हाथ की अनामिका, मध्यमा और अंगुष्ठ के सहारे, स्वाहा के साथ आहुति समर्पित करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः।

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।

धियो यो नः प्रचोदयात्, स्वाहा।

इदं गायत्र्यै इदं न मम॥ -36.3

अर्थात्- (तत्) उस (भूर्) प्राणस्वरूप, (भुवः) दुःखनाशक, (स्वः)

सुखस्वरूप, (वरेण्यं) श्रेष्ठ, (सवितुः) तेजस्वी, (भर्गः) पापनाशक, (देवस्य) देवस्वरूप, (ॐ) परमात्मा को (धीमहि) हम अन्तरात्मा में धारण करें। (यो) वह परमात्मा (नः) हमारी (धियः) बुद्धि को (प्रचोदयात्) सन्मार्ग में प्रेरित करे। यह आहुति उसी गायत्री तत्त्व को समर्पित है, मेरे लिए नहीं।

॥ महामृत्युञ्जय मन्त्राहुतिः ॥

विराट् देव परिवार से जुड़े हुये सभी परिजनों के स्वास्थ्य लाभ और आध्यात्मिक उन्नति की कामना करते हुए महामृत्युञ्जय मन्त्र से आहुति समर्पित करें।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्, स्वाहा॥ -3.60

इदं महामृत्युञ्जयाय इदं न मम॥

अर्थात्- तीनों दृष्टियों (आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक) से युक्त रुद्रदेव की हम उपासना करते हैं। वे देव, जीवन में सुगन्धि (सदाशयता) एवं पुष्टि (समर्थता) की वृद्धि करने वाले हैं, जिस प्रकार पका हुआ फल स्वयं डण्ठल से अलग हो जाता है, उसी प्रकार हम मृत्यु-भय से मुक्त हो जाएँ; किन्तु अमृतत्व से दूर न हों।

॥ स्विष्टकृत्होमः ॥

स्विष्टकृत् होम में मिष्टान्न की आहुति समर्पित की जाती है। मिष्टान्न मधुरता का प्रतीक है, जीवन में सर्वाङ्गीण-वाणी, व्यवहार और आचरण में मधुरता का समावेश हो इसी भाव से प्रत्येक कुण्ड से एक-एक प्रतिनिधि स्रुचि पात्र में मिष्टान्न और घी भर लें, स्वाहा के साथ यज्ञाग्नि

में आहुति समर्पित करें।

ॐ यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं
यद्वान्यूनमिहाकरम्।
अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात्सर्वं
स्विष्टं सुहुतं करोतु मे।
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते
सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां
कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः
कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।
इदं अग्नये स्विष्टकृते इदं न मम॥

-आश्व. गृ.सू. 1.10

अर्थात्- हे अग्निदेव! इस यज्ञ कार्य में जो भी किसी विधान का उल्लंघन हुआ हो, जो कुछ भी न्यूनता रह गयी हो, उसे इस स्विष्टकृत् आहुति से मेरे लिए सुहुत (श्रेष्ठ आहुति) बना दो। अग्निदेव के लिए यह स्विष्टकृत् आहुति भली प्रकार होम रहा हूँ। सम्पूर्ण दोषों के प्रायश्चित्त स्वरूप समर्पित की गयी यह आहुति

हमारी समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली हो; क्योंकि आप कामनाओं की पूर्ति करने में समर्थ हैं। यह स्विष्टकृत् आहुति अग्निदेव के लिए है, मेरे लिए नहीं।

॥देवदक्षिणा- पूर्णाहुतिः॥

परमात्मा पूर्ण है, हम भी पूर्ण बनें और हमारे कोई भी कार्य अधूरे न रहें, पूर्णता तक पहुँचें, साथ ही एक बुराई छोड़ने और अच्छाई ग्रहण करने के सङ्कल्प सहित पूर्णाहुति करें। प्रत्येक कुण्ड के एक-एक प्रतिनिधि स्रुचिपात्र में सुपारी/ नारियल का गोला और अन्य लोग हवन सामग्री/ नारियल का गोला लेकर अपने स्थान पर खड़े हों और मन्त्र के साथ आहुति समर्पित करें।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्
पूर्णमुदच्यते।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

-बृह. उ. 5.1.1

अर्थात्- वह (ब्रह्म) पूर्ण है, यह (संसार) पूर्ण है। उस पूर्ण ब्रह्म से प्रकट होने के कारण इस संसार को भी पूर्ण कहा जाता है। पूर्णतत्त्व में से पूर्णता ले ली जाय, तो भी वह पूर्ण ही रहता है।

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो स्वाहा॥-3.49

ॐ सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा॥

अर्थात्- हे (काष्ठ निर्मित) दर्वे! आप समीपवर्ती अन्न से पूर्ण होकर, उत्कृष्ट होती हुई इन्द्रदेव की ओर गमन करें। कर्मफल से भली-भाँति परिपूर्ण होती हुई, पुनः इन्द्रदेव के पास गमन करें। अनेक श्रेष्ठ कार्यों के सम्पादक हे इन्द्रदेव! हम दोनों निर्धारित मूल्य में इस हवि रूप अन्न रस का परस्पर

विक्रय करें। (अर्थात् हम आपको हविर्दान करें और आप हमें सु-फल प्रदान करें।) निश्चित रूप से सब कुछ पूर्णता को प्राप्त हो, इस निमित्त यह आहुति समर्पित है।

॥वसोर्धारा॥

कार्य के आरम्भ में जितनी लगन और उत्साह हो अन्त में उससे भी ज्यादा बनी रहे और जो भी यज्ञीय परमार्थ के प्रति समर्पित हों, उन पर अपने स्नेह की धार उड़ेलते रह सकें। इसी भाव से प्रत्येक कुण्ड से एक-एक प्रतिनिधि स्रुचि पात्र में घी भरकर मन्त्र के साथ धारा सतत छोड़ते रहें।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं

वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।

देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण

शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।-1.3

अर्थात्- सैकड़ों-सहस्रों धाराओं वाले आप वसुओं को पवित्र करने वाले साधन हो। सबको पवित्र करने वाले सविता, अपनी सैकड़ों धाराओं से (वसुओं को पवित्र करने वाले साधनों से) तुम्हें पवित्र बनाएँ। हे मानव / तुम और किस (कामना) की पूर्ति चाहते हो? अर्थात् किस कामधेनु को दुहना चाहते हो।

॥ नीराजनम् (आरती) ॥

आर्तभाव से की गई प्रार्थना ही आरती है। देवत्व का चतुर्दिक् गुणगान हो; ताकि सभी लोगों को उसकी श्रेष्ठता से प्रेरणा और लाभ मिल सके, देव प्रतिमाओं की आरती उतारने का यही उद्देश्य है। प्रत्येक कुण्ड से एक-एक प्रतिनिधि आरती की थाली में रखे दीप को प्रज्वलित कर, तीन बार जल घुमाकर यज्ञभगवान् और देव प्रतिमाओं की आरती उतारें। आरती

के पश्चात् पुनः तीन बार जल घुमाकर सबको आरती प्रदान करें।

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति,
परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा,
तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय॥

अर्थात्-जिसे वेदान्ती जन परब्रह्म कहते हैं तथा अन्य लोगों (सांख्यवादियों, नैयायिकों, मीमांसकों आदि) द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति के जिस परमकारण को 'परमप्रधान पुरुष' अथवा 'ईश्वर' कहा गया है, उस विघ्न-विनाशक परमात्मा को नमस्कार है।

ॐ यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः,
स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः,
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैः,
गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा,

पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः,
देवाय तस्मै नमः॥

अर्थात्- जिस (परमात्मा) की ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुद्र, मरुदादिगण दिव्य स्तोत्रों से स्तुति करते हैं। साम गान करने वाले अङ्ग, पद, क्रम और उपनिषदों सहित वेदमन्त्रों के साथ जिसका स्तवन करते हैं, जिनको योगीजन ध्यानावस्था में तन्मय होकर मन से देखा करते हैं, देवता और असुर भी जिनको नहीं जान पाते, उन देव (परमात्मा) को नमस्कार है।

॥ घृतावघ्राणम् ॥

सभी याजक प्रणीता पात्र में '**इदं न मम**' के साथ टपकाये घृत और जल को दाहिने हाथ की उँगलियों के अग्र भाग में लें, दोनों हाथ की हथेलियों में मलें, मन्त्र

के साथ यज्ञ कुण्ड की ओर रखें । बाद में गायत्री मन्त्र के साथ सूँघें और कमर के ऊपरी हिस्से में लगायें। भावना करें यज्ञीय ऊर्जा को आत्मसात् कर रहे हैं।

ॐ तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि।
ॐ आयुर्दा अग्नेऽसि आयुर्मे देहि॥
ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि, वर्चो मे देहि।
ॐ अग्ने यन्मे तन्वाऽ
ऊनन्तन्मऽआपृण॥
ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु।
ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु॥
ॐ मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां
पुष्करस्रजौ। -पा.गृ.सू. 2.4.7-8

अर्थात्-हे अग्निदेव! आप शरीर रक्षक हो, मेरे शरीर को सदैव नीरोग रखो।

अर्थात्- हे अग्ने! आप आयुष्यकारक हो, मुझे दीर्घायु बनाओ।

अर्थात्- हे अग्ने! आप वर्चस्वदायी हो, हमें वर्चस्वी बनाओ।

अर्थात्- हे अग्ने! मेरी सभी कमियों की पूर्ति कर दो।

अर्थात्- सविता देवता मुझे मेधा (बुद्धि) सम्पन्न बनायें।

अर्थात्- देवी सरस्वती मुझे मेधावान् बनायें।

अर्थात्- पुष्कर (नीलकमल) की माला धारण किए हुए अश्विनी कुमार मुझे सदैव मेधाशक्ति से युक्त रखें।

॥ भस्मधारणम् ॥

मृत्यु जीवन का एक सुनिश्चित सत्य है। वह कभी भी आ सकती है। अतः मन, वचन और कर्म से ऐसे विवेकयुक्त कार्य करें; ताकि जीवन को सार्थक बना सकें, सुरदुर्लभ मनुष्य जीवन व्यर्थ न जाये। इन्हीं भावों से यज्ञभस्म को

अनामिका उँगली में लेकर मन्त्र के साथ मस्तक, कण्ठ, भुजा और हृदय से लगायें।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे।
(मस्तक पर)

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति ग्रीवायाम्।
(कण्ठ में)

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं इति दक्षिणबाहुमूले। (दाहिने कन्धे पर)

ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं इति हृदि।
(हृदय पर) -3.62

अर्थात्-जो जमदग्नि की (बाल्य, यौवन, वृद्ध) त्रिविध आयु (तेजस्वी जीवन) है, जो कश्यप की तीन अवस्थाओं वाली आयु है तथा जो देवताओं की तीन अवस्थाएँ हैं, उसको हम प्राप्त करें।

॥ क्षमा प्रार्थना ॥

यज्ञ कार्य के विविध विधि-विधानों में कोई भूल, कमी या त्रुटि रह गई हो। किसी के प्रति अप्रिय अथवा अनुचित व्यवहार हो गया हो, तो इसके निराकरण और परिष्कार के लिये अन्तःकरण से क्षमायाचना करें।

ॐ आवाहनं न जानामि,
नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि,
क्षमस्व परमेश्वर! ॥ 1 ॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं,
भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव!
परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ 2 ॥

यदक्षरपदभ्रष्टं,
मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव!

प्रसीद परमेश्वर! ॥ 3 ॥

यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या,
तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति,
सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ 4 ॥

प्रमादात्कुर्वतां कर्म,
प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः,
सम्पूर्णं स्यादितिश्रुतिः ॥ 5 ॥

अर्थात्-हे परमेश्वर! मैं न आवाहन जानता हूँ, न पूजन और न ही विसर्जन। अतः आप मुझे (इस अज्ञानता के लिए) क्षमा करें ॥1 ॥

हे सुरेश्वर! मैं मन्त्र, क्रिया और भक्ति से हीन हूँ, हे देव! जैसा भी कुछ पूजन कृत्य कर सका, वह मेरे लिए पूर्णता प्राप्त करे, अर्थात् मुझे अपना अभीष्ट प्राप्त हो ॥2 ॥

हे देव! हे परमेश्वर! (आप मुझ पर) प्रसन्न हों। (मन्त्र बोलने में) जो भी अक्षर, पद व मात्राओं की त्रुटि हुई हो, उन सभी को क्षमा कर दें ॥3॥

तप, यज्ञ आदि क्रियाओं में जिनकी स्मृति और स्तुति मात्र से सम्पूर्ण न्यूनताएँ शीघ्र दूर हो जाती हैं, उन अच्युत् (अक्षीणता दोष से रहित! विष्णु) को मैं नमन करता हूँ ॥4॥

प्रमादवश इस यज्ञ में जो कुछ विधि-विधान का उल्लंघन हो जाता है, वह सब भगवान् विष्णु के स्मरण करने से सम्पूर्णता को प्राप्त हो जाता है, ऐसा श्रुति कहती है ॥5॥

॥साष्टाङ्गनमस्कारः॥

कण-कण में व्याप्त परमात्म सत्ता को हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर श्रद्धापूर्वक प्रणाम करें।

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये,
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

अर्थात्-हे अनन्त रूपों वाले! सहस्रों आकृतियों वाले, सहस्रों पैरों, नेत्रों, सिरों, जङ्घाओं, भुजाओं वाले, सहस्रों नामों वाले तथा सहस्रों-करोड़ों युगों को धारण (पोषण) करने वाले शाश्वत पुरुष! आपको बार-बार नमस्कार है।

॥ शुभकामना ॥

हमारे मन में किसी के प्रति द्वेष-दुर्भाव न हो, अशुभ चिन्तन किसी के लिये भी न करें। सबके कल्याण में ही अपना कल्याण निहित है। परमार्थ में ही स्वार्थ जुड़ा हुआ है। इसी भाव से सबके कल्याण के लिये, याचना की मुद्रा में प्रार्थना करें।

ॐ स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां,

न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं,
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥1॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥2॥

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां,
विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेज आयुष्यमारोग्यं,
देहि मे हव्यवाहन ॥3॥ -लौगा.स्मृ.

अर्थात्-प्रजाजनों का कल्याण हो। शासक न्यायपूर्वक धरती पर शासन करें। गो-ब्राह्मणों को नित्य प्रति शुभ की प्राप्ति हो, समस्त लोक सुखी हों ॥1॥ सभी सुखी हों। सभी नीरोग हों, सभी का कल्याण हो, कोई भी दुःख का भागी न बनें ॥2॥ हे हव्यवाहन (अग्निदेव!)

मुझे श्रद्धा, मेधा, यश, प्रज्ञा, विद्या, पुष्टि, श्री (वैभव), बल, तेजस्विता, दीर्घायु एवं आरोग्य प्रदान करें॥

॥पुष्पाञ्जलिः॥

सभी परिजन पुष्प की तरह जीवन क्रम अपनाने, देवत्व के मार्ग को अपनाने और ईश्वरीय सेवा में जीवन को लगाने का व्रत लें। देवगणों ने कृपापूर्वक यज्ञीय प्रक्रिया में जो सहयोग, मार्गदर्शन और संरक्षण दिया है। उसका आभार मानते हुये हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि समर्पित करें।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः
तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।
ॐ मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥-31.16

अर्थात्- आदिकालीन श्रेष्ठ

धर्मपरायण देवों ने यज्ञ द्वारा यज्ञ रूप विराट् का यजन किया। यज्ञीय जीवन जीने वाले (याजक) पूर्वकाल के सिद्ध, साध्यगणों तथा देवताओं के निवास महिमाशाली स्वर्गलोक को प्राप्त करते हैं।

॥ शान्ति-अभिषिञ्चनम् ॥

सभी को दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से मुक्ति मिले, सर्वत्र शान्ति ही शान्ति हो, इसी भावना से देव कलश के जल को एक प्रतिनिधि लेकर आम्रपल्लव या पुष्प के माध्यम से सबके ऊपर सिञ्चन करें।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः
शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।
सर्वारिष्टसुशान्तिर्भवतु। -36.17

अर्थात्- स्वर्ग, अन्तरिक्ष तथा पृथिवीलोक हमें शान्ति प्रदान करें। जल शान्ति प्रदायक हो, ओषधियाँ तथा वनस्पतियाँ शान्ति प्रदान करने वाली हों। सभी देवगण शान्ति प्रदान करने वाले हों। सभी देवगण शान्ति प्रदान करें। सर्वव्यापी परमात्मा सम्पूर्ण जगत् में शान्ति स्थापित करें, शान्ति भी हमें परम शान्ति प्रदान करे। त्रिविध दुःख (आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आधिआध्यात्मिक) शान्त हों। सभी अरिष्ट भली-प्रकार शान्त हों।

॥सूर्यार्घ्यदानम्॥

सविता देवता हमें ओजस्, तेजस्, वर्चस् प्रदान करें, इस भाव से कलश के बचे हुये जल से, सूर्यभगवान् को अर्घ्यदान दें।

ॐ सूर्यदेव! सहस्रांशो,

तेजोराशे जगत्पते।

अनुकम्पय मां भक्त्या,
गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥
ॐ सूर्याय नमः, आदित्याय नमः,
भास्कराय नमः।

अर्थात्-हे सहस्र किरणों वाले तेजः पुञ्ज, जगत् के स्वामी दिवाकर सूर्यदेव! मेरे ऊपर कृपा करो और भक्तिपूर्वक समर्पित इस अर्घ्यजल को स्वीकार करो।

सूर्य (सबके प्रेरक) को, आदित्य (प्रकाशवान्) को तथा भास्कर (कान्तिमान्) को नमस्कार है।

॥ प्रदक्षिणा ॥

साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा को जीवन में अपनाकर अच्छे मार्ग पर सतत चलते रहने का सङ्कल्प लेते हुये यज्ञ भगवान् की प्रदक्षिणा करें।

ॐ यानि कानि च पापानि,
ज्ञाताज्ञातकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्ति,
प्रदक्षिण पदे-पदे।

अर्थात्-जो कुछ ज्ञात-अज्ञात पाप कर्म हो गये हैं, वे सभी प्रदक्षिणा के एक-एक पद (कदम) से नष्ट हो जाते हैं।

॥ विसर्जनम् ॥

आवाहित, सम्पूजित देवताओं को एवं सम्माननीय अतिथियों का यथा सम्मान विदाई करने का विधान है। पूजा वेदियों पर एवं यज्ञ कुण्डों के बाहर अक्षत, पुष्प कि वर्षा करते हुये देवशक्तियों को गद्‍गद् भाव से विदा करें और प्रार्थना करें की ऐसा ही अनुग्रह बार-बार मिले।

ॐ गच्छ त्वं भगवन्नग्ने,
स्वस्थाने कुण्डमध्यतः।
हुतमादाय देवेभ्यः,
शीघ्रं देहि प्रसीद मे॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ,
स्वस्थाने परमेश्वर! ॥
यत्र ब्रह्मादयो देवाः,
तत्र गच्छ हुताशन! ॥
यान्तु देवगणाः सर्वे,
पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं,
पुनरागमनाय च ॥

अर्थात्-हे अग्ने! हे भगवन्! इस कुण्ड स्थान से अपने निवास स्थान पर पधारें, मेरे ऊपर प्रसन्न हों और ये आहुतियाँ देवताओं तक शीघ्र पहुँचायें। हे देवश्रेष्ठ परमेश्वर! जहाँ ब्रह्मा आदि देवता निवास कर रहे हैं, हे हुताशन! आप वहाँ पधारें। मेरे इस पूज्य भाव को लेकर हे देवगणो! पधारो, परन्तु अभीष्ट पूर्ति के लिए पुनः आने की मैं प्रार्थना करता हूँ।

गायत्री माता की आरती

जयति जय गायत्री माता,
जयति जय गायत्री माता।

आदिशक्ति तुम अलख-निरञ्जन
जग पालनकर्त्री।
दुःख-शोक-भय-क्लेश-कलह
दारिद्र्य दैन्यहर्त्री॥ जयति................॥

ब्रह्मरूपिणी प्रणत पालिनी,
जगद्धातृ अम्बे।
भवभयहारी जन-हितकारी,
सुखदा जगदम्बे॥ जयति.................॥

भय-हारिणि भव-तारिणि अनघे,
अज आनन्दराशी।
अविकारी अघहरी अविचलित,
अमले अविनाशी॥ जयति................॥

कामधेनु सत्-चित् आनन्दा,

जय गङ्गा गीता।
सविता की शाश्वती शक्ति
तुम सावित्री सीता॥ जयति.............. ॥

ऋग्, यजु, साम, अथर्व प्रणयिनी,
प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्रार सुषुम्ना,
शोभा गुण-गरिमे॥ जयति............... ॥

स्वाहा स्वधा शची ब्रह्माणी,
राधा रुद्राणी।
जय सतरूपा वाणी,
विद्या, कमला, कल्याणी॥ जयति...... ॥

जननी हम हैं, दीन-हीन,
दुःख दारिद के घेरे।
यदपि कुटिल कपटी कपूत,
तऊ बालक हैं तेरे॥ जयति............ ॥

स्नेह सनी करुणामयि माता,
चरण शरण दीजै।

बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे,
दया दृष्टि कीजै॥ जयति.................॥

काम-क्रोध मद-लोभ-दम्भ-
दुर्भाव-द्वेष हरिये।
शुद्ध बुद्धि निष्पाप हृदय,
मन को पवित्र करिये॥ जयति..........॥

तुम समर्थ सब भाँति तारिणी,
तुष्टि-पुष्टि त्राता।
सत मारग पर हमें चलाओ,
जो है सुख दाता॥ जयति................॥

जयति जय गायत्री माता,
जयति जय गायत्री माता॥

यज्ञ महिमा

यज्ञ रूप प्रभो हमारे,
भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को,
मानसिक बल दीजिए॥

वेद की बोलें ऋचाएँ,
सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे,
शोक सागर से तरें॥

अश्वमेधादिक रचाएँ,
यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर,
लाभ दें संसार को॥

नित्य श्रद्धा-भक्ति से,
यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के
सन्ताप सब हरते रहें॥

कामना मिट जाए मन से,
पाप अत्याचार की।
भावनाएँ शुद्ध होवें,
यज्ञ से नर-नारि की॥

लाभकारी हो हवन,
हर जीवधारी के लिए।
वायु-जल सर्वत्र हों,
शुभ गन्ध को धारण किए॥

स्वार्थ भाव मिटे हमारा,
प्रेम पथ विस्तार हो।
'इदं न मम' का सार्थक,
प्रत्येक में व्यवहार हो॥

हाथ जोड़ झुकाय मस्तक,
वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणारूप करुणा,
आपकी सब पर रहे॥

यज्ञ रूप प्रभो हमारे,

भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को,
मानसिक बल दीजिए॥

युग निर्माण सत्सङ्कल्प

1 हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।

2 शरीर को भगवान् का मन्दिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।

3 मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाये रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।

4 इन्द्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे।

5 अपने आपको समाज का एक अभिन्न अङ्ग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।

6 मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से

बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।

7 समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अङ्ग मानेंगे।

8 चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।

9 अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।

10 मनुष्य के मूल्याङ्कन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।

11 दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं।

12 नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।

13 संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।

14 परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।

15 सज्ञनों को सङ्गठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।

16 राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान् रहेंगे। जाति, लिङ्ग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।

17 'मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है,' इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा।

18 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

॥जयघोष॥

1 गायत्री माता की- जय।

2 यज्ञ भगवान् की- जय।

3 वेद भगवान् की- जय।

4 भारत माता की- जय।

5 भारतीय संस्कृति की- जय।

6 एक बनेंगे- नेक बनेंगे।

7 हम सुधरेंगे- युग सुधरेगा।

8 हम बदलेंगे- युग बदलेगा।

9 ज्ञान यज्ञ की लाल मशाल-
सदा जलेगी-सदा जलेगी।

10 ज्ञान यज्ञ की ज्योति जलाने-
हम घर-घर में जायेंगे।

11 नया सबेरा नया उजाला-
इस धरती पर लायेंगे।

12 नया समाज बनायेंगे-
नया जमाना लायेंगे।
13 जन्म जहाँ पर-हमने पाया।
14 अन्न जहाँ का- हमने खाया।
15 वस्त्र जहाँ के- हमने पहने।
16 ज्ञान जहाँ से- हमने पाया।
17 वह है प्यारा-देश हमारा।
18 देश की रक्षा कौन करेगा-
हम करेंगे, हम करेंगे।
19 युग निर्माण कैसे होगा-
व्यक्ति के निर्माण से।
20 माँ का मस्तक ऊँचा होगा-
त्याग और बलिदान से।
21 नित्य सूर्य का ध्यान करेंगे-
अपनी प्रतिभा प्रखर करेंगे।
22 मानव मात्र-एक समान।
23 जाति वंश सब-एक समान।
24 नर और नारी-एक समान।
25 नारी का सम्मान जहाँ हैं-

संस्कृति का उत्थान वहाँ है।
26 जागेगी भाई जागेगी-
नारी शक्ति जागेगी।
27 धर्म की-जय हो।
28 अधर्म का-नाश हो।
29 प्राणियों में-सद्‌भावना हो।
30 विश्व का-कल्याण हो।
31 विचार क्रान्ति अभियान-
सफल हो, सफल हो, सफल हो।
32 हमारी युग निर्माण योजना-
सफल हो, सफल हो, सफल हो।
33 हमारा युग निर्माण सत्सङ्कल्प-
पूर्ण हो, पूर्ण हो, पूर्ण हो।
34 इक्कीसवीं सदी- उज्ज्वल भविष्य।
35 वन्दे- वेद मातरम्।(तीन बार)

॥देव-दक्षिणा-श्रद्धाञ्जलि॥

यज्ञ आयोजन में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ भगवान् के-देवताओं के प्रति

श्रद्धा-दक्षिणा के रूप में अपनी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक दुष्प्रवृत्तियों में से कोई एक छोड़ने का अनुरोध करना चाहिए। कहना चाहिए कि देवता किसी की श्रद्धा-भक्ति इसी आधार पर परखते हैं कि उनने कुमार्ग छोड़ने और सन्मार्ग अपनाने के लिए कितना साहस दिखाया। यह साहस ही वह धन है, जिसके आधार पर देव शक्तियों की प्रसन्नता एवं अनुकम्पा प्राप्त की जा सकती है। इस अवसर पर जबकि सभी देवता उपस्थित हुए हैं, सभी उपस्थित सज्जनों को उन्हें कुछ भेंट प्रदान करनी चाहिए। खाली हाथ स्वागत और विदाई नहीं करनी चाहिए। त्याज्य दुष्प्रवृत्तियों में से कुछ का उल्लेख यहाँ किया गया है।

त्यागने योग्य दुष्प्रवृत्तियाँ

1 चोरी, बेईमानी, छल, मुनाफाखोरी, हराम की कमाई, मुफ्तखोरी आदि। अनीति से दूर रहना, अनीति से उपार्जित धन का उपयोग न करना।

2 मांसाहार तथा मारे हुए पशुओं के चमड़े का प्रयोग बन्द करना।

3 पशुबलि या दूसरों को कष्ट देकर अपना भला करने की प्रवृत्ति छोड़ना।

4 विवाहों में वर पक्ष द्वारा दहेज लेने तथा कन्या पक्ष द्वारा जेवर चढ़ाने का आग्रह न करना।

5 विवाहों की धूमधाम में धन की और समय की बर्बादी न करना।

6 नशे (तम्बाकू, शराब, भाँग, गाँजा, अफीम आदि) का त्याग।

7 गाली-गलौज एवं कटु भाषण का त्याग।

8 जेवर और फैशनपरस्ती का त्याग।

9 अन्न की बर्बादी और जूठन छोड़ने की आदत का त्याग।

10 जाति-पाँति के आधार पर ऊँच-नीच, छूत-छात न मानना।

11 पर्दाप्रथा का त्याग, किसी को पर्दा करने के लिए बाध्य न करना।

12 महिलाओं एवं लड़कियों के साथ पुरुषों और लड़कों की तुलना में भेदभाव या पक्षपात न करना आदि।

शक्तिपीठों की दैनिक पूजा

गायत्री शक्तिपीठों में मातृशक्ति की प्रतिमाएँ स्थापित हैं। अस्तु, उनकी नियमित पूजा-अर्चा का क्रम चलता है। इसके लिए यह पद्धति दी जा रही है। युग निर्माण अभियान के अन्तर्गत अपनाये गये हर कर्मकाण्ड के प्रति यह दृष्टि बराबर बनाकर रखी गयी है कि उसका कलेवर छोटा होते हुए भी उसका प्रभाव अद्‌भुत ही रहा है।

दैनिक पूजा-अर्चा में भी यही दृष्टि जीवन्त रखी जानी है। प्रतीक पूजा मनोविज्ञान सम्मत ही नहीं, उसका एक अपना विधान भी है। प्रतीक से भावना में उभार आता है और प्रखर भावना के संघात से, प्रतीक से सम्बद्ध दिव्यसत्ता प्रस्फुटित-प्रकट हुए बिना रह नहीं पाती। जहाँ पूजा आराधना करने वाले

भावनाशील होते हैं, वहाँ मूर्ति में दिव्यता उभर आती है। मीराबाई और श्रीरामकृष्ण परमहंस के उदाहरण सर्वविदित हैं। इसलिए भारतीय संस्कृति में प्रतीक पूजा के साथ भाव भरे पूजन आराधन को अनिवार्य रूप से जोड़कर रखा गया है। शक्तिपीठों में पूजा-उपचार थोड़े ही हों, पर नियमित और भावपूर्ण हों, तो उसका प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है। उस स्थिति में पूजा-उपचार मात्र औपचारिकता या शिष्टाचार तक ही सीमित नहीं रहते; वरन् एक प्रभावशाली साधना प्रक्रिया के रूप में प्रयुक्त और फलित होते हैं। शक्तिपीठों में इस साधना क्रम को भी समुचित महत्त्व दिया जाना आवश्यक है। देवालयों में पूजन के संक्षिप्त एवं विस्तृत अनेक क्रम चलते हैं। गायत्री शक्तिपीठों के सामान्य कर्मकाण्ड का भावभरा पूजन- क्रम नीचे दिया जा रहा है-

जागरण-

प्रातः मन्दिर के पट खोलकर रात्रि में डाला गया प्रतिमा आवरण हटाने के पूर्व उन्हें जगाने का विधान है। यह ठीक है कि वह परम चेतना कभी सोती नहीं; किन्तु यह भी सत्य है कि उन घट-घटवासी को जब तक अपने अन्दर जाग्रत् न किया जाए, तब तक उसका प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई नहीं देगा। मन मन्दिर हो या देव मन्दिर-महाशक्ति का विशिष्ट अनुग्रह पाने की आकांक्षा रखने वाले को उसे जाग्रत् करने की प्रक्रिया भी निभानी पड़ती है।

जागरण क्रम में पुजारी पहले पवित्रीकरण आदि षट्कर्म करें। उसके बाद ताली या छोटी घण्टी बजाते हुए नीचे दिया हुआ मन्त्र बोलते हुए आवरण आदि हटाएँ।

ॐ उत्तिष्ठ त्वं महादेवि!
उत्तिष्ठ जगदीश्वरि !
उत्तिष्ठ वेदमातस्त्वं,
त्रैलोक्यमङ्गलं कुरु॥

अर्थात्- समस्त ज्ञान की जननी (वेदमाता), सम्पूर्ण विश्व की स्वामिनी हे महादेवि! उठिए एवं सम्पूर्ण त्रिलोकी का मङ्गल कीजिए।

ॐ देवि ! प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि ! चराचरस्य॥
वमीश्वरी देवि ! चराचरस्य॥
विद्याः समस्तास्तव देविभेदाः,
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्,
का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः॥
विश्वेश्वरि ! त्वं परिपासि विश्वं,

विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति,
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः॥

- मा.पु. 88.2,5,33।

शुद्धिकरण-

परमात्मा को पवित्रता प्रिय है, उसका प्रवाह सदा पावन-पवित्र माध्यमों से होता है। अतः सम्बद्ध स्थल, मन्दिर, प्रतीक मूर्ति एवं साधन, व्यक्तित्व सभी को निर्मल रखने की परम्परा है। इस दायित्व को स्मरण रखते हुये मूर्तिकक्ष एवं मूर्ति की स्वच्छता भावनापूर्वक की जानी चाहिये। नीचे लिखे मन्त्र के साथ क्रिया करते रहें।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः
ता नऽ ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे।
ॐ यो वः शिवतमो रसः

तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः।
ॐ तस्मा ऽअरङ्गमाम वो
यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः।-11.50-52।

अर्थात्- जल समूह! आप सुख के मूल स्रोत हैं। अतः आप पराक्रम से युक्त,उत्तम दर्शनीय कार्य करने के लिये हमें परिपुष्ट करें। हे जल समूह! आपका सबसे कल्याणप्रद जो रस यहाँ विद्यमान है, उस रस के पान में हमें वैसे ही शामिल करें, जैसे वात्सल्य से युक्त माताएँ अपने शिशुओं को कल्याणकारी दुग्ध रस से पुष्ट करती हैं। हे जल समूह! आपका वह कल्याणप्रद रस पर्याप्त रूप में हमें प्राप्त हो। जिस रस से आप सम्पूर्ण विश्व को तृप्त करते हैं, और जिस के कारण आप हमारे उत्पत्ति हैं, निमित भूत हैं, ऐसे जनोपयोगी अपने गुणों से हमें अभिपूरित करें।

॥षोडशोपचारपूजन॥

ॐ श्री गायत्रीदेव्यै नमः।

आवाहयामि, स्थापयामि॥ 1॥

आसनं समर्पयामि॥2॥

पाद्यं समर्पयामि॥ 3॥

अर्घ्यं समर्पयामि॥ 4॥

आचमनं समर्पयामि॥ 5॥

स्नानं समर्पयामि॥6॥

वस्त्रं समर्पयामि॥ 7॥

यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥ 8॥

गन्धं विलेपयामि॥ 9॥

अक्षतान् समर्पयामि॥ 10॥

पुष्पाणि समर्पयामि॥ 11॥

धूपं आघ्रापयामि॥12॥

दीपं दर्शयामि॥ 13॥

नैवेद्यं निवेदयामि॥ 14॥

ताम्बूलपूगीफलानि समर्पयामि॥15॥

दक्षिणां समर्पयामि॥16॥

सर्वाभावे अक्षतान् समर्पयामि।

ततो नमस्कारं करोमि-

ॐ स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्। -अथर्व. 19.71.1

अर्थात्- हम साधकों द्वारा स्तुत (पूजित) हुई, अभीष्ट फल प्रदान करने वाली, वेदमाता (गायत्री) द्विजों को पवित्रता और प्रेरणा प्रदान करने वाली हैं। आप हमें दीर्घ जीवन, प्राणशक्ति, सुसन्तति, श्रेष्ठ पशु (धन), कीर्ति, धन-वैभव और ब्रह्मतेज प्रदान करके ब्रह्मलोक के लिए प्रस्थान करें।

॥ अर्घ्य ॥

ॐ तापत्रय हरं दिव्यं,
परमानन्दलक्षणम्।
नमस्तुभ्यं जगद्धात्रि !

अर्घ्यं नः प्रतिगृह्यताम्॥

अर्थात्- हे जगज्जननि! हम आपको प्रणाम करते हैं। परम आनन्द स्वरूप दैहिक, दैविक, भौतिक तापों को दूर करने वाले हमारे इस अर्घ्य को ग्रहण कीजिये।

॥नैवेद्य॥

ॐ सत्पात्रसिद्धं नैवेद्यं,
विविधभोज्यसमन्वितम्।
निवेदयामि देवेशि,
सानुगायै गृहाण तत्॥

अर्थात्- विभिन्न भोज्य पदार्थों से युक्त, श्रेष्ठ पवित्र पात्रों में सिद्ध किया हुआ (पकाया हुआ) यह नैवेद्य है। हे देवपूज्ये! आपके अनुचरों सहित आपको समर्पित करते हैं। कृपया इसे ग्रहण कीजिए।

॥आचमन॥

ॐ वेदानामपि वेद्यायै,

देवानां देवतात्मने।
मया ह्याचमनं दत्तं,
गृहाण जगदीश्वरि!॥

अर्थात्- वेदों द्वारा भी अवेद्य, देवताओं द्वारा सम्पूज्य, त्रैलोक्य की अधीश्वरि! हमारे द्वारा दिये गये आचमन रूप जल को ग्रहण कीजिए।

॥पुष्पाञ्जलि॥

सभी परिजन पुष्प की तरह जीवन क्रम अपनाने, देवत्व के मार्ग को अपनाने एवं ईश्वरीय सेवा में जीवन को लगाने का व्रत लें। देवगणों ने कृपापूर्वक यज्ञीय प्रक्रिया में जो सहयोग मार्गदर्शन संरक्षण दिया है, उसका आभार मानते हुए हाथ में अक्षत पुष्प लेकर पुष्पाञ्जलि समर्पित करें।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः
तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ -31.16
ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो
विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैः
द्यावाभूमी जनयन् देवऽ एकः ॥
ॐ मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

॥ शयन ॥

रात्रि में देव प्रतिमाओं को शयन कराने की परम्परा है। तदनुसार पर्दा डालकर आवश्यक आच्छादन प्रतिमा पर चढ़ाकर नीचे लिखे मन्त्र से शयन की प्रार्थना की जाए।

ॐ इमां पूजां मया देवि !
यथाशक्त्युपपादिताम्।
शयनार्थं महादेवि ! व्रज
स्वस्थानमुत्तमम् ॥

अर्थात्- हे महादेवि! यथाशक्ति

हमारे द्वारा सम्पादित पूजा को ग्रहण कीजिए तथा रात्रि शयन के लिए अभीष्ट उत्तम स्थान पर पधारिए।

विशिष्ट कलश-पूजन

॥ कलशस्थापन ॥

सूत्र सङ्केत-

कलश की स्थापना और पूजा लगभग प्रत्येक कर्मकाण्ड में की जाती है। सामान्य रूप से कलश पहले से तैयार रखा रहता है और पूजन क्रम में उसका पूजन करा दिया जाता है। यदि कहीं इस प्रकरण का विस्तार करना आवश्यक लगे, तो स्थापना के लिए नीचे दिये गये पाँच उपचार कराये जाते हैं। यह उपचार पूर्ण होने पर कलश प्रार्थना करके आगे बढ़ा जाता है। यह विस्तृत कलश स्थापन, प्राण प्रतिष्ठा, गृह प्रवेश, गृह शान्ति, नवरात्र जैसे प्रकरणों में जोड़ा जा सकता है। बड़े यज्ञों में देव पूजन के पूर्व प्रधान कलश अथवा पञ्च वेदिकाओं के पाँचों कलशों पर एक साथ यह उपचार कराये जा सकते हैं।

स्थापना प्रसङ्ग के लिए रँगा हुआ कलश,उसके नीचे रखने का घेरा (ईडली), अलग पात्र में शुद्ध जल, कलावा, मङ्गल द्रव्य, नारियल पहले से तैयार रखने चाहिए।

शिक्षण एवं प्रेरणा-

कलश को सभी देव शक्तियों, तीर्थों आदि का संयुक्त प्रतीक मानकर,उसे स्थापित-पूजित किया जाता है। कलश को यह गौरव मिला है, उसकी धारण करने की क्षमता-पात्रता से। घट स्थापन के साथ स्मरण रखा जाना चाहिए कि हर व्यक्ति,हर क्षेत्र, हर स्थान में धारण करने की अपनी क्षमता होती है। उसे सजाया-सँवारा जाना चाहिए। उसके लिए उपयुक्त आधार दिया जाना चाहिए।

पात्र में पवित्र जल भरते हैं। श्रद्धा और पवित्रता से भरी-पूरी पात्रता ही

धन्य होती है। उसमें मङ्गल द्रव्य डालते हैं। पात्रता को मङ्गलमय गुणों से विभूषित किया जाना चाहिए। कलावा बाँधने का अर्थ है-पात्रता को आदर्शवादिता से अनुबन्धित करना। नारियल-श्रीफल, सुख-सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। उसकी स्थापना का तात्पर्य है कि ऐसी व्यवस्थित पात्रता पर ही सुख-सौभाग्य स्थिर रहते हैं।

क्रिया और भावना-

पाँचों उपचार एक-एक करके मन्त्रों के साथ सम्पन्न करें, उनके अनुरूप भावना सभी लोग बनाये रखें।

1 **घटस्थापन-** मन्त्रोच्चार के साथ कलश को निर्धारित स्थान या चौकी आदि पर स्थापित करें। भावना करें कि अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र की पात्रता प्रभु चरणों में स्थापित कर रहे हैं।

ॐ आजिघ्र कलशं
मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः।
पुनरूर्जा निवर्त्तस्व सा नः
सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती
पुनर्मा विशताद्रयिः।-8.42

अर्थात्- हे महिमामयी गौ! आप इस कलश (यज्ञ से उत्पन्न पोषण युक्त मण्डल) को सूँघे (वायु के माध्यम से ग्रहण करें), इसके सोमादि पोषक तत्त्व आपके अन्दर प्रविष्ट हों। उस ऊर्जा को पुनः सहस्रों पोषक धाराओं द्वारा हमें प्रदान करें। हमें पयस्वती (दुग्ध, गौओं के पोषक-प्रवाहों) एवं ऐश्वर्य आदि की पुनः-पुनः प्राप्ति हो।

2 **जलपूरण-** मन्त्रोच्चार के साथ सावधानी से शुद्ध जल कलश में भरें। भावना करें कि समर्पित

पात्रता का खालीपन श्रद्धा-संवेदना से, तरलता-सरलता से लबालब भर रहा है।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋ सदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥-4.36

अर्थात्- हे काष्ठ उपकरण! आप वरुण रूपी सोम की उन्नति करने वाले हों। हे शम्ये! आप वरुण देव की गति को स्थिर करें। (उदुम्बर काष्ठ निर्मित हे आसन्दे!) आप यज्ञ में वरुण (रूपी बँधे हुए सोम) के आसन स्वरूप हैं। आसन्दी पर बिछे हुए हे कृष्णाजिन्! आप वरुण रूपी सोम के यज्ञ-स्थान हैं। वस्त्र में बँधे हुए वरुण (रूपी सोम!) के आसन स्वरूप इस कृष्णाजिन् पर सुखपूर्वक आसन ग्रहण करें।

3 **मङ्गलद्रव्यस्थापन-** मन्त्र के साथ कलश में दूर्वा-कुश, पूगीफल-सुपारी, पुष्प और पल्लव डालें। भावना करें कि स्थान और व्यक्तित्व में छिपी पात्रता में दूर्वा जैसी जीवनी शक्ति, कुश जैसी प्रखरता, सुपारी जैसी गुणयुक्त स्थिरता, पुष्प जैसा उल्लास तथा पल्लवों जैसी सरलता, सादगी का सञ्चार किया जा रहा है।

ॐ त्वां गन्धर्वा ऽ अखनँस्त्वां
इन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा
विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥ - 12.98

अर्थात्- हे ओषधे! गन्धर्वों (ओषधि गुणों को पहचानने वाले) ने आपका खनन किया, इन्द्रदेव और बृहस्पतिदेव (परम वैभव सम्पन्न और वेदवेत्ता विद्वान्) ने आपका खनन किया, तब ओषधिपति सोम

ने आपकी उपयोगिता को जानकर क्षय रोग को दूर किया।

4 **सूत्रवेष्टन-** मन्त्र के साथ कलश में कलावा लपेटें। भावना करें कि पात्रता को अवाञ्छनीयता से जुड़ने का अवसर न देकर उसे आदर्शवादिता के साथ अनुबन्धित कर रहे हैं, ईश अनुशासन में बाँध रहे हैं।

ॐ सुजातो ज्योतिषा
सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ँ
सं व्ययस्व विभावसो॥ -11.40

अर्थात्- हे अग्निदेव! आप तेजयुक्त ज्वालाओं से विधिवत् प्रज्वलित होकर, श्रेष्ठ सुखप्रद यज्ञ वेदिका को सुशोभित करें। हे कान्तिमान् अग्ने! आप अपनी विशिष्ट आभा से वस्त्रों की भाँति जगत् को भली प्रकार

धारण करें अर्थात् पृथिवी का आवरण बनकर उसकी सुरक्षा करें।

5 **नारिकेल संस्थापन-** मन्त्र के साथ कलश के ऊपर नारियल रखें। भावना करें कि इष्ट के चरणों में समर्पित पात्रता सुख-सौभाग्य की आधार बन रही है। यह दिव्य कलश जहाँ स्थापित हुआ है, वहाँ की जड़-चेतना सारी पात्रता इन्हीं संस्कारों से भर रही है।

ॐ याः फलिनीर्या ऽ
अफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो
मुञ्चन्त्व ँ हसः। -12.89

अर्थात्- फलों से युक्त, फलों से रहित, पुष्पयुक्त तथा पुष्परहित ऐसी ये सभी ओषधियाँ विशेषज्ञ, वैद्य द्वारा प्रयुक्त होती हुई हमें रोगों

से मुक्ति दिलाएँ। तत्पश्चात् **ॐ मनोजूतिर्जुषताम्...** *(मन्त्र पेज 40 से)* (दोनों हाथ लगाकर) प्रतिष्ठा करें। बाद में **ॐ तत्त्वायामि...***(मन्त्र पेज 39 से)* मन्त्र का प्रयोग करते हुए पञ्चोपचार पूजन करें और **ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः ...** *(मन्त्र पेज 41 से)* इत्यादि मन्त्रों से प्रार्थना करें।

सर्वतोभद्र वेदिका पूजन

सर्वतोभद्र मण्डल पर निम्न मन्त्रों के साथ 33 देवताओं का श्रद्धा -भक्तिपूर्वक आवाहन करना चाहिए। प्रत्येक देवता के आवाहन के साथ निर्धारित वर्ग पर अक्षत, पुष्प, सुपारी चढ़ाते रहना चाहिए।

नोट- पुस्तक के प्रारम्भ में लघुसर्वतोभद्र का चित्र दिया गया है, उसी के अनुसार निर्धारित नम्बरों पर पूजन करें।

1 गणेश (विवेक) पीला

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्। ॐ गणपतये नमः। आवाहयामि,

स्थापयामि, ध्यायामि ॥ -23.19

अर्थात्- जो अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति के लिए देवताओं-दैत्यों द्वारा पूजे गये हैं और सम्पूर्ण विघ्नों को समाप्त कर देने वाले हैं, उन गणाधिपति (प्रमथादि गणों के स्वामी) को नमस्कार है।

2 गौरी (तपस्या) हरा

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्
मातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥
ॐ गौर्यै नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि ॥ -3.6

अर्थात्- सभी का सब प्रकार से मङ्गल करने वाली शिवा (कल्याण-कारिणि)! सभी कार्यों को पूर्ण करने वाली, शरणदात्री, त्रिनेत्रधारिणी, गौरी, नारायणी देवि! (महादेवि) आपको नमस्कार है।

3 ब्रह्मा (निर्माण) लाल

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि
सीमतः सुरुचो वेनऽआवः।
स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य
विष्ठाःसतश्च योनिमसतश्च वि वः॥
ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥ -13.3

अर्थात्- सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मरूप में परमात्म शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ, वही शक्ति समस्त ब्रह्माण्ड में व्यवस्था रूप में व्याप्त हुई। यही कान्तिमान् ब्रह्म (सूर्यादि) विविध रूपों में स्थित अन्तरिक्षादि विभिन्न लोकों को तथा व्यक्त जगत् एवं अव्यक्त जगत् को प्रकाशित करते हैं।

4 विष्णु (ऐश्वर्य) सफेद

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे

पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा। ॐ विष्णवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ - 5.15

अर्थात्- हे विष्णुदेव! आप अपना सर्वव्यापी प्रथम पद पृथ्वी में, द्वितीय पद अन्तरिक्ष में तथा तृतीय पद द्युलोक में स्थापित करते हैं। भू लोक आदि आपके पद-रज में अन्तर्निहित हैं। आप सर्वव्यापी विष्णुदेव को यह आहुति दी जाती है।

5 रुद्र (दमन) लाल

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतो
तऽ इषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः॥
ॐ रुद्राय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -16.1

अर्थात्- हे रुद्रदेव (दुष्टों को रुलाने वाले) ! आपके मन्यु

(अनीति-दमन के लिए क्रोध) के प्रति हमारा नमस्कार है। आपके बाणों के लिए हमारा नमस्कार है। आपकी दोनों भुजाओं के लिए हमारा नमस्कार है।

6 गायत्री (ऋतम्भरा प्रज्ञा) पीला

ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप् पङ् क्त्या सह। बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा॥
ॐ गायत्र्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -23.33

अर्थात्-(हे यज्ञाग्ने)! गायत्री छन्द, त्रिष्टुप् छन्द, जगती छन्द, अनुष्टुप् छन्द, पंक्ति छन्द सहित बृहती छन्द, उष्णिक् छन्द एवं ककुप् छन्द आदि सूचियों के माध्यम से आपको शान्त करें।

7 सरस्वती बुद्धि (शिक्षा) लाल

ॐ पावका नः सरस्वती
वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः।
ॐ सरस्वत्यै नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥ -20.84

अर्थात्-सबको पवित्रता प्रदान करने वाली, अन्न के द्वारा यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों को सम्पादित करने वाली देवी सरस्वती हमारे यज्ञ को धारण करें तथा हमें अभीष्ट वैभव प्रदान करें।

8 लक्ष्मी (समृद्धि) सफेद

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो
रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ
व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽ
इषाण सर्वलोकं मऽ इषाण।
ॐ लक्ष्म्यै नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥ -31.22

अर्थात्- हे प्रकाश स्वरूप परमात्मन् ! श्री (सम्पत्ति) और लक्ष्मी (शोभा) दोनों आपकी पत्नी स्वरूपा हैं, रात्रि और दिन दोनों भुजाएँ हैं एवं नक्षत्र आपके रूप हैं। द्युलोक एवं पृथ्वी आपके मुख सदृश हैं। अपनी इच्छा शक्ति से सबकी इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हे ईश्वर! हमारी उत्तम लोकों की प्राप्ति की इच्छा पूर्ति के लिए आप कृपा करें।

9 दुर्गा शक्ति (संगठन) लाल

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोमं अरातीयतो नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ ॐ दुर्गायै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -ऋग्वेद 1.99.1

अर्थात्-हम सर्वज्ञ अग्निदेव के लिए

सोम-सवन करें। वे अग्निदेव हमारे शत्रुओं के सभी धनों को भस्मीभूत करें। नाव द्वारा नदी से पार कराने के समान वे अग्निदेव हमें सम्पूर्ण दुःखों से पार लगाएँ और पापों से रक्षित करें।

10 पृथ्वी (क्षमा) सफेद

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः।

ॐ पृथिव्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ - 8.32

अर्थात्-महान् द्युलोक और पृथिविलोक, स्वर्ण-रत्नादि, धन-धान्यों से परिपूर्ण वैभव द्वारा हमारे इस श्रेष्ठ कर्मरूपी यज्ञ को सम्पन्न करें तथा उसे संरक्षित करें।

11 अग्नि (तेजस्विता) पीला

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्
देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा
द्वेषा ँ सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्।
ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥ -21.3

अर्थात्- हे अग्निदेव! आप सर्वज्ञ, कान्तिमान्, पूजनीय और भली प्रकार आहुतियों को देवों तक पहुँचाने वाले हैं। आप हमारे लिए वरुण देवता को प्रसन्न करें और हमारे सब प्रकार के अनिष्टों को दूर करें।

12 वायु (गतिशीलता) सफेद

ॐ आ नो नियुद्भिः
शतिनीभिरध्वर ँ सहस्रिणीभिरुप
याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने
मादयस्व यूयं पात

स्वस्तिभिः सदा नः।

ॐ वायवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -27.28

अर्थात्- हे वायो! आप सैकड़ों-हजारों अश्वों द्वारा खींचे जाते हुए वाहनों पर आरूढ़ होकर अर्थात् तीव्र गति से हमारे इस यज्ञ में पधारें और इसके सेवन से स्वयं तृप्त हों तथा हम सबको भी हर्षित करें। आप अपने कल्याणकारी साधनों द्वारा हमारी सदा रक्षा करें।

13 इन्द्र (व्यवस्था) लाल

**ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ\
हवे हवे सुहवँ शूरमिन्द्रम्।\
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रँ\
स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥**

ॐ इन्द्राय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -20.50

अर्थात्-हम रक्षा करने वाले इन्द्रदेव का आवाहन करते हैं। पालन करने वाले इन्द्रदेव का यज्ञ में बार-बार आवाहन करते हैं। पराक्रमी इन्द्रदेव का उत्तम रीति से आवाहन करते हैं। अत्यन्त समर्थ, अनेकों द्वारा स्तुति किये जाते हुए इन्द्रदेव का आवाहन करते हैं। वे ऐश्वर्यवान् इन्द्रदेव हमारा कल्याण करें।

14 यम (न्याय) सफेद

ॐ सुगन्नुपन्थां प्रदिशन्नऽएहि ज्योतिष्मध्येह्यजरन्नऽआयुः। अपैतु मृत्युममृतं मऽआगात्वैवस्वतोनो ऽ अभयं कृणोतु। ॐ यमाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥

अर्थात्- सुगम मार्ग में प्रवेश करते हुए हमारे समीप आइये। हमारी

आयु क्षीण न हो। विवस्वान् के पुत्र वे यमाचार्य हमसे मृत्यु को दूर करें, अमृतत्व से हमें संयुक्त करते हुए निर्भय करने की कृपा करें।

15 कुबेर (मितव्ययिता) काला

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने
नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यम्।
कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय
वैश्रवणाय महाराजाय नमः।
ॐ कुबेराय नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥

-तै.आ.1.31

अर्थात्-विश्रवा-महर्षि के आत्मज, राजाधिराज कुबेर महाराज को हम नमस्कार करते हैं, जो बलपूर्वक जिसे चाहें, उसे अपने कोष की वर्षा से तृप्त करा सकते हैं। समस्त

कामनाओं को पूर्ण करने वाले वे हमारी श्रेष्ठ कामनाओं को पूर्ण करने की कृपा करें।

16 अश्विनीकुमार (आरोग्य) पीला

ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन
सरस्वती वीर्यम्।
वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।
ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि,
ध्यायामि॥ -20.80

अर्थात्-याजकों का कल्याण करने के लिए दोनों अश्विनीकुमारों ने स्वतेज से नेत्र ज्योति, देवी सरस्वती ने प्राण के साथ पराक्रम और इन्द्रदेव ने वाणी की सामर्थ्य के साथ इन्द्रिय-बल प्रदान किया।

17 सूर्य (प्रेरणा) काला

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो

निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो
याति भुवनानि पश्यन्॥
ॐ सूर्याय नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥

-33.43, 34.31

अर्थात्- उषाकाल की रश्मियों रूपी स्वर्णिम रथ पर आरूढ़ सविता देव गहन तमिस्रा युक्त अन्तरिक्ष-पथ में भ्रमण करते हुए देवों और मनुष्यों को यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों में नियोजित करते हैं। वे समस्त लोकों का निरीक्षण करते हुए निकलते हैं अर्थात् उन्हें प्रकाशित करते हैं।

18 चन्द्रमा (शान्ति) लाल

ॐ इमं देवाऽ असपत्न ँ सुवध्वं
महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते
जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय।

इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽ एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा। ॐ चन्द्रमसे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -9.40

अर्थात्-हे देवगण! महान् क्षात्रबल के सम्पादन के लिए, महान् राज्य पद के लिए, श्रेष्ठ जनराज्य के लिए, इन्द्रदेव के समान हर प्रकार से विभूतिवान् बनने के लिए, शत्रुओं से रहित अमुक पिता के पुत्र, अमुक माता के पुत्र को प्रजा-पालन के लिए अभिषिक्त करें। हे प्रजाजनो! आप सभी के लिए तथा हम ज्ञानी जनों के लिए भी यह राजा चन्द्र के समान आह्लादक है।

19 मङ्गल (कल्याण) सफेद

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः

पृथिव्याऽ अयम्। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति। ॐ भौमाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -3.12

अर्थात्- यह अग्निदेव! (आदित्य रूप में) द्युलोक के शीर्ष रूप सर्वोच्च भाग में विद्यमान होकर, जीवन का सञ्चार करके, धरती का पालन करते हुए, जल में जीवनी शक्ति का सञ्चार करते हैं।

20 बुध (सन्तुलन) हरा

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -15.54

अर्थात्-हे अग्निदेव! आप जाग्रत् हों

और प्रतिदिन यजमान को भी जागरूक करें। आप 'इष्टापूर्त (यज्ञ-यागादिक पुण्य कार्य तथा कुआँ खोदना तालाब आदि बनाना) कार्यों के साथ यजमान से संयुक्त हों। आपकी कृपा से यजमान भी 'इष्टापूर्त' के कार्यों से युक्त हो। इस यज्ञ में यजमान के साथ सुसंगत हों। हे विश्वेदेवा! आपके सम्बन्ध से इष्टापूर्त्त कार्यों से निष्पाप हुआ यजमान देवताओं के योग्य सर्वश्रेष्ठ स्थान देवलोक में चिरकाल तक निवास करे।

21 बृहस्पति (अनुशासन) पीला

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो
अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात
तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

उपयामगृहीतोसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा। ॐ बृहस्पतये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥

-ऋ.2.23.15, 26.3

अर्थात्-हे बृहस्पते! जिस आत्मशक्ति से आप सबके स्वामी, पूज्य और सभी लोगों में आदित्य के समान तेजस्वी एवं सक्रिय होकर सर्वत्र सुशोभित होते हैं, जिस शक्ति से आप सबकी रक्षा करते हैं, उसी आत्मशक्ति से आप हम सब मनुष्यों को श्रेष्ठ धन प्रदान करें। आप राष्ट्र के निर्धारित नियमों द्वारा स्वीकार किये गये हैं। यह पद आपके योग्य है। अतः हम सब बृहस्पति पद के लिए आप को चुनते हैं।

22 शुक्र (संयम) हरा

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा

व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धसइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -19.75

अर्थात्-वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों के साथ प्रजापति, परिस्रुत हुए (निचोड़े हुए) अन्नों के रस में से सोमरसरूपी दुग्ध को पृथक् करके पान करते हैं और क्षात्रबल को धारण करते हैं। उक्त (ऋत) सत्य से ही (अगला) सत्य प्रकट होता है। यह अन्न रसरूप सोम, बल, अन्न, तेज (वीर्य), सामर्थ्य दुग्धादि पेय, अमृतोपम आनन्द और मधुर पदार्थ को उपलब्ध कराता है।

23 शनिश्चर (तितिक्षा) लाल

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः। ॐ शनिश्चराय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -36.12

अर्थात्-दिव्य जल हम सबके लिए अभीष्ट फलदायक तथा तृप्तिदायक बने। वह हमारे रोगों के शमन तथा अनिष्ट हटाने के लिए बरसता रहे। इस प्रकार हमारा सब प्रकार से कल्याण करे।

24 राहु (संघर्ष) पीला

ॐ कया नश्चित्रऽआ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। ॐ राहवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -27.39

अर्थात्-सर्वदा वृद्धि करने वाले, अद्भुत शक्ति सम्पन्न हे इन्द्रदेव! किस रक्षण तथा व्यवहार क्रिया से प्रसन्न होकर आप सदैव हमारे मित्र रूप में प्रस्तुत होते हैं।

25 केतु (साहस) लाल

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्याऽ अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।
ॐ केतवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -29.37

अर्थात्-अज्ञानी पुरुषों को सद्ज्ञान और रूपहीनों को सुन्दर स्वरूप प्रदान करने वाले हे अग्निदेव! आप उषा के साथ समान रूप से उत्पन्न होते हैं।

26 गङ्गा (पवित्रता) सफेद

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित् ॥ ॐ गङ्गायै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि ध्यायामि ॥ -34.11

अर्थात्- समान स्रोत वाली (श्रेष्ठ प्रवाहशील) पाँच सरिताएँ (नदियाँ) जिस प्रकार महानदी सरस्वती में समाहित हो जाती हैं, उसी प्रकार वही सरस्वती देश में पाँच (नदियों के) रूप में (प्रसिद्ध) हुई (अर्थात् विद्या पाँच प्रकार की प्रतिभाओं- श्रमपरक, विचारपरक, अर्थपरक, कलापरक और भावपरक को संयुक्त करके उन्हें प्रगतिशील बनाती है)।

27 पितृ (दान) पीला

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः

स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन् पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥

ॐ पितृभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -19.36

अर्थात्-स्वधा (अन्न) को धारण करने वाले पितरों को स्वधा संज्ञक अन्न प्राप्त हो। स्वधा को धारण करने वाले पितामह को स्वधा संज्ञक अन्न प्राप्त हो। स्वधा को धारण करने वाले प्रपितामह को स्वधा संज्ञक अन्न प्राप्त हो। पितरों ने हविष्यान्न के रूप में समर्पित आहार को ग्रहण करके तृप्ति को प्राप्त किया। पितर तृप्त होकर हमें भी तृप्त करते हैं। हे पितृगण ! आप लोग शुद्ध होकर हमें भी पवित्र जीवन की प्रेरणा प्रदान करें।

28 इन्द्राणी (श्रमशीलता) सफेद

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽ उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व॥

ॐ इन्द्राण्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -38.3

अर्थात्-हे यज्ञीय ऊर्जे! आप अदिति की मेखला रूप हैं, इन्द्राणी (संगठक शक्ति) की पगड़ी (प्रतिष्ठा का चिह्न) हैं। आप पोषण देने में समर्थ हैं, घर्म (हितकारी कार्यों-यज्ञों) के लिए अपनी शक्ति को नियोजित करें।

29 रुद्राणी (वीरता) काला

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः
अघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया
गिरिशन्ताभिचाकशीहि।
ॐ रुद्राण्यै नमः। आवाहयामि,

स्थापयामि, ध्यायामि ॥ -16.2

अर्थात्-हे रुद्रदेव! आप (अति उच्च) पर्वत की सुरक्षित गुहा में रहते हैं। आपका कल्याणकारी शान्तरूप पापों के विनाशक होने के कारण सौम्य और बलशाली भी है। अपने उसी मंगलमय रूप से हमारे ऊपर कृपा दृष्टि डालें।

30 ब्रह्माणी (नियमितता) पीला

ॐ इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः।

ॐ ब्रह्माण्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि ॥ -20.88

अर्थात् - हे इन्द्रदेव ! अपनी अन्तःप्रेरणा से प्रेरित होकर इस यज्ञ स्थल में आएँ। आपकी स्तुति करने वाले ऋत्विग्गण, सोम का शोधन संस्कार करने वाले हैं, सो

आप समीप आकर इन हवियों को ग्रहण करें।

31 सर्प (धैर्य) काला

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि, तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -13.6

अर्थात्-जो भी सर्प (गमनशील स्वभाव वाले नक्षत्रलोक अथवा जीव) पृथिवी के प्रभाव क्षेत्र में हैं, अन्तरिक्ष द्युलोक में हैं, उन सभी सर्पों को हमारा नमन है।

32 वास्तु (कला) हरा

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीहि अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

ॐ वास्तुपुरुषाय नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि,
ध्यायामि॥ -ऋ. 7.54.1

अर्थात्-हे वास्तोष्पते (गृह पालक देव)! आप हमें जगाएँ। हमारे घर में पुत्र-पौत्र आदि द्विपदों, गौ, अश्व आदि चतुष्पदों को नीरोग एवं सुखी करें। जो धन हम आपसे माँगें, वह हमें प्रदान करें।

33 आकाश (विशालता) नीला

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना
सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।
उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यां त्वैष ते
योनिर्माध्वीभ्यां त्वा।
ॐ आकाशाय नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि,
ध्यायामि॥ -7.11

अर्थात्-हे अश्विनीकुमारो! सत्य एवं

मधुरता से युक्त अपनी उत्तम वाणी से हमारे इस यज्ञ को अभिषिञ्चित करें। हे उपांशु (पात्र)! मधुरता के लिए विख्यात अश्विनीकुमारों के निमित्त आपको नियमानुसार ग्रहण किया गया है। आप यज्ञशाला में अपने सुनिश्चित आसन पर बैठें-स्थापित हों।

नोट- पेज-3 में लघुसर्वतोभद्र का चित्र दिया गया है, उसी के अनुसार निर्धारित नम्बरों पर पूजन करें।

पुरुष सूक्त

सूत्र सङ्केत-

पुरुष सूक्त का प्रयोग विशेष पूजन के क्रम में किया जाता है। षोडशोपचार पूजन के एक-एक उपचार के साथ क्रमशः एक-एक मन्त्र बोला जाता है। जहाँ कहीं भी किसी देवशक्ति का पूजन विस्तार से करना हो, तो पुरुष सूक्त के मन्त्रों के साथ षोडशोपचार द्वारा पूजन करा दिया जाता है। पञ्चोपचार पूजन में भी इस सूक्त से सम्बन्धित मन्त्रों का प्रयोग किया जा सकता है। यज्ञादि के विस्तृत देवपूजन में, पर्वों पर, पर्व से सम्बन्धित देव शक्ति के पूजन में बहुधा इसका प्रयोग किया जाता है। वातावरण में पवित्रता और श्रद्धा के सञ्चार के लिए भी पुरुष सूक्त का पाठ सधे हुए कण्ठ वाले व्यक्ति सामूहिक रूप से करते हैं।

शिक्षण एवं प्रेरणा-

पुरुष सूक्त में परमात्मा की विराट् सत्ता का वर्णन किया गया है। उस महत् चेतना के विस्तार के सङ्कल्प से ही इस जड़-चेतन की सृष्टि हुई है। किसी भी प्रतीक देव विग्रह का पूजन करते यही चिन्तन उभरता रहता है कि हम उसी एक विराट्, सनातन, अविनाशी का पूजन कर रहे हैं।

क्रिया और भावना-

पुरुष सूक्त से पूजन प्रारम्भ करने के पूर्व उपस्थितश्र िद्धालुओंक ेउ क्ति सद्धान्त बतलाया जाना चाहिए, ताकि पूजन में उनका भी भाव-संयोग हो सके। यदि सम्भव हो, तो सभी के हाथ में अथवा पूजन वेदी के निकटवर्ती प्रतिनिधियों के हाथ में अक्षत,पुष्प दे देने चाहिए। उसे पूरे पूजन के साथ हाथ में रखें, भाव

पूजन में सम्मिलित रहें और वे पुष्पाञ्जलि के साथ उन्हें अर्पित करें। भावना करें कि हमारे पास जो कुछ भी है, उसी का दिया हुआ है। उसके विराट् स्वरूप एवं उद्देश्यों को हम पहचानें और उनके निमित्त अपने साधनों को, क्षमताओं को अर्पित करते हुए उन्हें सार्थक करें, धन्य बनाएँ। उस सर्वव्यापी को,उसके आदर्शों को हर कदम पर,हर स्तर पर, हर प्रसङ्ग में प्रत्यक्ष की तरह देखते हुए श्रद्धासिक्त होकर पूजन भाव से सक्रिय रहें। उसके दिये साधनों को उसके उद्देश्यों में लगाने में कृपणता न बरतें, उदार भक्ति भावना का परिचय प्रमाण दें।

पूजन से सम्बन्धित सामग्री हाथ में लेकर मन्त्र बोला जाए। मन्त्र पूरा होने पर जिस देवशक्ति का पूजन है, उसका नाम लेते हुए षोडशोपचार के आधार पर

स्थापयामि, समर्पयामि आदि कहते हुए उसे चढ़ाते चलें।

1 **आवाहनम्**

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः
सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ँ सर्वतस्पृत्वा
अत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

अर्थात्- (जो) सहस्रों सिर वाले, सहस्रों नेत्र वाले और सहस्रों चरण वाले विराट् पुरुष हैं, वे सारे ब्रह्माण्ड को आवृत करके भी दस अंगुल शेष रहते हैं।

2 **आसनम्**

ॐ पुरुषऽ एवेद ँ सर्वं
यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो
यदन्नेनातिरोहति॥

अर्थात्- जो सृष्टि बन चुकी है, जो

बनने वाली है, यह सब विराट् पुरुष ही है। इस अमर जीव-जगत् के भी वही स्वामी हैं। जो अन्न द्वारा वृद्धि प्राप्त करते हैं, उनके भी वही स्वामी हैं।

3 पाद्यम्

ॐ एतावानस्य महिमातो
ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोस्य विश्वाभूतानि
त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

अर्थात्-विराट् पुरुष की महत्ता अति विस्तृत है। इस श्रेष्ठ पुरुष के एक चरण में सभी प्राणी हैं और तीन भाग अनन्त अन्तरिक्ष में स्थित है।

4 अर्घ्यम्

ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽ उदैत्पुरुषः
पादोस्येहाभवत्पुनः।

ततो विष्वङ्व्यक्रामत्
साशनानशने अभि॥

अर्थात्-चार भागों वाले विराट् पुरुष के एक भाग में यह सारा संसार जड़ और चेतन विविध रूपों में समाहित है और इसके तीन भाग अनन्त अन्तरिक्ष में समाये हुए हैं।

5 आचमनम्

ॐ ततो विराडजायत
विराजो अधिपूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत
पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥

अर्थात्-उस विराट् पुरुष से यह ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ। उस विराट् से समष्टि जीव उत्पन्न हुए। वही देहधारी रूप में सबसे श्रेष्ठ हुआ, जिसने सबसे पहले पृथ्वी को, फिर शरीरधारियों को उत्पन्न किया।

6 स्नानम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः
सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान्
आरण्या ग्राम्याश्च ये॥

अर्थात्- उस सर्वश्रेष्ठ विराट् प्रकृति यज्ञ से दधियुक्त घृत प्राप्त हुआ (जिससे विराट् पुरुष की पूजा होती है)। वायुदेव से सम्बन्धित पशु हरिण, गौ, अश्वादि की उत्पत्ति उस विराट् पुरुष के द्वारा ही हुई।

7 वस्त्रम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽ
ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ँ सि जज्ञिरे तस्माद्
यजुस्तस्मादजायत॥

अर्थात्- उस विराट् यज्ञपुरुष से ऋग्वेद एवं सामवेद का प्रकटीकरण

हुआ। उसी से यजुर्वेद एवं अथर्ववेद का प्रादुर्भाव हुआ, अर्थात् वेद की ऋचाओं का प्रकटीकरण हुआ।

8 यज्ञोपवीतम्

ॐ तस्मादश्वाऽ अजायन्त
ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्
तस्माज्जाताऽ अजावयः॥

अर्थात्- उस विराट् यज्ञपुरुष से दोनों तरफ दाँत वाले घोड़े हुए और उसी विराट् पुरुष से गौएँ, बकरियाँ और भेड़ें आदि पशु भी उत्पन्न हुए।

9 गन्धम्

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्
पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽअयजन्त
साध्या ऽ ऋषयश्च ये॥

अर्थात्- मन्त्रद्रष्टा ऋषियों एवं

योगाभ्यासियों ने सर्वप्रथम प्रकट हुए विराट् पुरुष को यज्ञ (सृष्टि के पूर्व विद्यमान महान् ब्रह्माण्ड रूप यज्ञ अर्थात् सृष्टि यज्ञ) में अभिषिक्त करके उसी परमपुरुष से ही यज्ञ का प्रादुर्भाव किया।

10 पुष्पाणि

ॐ यत् पुरुषं व्यदधुः
कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं
बाहू किमूरू पादाऽ उच्येते॥

अर्थात्-सङ्कल्प द्वारा प्रकट हुए जिस विराट् पुरुष का, ज्ञानीजन विविध प्रकार से वर्णन करते हैं, वे उसकी कितने प्रकार से कल्पना करते हैं? उसका मुख क्या है? भुजा, जंघाएँ और पाँव कौन से हैं? शरीर संरचना में वह पुरुष किस प्रकार पूर्ण बना।

11 धूपम्

ॐ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्
बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः
पद्भ्या ँ शूद्रो अजायत॥

अर्थात्- विराट् पुरुष के मुख से ब्राह्मण (ज्ञानीजन) हुए, क्षत्रिय (पराक्रमी व्यक्ति), उसके बाहुओं से बने। वैश्य अर्थात् पोषण शक्ति सम्पन्न व्यक्ति उसके जंघाओं एवं सेवाधर्मी व्यक्ति उसके पैरों से प्रकट हुए।

12 दीपम्

ॐ चन्द्रमा मनसो जातः
चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोताद्वायुश्च प्राणश्च
मुखादग्निरजायत॥

अर्थात्- विराट् पुरुष के मन से चन्द्रमा, नेत्रों से सूर्य, कानों से वायु

एवं प्राण तथा मुख से अग्नि का प्राकट्य हुआ है।

13 नैवेद्यम्

ॐ नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष
ᳬ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्
तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।

अर्थात्-विराट् पुरुष की नाभि से अन्तरिक्ष, सिर से द्युलोक, पाँवों से भूमि तथा कानों से दिशाएँ प्रकट हुईं। इसी प्रकार (अनेकानेक) लोकों को कल्पित किया गया है (रचा गया है)।

14 ताम्बूलपूगीफलानि

अर्थात्-जब देवों ने विराट् पुरुष को हवि मानकर यज्ञ का शुभारम्भ किया, तब घृत वसन्त ऋतु, ईंधन (समिधा) ग्रीष्म ऋतु एवं हवि शरद् ऋतु हुई।

15 दक्षिणा

ॐ सप्तास्यासन्परिधयः
त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽ
अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥

अर्थात्- देवों ने जिस यज्ञ का विस्तार किया, उसमें विराट् पुरुष को ही पशु (हव्य) रूप की भावना से बाँधा (नियुक्त किया)। उसमें यज्ञ की सात परिधियों (सात समुद्र) एवं इक्कीस (छन्द) समिधाएँ हुईं।

16 मन्त्र पुष्पाञ्जलिः

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः
तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

-31.1-16

अर्थात्- आदिकालीन श्रेष्ठ धर्म-

परायण देवों ने, यज्ञ द्वारा यज्ञ रूप विराट् का यजन किया। यज्ञीय जीवन जीने वाले (याजक) पूर्ण काल के सिद्ध- साध्यगणों तथा देवतओं के निवास महिमाशाली स्वर्गलोक को प्राप्त करते हैं।

॥ त्रिदेव पूजन ॥

1 आद्यशक्ति गायत्री

भारतीय संस्कृति-देवसंस्कृति की जननी गायत्री, जिन्हें वेदमाता, देवमाता एवं विश्वमाता के नाम से भी जानते हैं, सद्भाव एवं सद्विचारों का उभार-उन्नयन इन्हीं की कृपा से, इनसे सम्बन्धित गुह्य सूत्रों को धारण करने से सम्भव होता है। अनास्था असुर के सर्वव्यापी अस्तित्व को यही असुर निकन्दिनी, महाप्रज्ञा के रूप में समाप्त करेगी।

2 यज्ञ भगवान्

यह सृष्टि यज्ञमय है। ईश्वरीय अनुशासन से चलने वाले आदान-प्रदान के क्रम को यज्ञ कहा जाता है। इसीलिए इसे देव धर्म का जनक कहा गया है। यज्ञीय भाव की स्थापना से ही कर्म और व्यवहार में से अधोगामी प्रवृत्ति समाप्त होकर श्रेष्ठता की ऊर्ध्वगामी प्रवृत्तियों का विकास होगा। इसी आधार पर नवयुग की स्थापना सम्भव होगी।

3 ज्योतिपुरुष

युग शक्ति निष्कलङ्क अवतार के लीला- सन्दोह का प्रतीक जनशक्ति युक्त मशाल का चिह्न है। दिव्य संरक्षण और अनुशासन में जन समर्थित प्रचण्ड शक्ति का प्रवाह उदय होता है। अवाञ्छनीयता के निवारण और

वाञ्छनीयता की स्थापना में असम्भव को सम्भव यही बनाएगी। ध्वंस और सृजन की, गलाई और ढलाई की संयुक्त प्रक्रिया इसी के द्वारा सञ्चालित होगी।

क्रिया और भावना- हाथ में जल, पुष्प, अक्षत लेकर भावनापूर्वक मन्त्रोच्चार के साथ पूजन वेदी पर क्रमशः अर्पित करें।

गायत्री

ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्
पङ्क्त्या सह।
बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः
शम्यन्तु त्वा॥
ॐ गायत्र्यै नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥ -23.33

अर्थात्- हे अश्व (यज्ञाग्ने) ! गायत्री छन्द, त्रिष्टुप् छन्द, जगती छन्द,

अनुष्टप् छन्द, पंक्ति छन्द सहित बृहती छन्द, उष्णिक् छन्द, एवं ककुप् छन्द आदि सूचियों के माध्यम से आपको शान्त करें।

यज्ञपुरुष

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः
तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।
ॐ यज्ञपुरुषाय नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि,
ध्यायामि॥ -31.16

अर्थात् - आदिकालीन श्रेष्ठ धर्मपरायण देवों ने, यज्ञ द्वारा यज्ञ रूप विराट् का यजन किया। यज्ञीय जीवन जीने वाले (याजक) पूर्वकाल के सिद्ध-साध्यगणों तथा देवताओं के निवास महिमाशाली स्वर्ग लोक

को प्राप्त करते हैं।

ज्योतिपुरुष

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥ ॐ ज्योतिपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। -5.36,

अर्थात्- दिव्य गुणों से युक्त हे अग्निदेव! आप सम्पूर्ण मार्गों को जानते हुए हम याजकों को यज्ञ फल प्राप्त करने के लिए सन्मार्ग पर ले चलें। हमको कुटिल आचरण करने वाले शत्रुओं तथा पापों से मुक्त करें। हम आपके लिए स्तोत्र एवं नमस्कारों का विधान करते हैं।

॥ पञ्चवेदी पूजन ॥

सूत्र सङ्केत-

हमारा शरीर अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश तथा आनन्दमय कोश के द्वारा विनिर्मित है। स्वेदज, अण्डज, उद्‌भिज, जरायुज चार प्रकार के प्राणी और पाँचवें जड़ पदार्थ, यह पञ्चधा प्रकृति भी इन्हीं पाँच देवताओं की प्रतिक्रिया है। जड़-चेतन इस जगत् के पञ्चधा विश्लेषण को पञ्चदेवों के रूप में माना गया है। पञ्चतत्त्वों को भी उसी श्रेणी में गिना जाता है। इन्हीं से यह जगत् बना है। शरीर से लेकर समस्त दृश्य जड़ जगत् केवल परमाणुओं का बना पदार्थ ही नहीं है, वरन् उसके अन्तराल में दैवी चेतना काम करती है। जड़ में चेतन की भावना- यही अध्यात्मवाद है। चेतन को जड़ मानना, यही भौतिकवाद है। सृष्टि के आधारभूत पञ्चतत्त्वों को अध्यात्म ने चेतन-देवसत्ता से ओत-प्रोत माना है,

उसका स्थूल रूप तो कलेवर मात्र है। इस तत्त्व-आत्मा को ही अनुष्ठानों में देवरूप में प्रतिष्ठापित और पूजित किया जाता है।

बड़े यज्ञों में कथा, अनुष्ठान, नवरात्र पर्व, संस्कार आदि जहाँ आवश्यक लगे, पञ्चवेदियाँ स्थापित की जा सकती हैं।

क्रम व्यवस्था-

जहाँ स्थापना की जाए, वहाँ चार कोनों पर चार चौकियाँ रखकर उन पर पीले कपड़े बिछाये जाएँ। ऊपर रँगे हुए चावलों के मङ्गल चिह्न युक्त कोष्ठ (वर्ग) बना दिये जाएँ। मध्य में सुसज्जित कलश रखे जाएँ। यह चार तत्त्वों के चार कलश हुए। मध्य पीठ को प्रधान देवता की चौकी को आकाश कलश माना जाए।

नैर्ऋत्य (दक्षिण-पश्चिम दिशा के मध्य) में पृथ्वी वेदी (रङ्ग हरा), ऐशान्य

(उत्तर और पूर्व दिशा के मध्य) में वरुण वेदी (रङ्ग काला), आग्नेय (पूर्व-दक्षिण दिशा के मध्य) में अग्निवेदी (रङ्ग लाल) और वायव्य (पश्चिम-उत्तर दिशा के बीच) में वायु वेदी (रङ्ग पीला) स्थापित की जाती है।

आकाश का कोई रंग नहीं, उसका प्रतीक सर्वतोभद्रचक्र सब रंगों से मिलाकर बनाया जाता है। यदि सर्वतोभद्रचक्र न बनाना हो, तो उसके स्थान पर आकाश तत्त्व के लिए सफेद चावलों का अन्य तत्त्वों जैसा कोष्ठ बना देना चाहिए।

क्रिया और भावना-

पाँच चौकियों पर स्थापित पाँच कलशों को एक-एक देवता का प्रतीक मानकर प्रत्येक का पूजन गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य इन पाँच वस्तुओं से किया जाए।

पाँच देवों के मन्त्र नीचे दिये गये हैं।

॥ पृथ्वी ॥

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥
ॐ पृथिव्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -8.32

अर्थात्-महान् द्युलोक और पृथवीलोक, स्वर्ण-रत्नादि, धन-धान्यों से परिपूर्ण वैभव द्वारा हमारे इस श्रेष्ठ कर्मरूपी यज्ञ को सम्पन्न करें तथा उसे संरक्षित करें।

॥ वरुण ॥

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानः
तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्यरुश
ᳪ स मा न ऽ आयुः प्र मोषीः॥
ॐ वरुणाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ प्र.सं.-18.49

अर्थात्-वेद मन्त्रों द्वारा अभिनन्दित हे वरुणदेव! हवियों का दान देकर यजमान लौकिक सुखों की आकांक्षा करता है। हम वेद-वाणियों के ज्ञाता (ब्राह्मण) यजमान की तुष्टि एवं प्रसन्नता के निमित्त स्तुतियों द्वारा आपकी प्रार्थना करते हैं। सबके द्वारा स्तुत्य देव! इस स्थान में आप क्रोध न करके हमारी प्रार्थना सुनें। हमारी आयु को किसी प्रकार क्षीण न करें।

॥ अग्नि ॥

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्
देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो
विश्वा द्वेषा ँ सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्।
ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥ -21.3

॥ वायु ॥

ॐ आ नो नियुद्‌भिः शतिनीभिरध्वर
ꣳ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्।
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।
ॐ वायवे नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥ -27.28

॥ आकाश ॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना
सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।
उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यां त्वैष ते
योनिर्माध्वीभ्यां त्वा॥
ॐ आकाशाय नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥ -7.11

॥ पञ्चभू- संस्कार ॥

1 **परिसमूहन-**

ॐ दर्भैः परिसमूह्य,
परिसमूह्य, परिसमूह्य।

अर्थात्-कुशाओं से बुहार कर (गन्दगी-कचरा साफ करें)।

2 **उपलेपन-**

ॐ गोमयेन उपलिप्य,
उपलिप्य, उपलिप्य।

अर्थात्-गाय के गोबर से लीपकर (पवित्र बनाएँ)।

3 **उल्लेखन-**

ॐ स्रुवमूलेन उल्लिख्य,
उल्लिख्य, उल्लिख्य।

अर्थात्-स्रुवा के मूल से रेखा खींच कर (चिह्नित करें)।

4 **उद्धरण-**

ॐ अनामिकांगुष्ठेन
उद्धृत्य, उद्धृत्य, उद्धृत्य।

अर्थात्-अनामिका एवं अँगूठे से उठाकर (मिट्टी को बाहर फेंक दें)।

5 **अभ्युक्षण-**

ॐ उदकेन, अभ्युक्ष्य,
अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य।

अर्थात्-उदक (जल) से सिञ्चित करके (पवित्र करें)।

॥कुशकण्डिका॥

सूत्र सङ्केत-

कुश पवित्रता और प्रखरता के प्रतीक माने जाते हैं। कुशकण्डिका के अन्तर्गत निर्धारित क्षेत्र के चारों दिशाओं में कुश बिछाये जाते हैं। बड़े यज्ञों और विशिष्ट कर्मकाण्डों में यज्ञशाला, यज्ञकुण्ड अथवा पूजा क्षेत्र के चारों ओर मन्त्रों के साथ कुश स्थापित किये जाते हैं।

क्रम व्यवस्था-

कुश कण्डिका में प्रत्येक दिशा के लिए चार-चार कुश लिये जाते हैं। पूरे क्षेत्र को इकाई मानकर उसके चारों ओर एक ही

व्यक्ति से कुश स्थापित कराने हैं, तो कुल 16 कुशाएँ चाहिए। यदि प्रत्येक कुण्ड या वेदी पर कराना है, तो प्रत्येक के लिए 16-16 कुशाएँ चाहिए।

क्रिया और भावना-

कुश स्थापना करने वाले व्यक्ति एक बार में चार कुश हाथ में लें। मन्त्रोच्चार के साथ कुशाओं सहित उस दिशा में हाथ जोड़कर मस्तक झुकाएँ और एक-एक करके चारों कुशाएँ उसी दिशा में स्थापित कर दें। कुश स्थापित करते समय कुश का ऊपरी नुकीला भाग पूर्व या उत्तर की ओर रहे तथा मूल (जड़) भागप श्चिमय ाद क्षिणक ीअ ोरर हे। प्रत्येक मन्त्र के साथ दिशा विशेष के लिए यही क्रम अपनाया जाए।

भावना की जाए कि इस दिशा में व्याप्त देवशक्तियों को नमस्कार करते

हुए उनके सहयोग से दिव्य प्रयोजन के लिए कुशाओं जैसी पवित्रता और प्रखरता का जागरण और स्थापन किया जा रहा है।

1 पूर्व दिशा में-

ॐ प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधि-पतिभ्योनमो रक्षितृभ्यो नमइषुभ्यो नमएभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः। अथर्व.3.27.1

अर्थात्-पूर्व दिशा हमारे ऊपर अनुग्रह करने वाली है। पूर्व दिशा के अधिपति अग्निदेव हैं, रक्षक, असित (बन्धनरहित) हैं, बाण प्रहारक आदित्य हैं। इन (दिशाओं के) अधिपतियों, रक्षकों तथा बाणों को हमारा नमन है। ऐसे सभी (हितैषियों) को हमारा नमन है, जो

शत्रु हमसे विद्वेष करते हैं तथा जिनसे हम विद्वेष करते हैं, उन शत्रुओं को हम आपके जबड़े (या दण्ड व्यवस्था) में डालते हैं।

2 **दक्षिण दिशा में-**

ॐ दक्षिणा दिगिन्द्रोऽ
धिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर
इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो
नमो रक्षितृभ्यो नमइषुभ्यो
नमएभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि
यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।

-अथर्व. 3.27.2

अर्थात्-दक्षिण दिशा के अधिपति इन्द्रदेव, उसके रक्षक 'तिरश्चिराजी' (मर्यादा में रहने वाले) तथा बाण पितृदेव हैं। उन अधिपतियों, रक्षकों तथा बाणों को हमारा नमन है। ऐसे सभी हितैषियों को हमारा नमन है।

जो शत्रु हमसे विद्वेष करते हैं, तथा जिनसे हम विद्वेष करते हैं, उन शत्रुओं को हम आपके नियंत्रण में डालते हैं।

3 पश्चिम दिशा में-

ॐ प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधि-पतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमइषुभ्यो नमएभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जभ्ये दध्मः। -अथर्व. 3.27.3

अर्थात्-पश्चिम दिशा के स्वामी वरुण देव हैं, उनके रक्षक 'पृदाकु' सर्पादि हैं तथा अन्न उसके बाण हैं। इन सबको हमारा नमन है। जो शत्रु हमसे विद्वेष करते हैं, तथा जिनसे हम विद्वेष करते हैं, उन शत्रुओं को हम आपके जबड़े में डालते हैं।

4 उत्तर दिशा में-

ॐ उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधि-पतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमइषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः। -अथर्व. 3.27.4

अर्थात्-उत्तर दिशा के अधिपति सोम हैं और उनके रक्षक 'स्वज' (स्वयं जन्मने वाली शक्तियाँ) हैं तथा अशनि ही बाण हैं। उन सबको हमारा नमन है। जो शत्रु हमसे विद्वेष करते हैं तथा जिनसे हम विद्वेष करते हैं, उन शत्रुओं को हम आपके नियंत्रण में डालते हैं।

॥ मेखलापूजन ॥

सूत्र सङ्केत-

यज्ञ कुण्ड के चारों ओर मेखलाएँ बनाई

जाती हैं। कुण्डों में ये सीढ़ीनुमा होती हैं। वेदी पर यज्ञ करते समय तीन रेखाएँ विनिर्मित की जाती हैं। अन्दर वाली मेखला सफेद, बीच वाली लाल तथा बाहर वाली काली होती है। इन्हें तीनों गुणों-सत्, रज और तम का प्रतीक माना जाता है। संसार तीन गुणों के संयोग से बना है। यज्ञ उनके बीच सन्तुलन और चेतना को ऊर्ध्वगामी करने में समर्थ बनाने के लिए किया जाता है।

तीनों मेखलाओं में ब्रह्मा, विष्णु और महेश की सत्ता स्थापित करके उन्हें पूजित किया जाता है। यज्ञ एक महान् ऊर्जा है, इसे बिजली और अणु शक्ति की तरह अनुशासन तथा मर्यादा के अन्तर्गत प्रयुक्त किया जाना चाहिए, मेखलाएँ मर्यादा और अनुशासन की प्रतीक मानी जाती हैं। ब्रह्मा,

विष्णु,महेश- सृजन, पालन और परिवर्तन की संयोजक देवशक्तियाँ हैं। इनके अनुरूप ही यज्ञ का विकास और प्रयोग किया जाता है।

क्रम व्यवस्था-

बड़े यज्ञों में, विस्तारपूर्वक कराये जाने वाले संस्कार आदि के समय यज्ञ में मेखलाओं का पूजन कराया जा सकता है। पूजन करने वालों के हाथ में जल, पुष्प, अक्षत, चन्दन या रोली आदि देकर मन्त्र बोले जाएँ और आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि के साथ सम्बन्धित मेखला पर सामग्री चढ़ा दी जाए। मन्त्र के साथ भावना रखी जाए कि त्रिदेवों की चेतना की स्थापना की जा रही है, जो हमारे यज्ञ और यज्ञीय भाव को सन्तुलित, अनुशासित और प्रभावशाली बनाने में समर्थ है।

॥ विष्णु ॥

(ऊपर की सफेद मेखला)

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे
त्रेधा नि दधे पदम्।
समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा।
ॐ विष्णवे नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि,
पूजयामि, ध्यायामि।- 5.15

अर्थात्-हे विष्णुदेव! आप अपने सर्वव्यापी प्रथम पद पृथ्वी में, द्वितीय पद अन्तरिक्ष में तथा तृतीय पद द्युलोक में स्थापित करते हैं। भूलोक आदि इनके पद-रज में अन्तर्हित हैं। इन सर्वव्यापी विष्णुदेव को यह आहुति दी जाती है।

॥ ब्रह्मा पूजन ॥

(बीच की लाल मेखला)

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि
सीमतः सुरुचो वेनऽ आवः।

स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्यविष्ठाः
सतश्च योनिमसतश्च वि वः।
ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

-13.3

अर्थात्-सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्म रूप में परमात्म शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ, वही शक्ति समस्त ब्रह्माण्ड में व्यवस्था रूप में व्याप्त हुई। यही कान्तिमान् ब्रह्म (सूर्यादि) विविध रूपों में स्थित अन्तरिक्षादि विभिन्न लोकों को तथा व्यक्त जगत् एवं अव्यक्त जगत् को प्रकाशित करते हैं।

॥ रुद्र ॥

(नीचे की काली मेखला)

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतो
तऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।
ॐ रुद्राय नमः। आवाहयामि,

स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

-16.1

अर्थात्-हे रुद्रदेव (दुष्टों को रुलाने वाले)! आपके मन्यु (अनीति-दमन के लिए क्रोध) के प्रति हमारा नमस्कार है। आपके बाणों के लिए हमारा नमस्कार है। आपकी दोनों भुजाओं के लिए हमारा नमस्कार है।

पञ्चामृतकरण

सूत्र सङ्केत-

गौ का महत्त्व ब्राह्मण और माँ के समान कहा गया है। उसके महत्त्व को समझने तथा उसके गुणों का लाभ उठाने के लिए धार्मिक कर्मकाण्डों के साथ पञ्चामृत पान का क्रम जोड़ा गया है। सामान्य क्रम में पञ्चामृत बनाकर रखा जाता है तथा उसका प्रसाद बनाकर वितरित किया जाता है। जहाँ कहीं उचित और आवश्यक लगे, देव पूजन के साथ पञ्चामृत बनाकर भोग लगाकर पान कराया जाना चाहिए। पञ्चामृत बनाने और पान कराने के मन्त्र एक साथ दिये जा रहे हैं, परन्तु बनाने और पान कराने की क्रियाएँ क्रम-व्यवस्था के अनुसार अलग-अलग समय पर ही कराई जानी चाहिए।

शिक्षा एवं प्रेरणा-

प्रसाद अमृत तुल्य, पौष्टिक और सुसंस्कार देने में समर्थ पदार्थों का ही बनाया जाए। उसे ही प्रभु अर्पित किया जाए और प्रसाद रूप में पान किया जाए। इसके लिए प्रतीक रूप में गोरस लिया जाता है।

तुलसी, आँवला, पीपल, बेल की तरह गाय में दिव्यता (सतोगुण) की मात्रा अत्यधिक है। गोरस हमारे शरीर को ही नहीं, मन-मस्तिष्क और अन्तःकरण को भी उत्कृष्टता के तत्त्वों से भर देता है।

गोरस केवल उत्तम आहार ही नहीं, दिव्यगुण सम्पन्न देव प्रसाद भी है। उसकी सात्त्विकता का अनुष्ठानों में समुचित समावेश होना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो, यज्ञ आहुतियों के लिए गोघृत का प्रबन्ध करना चाहिए। न

मिलने पर ही दूसरे घृत काम में लाने चाहिए। इसी प्रकार प्रसाद के रूप में पञ्चामृत को ही उसकी विशेषताओं के कारण उपयोगी मानना चाहिए। सस्ता होने की दृष्टि से भी वह सर्वसुलभ है। उपस्थिति अधिक हो जाने पर जल और शर्करा मिला देने से सहज ही बढ़ भी सकता है, यह सुविधा अन्य किसी प्रसाद में नहीं है। गौरक्षा की दृष्टि से यह नितान्त आवश्यक है कि हमारे धर्मानुष्ठानों में गौ रक्षा का महत्त्व जन साधारण गोरस हमारे शरीर को ही नहीं, मन-मस्तिष्क और अन्तःकरण को भी उत्कृष्टता के तत्त्वों से भर देता है। गोरस केवल उत्तम आहार ही नहीं, दिव्यगुण सम्पन्न देव प्रसाद भी है। उसकी सात्त्विकता का अनुष्ठानों में समुचित समावेश होना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो, यज्ञ आहुतियों के लिए

गोघृत का प्रबन्ध करना चाहिए। न मिलने पर ही दूसरे घृत काम में लाने चाहिए। इसी प्रकार प्रसाद के रूप में पञ्चामृत को ही उसकी विशेषताओं के कारण उपयोगी मानना चाहिए। सस्ता होने की दृष्टि से भी वह सर्वसुलभ है। उपस्थिति अधिक हो जाने पर जल और शर्करा मिला देने से सहज ही बढ़ भी सकता है, यह सुविधा अन्य किसी प्रसाद में नहीं है। गौरक्षा की दृष्टि से यह नितान्त आवश्यक है कि हमारे धर्मानुष्ठानों में गौ रक्षा का महत्त्व जन साधारण को विदित होता रहे और उस ओर आज जो उपेक्षा बरती जा रही है, उसका अन्त हो सके। गोरस के उपयोग का प्रचलन करने से ही गौरक्षा, गौ-संवर्धन सम्भव हो सकेगा।

क्रम व्यवस्था-

पञ्चामृत में पाँच वस्तुएँ काम में आती हैं-

1 **दूध**

2 **दही**

3 **घृत**

4 **शहद या शक्कर**

5 **तुलसी पत्र**

प्राचीन काल में शहद का बाहुल्य था, इसलिए उसे मिलाते थे। आज की परिस्थितियों में शक्कर भी किसी जमाने के शहद से अनेक गुनी महँगी है, अब शक्कर से ही काम चलाना पड़ता है। सम्भव हो सके, तो पाउडर का उपयोग किये बिना, बनने वाली देशी शक्कर (खाण्डसारी) को प्राथमिकता देनी चाहिए। गोरस न मिले, तो ही भैंस का दूध-दही लेना चाहिए। तुलसी पत्र प्रायः हर जगह मिल जाते हैं। धर्मानुष्ठानों पर

विश्वास रखने वालों को उसे अपने घरों में स्थापित करना चाहिए।

दूध अधिक, दही कम, घी बहुत थोड़ा, शक्कर भी आवश्यकतानुसार यह सब अन्दाज से बना लेना चाहिए। इसका कोई अनुपात निश्चित नहीं किया जा सकता। तुलसी पत्र के महीन टुकड़े करके डालने चाहिए, ताकि कुछ टुकड़े हर किसी के पास जा सकें। जल भी आवश्यकतानुसार मिलाया जा सकता है। पञ्चामृत की सभी वस्तुएँ अलग-अलग पात्रों में रखी जाएँ। जिस पात्र में पञ्चामृत बनाया जाना है, उसमें एक-एक वस्तु क्रमशः मन्त्रोच्चार के साथ डालें। यज्ञ के अन्त में प्रसाद स्वरूप यह पञ्चामृत दिया जाए। लोग इसे दाहिनी हथेली पर लें। हाथ चिपचिपे हो जाते हैं, इसलिए पास ही बाल्टी-लोटा हाथ धुलाने और हाथ पोंछने के लिए तौलिया भी रखनी चाहिए।

पात्र में दूध डालने का मन्त्र

ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽ

ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।

पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्। -18.36

अर्थात्-हे अग्ने! आप इस पृथ्वी पर समस्त पोषक रसों को स्थापित करें। ओषधियों में जीवनरस को स्थापित करें। द्युलोक में दिव्यरस को स्थापित करें। अन्तरिक्ष में श्रेष्ठरस को स्थापित करें। हमारे लिए ये सब दिशाएँ व उपदिशाएँ अभीष्ट रसों को देने वाली हों।

दही मिलाने का मन्त्र

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं

जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।

सुरभि नो मुखा करत्प्र

णऽ आयूꣳषि तारिषत्।-23.32

अर्थात्- मनुष्य को धारण करने वाली, तीव्र गतिवाले, सबको जीतने में

समर्थ अश्व (यज्ञाग्नि) को हम संस्कारित करते हैं। यह अश्व (अग्नि) इस यज्ञ के प्रभाव से हमारे मुखों को सुरभित करने वाला और आयु को बढ़ाने वाला हो।

घी मिलाने का मन्त्र

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ -6.19

अर्थात्-घृत एवं वसा का सेवन करने वाले पुरुषो! आप इनका उपयोग करें। हे वसा (धन, धान्य, साधनादि) आप अन्तरिक्ष के लिए हवि के रूप में हों, (लोकहित में) हम आहुति देते हैं। सभी दिशाओं, सभी उपदिशाओं, आगे-पीछे ऊपर-नीचे सभी दिशाओं को हम आहुति प्रदान करते हैं।

शहद मिलाने का मन्त्र

ॐ मधु वाता ऽ ऋतायते
मधुक्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
ॐ मधु नक्तमुतोषसो
मधुमत्पार्थिव ँ रजः।
मधुद्यौरस्तु नः पिता।
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिः
मधुमाँ2 अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः। -13.27-29

अर्थात्-यज्ञ कर्म करने वालों के लिए वायु एवं नदियाँ मधुर प्रवाह पैदा करें। सभी औषधियाँ मधुरता से सम्पन्न हों। पिता की तरह पोषणकर्त्ता दिव्य लोक हमारे लिए माधुर्य-युक्त हों, मातृवत् रक्षक पृथिवी की रज भी मधु के समान आनन्दप्रद हों। सम्पूर्ण वनस्पतियाँ हमारे लिए मधुरता (आरोग्य) प्रदायक हों। सूर्यदेव हमें

अपने माधुर्य (प्राण ऊर्जा) से परिपुष्ट करें तथा गौएँ भी हमारे लिए अमृत स्वरूप मधुर दुग्धरस प्रदान करने में सक्षम हों।

तुलसी दल मिलाने का मन्त्र

ॐ याऽ ओषधीः पूर्वा जाता
देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनै नु बभ्रूणामह ꣳ शतं
धामानि सप्त च॥ -12.75

अर्थात्-सृष्टि के प्रारम्भ में जो ओषधियाँ देवताओं द्वारा वसन्त, वर्षा, शरद् इन तीनों ऋतुओं में उत्पन्न हुई हैं, पककर पीत वर्ण से युक्त उन सैकड़ों ओषधियों और ब्रीहि-यवादि सप्त धान्यों की सामर्थ्यों का ज्ञान हमें है।

पञ्चामृत पान का मन्त्र

ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां,
स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।

प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय,
मा गामनागामदितिं वधिष्ट।

-ऋ.8.101.15

अर्थात्-हम विद्वान् लोगों से यही कहते हैं कि वे अपराध रहित तथा न मारने योग्य गौओं को न मारें, क्योंकि गौ-रुद्रों की माँ, वसुओं की पुत्री, आदित्य की बहिन तथा अमृत की मूल हैं।

दशविध स्नान

सूत्र सङ्केत-

दस स्नान का प्रयोग देव प्रतिमाओं की स्थापना के समय श्रावणी उपाकर्म, वानप्रस्थ संस्कार तथा प्रायश्चित्त विधानों में किया जाता है, उनमें यह प्रकरण ले लेना चाहिए।

क्रम व्यवस्था-

यज्ञ या संस्कार स्थल से कुछ हटकर दस स्नान की व्यवस्था करनी चाहिए। इन स्नानों में

1 **भस्म**

2 **मिट्टी**

3 **गोबर**

4 **गोमूत्र**

5 **गो-दुग्ध**

6 **गो-दधि**

7 गो-घृत

8 सर्वौषधि (हल्दी)

9 कुश

10 मधु

ये दस वस्तुएँ होती हैं। क्रमशः एक-एक वस्तु से स्नान करते समय बायीं हथेली पर भस्म आदि पदार्थ रखें, उसमें थोड़ा पानी डालें। दोनों हथेलियों से उसे मिलाएँ। मिलाते समय निर्धारित मन्त्र बोलें, फिर बायें हाथ से कमर से नीचे के अङ्गों पर दायें हाथ से कमर से ऊपर के अङ्गों पर उसका लेपन करें। इसके बाद स्वच्छ जल से स्नान कर डालें। इसी प्रकार अन्य दस वस्तुओं से स्नान करें। इसके पश्चात् अन्तिम बार शुद्ध जल से स्नान कर शरीर को भली प्रकार पोंछ कर पीले वस्त्र धारण करें। ये दस स्नान अब तक के किये हुए पापों का प्रायश्चित्त करने तथा अभिनव जीवन में प्रवेश

करने के लिए है। जैसे साँप केंचुली छोड़कर नई त्वचा प्राप्त करता है, वैसे ही इसमें पिछले ढर्रे को समाप्त करके उत्कृष्ट जीवन जीने का व्रत लेते हैं।

भावना और प्रेरणा-

1 भस्म से स्नान करने की भावना यह है कि शरीर भस्मान्त है। कभी भी मृत्यु आ सकती है, इसलिए सम्भावित मृत्यु को स्मरण रखते हुए, भावी मरणोत्तर जीवन की सुख-शान्ति के लिए तैयारी आरम्भ की जा रही है।

2 मिट्टीस े स्न ानक ा म तलबह ै ि क जिस मातृभूमि का असीम ऋण अपने ऊपर है, उससे उऋण होने के लिए देशभक्ति का, मातृभूमि की सेवा का व्रत ग्रहण किया जा रहा है।

3 गोबर से तात्पर्य है- गोबर की तरह

शरीर को खाद बनाकर संसार को फलने-फूलने के लिए उत्सर्ग करना।

4 गोमूत्र क्षार प्रधान रहने से मलिनता नाशक माना गया है। रोग कीटाणुओं को नष्ट करता है। इस स्नान में शारीरिक और मानसिक दोष-दुर्गुणों को हटाकर भीतरी और बाहरी स्वच्छता की नीति हृदयङ्गम करनी चाहिए।

5 दुग्ध स्नान में जीवन को दूध-सा धवल, स्वच्छ, निर्मल, सफेद, उज्ज्वल बनाने की प्रेरणा है।

6 दधि स्नान का अर्थ है- नियन्त्रित होना, दूध पतला होने से इधर-उधर ढुलकता है, पर दही गाढ़ा होकर स्थिर बन जाता है। भाव करें- अब अपनी रीति-नीति दही के समान स्थिर रहे।

7 घृत स्नान की भावना है, चिकनाई। जीवन क्रम को चिकना-सरल बनाना, जीवन में प्यार की प्रचुरता भरे रहना।

8 सर्वौषधि (हल्दी) स्नान का अर्थ है- अवांछनीय तत्त्वों से संघर्ष। हल्दी रोग-कीटाणुओं का नाश करती है, शरीर मन में जो दोष-दुर्गुण हों, समाज में जो विकृतियाँ दीखें, उनसे संघर्ष करने को तत्पर होना।

9 कुशाओं के स्पर्श का अर्थ है- तीक्ष्णतायुक्त रहना। अनीति के प्रति नुकीले, तीखे बने रहना।

10 मधु स्नान का अर्थ है- समग्र मिठास। सज्जनता, मधुर भाषण आदि सबको प्रिय लगने वाले गुणों का अभ्यास। दस स्नानों का कृत्य सम्पन्न करने से दिव्य प्रभाव पड़ता है। उनके साथ समाविष्ट प्रेरणा से

आन्तरिक उत्कर्ष में सहायता मिलती है।

1 भस्म-स्नानम्

ॐ प्रसद्य भस्मना
योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
स ँ सृज्य मातृभिष्ट्वं
ज्योतिष्मान्पुनरासदः॥ -12.38

अर्थात्- हे अग्निदेव! आप भस्मरूप से पृथ्वी और जल में स्थापित हैं। मातृरूप जल से अभिषिक्त होकर तेजास्विता से परिपूर्ण हुए यज्ञ में पुनः उपस्थित होते हैं।

2 मृत्तिका-स्नानम्

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे
त्रेधा नि दधे पदम्।
समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।-5.15

अर्थात्- हे विष्णुदेव! आप अपने

सर्वव्यापी प्रथम पद पृथ्वी में, द्वितीय पद अन्तरिक्ष में तथा तृतीय पद द्युलोक में स्थापित करते हैं। भूलोक आदि इनके (विष्णु के) पद-रज में अन्तर्निहित है। इन सर्वव्यापी विष्णुदेव को यह आहुति या सुन्दर कथन समर्पित है।

3 गोमय -स्नानम्

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे। -16.16

अर्थात्- हे रुद्रदेव! आप हमारे पुत्र-पौत्रों को नष्ट न करें। हमारी आयु में कमी न आए। हमारी गौओं और अश्वों (आदि पशुधन) का अहित न हो। हमारे (सहयोगी)

पराक्रमी-वीरों का वध न करें। हम आहुति प्रदान करते हुए आपका (इस यज्ञ की सफलता के लिए) आवाहन करते हैं।

4 गोमूत्र -स्नानम्

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

-36.3

अर्थात्- सम्पूर्ण जगत् के जन्मदाता सविता (सूर्य) देवता की उत्कृष्ट ज्योति का हम ध्यान करते हैं, जो (तेज सभी सत्कर्मों को सम्पादित करने के लिए) हमारी बुद्धि को प्रेरित करता है।

5 दुग्ध-स्नानम्

ॐ आ प्यायस्व समेतु ते,
विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।
भवा वाजस्य सङ्गथे। -12.112

अर्थात्- हे सोम! चारों ओर की विस्तृत तेजस्विता आप में प्रवेश करे। आप अपने शक्ति-शौर्य से सभी प्रकार से वृद्धि को प्राप्त करें और यज्ञादि सत्कर्मों के लिए आवश्यक अन्न प्राप्ति के साधन रूप आप हमारे पास आएँ। (हमें उपलब्ध हों)।

6 दधि -स्नानम्

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं
जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र णऽ
आयूꣳषि तारिषत्। -23.32

7 घृत -स्नानम्

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां
वसापावानः। पिबतान्तरिक्षस्य
हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ
आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः

स्वाहा। -6.19

अर्थात्-घृत एवं वसा का सेवन करने वाले पुरुषों, आप इनका उपयोग करें। हे वसा! आप अन्तरिक्ष के लिये हवि के रूप में हों (लोकहित में) हम आहुति देते हैं। सभी दिशाओं सभी उपदिशाओं, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे एवं शत्रु की दिशा में अर्थात् सभी दिशाओं को हम आहुति प्रदान करते हैं।

8 सर्वौषधि -स्नानम्

ॐ ओषधयः समवन्दत
सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त
ᳬ राजन् पारयामसि।-12.96

अर्थात्- हे राजन् सोम! चिकित्सा विशेषज्ञ जिस रोगी के रोग को दूर करने के लिए हमारे

मूल, फल, पत्रादि को ग्रहण करते हैं, उसको हम आरोग्य प्रदान करती हैं- ऐसा अपने स्वामी सोम से औषधियाँ कहती हैं।

9 कुशोदक -स्नानम्

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोः बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये
दधामि बृहस्पतेष्ट्वा
साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ॥-9.30

अर्थात्-सबको उत्पन्न करने वाले सविता देवता की सृष्टि से सरस्वती की, वाणी की प्रेरणा से अश्विन् देवों की भुजाओं तथा पूषा देवता के हाथों से आपको (यज्ञीय ऊर्जा को) धारण करते हैं और सुव्यवस्था बनाने वाले बृहस्पति देव के श्रेष्ठ नियन्त्रण में इस साम्राज्य के सञ्चालक के रूप

में आपको स्थापित करते हैं।

10 मधु-स्नानम्

ॐ मधु वाता ऽ ऋतायते
मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
ॐ मधु नक्तमुतोषसो
मधुमत्पार्थिव ँ रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता।
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिः
मधुमाँ2अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

-13.27-28-29

शुद्धोदक-स्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो
मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः
श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये
कर्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा
नभोरूपाः पार्जन्याः॥ -24.3

अर्थात्- शुद्ध श्वेत बालों वाले, पूर्ण

श्वेत बालों वाले और मणि की आभा के समान बालों वाले पशु (हवि) दोनों अश्विनीकुमारों के निमित्त हैं। श्वेत वर्ण, श्वेत नेत्र तथा लाल वर्ण वाले पशु (हवि) पशुपति रुद्र के निमित्त हैं। चन्द्रमा के समान धवल कर्ण वाले यम से सम्बन्धित हैं। रौद्र स्वभाव वाले पशु (हवि) रुद्र से सम्बन्धित हैं। आकाश जैसे नील वर्ण वाले पशु (हवि) पर्जन्य से सम्बन्धित हैं।

स्फुट प्रकरण- अभिषेक, आशीर्वचन

कर्मकाण्ड में रक्षासूत्र-बन्धन, तिलक, आशीर्वाद आदि ऐसे क्रम हैं, जो कर्मकाण्ड में बराबर आते रहते हैं। सामूहिक क्रम में यह कृत्य लम्बे समय तक भी चलते हैं। उस समय मन्त्रोच्चार और प्रेरणा-व्याख्या का मिला-जुला प्रवाह चलता रहे, तो वातावरण में सौम्यता तथा प्रभाव की वृद्धि होती है। इसी दृष्टि से स्फुट प्रकरण में कुछ क्रम और उनके मन्त्र दिये जा रहे हैं। इन्हें समय-समय पर प्रयुक्त करते रहा जा सकता है।

॥रक्षासूत्रबन्धनम्॥

1 **ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा**
हिरण्यꣳशतानीकाय
सुमनस्यमानाः।

तन्मऽआबध्नामि शत शारदाय आयुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।-34.52

अर्थात्- दक्षवंशीय ब्राह्मणों ने विचारपूर्वक जिस स्वर्ण (स्वर्णिम विभूतियों) को अनेक सेनाओं से युक्त राजा के लिए बाँधा था, उसी स्वर्ण को शतायु प्राप्ति के लिए हम अपने शरीर में धारण करते हैं। हम चिरञ्जीवी होकर वृद्धावस्था तक जीवित रहें।

2 **ॐ येन बद्धो बलीराजा,**
दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रति बध्नामि,
रक्षे मा चल मा चल॥

अर्थात्- जिस रक्षासूत्र से दानवेन्द्र, महाबली राजा बलि बाँधे गये थे, उसी से तुम्हें बाँधता हूँ। हे रक्षे (रक्षासूत्र) यहाँ से (अपने

प्रयोजन से) विचलित न होना अर्थात् यजमान की सदैव रक्षा करना।

3 **ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति**
दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति,
श्रद्धया सत्यमाप्यते॥-19.30

॥ तिलक मन्त्र ॥

1 **ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव**
प्रियाऽ अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया
मती योजान्विन्द्र ते हरी॥ -3.51

अर्थात्- पितृयज्ञ में हमारे द्वारा समर्पित हवि को पितरों ने सेवन कर लिया, जिसकी सूचना हर्षयुक्त पितरों ने सिर हिलाकर दी है। स्वयं दीप्तिमान् मेधावी ब्राह्मणों ने नवीन मन्त्रों से स्तुति प्रारम्भ कर दी है। हे

इन्द्रदेव! आप हरी नामक अपने दोनों अश्वों को रथ में नियोजित करें; क्योंकि अभीष्ट पितरों की तृप्ति के लिए आपको शीघ्र आना है।

2 **ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि। युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा।**

-23.5-6

अर्थात्- जिस प्रकार आकाश में स्व-प्रकाशित सूर्यदेव अपने से सम्बन्धित ग्रहों को अपने साथ जोड़े रहते हैं, उसी प्रकार सन्तुलित मानसवाले ऋषि इस स्वप्रकाशित यज्ञाश्व, यज्ञाग्नि के साथ सभी यज्ञीय उपचारों को नियोजित रखते हैं। जिस प्रकार कुशल व्यक्ति मनुष्यों को ले जाने वाले रथ में दो

घोड़ों को अपने वश में रखकर जोड़ते हैं, उसी प्रकार इन देवताओं के लिए हवि ले जाने वाले रथ में शोणा-लाल रंग के वेगवान् अग्नि तथा धृष्णु नामक अश्वों-सामर्थ्यवान् मन्त्रों को नियोजित करें।

3 **ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः**
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। -25.19

4 **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां**
करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये
श्रियम्। -श्रीसू. 9

अर्थात्- सम्पूर्ण प्राणियों की आधारभूत, विविध प्रकार की फसलों एवं फलों से समृद्ध, प्राणमयी गन्ध से परिपूर्ण गो-अश्वादि पशुओं से

सम्पन्न ऐसी सस्य-श्यामला, सुफला धरित्री रूप लक्ष्मी का हम आवाहन करते हैं, जिसे कोई शत्रु पराजित न कर सके।

5 **ॐ दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे सुप्रजास्त्वाय सहसा अथोजीव शरदः शतम्।**

अर्थात्- दीर्घायुष्य के लिए, बल की वृद्धि के लिए, वर्चस् की प्राप्ति के लिए, श्रेष्ठ सन्तानों की उपलब्धि के लिए तेजस्वी बनकर सौ वर्ष तक आप जीवित रहिये।

॥कुशपवित्रीधारण॥

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्। -1.12,4.4

अर्थात्- यज्ञार्थ प्रयुक्त आप दोनों (कुशा खण्डों या साधनों) को पवित्रकर्त्ता वायु एवं सूर्य रश्मियों से दोषरहित तथा पवित्र किया जाता है। हे पवित्रपते! शोधित पवित्री (पवित्रता के साधन) के द्वारा यजमान का अभीष्ट पूर्ण हो। सोमयाग अनुष्ठान की कामना से हम पवित्र होना चाहते हैं। हमें यज्ञानुष्ठान (सम्पन्न करने की) की सामर्थ्य प्राप्त हो।

॥ आशीर्वचन ॥

ॐ विवेकसंयुतां प्रज्ञां,
दूरदृष्टिन्तथैव च।
चारित्र्यं सर्वदा-आदर्शं,
वेदमाता प्रयच्छतु॥ 1॥

अर्थात्- वेदमाता गायत्री आपको सर्वदा विवेक (गुण-दोष को जानने की शक्ति) से युक्त प्रज्ञा (सद्बुद्धि), दूर दृष्टि तथा आदर्श चारित्र्य (सदाचार) प्रदान करें।

ब्रह्मवर्चसमास्तिक्यं,
सात्मनिर्भरतां मुदा।
सज्जनताऽऽत्मविश्वासं,
देवमाता ददातु ते ॥2॥

अर्थात्- देवमाता गायत्री आपको ब्रह्मतेज, आस्तिकता, आत्मनिर्भरता से युक्त मोद (प्रसन्नता), सज्जनता एवं आत्मविश्वास दें।

सद्भविष्योज्ज्वलाकांक्षा,
प्रभुविश्वासमेव च।
उच्चादर्शान्प्रति श्रद्धां,
तुभ्यं यच्छतु वैष्णवी ॥3॥

अर्थात्-माता वैष्णवी (पालनकर्त्री), आपके हृदय में उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा, ईश्वर में विश्वास तथा उच्चादर्शों के प्रति श्रद्धा-भावना भर दें।

श्रेष्ठकर्त्तव्यनिष्ठान्ते,
प्रतिभां हृष्टमानसम्।

उदारात्मीयतां तुभ्यं,
विश्वमाता प्रयच्छतु ॥ 4 ॥

अर्थात्- विश्वमाता गायत्री आपको श्रेष्ठ कर्त्तव्य-निष्ठा, प्रतिभा, मानसिक हर्ष तथा उदारता से युक्त आत्मीयता प्रदान करें।

शालीनतां च सौन्दर्यं,
स्नेहसौजन्यमिश्रितम्।
ध्रुवं धैर्यं च सन्तोषं,
देयात्तुभ्यं सरस्वती ॥ 5 ॥

अर्थात्- सरस्वती माता आपको सौन्दर्य, स्नेह तथा सज्जनता मिश्रित शालीनता (विनम्रता), अविचल धैर्य तथा सन्तोष आदि गुण प्रदान करें।

स्वास्थ्यं मन्युमनालस्यं,
सोत्साहं च पराक्रमम्।
साहसं शौर्यसम्पन्नं,
महाकाली प्रवर्धताम् ॥ 6 ॥

अर्थात्- महाकाली आपके स्वास्थ्य, मन्यु (अन्याय के प्रति रोष), आलस्यहीनता, उत्साह युक्त पराक्रम तथा शौर्यपूर्ण साहस की वृद्धि करें।

वैभवं ममतां नूनं, मैत्रीविस्तारमेव च।
शुचितां समतां तुभ्यं, महालक्ष्मीं
प्रयच्छतु॥ 7॥

अर्थात्- महालक्ष्मी जी आपको वैभव के साथ-साथ व्यापक मैत्रीभाव, ममता, पवित्रता, समता आदि गुण प्रदान करें।

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु,
उत्साह-शौर्य धन-धान्य-समृद्धिरस्तु।
ऐश्वर्यमस्तु बलमस्तु रिपुक्षयोऽस्तु,
वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु॥ 8॥

अर्थात्-अ ापकाक ल्याणह ो।अ ाप सकुशल रहें तथा चिरञ्जीवी हों। आप उत्साह, शौर्य, धन, धान्य आदि से समृद्ध

ऐश्वर्यवान् और बलवान् हों। आपके सभी शत्रुओं का नाश हो। आपके वंश में भगवान् की भक्ति सदा विद्यमान रहे।

अभिषेक - आशीर्वचन

गणाधिपो भानुशशी धरासुतो बुधो,
गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनो।
राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ 1॥

उपेन्द्र इन्द्रो वरुणो हुताशनो
धर्मो यमो वायुहरी चतुर्भुजः।
गन्धर्वयक्षोरगसिद्धचारणाः,
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ 2॥

मनुर्मरीचिर्भृगुदक्षनारदाः,
पराशरो व्यासवशिष्ठभार्गवाः।
वाल्मीकिः कुम्भोद्भवगर्गगौतमाः,
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ 3॥

नलो दधीचिः सगरः, पुरूरवाः,

शाकुन्तलेयो भरतो धनञ्जयः।
रामत्रयं वेणुवलीयुधिष्ठिराः,
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ 4॥

रम्भा शची सत्यवती च देवकी,
गौरी च लक्ष्मीरदितिश्चरुक्मिणी।
कूर्मो गजेन्द्रः सचराचराधरा,
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ 5॥

गंगा च शिप्रा यमुना सरस्वती,
गोदावरी वेत्रवती च नर्मदा।
सा चन्द्रभागा वरुणात्वसी नदी,
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ 6॥

तुगं प्रभासः कुरुक्षेत्रपुष्करौ,
गया विमुक्तो बदरी वटेश्वरः।
केदारपम्पासरसी च नैमिषं,
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा॥ 7॥

शंखश्च दूर्वा सितपत्रचामरं,
मणिः प्रदीपो वररत्नकाञ्चनम्।

सम्पूर्ण कुम्भः सुहुतो हुताशनः,
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ 8 ॥

प्रयाणकाले यदि वा सुमङ्गले,
प्रभातकाले च नृपाऽभिषेचने।
धर्माय कामाय जयाय भाषितं,
कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथं सदा ॥ 9 ॥

॥ आशीर्वचन ॥

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु,
पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रुभ्यो भयनाशोऽस्तु,
मित्राणामुदयस्तव ॥ 1 ॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यम्,
आविधात्पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुण्यलाभं,
शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ 2 ॥

आयुर्द्रोणसुते श्रियो दशरथे,
शत्रुक्षयो राघवे,

ऐश्वर्यं नहुषे गतिश्च पवने,
मानं च दुर्योधने।
शौर्यं शान्तनवे बलं हलधरे,
सत्यं च कुन्तीसुते,
विज्ञानं विदुरे भवन्तु भवतः,
कीर्तिश्च नारायणे॥ 3॥

लक्ष्मीररुन्धतीचैव,
कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ।
असितो देवलश्चैव,
विश्वामित्रस्तथाङ्गिराः॥ 4॥

स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु,
कार्तिकेयश्च षण्मुखः।
विवस्वान्भगवान् स्वस्ति,
करोतु तव सर्वशः॥ 5॥

ब्रह्माणी चैव गायत्री,
सावित्री श्रीरुमासती।
अरुन्धत्यनसूया च,
तव सन्तु फलप्रदाः॥ 6॥

ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च,
सूर्यादिसकलग्रहाः ।
सौभाग्यं ते प्रयच्छन्तु,
वेदमन्त्राश्च कल्पकाः ॥ 7 ॥

भूमि पूजन प्रकरण

संस्कार सम्पन्न भूमि-देवस्थलों की प्रथम आवश्यकता कोई भी निर्माण भूमिपूजन समारोहों से प्रारम्भ हो

सूत्र सङ्केत-

भूमि में बीज ही नहीं, संस्कार भी उपजते हैं। मरघटों के वीभत्स-चीत्कार भरे डरावने और आश्रमों के शान्त, सुरभित, मनोरम वातावरण को हर कोई स्पष्ट अनुभव कर सकता है। इस अन्तर का कारण इन स्थानों में प्रसन्नता का प्रस्फुटन है, यह तथ्य का प्रतीक है कि भूमि में अच्छे-बुरे संस्कार ग्रहण करने, आत्मसात् करने की विलक्षण शक्ति होती है। इसी कारण भारतीय संस्कृति में प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व भूमि पूजन आवश्यक माना गया

है। गायत्री शक्तिपीठें प्रज्ञा आलोक की प्रेरणा केन्द्र बनने जा रही हैं। अतः इन देवालयों में प्रारम्भ से ही वह संस्कार पैदा किये जाने चाहिए। इसके लिए भूमि पूजन समारोह अनिवार्य बना दिये गये हैं। पौरोहित्य की परम्परा की दृष्टि से भी भूमि पूजन कृत्य अपने उत्तरदायी सभी परिजनों को अवश्य जानना चाहिए। भवन बनाने के पूर्व, नये स्थान पर बड़े यज्ञादि करने के पूर्व तथा गृह प्रवेश क्रम में भी इस प्रक्रिया का उपयोग किया जा सकता है।

क्रम व्यवस्था-

भूमि पूजन जहाँ करना हो, उस स्थान पर सामर्थ्य के अनुसार सुरुचि एवं स्वच्छता का वातावरण बनाना चाहिए। कर्मकाण्ड के लिए ऐसा स्थान चुनना चाहिए, जहाँ पर होने वाले पूजन उपचार

को उपस्थित समुदाय भली प्रकार देख-सुन सके। भूमि पूजन का विशेष कर्मकाण्डभ रय हाँ दयाज ार हाहै। उसके आगे-पीछे सामान्य कर्मकाण्डों की विवेकपूर्ण शृङ्खला जोड़ लेनी चाहिए। यदि समय हो और व्यवस्था ठीक प्रकार बनाई-सँभाली जा सके, तो यह कार्य यज्ञ सहित सम्पन्न किया जा सकता है। पहले षट्कर्म से लेकर रक्षाविधान तक का कृत्य पूरा कर लिया जाए। उसके बाद भूमि पूजन का विशेष क्रम चलाया जाए। उसके पूर्ण होने पर अग्नि स्थापना से लेकर अन्त तक के शेष कर्मकाण्ड पूरे किये जाएँ।

यदि समय और व्यवस्था की दृष्टि से यह अधिक कठिन लगे, तो षट्कर्म के बाद सङ्कल्प, सर्वदेव नमस्कार, स्वस्तिवाचन कराकर भूमि पूजन कर्म कराया जाए। उसके बाद गायत्री मन्त्र

बोलते हुए पाँच घी के दीपक जलाए जाएँ। अन्त में क्षमा प्रार्थना, नमस्कार, शुभकामना, अभिसिञ्चन, विसर्जन एवं जयघोष कराकर कार्यक्रम समाप्त किया जा सकता है। क्रम इस प्रकार है-

षट्कर्म-

उपयुक्त प्रतिनिधियों को पूजा स्थान पर बिठाकर पहले षट्कर्म अर्थात्

1 **पवित्रीकरण**

2 **आचमन**

3 **शिखावन्दन**

4 **प्राणायाम**

5 **न्यास**

6 **पृथ्वी पूजन**

यदि बिठाकर षट्कर्म कराने की स्थिति न हो, तो खड़े-खड़े ही केवल पवित्रीकरण मन्त्र से सामूहिक सिञ्चन कराकर आगे बढ़ा जा सकता है।

सङ्कल्प-

प्रतिनिधियों के हाथ में अक्षत, पुष्प, जल आदि देकर भूमि पूजन का सङ्कल्प बोला जाए। मन्त्र बोलने के बाद पुष्प-अक्षत उसीभूमि पर चढ़ा दिये जाएँ, जिसका पूजन किया जा रहा हो।

..................**नामाहं पृथिवीमातुः ऋणं अपाकर्त्तुं तां प्रतिस्वकर्त्तव्यं स्मर्त्तुं अस्याः निकृष्टसंस्कार-निस्सारणार्थं श्रेष्ठसंस्कार-स्थापनार्थञ्च देवपूजनपूर्वकं सपरिजनाः श्रद्धापूर्वकं भूमिपूजनं वयं करिष्यामहे।**

सामान्य पूजा उपचार-

सङ्कल्प के बाद व्यवस्थानुसार देवपूजन, स्वस्तिवाचन आदि कार्य कराए जाएँ।

भूमि अभिसिञ्चन-

शुभ कार्य के लिए जिस भूमि का प्रयोग किया जाना है, उसमें पवित्रता के

सञ्चार के लिए यह प्रक्रिया है। एक प्रतिनिधि पात्र में पवित्र जल लेकर कुशाओं, आम्र-पल्लवों या पुष्पों से भूमि के चारों ओर छींटे लगाएँ। नीचे लिखे पाँचों मन्त्रों के साथ देवशक्तियों से उस क्षेत्र सहित सभी परिजनों के लिए पवित्रता की याचना की जाए।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः
पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि
जातवेदः पुनीहि मा॥ -19.39

ॐ पुनाति ते परिस्रुतꣳ
सोमꣳ सूर्यस्य दुहिता।
वारेण शश्वता तना॥ -19.4

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः
प्रसवउत्पुनाम्यच्छिद्रेण
पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य

यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥ -1.12, 4.4

ॐ पवित्रेण पुनीहि मा
शुक्रेण देव दीद्यत् ।
अग्ने कृत्वा क्रतूँ1रनु ॥ -19.40

ॐ पवमानः सो अद्य नः
पवित्रेण विचर्षणिः ।
यः पोता स पुनातु मा ॥ -19.42

दिग्पाल पूजन-

भूमि में बीज ही नहीं संस्कार भी उपजते हैं। मरघटों के वीभत्स चीत्कार भरे, डरावने और आश्रमों के शान्त सुरभित मनोरम वातावरण को हर कोई स्पष्ट अनुभव कर सकता है। इस अन्तर का कारण इन स्थानों के संस्कार होते हैं। गन्दे स्थलों पर जाते ही बुरे भाव और रमणीक स्थानों में प्रसन्नता का प्रस्फुटन-यह इस तथ्य के प्रतीक हैं कि भूमि में अच्छे बुरे संस्कार ग्रहण करने-

आत्मसात् करने की विलक्षण शक्ति होती है। इसी कारण भारतीय संस्कृति में प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व भूमिपूजन आवश्यक माना गया है। अतः इन देवालयों में प्रारम्भ से ही वह संस्कार पैदा किये जाने चाहिए। उसके लिये भूमिपूजन समारोह अनिवार्य बना दिया गया है। पौरोहित्य की परम्परा की दृष्टि से भी भूमिपूजन कृत्य अपने उत्तरदायी सभी परिजनों को अवश्य जानना चाहिये।

राजतन्त्र, समाजतन्त्र अर्थतन्त्र आदि सन्तुलित व्यवस्था एवं अनुशासन के आधार पर ही टिकते हैं। पृथ्वी की दसों दिशाओं में व्यवस्था एवं सन्तुलन के लिए उत्तरदायी दश देवशक्तियों को दिक्पाल की संज्ञा दी गयी है। भूमिपूजन के समय उन हितकारी शक्तियों को मान्यता देते हुए उनका

पूजन किया जाता है। कामना एवं प्रार्थना की जाती है कि वे होने वाले कार्यों में विघ्न न आने दें। सन्तुलन व्यवस्था बनाये रखने के हमारे प्रयासों को सफल बनाने में प्रेरणा एवं सहयोग प्रदान करें। पूजन के लिए प्रतिनिधि के हाथ में रोली, अक्षत, पुष्प, जल आदि देकर मन्त्र बोलें। यज्ञवेदी या पूजावेदी के चारों ओर उन्हें हर मन्त्र के साथ उसी दिशा में चढ़ायें, जिस दिशा का मन्त्र में उल्लेख है। आठ दिशाओं में चारों ओर पाताल के लिए चौकी के नीचे तथा आकाश के लिए चौकी के ऊपर पूजा द्रव्य चढ़ायें।मन्त्र क्रमशः इस प्रकार हैं-

1 पूर्व दिशा में-

ऐरावत समारूढं,
वज्रहस्तं महाबलम्।
आश्रितं दिशि पूर्वस्यां,

इन्द्रमावाह्याम्यहम् ॥
ॐ इन्द्राय नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, पूजयामि ॥

2 आग्नेय दिशा में-

छागपृष्ठ समारूढं,
शक्तिहस्तं महाबलम्।
आश्रितं दिशि चाग्नेयां,
अग्निमावाह्याम्यहम् ॥
ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, पूजयामि ॥

3 दक्षिण दिशा में-

महिषपृष्ठ समारूढं,
दण्डहस्तं महाबलम्।
याम्यां दिशि समासीनं,
यममावाह्याम्यहम् ॥
ॐ यमाय नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि,पूजयामि ॥

4 **नैर्ऋत्यदिशा में-**

महाप्रेत समारूढं,
खड्गहस्तं महाबलम्।
नैर्ऋत्यां दिशि चासीनं,
निर्ऋतिमावाह्याम्यहम्॥
ॐ निर्ऋतये नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, पूजयामि॥

5 **पश्चिम दिशा में-**

महामकरमारूढं, पाशहस्तं
महाबलम्। वारुण्यां दिशि
चाश्रित्यं, वरुणमावाह्यहम्॥
ॐ वरुणाय नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, पूजयामि॥

6 **वायव्यदिशा में-**

मृगपृष्ठ समारूढं,
हस्तेंऽकुशमेव च। वायव्यां दिशि
चाश्रित्यं, वायुमावाह्याहम्॥
ॐ वायवे नमः। आवाहयामि,

स्थापयामि, पूजयामि॥

7 उत्तर दिशा में-

श्वेताश्वे समारूढं, गदाहस्तं महाबलम्। उदीच्यां दिशि चाश्रित्यं, कुबेरमावाह्याम्यहम्॥

ॐ कुबेराय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि॥

8. ईशान दिशा में-

वृषपृष्ठ समारूढं, शूलहस्तं महाबलम्। ईशान्यां दिशि चाश्रित्यं, ईशमावाह्याम्यहम्॥

ॐ ईशानाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि॥

9 नीचे की ओर-

नागपृष्ठ समारूढं, हलहस्तं महाबलम्। पातालतलमाश्रित्यं, अनन्तमावाह्याम्यहम्॥

ॐ अनन्ताय नमः। आवाहयामि,

स्थापयामि, पूजयामि॥

10 **ऊपर की ओर-**

हंसपृष्ठ समारूढं, स्रुवहस्तं
महाबलम्। ब्रह्मणो दिशमाश्रित्य,
ब्रह्मणा मावाह्याम्यहम॥
ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, पूजयामि।

प्राणप्रतिष्ठा एवं पूजन

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽ इमं यज्ञं
मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥
ॐ शेषमूर्द्धिस्थितां रम्यां,
नानासुखविधायिनीम्।
विश्वधात्रीं महाभागां,
विश्वस्य जननीं पराम्॥
यज्ञभागं प्रतीक्षस्व,
सुखार्थं प्रणमाम्यहम्।
तवोपरि करिष्यामि,
मण्डपं सुमनोहरम्।

क्षन्तव्यं च त्वया देवि!
सानुकूला मखे भव।
निर्विघ्नं मम कर्मेदं,
यथा स्यात्त्वं तथा कुरु॥ -गी.पु.प.

अर्थात्- शेषनाग के सिर पर स्थित विविध सुख-भोगों को प्रदान करने वाली, विश्व का पालन करने वाली, महाभाग्यवती विश्व के समस्त जीवों को जन्म देने वाली हे वसुन्धरे! हम आपको नमन करते हैं। आप यज्ञ भाग की प्रतीक्षा करें। हम आपके धरातल पर सुन्दर मण्डप का निर्माण करेंगे। कष्ट के लिए हमें क्षमा करें। आप यज्ञ में हमारे अनुकूल रहें। हमारा यह यज्ञ कार्य जैसे भी निर्विघ्न सम्पन्न हो, वैसी कृपा करें।

माङ्गलिक द्रव्य स्थापना

ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता
नमस्ते अस्तु मा मा हि ँ सीः।

नि वर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥

-3.63

अर्थात्- आप (छुरा या उस्तरा) नाम से ही शिव-कल्याणकारी हैं, स्वयं धारयुक्त शस्त्र आपके पिता हैं। हम आपको नमन करते हैं। हमें पीड़ित न करें। हम आयु, पोषक अन्नादि, सुसन्तति, ऐश्वर्य-वृद्धि, उत्तम-प्रजा एवं श्रेष्ठ वीर्य लाभ के लिए विशिष्ट सन्दर्भ में मुण्डन कृत्य में प्रयास करते हैं।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे
भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ -23.1

अर्थात्- सृष्टि के प्रारम्भ में हिरण्यगर्भ परम-पुरुष (प्रजापति) सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के एक मात्र उत्पादक और पालक रहे। वे सम्पूर्ण जगत् की

उत्पत्ति से पहले भी विद्यमान थे,वही स्वर्ग, अन्तरिक्ष और पृथ्वी को धारण करने वाले हैं, हम उसी आनन्द स्वरूप प्रजापति की तृप्ति के लिए आहुति समर्पित करते हैं। (उनके अतिरिक्त और किसे आहुति समर्पित करें)।

तत्पश्चात् सुविधानुसार यज्ञ-दीपयज्ञ का शेष क्रम पूरा कर सकते हैं। उपस्थित जनसमुदाय से भी पुष्पाञ्जलि कराई जा सकती है।

गृहप्रवेश-वास्तु शान्ति प्रयोग

नये-पुराने निर्मित मकान, दुकान आदि में निवास प्रारम्भ करने के पूर्व या रहने के समय गृह प्रवेश या वास्तु शान्ति का प्रयोग सम्पन्न करना प्रायः अनिवार्य-सा माना जाता है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए इस कर्मकाण्ड की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की जा रही है-

सर्वप्रथम षट्कर्म, तिलक, रक्षासूत्र, कलशपूजन, दीपपूजन, देवावाहन पूजन, सर्वदेव नमस्कार, स्वस्तिवाचन, रक्षाविधान तक की प्रक्रिया पूरी करके पूजावेदी पर वास्तुपुरुष का आवाहन-पूजन सम्पन्न करें।

॥वास्तुपुरुषपूजन॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहि

अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः।

यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व
शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ -ऋ.7.54.1
ॐ भूर्भुवः स्वः। वास्तुपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। गन्धाक्षतं, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि।

अर्थात्- हे वास्तोष्पते (गृहपालक देव)!अ ापह मेंज गाएँ ाह मारेद ारम ें पुत्र-पौत्र आदि द्विपदों, गौ, अश्व आदि चतुष्पदों को नीरोग एवं सुखी करें। जो धन हम आपसे माँगें, वह हमें प्रदान करें। ततो नमस्कारं करोमि-

ॐ विशन्तु भूतले नागाः,
लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डलेऽ त्रावतिष्ठन्तु,
ह्यायुर्बलकराः सदा॥
वास्तुपुरुष देवेश !
सर्वविघ्न- विदारण।

शान्तिं कुरु सुखं देहि,
यज्ञेऽस्मिन्मम सर्वदा॥

अर्थात्- धरती पर जो नाग लोकपालगण आदि रहते हैं, वे आयु और बल प्रदान करने वाले इस वास्तुमण्डल में विराजमान हों। हे देवों के स्वामी वास्तुपुरुष! सभी विघ्नों को नष्ट करने वाले आप इस यज्ञ में उपस्थित होकर मुझे सर्वदा सुख और शान्ति प्रदान करें।

॥ विशेषाहुतिः ॥

तत्पश्चात् अग्निस्थापन, प्रदीपन आदि करते हुए 24 बार गायत्री मन्त्र की विशेष आहुति समर्पित करें। इसके बाद खीर, मिष्टान्न या केवल घृत से 5 बार विशेष आहुति समर्पित करें।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवा नः।

यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव
द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा।
इदं वास्तोष्पतये इदं न मम॥

-ऋ.7.54.1

अर्थात्- हे वास्तोष्पते (गृह पालक देव)! आप हमें जगाएँ। हमारे घर में पुत्र-पौत्र आदि द्विपदों, गौ, अश्व आदि चतुष्पदों को नीरोग एवं सुखी करें। जो धन हम आपसे माँगें, वह हमें प्रदान करें।

ॐ वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि
गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो।
अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव
पुत्रान् प्रति नो जुषस्व स्वाहा।
इदं वास्तोष्पतये इदं न मम॥

-ऋ.7.54.2

अर्थात्- हे वास्तोष्पते! आप हमारे लिए कल्याणकारी धन का विस्तार करें। हे सोम! हम आपकी कृपा से गौओं और

घोड़ों के साथ नीरोग रहें। आप हमारा पुत्रवत् पालन करें।

ॐ वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते
सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या।
पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं
पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा।
इदं वास्तोष्पतये इदं न मम॥

-ऋ.7.54.3

अर्थात्-हे वास्तोष्पते! हम आपसे सुखकर,रमणीय एवं ऐश्वर्य-सम्पन्न स्थान प्राप्त करें।हमें प्राप्त हुए और प्राप्त होने वाले श्रेष्ठ धन की आप रक्षा करें। हमें सदा कल्याणकारी साधनों से सुरक्षित रखें।

ॐ अमीवहा वास्तोष्पते
विश्वा रूपाण्याविशन्।
सखा सुशेव एधि नः स्वाहा।
इदं वास्तोष्पतये इदं न मम।

-ऋ. 7.55.1

अर्थात्-हे वास्तोष्पते (गृह पालक)! आप हमारे हर प्रकार से मित्र हैं, हमारे हर प्रकार के रोगों का नाश करें।

ॐ वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां
सन्नं सोम्यानाम्। द्रप्सो भेत्ता पुरां
शश्वतीनाम् इन्द्रो मुनीनां सखा स्वाहा।
इदं वास्तोष्पतये इदं न मम।

-ऋ. 8.17.14

अर्थात्- हे वास्तोष्पते (गृहस्वामी)! घर के स्तम्भ मजबूत हो,सोमयज्ञ करने वाले याजकों को देह-रक्षक शक्ति की प्राप्ति हो। राक्षसों के अनेक नगरों को उजाड़ने वाले सोमपायी इन्द्रदेव मुनियों के सखा हों।

तत्पश्चात् पूर्णाहुति आदि कार्यक्रम सम्पन्न करें।

प्राण प्रतिष्ठा प्रकरण

सूत्र सङ्केत-
देवालयों में प्रतिमा का पूजन प्रारम्भ करने से पूर्व उनमें प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है। उसके पीछे मात्र परम्परा नहीं, परिपूर्ण तत्त्वदर्शन सन्निहित है। इस परम्परा के साथ हमारी सांस्कृतिक मान्यता जुड़ी है कि पूजा मूर्ति की नहीं की जाती, दिव्य सत्ता की, महत् चेतना की, की जाती है। स्थूल दृष्टि से मूर्ति को माध्यम बनाकर भी प्रमुखता उस दिव्य चेतना को ही दी जानी चाहिए। अस्तु, प्राण-प्रतिष्ठा प्रक्रिया-क्रम में जिस प्रतिमा को हम अपनी आराधना का माध्यम बना रहे हैं, उसे संस्कारित करके उसमें दिव्य सत्ता के अंश की स्थापना का उपक्रम किया जाता है।

यह भी एक विज्ञान है। पृथ्वी में हर जगह पानी है, बोरिंग करके पम्प द्वारा उसे एकत्रित किया जा सकता है। वायु को कम्प्रेसर पम्प द्वारा किसी पात्र में घनीभूत किया जा सकता है। लेंसों के माध्यम से सर्वत्र फैले प्रकाश को सघन करके स्थान विशेष पर एकत्रित किया जाना सम्भव है। पानी, वायु, और प्रकाश की तरह परमात्म तत्त्व भी सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। उसे घनीभूत करके किसी माध्यम विशेष में स्थापित करना भी एक विशिष्ट प्रक्रिया है। उसके लिए श्रद्धासिक्त कर्मकाण्ड की व्यवस्था तत्त्वदर्शियों ने बनाई है। मन्दिर एवं प्रतिमा को उस महत् सत्ता के अवतरण के उपयुक्त बनाकर उसमें उसकी स्थापना करने के लिए प्राण-प्रतिष्ठा प्रयोग किया जाता है।

क्रम व्यवस्था-

प्राण-प्रतिष्ठा के लिए यज्ञीय वातावरण बनाना आवश्यक है। अस्तु, प्राण-प्रतिष्ठा के क्रम में सामूहिक गायत्री यज्ञ का एक या अधिक दिन का आयोजन रखा जाना चाहिए। उसमें जल यात्रा से लेकर अन्यान्य कर्मकाण्ड सुविधा-व्यवस्था एवं समय का सन्तुलन बिठाते हुए किये जाने चाहिए। यज्ञीय वातावरण में प्राण-प्रतिष्ठा का कर्मकाण्ड किया जाए।

मूर्ति स्थापना स्थल पर पहले से रखी रहे। उसके आगे पर्दा लगा रहे। दस स्नान एवं पूजन की सामग्री पर्दे के अन्दर पहले से तैयार रखी जाए। जितनी मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा करनी है, उतने स्वयं सेवकों-व्यक्तियों को पहले से उस कार्य के लिए नियुक्त कर लिया जाना चाहिए। वे व्यक्ति ही पर्दे के अन्दर जाकर सञ्चालक के निर्देशानुसार प्राण-

प्रतिष्ठा का कार्य करें। अच्छा हो कि यह कृत्य समझदार कुमारी कन्याओं से कराया जाए। उसके लिए उन्हें पहले से सारा क्रम समझा दिया जाना चाहिए। नीचे लिखे क्रम से कर्मकाण्ड कराया जाए।

1 **षट्कर्म**

जिन्हें प्राण-प्रतिष्ठा करनी है, उन्हें प्रतिमाओं के पर्दे के बाहर आसन पर बिठाकर पहले षट्कर्म करा दिया जाए।

2 **शुद्धि सिञ्चन**

यज्ञ के कलशों का जल अनेक पात्रों में निकाल कर रखा जाए। मन्त्र पाठ के साथ उस जल का सिञ्चन, उपस्थित व्यक्तियों, पूजन सामग्री, मन्दिर एवं मूर्तियों पर किया जाए।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवः ता नऽ

ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।
ॐ यो वः शिवतमो रसः तस्य
भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।
ॐ तस्माऽअरंगमाम वो यस्य
क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः। -11.50-52

3 दशविध स्नान

4 प्राण आवाहन

ॐ प्राणमाहुर्मातरिश्वानं,
वातो ह प्राण उच्यते।
प्राणे ह भूतं भव्यं च प्राणे सर्वं
प्रतिष्ठितम्॥ -अथर्व. 11.4.15

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं
शं षं सं हं लं क्षं हं सः।
अस्याः गायत्रीदेवीप्रतिमायाः
प्राणाः इह प्राणाः।
ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं
शं षं सं हं लं क्षं सः।

अस्याः प्रतिमायाः जीव इह स्थितः।
ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं
शं षं सं हं लं क्षं सः।
अस्याः प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि,
वाङ् मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्रजिह्वा
घ्राणपाणिपादपायूपस्थानि,
इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु
स्वाहा।

अर्थात्- हम उपर्युक्त तन्त्रोक्त मन्त्रों के द्वारा इस प्रतिमा में आपके प्राणों की, जीव की तथा समस्त इन्द्रियों की प्रतिष्ठा करते हैं। आप यहाँ उपस्थित होकर चिरकाल तक सुखपूर्वक निवास करें। हम आपका यजन करते हैं।

5 प्राणप्रतिष्ठा हेतु न्यास

ॐ ब्रह्मा मूर्ध्नि। शिखायां विष्णुः।
रुद्रो ललाटे। भ्रुवोर्मध्ये परमात्मा।

चक्षुषोः चन्द्रादित्यौ। कर्णयोः शुक्रबृहस्पती। नासिकयोः वायुदैवतम्। दन्तपंक्तौ अश्विनौ। उभे सन्ध्ये ओष्ठयोः। मुखे अग्निः। जिह्वायां सरस्वती। ग्रीवायां तु बृहस्पतिः। स्तनयोः वसिष्ठः। बाह्वोः मरुतः। हृदये पर्जन्यः। आकाशम् उदरे। नाभौ अन्तरिक्षम्। कट्योः इन्द्राग्नी। विश्वेदेवा जान्वोः। जङ्घायां कौशिकः। पादयोः पृथिवी। वनस्पतयोंऽगुलीषु। ऋषयो रोमसु। नखेषु मुहूर्ताः। अस्थिषु ग्रहाः। असृङ्मांसयोः ऋतवः। संवत्सरो वै निमिषे। अहोरात्रं त्वादित्यश्चन्द्रमा देवता।

अर्थात्- हे वेदमातः, हे देवमातः, हे विश्वमातः गायत्रि देवि! इस ब्रह्माण्ड के विभिन्न क्षेत्र आपके विग्रह के विभिन्न अङ्गों के रूप में ही प्रतिष्ठित

हैं। यथा- सिर में ब्रह्म, शिखा में विष्णु, ललाट में शिव, भ्रू (भौं के) मध्य में परमात्मा, नेत्रों में सूर्य, चन्द्रमा, कानों में शुक्र, बृहस्पति, नासिका में वायु देवता, दन्त-पंक्तियों में अश्विनीकुमार, ओष्ठों में दोनों सन्ध्याएँ मुख में अग्नि, जिह्वा में सरस्वती, गले में बृहस्पति, स्तनों में वसिष्ठ, भुजाओं में मरुत्, हृदय में पर्जन्य, उदर में आकाश, नाभि में अन्तरिक्ष, कटि में इन्द्राग्नी, घुटनों ने विश्वेदेवा, जंघाओं में कौशिक (विश्वामित्र), पैरों में पृथ्वी, अंगुलियों में वनस्पतियाँ, रोमकूपों में ऋषिगण, नखों में मुहूर्त्त, अस्थियों में ग्रह, रक्त-मांस में ऋतुएँ, पलकों में संवत्सर और अहोरात्र में आदित्य-चन्द्रमा प्रतिष्ठित हैं।

ॐ प्रवरां दिव्यां गायत्रीं
सहस्रनेत्रां शरणमहं प्रपद्ये।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्याय नमः।
ॐ तत्पूर्वजयाय नमः।
ॐ तत्प्रातरादित्याय नमः।
ॐ तत्प्रातरादित्यप्रतिष्ठायै नमः।

-गा.पु.प.

अर्थात्- विश्व की परम श्रेष्ठ दिव्य शक्ति, सहस्र नेत्रों वाली गायत्री देवी की शरण में आये हैं। हम सविता के वरेण्य तेजस् को प्रणाम करते हैं, उसके पूर्व जयशील तेजस् को प्रणाम करते हैं, प्रातःकालीन आदित्य के दिव्य तेजस् को प्रणाम करते हैं। प्रातःकालीन आदित्य में प्रतिष्ठित गायत्री को दिव्य तेजस् के रूप में प्रणाम करते हैं।

प्राण स्थिरीकरण

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु,
अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै,
मामहेति च कश्चन॥ - प्रति.म.पृ.352

अर्थात्- इस देव प्रतिमा के प्राण यहाँ प्रतिष्ठित हों, इसमें निरन्तर दिव्य प्राणों का सञ्चरण होता रहे। अर्चना के लिए इसके देवत्व की महनीयता को कोई सामान्य न समझे।

षोडशोपचार-

पुरुषसूक्त *(पृष्ठ 186 से 198)* करें, तदुपरान्त वेदमाता या प्रतिष्ठित प्रतिमा की आरती उतारें, साष्टाङ्ग प्रणाम करें।

ॐ त्वं मातः सवितुर्वरेण्यमतुलं,
भर्गः सुसेव्यः सदा,
यो बुद्धीर्नितरां प्रचोदयति नः,
सत्कर्मसु प्राणदः।

तद्रूपां विमलां द्विजातिभिरुपा,
स्यां मातरं मानसे,
ध्यात्वा त्वां कुरु शं ममापि जगतां,
सम्प्रार्थयेऽहं मुदा ॥ -गा.पु.प.

अर्थात्-ह`व`दमाताग ायत्रि!अ ाप सविता के श्रेष्ठ अतुलनीय भर्ग रूप में सर्वदा उपासनीय हैं। वह आपका प्राणदायी दिव्य तेज हमें श्रेष्ठकर्मों के अनुष्ठान की प्ररेणा देता है। समस्त द्विजों से उपास्य विमल रूपिणी हे मात! हम मानस पटल पर आपका ही ध्यान करते हैं। आप हमारा तथा सम्पूर्ण जगत् का कल्याण कीजिए, हम तो प्रसन्नतापूर्वक आपसे यही प्रार्थना करते हैं।

आरती समाप्त होने पर सभी उपस्थित श्रद्धासुजन भावना सहित मातेश्वरी को नमस्कार करें। नमस्कार के साथ यह मन्त्र बोला जाये- तत्पश्चात् जयघोष के साथ कार्यक्रम समाप्त करें।

नमस्कार-

ॐ नमस्ते देवि गायत्रि!
सावित्रि त्रिपदेऽक्षरे!
अजरे अमरे मातः,
त्राहि मां भवसागरात्।
नमस्ते सूर्यसंकाशे,
सूर्यसावित्रिकेऽमले!
ब्रह्मविद्ये महाविद्ये,
वेदमातर्नमोऽस्तु ते॥
अनन्तकोटिब्रह्माण्ड-व्यापिनि
ब्रह्मचारिणि!
नित्यानन्दे महामाये,
परेशानि नमोऽस्तु ते॥ -गा.पु.प.

[हे गायत्री देवि! आपको हम प्रणाम करते हैं। आप ही सावित्री हैं, त्रिपदा एवं अक्षरा भी आप ही हैं। आप ही अजर हैं, आप ही अमर हैं। आप हमें जन्म-मरण रूप संस्कार से बचाएँ। सूर्य के समान तेजोमयी हे विशुद्ध रूपे, हे ब्रह्मविद्ये! हे

वेदमातः! हम आपको प्रणाम करते हैं। हे अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड में व्याप्त ब्रह्मचारिणी, हे नित्यानन्दे! हे महामाये! हे पराशक्ते! हम आपको प्रणाम करते हैं।]

विश्वकर्मा पूजन

ईश्वरेच्छा कहें या समय का प्रभाव, विश्वकर्मा पूजा इन दिनों सभी छोटे-बड़े तकनीकी संस्थानों में होने लगी है। तकनीकि संस्थानों से जुड़े सभी सम्प्रदायों केअनुयायी, बिना भेदभाव के इसमें भाग लेते हैं। जन भावना का सम्मान और उभरे उत्साह-प्रवाह के सदुपयोग हेतु विश्वकर्मा पूजा को सन्तुलित, व्यावहारिक, उपयोगी स्वरूप देने की आवश्यकता अनुभव हुई। पू. गुरुदेव ने स्वयं कहा है कि इस समय परमात्मसत्ता काल-समय की गति बदलने के लिए 'विश्वकर्मा' रूप में सक्रिय है। विश्वकर्मा पूजा के माध्यम से नवसृजन का सन्देश और सङ्कल्प सब तक सहज क्रम में पहुँचाया जा सकता है। छोटे-बड़े तकनीकी संस्थानों-

संगठनों से जुड़े परिजन इसे जगह-जगह व्यवस्थित एवं प्रभावी रूप दे सकते हैं। आवश्यकतानुसार भविष्य में इसे व्याख्या सहित प्रकाशित किया जा सकता है।

किसी भी पर्व पूजन की तरह देवमञ्च सजाएँ। विश्वकर्मा जी का पौराणिक चित्र मिल जाए, तो उसे स्थापित करें, अन्यथा ईश्वर के नव सृजन अभियान की प्रतीक लाल मशाल को भी प्रतीक रूप में स्थापित किया जा सकता है।

सुविधा हो तो युग संगीत, कीर्तन आदि से श्रद्धा का वातावरण बनाएँ। युगयज्ञ पद्धति के आधार पर क्रमशः

1 **पवित्रीकरण**

2 **सूर्यध्यान-प्राणायाम**

3 **तिलक धारण कराएँ।**

4 **पृथ्वी पूजन,** भूमि के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति के साथ **'ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका....'** (पेज-32 से) मन्त्र बोलकर पृथ्वी वन्दन कराएँ। अन्त में एतत् कर्मप्रधान **श्रीविश्वकर्मणे नमः** बोलें।

अथवा षट्कर्म से लेकर रक्षाविधान तक यज्ञका कर्मकाण्ड कराएँ विशेष पूजन-सम्भव हो तो सभी के हाथ में अक्षत पुष्प दें, फिर विश्वकर्मा देव का आवाहन करें।

ॐ कंबासूत्राम्बुपात्रं वहति करतले
पुस्तकं ज्ञानसूत्रम्। हंसारूढस्त्रिनेत्रः
शुभमुकुटशिरा सर्वतो वृद्धकायः।
त्रैलोक्यं येन सृष्टं सकलसुरगृहं,
राजहर्म्यादि हर्म्यं देवोऽसौ सूत्रधारो
जगदखिलहितः पातु वो विश्वकर्मन्॥
भो विश्वकर्मन् ! इहागच्छ इह तिष्ठ,
अत्राधिष्ठानं कुरु-कुरु मम पूजां गृहाण॥

षोडशोपचार पूजनम्-

समयानुसार पुरुषसूक्त अथवा सामान्य ढंग से षोडशोपचार पूजन सम्पन्न करें।

प्रार्थना-

नमामि विश्वकर्माणं
द्विभुजं विश्ववन्दितम्।
गृहवास्तुविधातारं महाबलपराक्रमम्॥
प्रसीद विश्वकर्मस्त्वं शिल्पविद्याविशारद।
दण्डपाणे! नमस्तुभ्यं तेजोमूर्तिधरप्रभो!

उक्त स्तुति में विश्वकर्मा जी के हाथ में चार प्रतीक कहे गये हैं-

1 **पुस्तक**
2 **पैमाना**
3 **जलपात्र**
4 **सूत्र-धागा**

यह सृजन के चार अनिवार्य माध्यमों के प्रतीक हैं।सृजन के लिए चाहिए

1 **ज्ञान** (पुस्तक)

2 **सही मूल्याङ्कन** (पैमाना)

3 **शक्तिसाधन** (पात्रता)

4 **कौशल का सतत क्रम** (सूत्र)

इन्हें प्रतीक रूप में देव मञ्च पर स्थापित करें। संक्षिप्त व्याख्या करके भाव भरी प्रार्थना करें। यह प्रार्थना करते हुए मञ्च पर प्रतिनिधि क्रमशः चारों प्रतीकों (पुस्तक, पैमाना, जलपात्र एवं सूत्र) पर पुष्प-अक्षत चढ़ायें।

प्रार्थना-

हे विश्वकर्मा प्रभो!

1 हमें सृजन का ज्ञान दें, अवसर दें, और ऐसी समझदारी दें, ताकि हम उसका लाभ उठा सकें। (पुस्तक स्पर्श)

2 हमें सृजन का उत्साह दें और ऐसी ईमानदारी दें कि हम उसके साथ न्याय कर सकें। (पैमाना का स्पर्श)

3 हमें शक्ति-साधना दें और ऐसी जिम्मेदारी दें कि हम उनका सदुपयोग कर सकें (पात्र का स्पर्श)।

4 हमें वह कौशल और उसे वहन करते रहने की बहादुरी प्रदान करें। (सूत्र का स्पर्श)।

विश्वकर्मन् नमस्तेऽस्तु,
विश्वात्मन् विश्वसम्भवः।
अपवर्गोऽसि भूतानां,
पंचानां परतः स्थितः-
महा.शान्ति -47/85

प्रार्थना के बाद युगयज्ञ पद्धति से चारों प्रतीकों सहित विश्वकर्मा जी का पञ्चोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् अग्निस्थापन से हवन का क्रम सम्पन्न करें अथवा दीपयज्ञ करें। दीपयज्ञ- 5 या 24 दीपक प्रज्वलित करके दीपयज्ञ के साथ 7 या 11 बार गायत्री मन्त्र की

आहुति दें। विशेष आहुति-एक या तीन आहुतियाँ नीचे लिखे मन्त्र से दें-

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वावृधानः
स्वयं यजस्व पृथिवीमुत द्याम्।
मुह्यन्त्वन्ये अभितः सपत्नाऽ
इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु स्वाहा।
इदं विश्वकर्मणे इदं न मम॥

-यजु. 27.22

कोई सृजन सङ्कल्प लेने का आग्रह करके पूर्णाहुति मन्त्र बोलें। आरती करें। विश्वकर्मा प्रभु को यज्ञरूप कहकर '**यज्ञ रूप प्रभो....**' *(पेज-125 से)* आरती की जाय अथवा विश्वकर्मा जी की आरती हो, तो उसे करें। **ॐ नमोस्तवनन्ताय..** *(पेज-114 से)* मन्त्र से नमस्कार कराकर जयघोष एवं प्रसाद वितरण करें।

एकादशी उद्यापन

ऋषियों ने एकादशी व्रत का विधान बनाने के पीछे लोगों के अन्दर उदारता, दान, सेवा के भावों को विकसित करना था। आज भौतिकवाद के विकास के कारण लोग भावना विहीन होते जा रहे हैं, इसीलिये व्रत-अनुष्ठानों की महती आवश्यकता है।

एकादशी व्रत करने वाले व्यक्ति एकादशी को अन्न का परित्याग करते हैअ ौरफ ल, श ााक,द ूध,क न्दक ा प्रसाद ग्रहण करते हैं। इसके पीछे देश के सामाजिक, आर्थिक विकास की दृष्टि है। अगर 10 करोड़ लोग भी एकादशी व्रत करते हैं तो 5 करोड़ किलो अनाज की बचत होती है और अन्न की बचत करना अन्न उपजाने जैसा ही है। यह राष्ट्रिय खाद्यान्न की

कमी को पूरा करने में एक महत्त्वपूर्ण योगदान जैसा है।

उदारता और त्याग का अनुपम उदाहरण यहाँ यह है कि व्रत करने वाले द्वादशी के दिन किसी लोकसेवी, धर्मसेवी जिसे ब्राह्मण भी कहा जाता है को दान करके भोजन ग्रहण करते हैं। इस व्यवस्था से लोक सेवी को अपनी आजीविका के उपार्जन की आवश्यकता नहीं रहती और पूरा समय समाज के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान में लगाते हैं। इसीलिये हमारे शास्त्रों मे एकादशी व्रत की महिमा गायी जाती है। प्रारम्भिक पूजन प्रकरण मङ्गलाचरण-पवित्रीकरण से रक्षाविधान तक करने के उपरान्त क्रमशः श्री विष्णुभगवान् एवं लक्ष्मीमाता का आवाहन करें।

श्री विष्णु आवाहन-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा। ॐ विष्णवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि।

प्रार्थना-

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं,
पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं,
मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं,
योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं,
सर्वलोकैकनाथम्॥

लक्ष्मी आवाहन-

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽ इषाण

सर्वलोकं मऽ इषाण।
ॐ लक्ष्म्यै नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥

प्रार्थना-

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं,
सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं,
जातवेदो मऽआवह॥

तदुपरान्त पुरुषसूक्त *(पृष्ठ 186-198)* से षोडशोपचार पूजन करें।

उद्यापन सङ्कल्प-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्री मद्भगवतो
महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया
प्रवर्तमानस्य, अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये
परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे
वैवस्वतमन्वन्तरे भूर्लोके जम्बूद्वीपे
भारतवर्षे भरतखण्डे
आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते........

क्षेत्रे........स्थले........मासानामासोत्तमे मासे........पक्षे........तिथौ........वासरे........गोत्रोत्पन्नः........नामाहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं एकादशी व्रतोद्यापनसाङ्गतासिध्यर्थं अंशदानं........समर्पयितुं सङ्कल्पं अहं करिष्ये।

सुविधानुसार यज्ञ/दीपयज्ञ के शेष क्रम पूरा कर कार्यक्रम समाप्त करें।

वाहन-उद्योग-कारखाना-मशीन पूजन

(यज्ञ कर्मकाण्ड प्रकरण में दिये गये मन्त्रों का उपयोग करें)

सामूहिक पवित्रीकरण, (षट्कर्म प्रकरण से) तिलक, (चन्दन) रक्षासूत्र, गुरु - गायत्री आवाहन, सर्वदेवनमस्कार, स्वस्तिवाचन के उपरान्त **मङ्गलं भगवान् विष्णुः......** **स्वस्ति नऽ इन्द्रोवृद्धश्रवाः..........मन्त्र** का पाठ करते हुए स्वस्तिक या **ॐ** बनायें और पूजन करें, स्टेयरिंग, मुख्य मशीन या मुख्य स्थान पर पूजन सामग्री (नारियल आदि) समर्पित करें। उपस्थित सभी परिजन स्वस्तिवाचन के समय दिया गया अक्षत-पुष्प शुभकामना पुष्पाञ्जलि के भाव से मुख्य स्थान पर चढ़ायें।

शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त करें। उपर्युक्त सभी मन्त्र प्रारम्भिक पृष्ठों में दिये गये हैं।

नोट-

मन्त्र- (मन्त्रपाठ करते हुए स्वस्तिक बनायें और पूजन करें।)

- स्टेयरिंग में कलावा बँधवा दिया जाय।
- बोनट पर बड़ा सा स्वस्तिक बनवा दें।
- गाड़ी के अन्दर पुष्पाक्षत डालकर पूजन करें ।
- चित्र व स्टीकर लगवा दें।
- स्वस्तिवाचन के पुष्पाक्षत सभी लोग गाड़ी के ऊपर डालते रहें।

गोदान सङ्कल्प (गो-पूजन विधि)

भारतीय संस्कृति में गौ को माता मानकर पूजा जाता है। गोदान को सर्वश्रेष्ठ दान कहा जाता है। गाय ने भले ही सारे विश्व वसुधा को बनाया ना हो किन्तु वह पोषण संवर्धन सभी का करती है। इसी से हमारे यहाँ कहा गया है... गावो विश्वस्य मातरः। वह न केवल मनुष्य बल्कि, पशु- पक्षी, नदी, तालाब, खेत, जंगल, हवा, पानी, आकाश आदि सभी का पालन पोषण करती है। उन्हें शुद्ध पवित्र रखती है। मनुष्य के कई रोग तो, उसके साथ रहने व उसे प्रेम से सहलाने मात्र से नष्ट हो जाते हैं। गोमूत्र के नियमित पान से तो प्रायः सारे रोग नष्ट हो जाते हैं, उसके द्वारा दिये जाने वाले हर पदार्थ अमृत गुणों से युक्त और जीवनदायी है। माता तो माता ही है,

किन्तु जिस दिन हमारा ध्यान मात्र दूध देने वाले गुण से हटकर उसके पालन पोषण संरक्षण करने वाले गुणों पर जाएगा, तो हम सब सुखी हो जाएंगे।

पूजन विधि में जहाँ मन्त्र नहीं दिये गये हैं, वहाँ यज्ञ कर्मकाण्ड प्रकरण में से दिये गये मन्त्रों का उपयोग करें।

मङ्गलाचरण, पवित्रीकरण, तिलक, कलावा, गौशाला-भूमि पूजन (स्पर्श) गुरु, गायत्री, गणेश, गौरी आवाहन के पश्चात् गोपाल एवं गोमाता का आवाहन पूजन करें।

गोपाल आवाहन

ॐ वसुदेव सुतं देवं,
कंस चाणूर मर्दनम्।
देवकी परमानन्दं,
कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

गौमाता पूजन

ॐ आवाहयाभ्याम् देवीं,
गां त्वां त्रैलोक्यामातरम्।
यस्यां स्मरणमात्रेण,
सर्वपाप प्रणाशनम् ॥
त्वं देवीं त्वं जगन्माता,
त्वमेवासि वसुन्धरा ।
गायत्री त्वं च सावित्री,
गङ्गा त्वं च सरस्वती ॥
आगच्छ देवि कल्याणि,
शुभां पूजां गृहाण च ।
वत्सेन सहितां माता,
देवीमावाहयाम्यहम् ॥

आवाहन के बाद सभी दैवी शक्तियों का पुरुषसूक्त *(पृष्ठ 186 से 198)* से षोडशोपचार पूजन करें-तदुपरान्त

गोग्रास अर्पण

ॐ सुरभिवैष्णवी माता

नित्यं विष्णुपदे स्थिता।
ग्रासं गृह्यातु सा
धेनुर्यास्ति त्रैलोक्यवासिनी॥
ॐ सुरभ्यै नमः।
नैवेद्यं निवेदयामि।
पुष्पाञ्जलि/ माला अर्पण
ॐ गोभ्यो यज्ञा प्रवर्तन्ते,
गोभ्यो देवाः समुत्थिताः।
गोभ्यो वन्दाः समुत्कीर्णाः,
सषडगं पदक्रमाः॥
ॐ सुरभ्यै नमः पुष्पाञ्जलीं /
पुष्प मालां समर्पयामि

सङ्कल्प-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुःश्रीमद्भगवतो
महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया
प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये
परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे
वैवस्वतमन्वन्तरे भूर्लोके जम्बूद्वीपे

भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते........क्षेत्रे........ स्थल........मासानामासोत्तमे मासे ....पक्षे........तिथौ........वासरे........ गोत्रोत्पनः...................नामाहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल प्राप्तये ज्ञाताज्ञातानेकजन्मार्जित पापशमनार्थं धनधान्यआयुः-आरोग्यं निखिल वाञ्छित सिद्धये पितृणां निरतिशयानन्द ब्रह्मलोकावाप्तये च इमां सुपूजितां सालङ्कारां सवत्सांगौ........निमित्तं तुभ्यमहं सम्प्रददे।

तदुपरान्त गौमाता की यानि-कानि........या सप्तास्यासन........मन्त्र से परिक्रमा करें। गौमाता की आरती उतारें। सभी दैवी शक्तियों को प्रणाम कर शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त करें।

रस्म पगड़ी -

रस्म पगड़ी उत्तर भारत और पाकिस्तान के कुछ क्षेत्रों की एक सामाजिक रीति है, जिसका पालन हिन्दू, सिख और सभी धार्मिक समुदाय करते हैं। इस रिवाज में किसी परिवार के सब से अधिक उम्र वाले पुरुष की मृत्यु होने पर अगले सब से अधिक आयु वाले जीवित पुरुष के सर पर रस्मी तरीके से पगड़ी (जिसे दस्तार भी कहते हैं) बाँधी जाती है। क्योंकि पगड़ी इस क्षेत्र के समाज में इज़्जत का प्रतीक है, इसलिए इस रस्म से दर्शाया जाता है। परिवार के मान-सम्मान और कल्याण की जिम्मेदारी अब इस पुरुष के कन्धों पर है। साथ ही जो लोग पगड़ी पहनाते हैं, वे आश्वासन देते हैं कि भले ही घर के सबसे

महत्वपूर्ण व्यक्ति का सहारा घर से छूट गया हो, अब इस घर के दुःख में, आवश्यकता में हम लोग साथ खड़े होंगे। इससे घर के जिम्मेदार व्यक्ति को खोने का शोक कम होता है। रस्म पगड़ी का संस्कार या तो अन्तिम संस्कार के तीसरे, चौथे दिन या फिर तेहरवीं को आयोजित किया जाता है। वैसे समयाभाव के कारण रस्म पगड़ी से पूर्व घर में तर्पण यज्ञादि का क्रम भी पूरा कर लेना चाहिए। पुरातन शास्त्रों में भी तीसरे-चौथे दिन आशौच शुद्धि हो जाती है। आने-जाने वाले परिजनों-परिवारीजनों को भी इस सामाजिक बन्धन से मुक्ति मिल जाती है। समय और परिस्थिति के अनुसार भी यही अनुकूल रहता है।

(यज्ञ-कर्मकाण्ड प्रकरण में दिये गये मन्त्रों का उपयोग करें)

मङ्गलाचरण, षट्कर्म, पृथ्वीपूजन, तिलक, कलावा, कलश व दीपपूजन, गुरु-गायत्री का आवाहन एवं स्वस्तिवाचन करें-

यम आवाहन-

ॐ सुगन्नुपन्थां प्रदिशन्नऽएहि
ज्योतिष्मध्येह्यजरन्नऽआयुः।
अपैतु मृत्युममृतं मऽआगाद्
वैवस्वतो नोऽ अभयं कृणोतु।
ॐ यमाय नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥

पितृ आवाहन-

(दिवङ्गत आत्मा का चित्र)

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः
पिता महेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः
अक्षन्न पितरो मीमदन्त पितरो
तीतृपन्त पितरः पितरः सुन्धध्वम्।

ॐ पितृभ्यो नमः॥

सर्वदेव नमस्कारः, पञ्चोपचार / षोडशोपचारपूजनम्, स्वस्तिवाचनम् के बाद सामूहिक गायत्री मन्त्र का पाठ (12 या 24 बार) करें।

प्रार्थना

मङ्गल मन्दिर खोलो

मङ्गल मन्दिर खोलो दयामय।
जीवन बीता बड़े वेग से,
द्वार खड़ा शिशु भोलो।
मिटा अँधेरा ज्योति प्रकाशित,
शिशु को गोद में ले लो।
नाम तुम्हारा रटा निरन्तर,
बालक से प्रिय बोलो।
दिव्य आश से बालक आया,
प्रेम अमिय रस घोलो।

परिजनों द्वारा कुल परम्परा के अनुसार तिलक, पगड़ी इत्यादि करें-

तत्पश्चात् शान्तिपाठ कर पुष्पांजलि करते हुए सभी लोग परिवारजनों को आश्वस्त करते हुए बाहर होते हैं।

मूल शान्ति

यह त्रिआयामी, त्रिगुणात्मक सृष्टि है। नक्षत्र 27 हैं। इन्हें तीन समान वर्गों में बाँटें, तो

(1) **1 - 9**

(2) **10 - 18**

(3) **19 - 27**

यह वर्ग बनते हैं। इन तीनों वर्गों की सन्धि वाले नक्षत्रों को मूल संज्ञक नक्षत्र माना गया है। वे हैं 27 वाँ रेवती एवं प्रथम अश्विनी 9वाँ श्लेषा एवं 10 वाँ मघा तथा 18वाँ ज्येष्ठा एवं 19 वाँ मूल। यह तीन नक्षत्र युग्म ऐसे हैं, जहाँ दो संलग्न नक्षत्र अलग-अलग राशियों में हैं; किन्तु किसी का कोई चरण दूसरी राशि में नहीं जाता। इसलिए इन्हें नक्षत्र चक्र के 'मूल' अर्थात् प्रधान नक्षत्र माना गया है। ऐसे महत्त्वपूर्ण

नक्षत्रों को अशुभ मानने की परम्परा न जाने कहाँ से चल पड़ी? वस्तुतः तथ्य यह है कि नक्षत्रों का सम्बन्ध मानवी प्रवृत्तियों से है। नक्षत्र चक्र के तीन मूल बिन्दुओं पर स्थित नक्षत्रों में मानव की 'मूल' वृत्तियों को तीव्रता से उछालने की चिशेष क्षमता है। मूल वृत्तियों में शुभ-अशुभ दोनों ही प्रकार की वृत्तियों होती हैं। अस्तु, विचारकों ने सोचा कि हीनवृत्तियाँ विकास पाकर परेशानी का कारण भी बन सकती हैं। उन्हें निरस्त करने वाले, कुछ उपचार पहले ही किए जाएँ तो अच्छा है। इसलिए हीन, पाशविक संस्कारों को निरस्त करने वाले, श्रेष्ठ संस्कारों को उभारने में सहयोग कर सकने वाले कुछ जप-यज्ञादि उपचार किए जायें तो अच्छा है। जिन घरों में गायत्री उपासना, यज्ञ, बलिवैश्व आदि सुसंस्कार जनक क्रम

सहज ही होते रहते हैं, वहाँ मूल शान्ति के निमित्त अलग से कुछ करना आवश्यक नहीं। जिन परिजनों में ऐसे कुछ नियमित क्रम नहीं हैं, उनमें मूल शान्ति के नाम पर कुछ उपचारों की लकीर पीटने मात्र से जातक की वृत्तियों पर कुछ उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता नहीं है। इसीलिए शास्त्र मत है कि जिन परिवारों में ऋषि प्रणीत चर्चाएँ नियमित रूप से होती हों, उनमें मूलशान्ति की आवश्यकता नहीं पड़ती। मानवोचित गुणों के विकास के लिए जिन परिवारों में योजनाबद्ध प्रयास होते हों, वहाँ मूल युक्त जातक विशेष सौभाग्य के कारण बनते हैं।

नोट-

मूल की शान्ति के लिए सुविधानुसार जन्म के 11 वें या 27 वें दिन रुद्रार्चन,

शिवाभिषेक व महामृत्युञ्जय की विधि सहित जप व गायत्री महामन्त्र का जप, हवन कराने से अभुक्त मूल शान्ति होती है। गायत्री महामन्त्र के 27,000 मन्त्र जप व महामृत्युञ्जय मन्त्र के 1100 मन्त्र जप करना अनिवार्य है।

गण्ड मूल के नक्षत्र व उनका फल

मूलवास- मनुष्य की योनि पाठशाला के छात्र जैसा है। चराचर जगत् पाठ्यपुस्तक है। नाना योनियाँ इस पाठ्यपुस्तक के नाना अध्याय अथवा पाठ्यक्रम है, जिन्हें जीवरूपी छात्र यथा योनि पढ़ता, परीक्षा (इम्तहान) के लिये मानव योनि में प्रवेश पाता है। मानव योनि पूरक परीक्षा के क्षण हैं। जिस प्रकार परीक्षा स्थल पर परीक्षक ही प्रश्नपत्र तथा उत्तर पुस्तिका छात्र को प्रदान करता है, उसी प्रकार आत्मा रूपी

परीक्षक भी परिस्थितियों का प्रश्नपत्र तथा जीवन उत्तरपुस्तिका स्वंय जीवरूपी छात्र को प्रदान करता है। मनुष्य की योनि परीक्षा के क्षण हैं। परीक्षा का समय जन्म से मृत्युपर्यन्त है। जिस प्रकार परीक्षाफल तीन प्रकार का होता है, यथा उत्तीर्ण (पास) होना, अनुत्तीर्ण होना अथवा कुछ थोड़ी कमी के कारण उसे थोड़े समय उपरान्त पुनः परीक्षा में फिर से परीक्षा में आना। इस जीवन परीक्षा में भी जीवरूपी छात्र को इन्हीं अवस्थाओं से होकर गुजरना पड़ेगा। उत्तीर्ण होने पर अनन्त की राह है। उसे अगली कक्षा में प्रवेश मिलेगा, यदि उत्तीर्ण नहीं हो पाया और फेल हो गया तो उसे पुनः सारा पाठ्यक्रम दुहराने के लिये यथा योनियों से गुजरना होगा। इसके उपरान्त ही पुनः परीक्षा के लिये मानव योनि में प्रवेश

मिलेगा। अल्प त्रुटियों की अवस्था में उसे लगभग कतिपय योनियों के उपरान्त ही पुनःपरीक्षा हेतु मनुष्य की योनि प्रदान की जायेगी।

इसीलिये जब भी घर में शिशु का जन्म होता है, घर में सूतक (छूत) का वास होता है। मन्दिर,पूजा आदि बन्द कर दिये जाते हैं, बरहा मनाया जाता है इसका पृष्ठ रहस्य यही है कि जन्मने वाला शिशु हमारा ही पूर्वज है अल्प त्रुटियों से रह गया था,फिर अपने घर लौटअ ाया।ब रहाप ूजनम ेंप ्रायश्चित पूजन भी करते है उसी में मूल शान्ति विधि भी पूरी कर लेते हैं।यद्यपि मूल का वास-माघ, आषाढ़, आश्विन, और भाद्रपद माह-आकाश में, कार्तिक, चैत, श्रावण और पौष माह- पृथ्वी में, फाल्गुन, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष और वैशाख माह-पाताल में होता है। 'भूतले वर्तमाने

तु ज्ञेयो दोषोऽन्यथा न हि।' अर्थात् जब पृथ्वी में मूल का वास हो तभी मूलपूजन का क्रम करना चाहिये अन्यथा सामान्य यज्ञादि से भी बारह (बरहा) पूजन का क्रम पूरा कर लेना चाहिये।

प्रारम्भिक कर्मकाण्ड मंगलाचरण से रक्षाविधान तक पूर्ण करें। तत्पश्चात् संकल्प करें।

॥सङ्कल्प॥

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैकदेशान्तर्गते.........क्षेत्रे.........मासानां मासोत्तमेमासे.......... मासे.........पक्षे.........तिथौ.........वा

सरे ....गोत्रोत्पन्नः.........
नामाऽहं सत्प्रवृत्ति-संवर्द्धनाय, दुष्प्रवृत्ति-उन्मूलनाय, लोककल्याणाय, आत्मकल्याणाय, वातावरण - परिष्काराय,उज्ज्वलभविष्यकामनापूर्तये च प्रबलपुरुषार्थं करिष्ये, अस्मै प्रयोजनाय च कलशादिआवाहितदेवता-पूजनपूर्वकम् गण्डान्त नक्षत्रजनित दोषोपसमानार्थं गण्डदोष मूलशान्ति कर्मसम्पादनार्थं सङ्कल्पं अहं करिष्ये।

पञ्चकलशों में पञ्चद्रव्यों के सहित पूजन करें।

मध्य कलश-

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरिमभिः।

-8.32,13.32

पूर्व-

ॐ त्वं नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान्

देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्। -21.3

दक्षिण-

ॐ स त्वं नो अग्नेवमो भवोती
नेदिष्ठो अस्याऽ उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुणꣳरराणो
वीहि मृडीकꣳसुहवो नऽ एधि।-21.4

उत्तर-

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय।
त्वामवस्युरा चके।-21.1

पश्चिम-

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना
सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।
उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यां त्वैष ते
योनिर्माध्वीभ्यां त्वा। -7.11

नमस्कार-दोनों हाथ जोड़ कर नमन-वन्दन करें।

ॐ नमस्ते सुरनाथाय,
नमस्तुभ्यं शचीपते।
गृहाणं स्नानं मया दत्तं,
गण्डदोषं प्रशान्तये॥

षोडशमातृका पूजन-

गौरी पद्मा शची मेधा,
सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा,
मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः,
आत्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता,
वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥
ॐ षोडशमातृकाभ्यो नमः।

आ.स्था.,पू.

वास्तुपूजन-

अनन्तं पुण्डरीकाक्षं,
फणीशत विभूषितम्।

विद्युद्बन्धूक साकारं,
कूर्मारूढं प्रपूजयेत् ॥
नागपृष्ठं समारूढं,
शूलहस्तं महाबलम् ।
पातालनायकम् देवं,
वास्तुदेवं नमाम्यहम् ॥
ॐ वास्तुपुरुषाय नमः ।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि ॥

नागपूजनम्-

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथ्वीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । वासुक्यादि अष्टकुल नागेभ्यो नमः ॥ आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि ॥

चौंसठयोगिनीपूजनम्-

दिव्यकुण्डलसंकाशा,
दिव्यज्वाला त्रिलोचना ।
मूर्तिमती ह्यमूर्ता चे,

उग्रा चैवोग्ररूपिणी॥
अनेकभावासंयुक्ता,
संसारार्णवतारिणी।
यज्ञे कुर्वन्तु निर्विघ्नं,
श्रेयो यच्छन्तु मातरः॥
दिव्ययोगी महायोगी,
सिद्धयोगी गणेश्वरी।
प्रेताशी डाकिनी काली,
कालरात्री निशाचरी॥
हुङ्कारी सिद्धवेताली,
खर्परी भूतगामिनी।
ऊर्ध्वकेशी विरूपाक्षी,
शुष्काङ्गी धान्यभोजनी॥
फूत्कारी वीरभद्राक्षी,
धूम्राक्षी कलहप्रिया।
रक्ता च घोररक्ताक्षी,
विरूपाक्षी भयङ्करी॥
चौरिका मारिका चण्डी,
वाराही मुण्डधारिणी।

भैरव चक्रिणी क्रोधा,
दुर्मुखी प्रेतवासिनी॥
कालाक्षी मोहिनी चक्री,
कङ्काली भुवनेश्वरी।
कुण्डला तालकौमारी,
यमूदूती करालिनी॥
कौशिकी यक्षिणी यक्षी,
कौमारी यन्त्रवाहिनी।
दुर्घटे विकटे घोरे,
कपाले विषलङ्घने॥
चतुष्षष्टि समाख्याता,
योगिन्यो हि वरप्रदाः।
त्रैलोक्ये पूजिता नित्यं,
देवामानुष्योगिभिः॥ 10॥
ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यो नमः॥
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥

ब्रह्मापूजनम्-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि

सीमतः सुरुचो वेनऽआवः।
सबुध्न्याऽउपमाअस्य विष्ठाःसतश्च
योनिमसतश्च वि वः॥ -13.3
ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि।

विष्णुपूजनम्-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे
पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा॥
ॐ विष्णवे नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि। -5.15

शिव पूजनम्-

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ, उतो त ऽ
इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।
ॐ रुद्राय नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि॥ -16.1

नवग्रहपूजनम्-

1 सूर्य-

ॐ जपाकुसुमसंकाशं,

काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं,
प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥
ॐ आदित्याय विद्महे,
दिवाकराय धीमहि।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।
ॐ सूर्याय नमः।

2 चन्द्र-

ॐ दधिशङ्खतुषाराभं,
क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं,
शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥
ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे,
सागरोद्भवाय धीमहि।
तन्नः चन्द्रः प्रचोदयात्।
ॐ चन्द्राय नमः।

3 मङ्गल-

ॐ धरणीगर्भसम्भूतं,

विद्युत्कान्तिसमप्रभम्॥
कुमारं शक्तिहस्तं च,
मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥
ॐ क्षितिपुत्राय विद्महे,
लोहिताङ्गाय धीमहि।
तन्नो भौमः प्रचोदयात्।
ॐ भौमाय नमः।

3 बुध-
ॐ प्रियङ्गु कलिकाश्यामं,
रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं,
तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥
ॐ चन्द्रपुत्राय विद्महे,
रोहिणीप्रियाय धीमहि।
तन्नो बुधः प्रचोदयात्।
ॐ बुधाय नमः।

4 गुरु-
ॐ देवानां च ऋषीणां,

च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं,
तं नमामि बृहस्पतिम्॥
ॐ अङ्गिरोजाताय विद्महे,
वाचस्पतये धीमहि।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।
ॐ बृहस्पतये नमः।

5 शुक्र-

ॐ हिमकुन्द मृणालाभं,
दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं,
भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥
ॐ भृगुवंशजाताय विद्महे,
श्वेतवाहनाय धीमहि।
तन्नः कविः प्रचोदयात्।
ॐ शुक्राय नमः।

6 शनि-

ॐ नीलाञ्जन समाभासं,

रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्त्तण्डसम्भूतं,
तं नमामि शनैश्चरम्॥
ॐ कृष्णाङ्गाय विद्महे,
रविपुत्राय धीमहि।
तन्नः शौरिः प्रचोदयात्।
ॐ शनये नमः।

7 राहु-

ॐ अर्धकायं महावीर्यं,
चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं,
तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥
ॐ नीलवर्णाय विद्महे,
सैंहिकेयाय धीमहि।
तन्नो राहुः प्रचोदयात्।
ॐ राहवे नमः।

8 केतु-

ॐ पलाशपुष्पसङ्काशं,

तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं,
तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥
ॐ अन्तर्वाताय विद्महे,
कपोतवाहनाय धीमहि।
तन्नः केतुः प्रचोदयात्।
ॐ केतवे नमः।

।। पञ्चगव्यपूजन एवं सवत्सगोपूजनम्।।

गोदुग्धं गोमयक्षीरं,
दधि सर्पिः कुशोदकम्।
निर्दिष्टं पञ्चगव्यं,
पवित्रं मुनिः पुङ्गवैः॥

॥नक्षत्र पूजन॥

जातक जिस नक्षत्र में जन्मा हो, उसी नक्षत्र के मन्त्र के साथ नक्षत्र पूजन करें।

1 अश्विनी-

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती।
तया यज्ञं मिमिक्षितम्॥
ॐ अश्विनीभ्यां नमः॥ -20.80

2 **आश्लेषा-**

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथ्वीमनुयेऽन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः॥

3 **मघा-**

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन् पितरोऽ मीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः सुन्धध्वम्। ॐ पितृभ्यो नमः॥

4 **ज्येष्ठा-**

ॐ सजोषाऽ इन्द्र सगणो

मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँऽ रप मृधोनुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः। ॐ इन्द्राय नमः -7.37

5 **मूल-**

ॐ मातेव पुत्रं पृथिवी पुरुषमग्निꣳ स्वे योनावभारुखा। तां विश्वै- र्देवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा वि मुञ्चतु। ॐ नैर्ऋतये नमः॥ -12.61

6 **रेवती-**

ॐ पूषन् तव व्रतेवयंन रिष्येम कदा चन। स्तोतारस्तऽ इह स्मसि। ॐ पूष्णे नमः॥ -34.41

सप्तधान्य पूजन-

ॐ अन्नपतेन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्र दातारं तारिषऽ ऊर्जं

नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे। -11.83

तत्पश्चात् सभी आवाहित देवताओं का षोडशोपचार विधि से पूजन पुरुषसूक्त *(पृष्ठ 186-198)* से करें।

॥ पञ्चकलशों से सिञ्चन ॥

पञ्चकलशों को पाँच सम्भ्रान्त व्यक्ति (महिला-पुरुष) ले लें तथा निम्न मंत्र के साथ जातक और उनके माता-पिता का सिञ्चन अभिषेक करें।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः
तानऽ ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।
ॐ यो वः शिवतमो रसः तस्य
भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।
ॐ तस्माऽ अरंगमाम वो यस्यक्षयाय
जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।

तत्पश्चात् यज्ञ का क्रम पूर्ण करें। गायत्री मन्त्र की 24 आहुतियाँ एवं महामृत्युञ्जय मन्त्र से 5 आहुति दें,

फिर विशेष आहुतियाँ समर्पित करें।

विशेष आहुति

नक्षत्र मन्त्राहुति-

ॐ नमस्ते सुरनाथाय
नमस्तुभ्यं शचीपते।
गृहाणामाहुति मया दत्तं
गण्डदोषप्रशान्तये, स्वाहा॥
इदं इन्द्राय इदं न मम। (तीन बार)

नवग्रह मन्त्राहुति

1 सूर्य गायत्री-

ॐ आदित्याय विद्महे,
दिवाकराय धीमहि।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्,
स्वाहा। इदं सूर्याय, इदं न मम।

2 चन्द गायत्री-

ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे
सागरोद्भवाय धीमहि।

तन्नः चन्द्रः प्रचोदयात्,
स्वाहा। इदं चन्द्राय, इदं न मम।

3 मङ्गल गायत्री-

ॐ क्षितिपुत्राय विद्महे
लोहिताङ्गाय धीमहि।
तन्नो भौमः प्रचोदयात्, स्वाहा।
इदं भौमाय, इदं न मम।

4 बुध गायत्री-

ॐ चन्द्रपुत्राय विद्महे
रोहिणीप्रियाय धीमहि।
तन्नो बुधः प्रचोदयात्, स्वाहा।
इदं बुधाय, इदं न मम।

5 गुरु गायत्री-

ॐ अङ्गिरोजाताय विद्महे
वाचस्पतये धीमहि।
तन्नो गुरुः प्रचोदयात्, स्वाहा।
इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

6 **शुक्र गायत्री-**

ॐ भृगुवंशजाताय विद्महे
श्वेतवाहनाय धीमहि।
तन्नः कविः प्रचोदयात्, स्वाहा।
इदं शुक्राय, इदं न मम।

7 **शनि गायत्री-**

ॐ कृष्णांगाय विद्महे
रविपुत्राय धीमहि।
तन्नः शौरिः प्रचोदयात्, स्वाहा।
इदं शनये, इदं न मम।

8 **राहु गायत्री-**

ॐ नीलवर्णाय विद्महे
सैंहिकेयाय धीमहि।
तन्नो राहुः प्रचोदयात्, स्वाहा।
इदं राहवे, इदं न मम।

9 **केतु गायत्री-**

ॐ अन्तर्वाताय विद्महे
कपोतवाहनाय धीमहि।

तन्नः केतुः प्रचोदयात्, स्वाहा।
इदं केतवे, इदं न मम।

तत्पश्चात् यज्ञ का शेष क्रम स्विष्टकृत्, पूर्णाहुति आदि सम्पन्न करें। उपस्थित सभी परिजन अभिषेक मन्त्र के साथ जातक और उनके माता-पिता को आशीर्वाद दें। कार्यक्रम समाप्त।

पुंसवन संस्कार

संस्कार प्रयोजन-गर्भ सुनिश्चित हो जाने पर या तीन माह पूरे हो जाने तक पुंसवन संस्कार कर देना चाहिए। विलम्ब से भी किया जाय, तो दोष नहीं, किन्तु समय पर कर देने का लाभ विशेष होता है। तीसरे माह से गर्भ में आकार और संस्कार दोनों अपना स्वरूप पकड़ने लगते हैं। अस्तु, उनके लिए आध्यात्मिक उपचार समय पर ही कर दिया जाना चाहिए। इस संस्कार के नीचे लिखे प्रयोजनों को ध्यान में रखा जाए।

गर्भ का महत्त्व समझें, वह विकासशील शिशु, माता-पिता, कुल-परिवार तथा समाज के लिए विडम्बना न बने, सौभाग्य और गौरव का कारण बने। गर्भस्थ शिशु के शारीरिक, बौद्धिक तथा भावनात्मक विकास के लिए क्या

किया जाना चाहिए, इन बातों को समझा-समझाया जाए।

गर्भिणी के लिए अनुकूल वातावरण खान-पान, आचार-विचार आदि का निर्धारण किया जाए। गर्भ के माध्यम से अवतरित होने वाले जीव के पहले वाले कुसंस्कारों के निवारण तथा सुसंस्कारों के विकास के लिए, नये सुसंस्कारों की स्थापना के लिए अपने सङ्कल्प, पुरुषार्थ एवं देव-अनुग्रह के संयोग का प्रयास किया जाए।

विशेष व्यवस्था-

- औषधि अवघ्राण के लिए वट वृक्ष की जटाओं के मुलायम सिरों का छोटा टुकड़ा, गिलोय, पीपल की कोंपल (मुलायम पत्ते) लाकर रखे जाएँ। सबका थोड़ा-थोड़ा अंश पानी के साथ सिल पर पीसकर एक कटोरी में

उसका घोल तैयार रखा जाए।

- साबूदाने या चावल की खीर तैयार रखी जाए। जहाँ तक सम्भव हो, इसके लिए गाय का दूध प्रयोग करें।खीर गाढ़ी हो।

तैयार हो जाने पर निर्धारित क्रम में मङ्गलाचरण, षट्कर्म, सङ्कल्प, यज्ञोपवीत परिवर्तन, कलावा-तिलक एवं रक्षाविधान तक का यज्ञीय क्रम पूरा करके नीचे लिखे क्रम से पुंसवन संस्कार के विशेष कर्मकाण्ड कराएँ।

॥ औषधि अवघ्राण ॥

वट वृक्ष-

वट वृक्ष-विशालता और दृढ़ता का प्रतीक है। धीरे-धीरे बढ़ना धैर्य का सूचक है। इसकी जटाएँ भी जड़ और तने बन जाती हैं, यह विकास-विस्तार के साथ

पुष्टि की व्यवस्था है, वृद्धावस्था को युवावस्था में बदलने का प्रयास है।

गिलोय-

गिलोय-में ऊपर चढ़ने की प्रवृत्ति है। यह हानिकारक कीटाणुओं की नाशक है, शरीर में रोगाणुओं, अन्तःकरण के कुविचारों-दुर्भावों, परिवार और समाज में व्याप्त दुष्टता-मूढ़ता आदि के निवारण की प्रेरणा देती है। शरीर को पुष्ट कर, प्राण ऊर्जा की अभिवृद्धि कर सत्प्रवृत्तियों के पोषण की सामर्थ्य पैदा करती है।

पीपल-

पीपल- देव योनि का वृक्ष माना जाता है। देवत्व के परमार्थ के संस्कार इसमें सन्निहित हैं। उनका वरण, धारण और विकास किया जाए।

सूँघने और पान करने का तात्पर्य

श्रेष्ठ संस्कारों का वरण करने, उन्हें आत्मसात् करने की व्यवस्था बनाना है। ऐसे आहार तथा दिनचर्या का निर्धारण किया जाए। श्रेष्ठ ग्रंथों, महापुरुषों की जीवनी आदि के अध्ययन, श्रवण, चिन्तन द्वारा गर्भिणी अपने में, अपने गर्भ में श्रेष्ठ संस्कार पहुँचाए। इस कार्य में परिजन उसका सहयोग करें।

क्रिया भावना-

ओषधि की कटोरी गर्भिणी के हाथ में दी जाए। वह दोनों हाथों में उसे पकड़े। मन्त्र बोला जाए, गर्भिणी नासिका के पास ओषधि को ले जाकर धीरे-धीरे श्वास के साथ उसकी गन्ध धारण करे। भावना की जाए कि ओषधियों के श्रेष्ठ गुण और संस्कार खींचे जा रहे हैं। वेद मन्त्रों तथा दिव्य वातावरण द्वारा इस उद्देश्य की पूर्ति में सहयोग मिल रहा है। गर्भिणी सूत्र

दुहरायें-

- **ॐ दिव्यचेतनां स्वात्मीयां करोमि।**
  (हम दिव्य चेतना को आत्मसात् कर रहे हैं।)
- **ॐ भूयो भूयो विधास्यामि।**
  (यह क्रम आगे भी बनायें रखेंगे।)गर्भिणी औषधि को निम्र मन्त्र के साथ सूँघे।

  ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे॥

॥ गर्भ पूजन ॥

क्रिया और भावना-

गर्भ-पूजन के लिए गर्भिणी के घर परिवार के सभी वयस्क परिजनों के हाथ में अक्षत, पुष्प आदि दिये जाएँ। मन्त्र बोला जाए। मन्त्र समाप्ति पर

एक तश्तरी में एकत्रित करके गर्भिणी को दिया जाए। वह उसे पेट से स्पर्श करके रख दे। भावना की जाए, गर्भस्थ शिशु को सद्भाव और देव-अनुग्रह का लाभ देने के लिए पूजन किया जा रहा है। गर्भिणी उसे स्वीकार करके गर्भ को वह लाभ पहुँचाने में सहयोग कर रही है। सूत्र दुहरायें-

ॐ सुसंस्काराय यत्नं करिष्ये।
(नवागन्तुक को सुसंस्कृत और समुन्नत बनायेंगे।)

मन्त्र-

ॐ सुपर्णोसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृह द्रथन्तरे पक्षौ। स्तोमऽ आत्मा छन्दाꣳ स्यङ्गानि यजूꣳषि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोसि गरुत्मान् दिवं गच्छ स्वःपत॥ -12.4

॥ आश्वास्तना ॥

क्रिया और भावना-

गर्भिणी अपना दाहिना हाथ पेट पर रखे। पति सहित परिवार के सभी परिजन अपना हाथ गर्भिणी की तरफ आश्वासन की मुद्रा में उठाएँ। मन्त्र पाठ तक वही स्थिति रहे। भावना की जाए कि गर्भिणी गर्भस्थ शिशु तथा दैवी सत्ता को आश्वस्त कर रही है। सभी परिजन उसके इस प्रयास में भरपूर सहयोग देने की शपथ ले रहे हैं। इस शुभ सङ्कल्प में दैवी शक्तियाँ सहयोग दे रही हैं। इस श्रेष्ठ सङ्कल्प-पूर्ति की क्षमता दे रही हैं।

परिवार के सभी सदस्य एवं पति सूत्र दुहरायें-

- **ॐ स्वस्थां प्रसन्नां कर्तुं यतिष्ये।**
  (गर्भिणी को स्वस्थ और प्रसन्न रखने के लिए प्रयत्न करेंगे।)

- **ॐ मनोमालिन्यं नो जनयिष्यामि।**
  (परिवार में कलह और मनोमालिन्य न उभरने देंगे।)

- **ॐ स्वाचरणं अनुकरणीयं विधास्यामि।**
  (अपना आचरण - व्यवहार अनुकरणीय बनायेंगे।) परिवार के सभी सदस्य निम्न मन्त्र के साथ गर्भिणी के सिर पर हाथ रखें।
  ॐ यत्ते सुशीमे हृद्‌दये हितमन्तः प्रजापतौ।
  मन्येऽहं मां तद्विद्वांसमाहं पौत्रमघन्नियाम्॥ -आश्व.गृ.सू.1.13
  आश्वास्तना के बाद अग्नि स्थापन से लेकर गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ पूरी करने का क्रम चलाएँ। उसके बाद विशेष आहुतियाँ प्रदान करें।

॥ विशेष आहुति ॥

क्रिया और भावना-

गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ हो जाने के बाद खीर की पाँच आहुतियाँ विशेष मन्त्र से की जाएँ।

भावना की जाय कि दिव्य मन्त्र-शक्ति के संयोग से गर्भस्थ शिशु और सभी परिजनों के लिए अभीष्ट मङ्गलमय वातावरण बन रहा है।

ॐ धातादधातु दाशुषे प्राचीं
जीवातुमक्षिताम्।
वयं देवस्य धीमहि सुमतिं
वाजिनीवतः स्वाहा॥
इदं धात्रे इदं न मम।

-आश्व.गृ.सू. 1.14, अथर्ववेद 7.18.2

॥ चरु प्रदान ॥

क्रिया और भावना-

विशेष आहुतियों के बाद शेष बची खीर

प्रसाद रूप में एक कटोरी में गर्भिणी को दी जाए। वह उसे लेकर मस्तक से लगाकर रख ले। सारा कृत्य पूरा होने पर पहले उसी का सेवन करे। भावना करे कि यह यज्ञ का प्रसाद दिव्य शक्तिसम्पन्न है। इसके प्रभाव से देवात्माएँ पैदा होती हैं, ऐसे संयोग की कामना की जा रही है।

ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽ ओषधीषु
पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥-18.36

॥आशीर्वचन॥

अब स्विष्टकृत् होम से लेकर विसर्जन तक के कृत्य पूरे करें। विसर्जन के पूर्व आशीर्वाद दिया जाए। आचार्य गर्भिणी को शुभ मन्त्र बोलते हुए फल-फूल आदि दें। गर्भिणी साड़ी के आँचल में ले। अन्य बुजुर्ग भी आशीर्वाद दें। सभी लोग पुष्प

वृष्टि करें। गर्भिणी एवं उसका पति बड़ों के चरण स्पर्श करें, सबको नमस्कार करें। विसर्जन और जयघोष करके आयोजन समाप्त किया जाए।

नामकरण संस्कार

विशेष व्यवस्था-

यज्ञ पूजन की सामान्य व्यवस्था के साथ ही नामकरण संस्कार के लिए विशेष रूप से इन व्यवस्थाओं पर ध्यान देना चाहिए।

1 यदि दसवें दिन नामकरण घर में ही कराया जा रहा है, तो वहाँ समय पर स्वच्छता का कार्य पूरा कर लिया जाए तथा शिशु एवं माता को समय पर संस्कार के लिए तैयार कराया जाए।

2 अभिषेक के लिए कलश-पल्लव युक्त हो तथा कलश के कण्ठ में कलावा बँधा हो, रोली से ॐ, स्वस्तिक आदि शुभ चिह्न बने हों।

3 शिशु की कमर में बाँधने के लिए मेखला सूती या रेशमी धागे की

बनी हो। न हो, तो कलावा के सूत्र की बना लेनी चाहिए।

4 मधु प्राशन के लिए शहद तथा चटाने के लिए चाँदी की चम्मच। वह न हो, तो चाँदी की सलाई या अँगूठी अथवा स्टील की चम्मच आदि का प्रयोग किया जा सकता है।

5 संस्कार के समय जहाँ माता शिशु को लेकर बैठे, वहीं वेदी के पास थोड़ा सा स्थान स्वच्छ करके, उस पर स्वस्तिक चिह्न बना दिया जाए। इसी स्थान पर बालक को भूमि स्पर्श कराया जाए।

6 नाम घोषणा के लिए थाली, सुन्दर तख्ती आदि हो। उस पर निर्धारित नाम पहले से सुन्दर ढङ्ग से लिखा रहे। चन्दन-रोली से लिखकर, उस पर चावल तथा फूल की पंखुड़ियाँ चिपकाकर, साबूदाने हलके

पकाकर, उनमें रङ्ग मिलाकर, उन्हें अक्षरों के आकार में चिपकाकर, स्लेट या तख्ती पर रङ्ग-बिरङ्गी खड़िया के रङ्गों से नाम लिखे जा सकते हैं। थाली, ट्रे या तख्ती को फूलों से सजाकर उस पर एक स्वच्छ वस्त्र ढककर रखा जाए। नाम घोषणा के समय उसका अनावरण किया जाए।

7 विशेष आहुति के लिए खीर, मिष्टान्न या मेवा जिसे हवन सामग्री में मिलाकर आहुतियाँ दी जा सकें।

8 शिशु को माँ की गोद में रहने दिया जाए। पति उसके बायीं ओर बैठे। यदि शिशु सो रहा हो या शान्त रहता है, तो माँ की गोद में प्रारम्भ से ही रहने दिया जाए। अन्यथा कोई अन्य उसे सँभाले, केवल विशेष कर्मकाण्ड के समय उसे वहाँ

लाया जाए। निर्धारित क्रम से मङ्गलाचरण, षट्कर्म, सङ्कल्प, यज्ञोपवीत परिवर्तन, कलावा, तिलक एवं रक्षा-विधान तक का क्रम पूरा करके विशेष कर्मकाण्ड प्रारम्भ किया जाए।

॥ अभिषेक ॥

क्रिया और भावना-

सिञ्चन के लिए तैयार कलश में मुख्य कलश का थोड़ा-सा जल या गङ्गाजल मिलाएँ। मन्त्र के साथ बालक, संस्कार कराने वालों तथा उपकरणों पर सिञ्चन किया जाए।

भावना करें कि जो जीवात्मा शिशु के रूप में ईश्वर प्रदत्त सुअवसर का लाभ लेने अवतरित हुई है, उसका अभिनन्दन किया जा रहा है। ईश्वरीय योजना के अनुरूप शिशु में उत्तरदायित्वों के निर्वाह

की क्षमता पैदा करने के लिए श्रेष्ठ संस्कारों तथा सत् शक्तियों के स्रोत से, उस पर अनुदानों की वृष्टि हो रही है। उपस्थित सभी परिजन अपनी भावनात्मक संगति से उस प्रक्रिया को अधिक प्राणवान् बना रहे हैं।

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः
ता नऽ ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे॥
ॐ यो वः शिवतमो रसः
तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः॥
ॐ तस्माऽ अरंगमामवो
यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जन यथा च नः॥ -36.14-16

॥ मेखला बन्धन ॥

क्रिया और भावना-

मन्त्र के साथ शिशु के पिता उसकी

कमर में मेखला बाँधें। भावना करें कि इस संस्कारित सूत्र के साथ बालक में तत्परता, जागरूकता, संयमशीलता जैसी सत्प्रवृत्तियों की स्थापना की जा रही है। मेखला बाँधने से पहले निम्न सूत्र दुहराये-

ॐ स्फूर्तं तत्परं करिष्यामि।

(शिशु में स्फूर्ति और तत्परता बढ़ायेंगे।)

शिशु के कमर में सूत्र बाँधते हुए यह मन्त्र बोला जाये-

ॐ इयं दुरुक्तं परिबाधमाना,
वर्णं पवित्रं पुनतीमआगात्।
प्राणापानाभ्यां बलमादधाना,
स्वसादेवी सुभगा मेखलेयम्॥

-पार.गृ.सू.2.2.8

।। मधु प्राशन ।।

क्रिया और भावना-

मन्त्रोच्चार के साथ थोड़ा-सा शहद निर्धारित उपकरण से बालक को

चटाया जाए। घर के किसी बुजुर्ग या उपस्थित समुदाय में से किन्हीं चरित्रनिष्ठ सम्भ्रान्त व्यक्ति द्वारा भी यह कार्य कराया जा सकता है। भावना की जाए कि सभी उपस्थित परिजनों के भाव-संयोग से बालक की जिह्वा में शुभ, प्रिय, हितकारी, कल्याणप्रद वाणी के संस्कार स्थापित किये जा रहे हैं। माता चम्मच में शहद लेकर सूत्र दुहराये-

ॐ शिष्टतां शालीनतां वर्धयिष्यामि।

(शिशु में शिष्टता-शालीनता की वृद्धि करेंगे।) शिशु को शहद चटाते हुए यह मन्त्र बोला जाये-

ॐ प्रते ददामि मधुनो घृतस्य, वेदं सवित्रा प्रसूतं मघोनाम्। आयुष्मान् गुप्तो देवताभिः, शतं जीव शरदो लोके अस्मिन्॥ -आश्व.गृ.सू.1.15.1

।।सूर्य नमस्कार।।

क्रिया और भावना-

यदि सूर्य को देखने की स्थित हो, तो माता शिशु को बाहर ले जाकर सूर्य दर्शन कराए। सूर्य देव को नमस्कार करें। किसी कारण संस्कार के समय पूर्व दृश्यमान न हो, तो उनका ध्यान करके नमस्कार करें। भावना की जाए कि माँ अपने स्नेह के प्रभाव से बालक में तेजस्विता के प्रति आकर्षण पैदा कर रही है, बालक में तेजस्वी जीवन के प्रति सहज अनुराग पैदा हो रहा है। इसे सब मिलकर स्थिर रखेंगे, बढ़ाते रहेंगे। पिता शिशु को गोदी में सूत्र दुहराये- **ॐ तेजस्वितां वर्धयिष्यामि।** (शिशु की तेजस्विता में वृद्धि करेंगे।) इसके बाद उसे सूर्य के प्रकाश में ले जायें। इस बीच गायत्री मन्त्र का सस्वर पाठ चलायें।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥ -36.24

॥भूमि पूजन एवं स्पर्श॥

क्रिया और भावना-

शिशु के माता-पिता हाथ में रोली, अक्षत, पुष्प आदि लेकर मन्त्र के साथ भूमि का पूजन करें। भावना की जाए कि धरती माता से इस क्षेत्र में बालक के हित के लिए श्रेष्ठ संस्कारों को घनीभूत करने की प्रार्थना की जा रही है। अपने आवाहन-पूजन से उस पुण्य-प्रक्रिया को गति दी जा रही है। मन्त्र पूरा होने पर पूजन सामग्री पर चढ़ाई जाए। माता हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहराये-

ॐ सहिष्णुं कर्तव्यनिष्ठं विधास्यामि।

(शिशु को सहनशील और कर्तव्यनिष्ठ बनायेंगे।) सूत्र पूरा होने पर अक्षत-पुष्प पृथ्वी पर अर्पित करें और मन्त्रोच्चार के साथ शिशु का स्पर्श पृथ्वी से करें-

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥

ॐ पृथिव्यै नमः। आवाहयामि स्थापयामि, ध्यायामि। -8.32

स्पर्श और भावना-माता बालक को मन्त्रोच्चार के साथ उस पूजित भूमि पर लिटा दे। सभी लोग हाथ जोड़कर भावना करें कि जैसे माँ अपनी गोद में बालक को अपने स्नेह-पुलकन के साथ जाने-अनजाने में श्रेष्ठ प्रवृत्ति और गहरा सन्तोष देती रहती है-वैसे ही माता वसुन्धरा इस बालक को अपना लाल मानकर गोद में लेकर धन्य बना रही है।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।

अप नः शोशुचदघम् ।। -35.21

।।नाम घोषणा।।

क्रिया और भावना-

मन्त्रोच्चार के साथ नाम से सज्जित थाली या तख्ती पर से आच्छादन हटाया जाए। सबको दिखाया जाए। यह कार्य आचार्य या कोई सम्माननीय व्यक्ति करें। भावना की जाए कि यह घोषित नाम ऐसे व्यक्तित्व का प्रतीक बनेगा, जो सबका गौरव बढ़ाने वाला होगा।

ॐ मेधां ते देवः सविता

मेधां देवी सरस्वती।

मेधां ते अश्विनौ देवौ आधत्तां

पुष्करस्त्रजौ।। -आश्व.गृ.1.15.2

मन्त्र पूरा होने पर सबको नाम दिखाएँ और तीन नारे लगवाएँ-

(प्रमुख कहें) (सब कहें)

1 **शिशु.......................चिरञ्जीवी हो।**(तीन बार कहें।)

2 **शिशु.......................धर्मशील हो।** (तीन बार कहें।)

3 **शिशु.......................प्रगतिशील हो।**(तीन बार कहें।)

।।परस्पर परिवर्तन।।

क्रिया और भावना-

मन्त्रोच्चार के साथ माता शिशु पहले उसके पिता की गोद में दे। पिता अन्य परिजनों को दे। शिशु एक-दूसरे के हाथ में जाता स्नेह-दुलार पाता हुआ पुनः माँ के पास पहुँच जाए। भावना की जाए कि शिशु सबका स्नेह पात्र बन रहा है, सबके स्नेह-अनुदानों का अधिकार पा रहा है। सभी उपस्थित जन सूत्र दुहराये-

ॐ उपलालनं करिष्यामि-

अनुशिष्टं विधास्यामि।

(शिशु को दुलार देंगे-अनुशासन में रखेंगे।)

मन्त्र-

ॐ अथ सुमङ्गल नामानꣳह्वयति
बहुकार श्रेयस्कर भूयस्करेति।
यऽ एव वन्नामाभवति
कल्याणमेवैतन्मानुष्यै वाचो वदति॥

॥लोकदर्शन॥

क्रिया और भावना-

मन्त्रोच्चार के साथ नियुक्त व्यक्ति उसे गोद में उठायें-खुले में जाकर विभिन्न दृश्य दिखाकर ले आएँ। भावना की जाए कि शिशु में इस विराट् विश्व को सही दृष्टि से देखने, समझने एवं प्रयुक्त करने की क्षमता देव अनुग्रह और सद्भावना के सहयोग से प्राप्त हो रही है।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे

भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ -13.4

इसके बाद अग्नि स्थापन से लेकर गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ पूरी करने का क्रम चलाए जाए, तब विशेष आहुतियाँ दी जाएँ।

॥विशेष आहुति॥

क्रिया और भावना-

हवन सामग्री के साथ निर्धारित मेवा-मिष्टान्न खीर आदि मिलाकर पाँच आहुतियाँ नीचे लिखे मन्त्र से दी जाएँ। भावना की जाए कि विशेष उद्देश्य के लिए विशेष वातावरण का निर्माण हो रहा है।

ॐ भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः
पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः।
तमीमहे महागयं स्वाहा॥ इदं अग्नये
पवमानाय इदं न मम।-ऋ.9.66.20

क्रिया और भावना-

आचार्य शिशु को गोद में लें। उसके कान के पास नीचे वाला मन्त्र बोलें। सभी लोग भावना करें कि भाव-भाषा को शिशु हृदयङ्गम कर रहा है और श्रेष्ठ सार्थक जीवन की दृष्टि प्राप्त कर रहा है। आचार्य या सम्माननीय व्यक्ति शिशु को अपनी गोद में लेकर उसके कान के पास बोलें-

- **ॐ भो तात! त्वं ईश्वरांशोऽसि।**
  (हे तात! तुम ईश्वर के अंश हो।)
- **मनुष्यता तव महती विशिष्टता।**
  (तुम्हारी सबसे बड़ी विशेषता मनुष्यता है।)
- **ऋष्यनुशासनं पालयेः।**
  (जीवन भर ऋषि-अनुशासन का पालन करना।)

ॐ शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि,
संसारमाया परिवर्जितोऽसि।
संसारमायां त्यज मोहनिद्रां,
त्वां सद्गुरुः शिक्षयतीति सूत्रम्॥

प्रबोधन के बाद **स्विष्टकृत् होम** से लेकर **विसर्जन** *(पृष्ठ 100-121)* तक के शेष कृत्य पूरे किये जाएँ। विसर्जन के पूर्व आचार्य, शिशु एवं अभिभावकों को पुष्प, अक्षत, तिलक सहित आशीर्वाद दें, फिर सभी मङ्गल मन्त्रों के साथ अक्षत, पुष्प वृष्टि करके आशीर्वाद दें।

आशीवर्चन-

आचार्य शिशु तथा अभिभावक को आशीर्वाद दें। नीचे लिखे मन्त्र के अतिरिक्त आशीर्वचन के अन्य मन्त्रों का भी पाठ करना चाहिए।

हे बालक! त्वम् आयुष्मान्
वर्चस्वी तेजस्वी श्रीमान् भूयाः।

अन्नप्राशन संस्कार

विशेष व्यवस्था-

यज्ञ देवपूजन आदि की व्यवस्था के साथ अन्नप्राशन के लिए लिखी व्यवस्था विशेष रूप से बनाकर रखनी चाहिए।

- अन्नप्राशन के लिए प्रयुक्त होने वाली कटोरी तथा चम्मच। चटाने के लिए चाँदी का चम्मच या उपकरण हो सके, तो अच्छा है।
- अलग पात्र में बनी हुई चावल या सूजी (रवा) की खीर, शहद, घी, तुलसीदल तथा गङ्गाजल- ये पाँच वस्तुएँ तैयार रखनी चाहिए।

निर्धारित क्रम में मङ्गलाचरण से लेकर रक्षाविधान तक के क्रम पूरे करके विशेष कर्मकाण्ड कराया जाता है। उसमें सम्मिलित हैं-

1 पात्रपूजन
2 अन्न-संस्कार
3 विशेष आहुति
4 क्षीर (खीर) प्राशन

॥ पात्र-पूजन ॥

क्रिया और भावना-

मन्त्रोच्चार के साथ अभिभावक पात्र के बाहर चन्दन, रोली से स्वस्तिक बनाएँ। अक्षत-पुष्प चढ़ाएँ। भावना करें कि पवित्र वातावरण के प्रभाव से पात्रों में दिव्यता की स्थापना की जा रही है, जो बालक के लिए रखे गये अन्न को दिव्यता प्रदान करेगी, उसकी रक्षा करेगी। माता-पिता हाथ में रोली या चन्दन लेकर सूत्र दुहरायें-

ॐ सुपात्रतां प्रदास्यामि।

(शिशु में सुपात्रता का विकास करेंगे।)

मन्त्र-

ॐ हिरण्मयेन पात्रेण
सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु
सत्यधर्माय दृष्टये॥ -ईशा.उ. 15

॥ अन्न संस्कार ॥

क्रिया और भावना-

नीचे लिखे मन्त्रों के पाठ के साथ अन्नप्राशन के लिए रखे गये पात्र में एक-एक करके भावनापूर्वक सभी वस्तुएँ डाली-मिलाई जाएँ। पात्र में खीर डालें। मात्रा इतनी लें कि 5 आहुतियाँ देने के बाद भी शिशु को चटाने के लिए कुछ बची रहे। भावना करें कि यह अन्न दिव्य संस्कारों को ग्रहण करके बालक में उन्हें स्थापित करने जा रहा है। प्रतिनिधि खीर के पात्र को हाथ में लें और सूत्र दुहरवायें-

ॐ कुसंस्कारा: दूरीभूयासु:।

(अन्न के पूर्व कुसंस्कारों का निवारण

करते हैं।)

मन्त्र-

ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽ
ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

-18.36

पात्र की खीर के साथ थोड़ा शहद मिलाएँ। भावना करें कि यह मधु उसे सुस्वादु बनाने के साथ-साथ उसमें मधुरता के संस्कार उत्पन्न कर रहा है। इससे शिशु के आचरण, वाणी-व्यवहार सभी में मधुरता बढ़ेगी। सूत्र दुहरायें-

ॐ सुसंस्काराः स्थिरीभूयासुः।

(इसमें सात्त्विक सुसंस्कारों की स्थापना करते हैं।)

ॐ मधु वाता ऽ ऋतायते
मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
ॐ मधु नक्तमुतोषसो

मधुमत्पार्थिव ँ रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता॥
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ2
अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥
-13.27-29

पात्र में थोड़ा घी डालें, मन्त्र के साथ मिलाएँ। यह घी रूखापन मिटाकर स्निग्धता देगा। यह पदार्थ बालक के अन्दर शुष्कता का निवारण करके उसके जीवन में स्नेह, स्निग्धता, सरसता का सञ्चार करेगा।

ॐ घृतं घृतपावानः
पिबत वसां वसापावानः।
पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा।
दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽ
उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ -6.19

पात्र में तुलसीदल के टुकड़े मन्त्र के साथ डालें। यह ओषधि शारीरिक ही नहीं; वरन् आधिदैविक, आध्यात्मिक

रोगों का शमन करने में भी सक्षम है। यह अपनी तरह ईश्वर को समर्पित होने के संस्कार बालक को प्रदान करेगी।

ॐ याऽ ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च॥-12.75

गङ्गाजल की कुछ बूँदें पात्र में डालकर मिलाएँ। पतितपावनी गङ्गा खाद्य की पापवृत्तियों का हनन करके उसमें पुण्य संवर्द्धन के संस्कार पैदा कर रही हैं। ऐसी भावना के साथ उसे चम्मच से मिलाकर एक दिल कर दें। जैसे यह सब भिन्न-भिन्न वस्तुएँ एक हो गयीं, उसी प्रकार भिन्न-भिन्न श्रेष्ठ संस्कार बालक को एक समग्र श्रेष्ठ व्यक्तित्व प्रदान करें।

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित्॥-34.11

सभी वस्तुएँ मिलाकर वह मिश्रण

पूजा वेदी के सामने संस्कारित होने के लिए रख दिया जाए। इसके बाद अग्नि स्थापन से लेकर गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ पूरी करने तक का क्रम चलाया जाए।

॥ विशेष आहुति ॥

गायत्री मन्त्र की आहुतियाँ पूरी हो जाने पर पहले तैयार की गयी खीर से 5 आहुतियाँ नीचे लिखे मन्त्र के साथ दी जाएँ। भावना की जाए कि वह खीर इस प्रकार यज्ञ भगवान् का प्रसाद बन रही है।

ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवाः
तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना
धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु स्वाहा॥
इदं वाचे इदं न मम। -ऋ. 8.100.11

॥ अन्नप्राशन ॥

आहुतियाँ पूरी होने पर शेष खीर से बच्चे

को अन्नप्राशन कराया जाए।

क्रिया और भावना-

खीर का थोड़ा-सा अंश चम्मच से मन्त्र के साथ बालक को चटा दिया जाए। भावना की जाए कि वह यज्ञावशिष्ट खीर अमृतोपम गुणयुक्त है और बालक के शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक सन्तुलन, वैचारिक उत्कृष्टता तथा चारित्रिक प्रामाणिकता का पथ प्रशस्त करेगी।

ॐ अन्नपतेन्नस्य नो
देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जं
नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥ -11.83

इसके बाद स्विष्टकृत् होम से लेकर विसर्जन तक के कर्म पूरे किये जाएँ। विसर्जन के पूर्व बालक को सभी लोग आशीर्वाद दें।

मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार

विशेष व्यवस्था-

इस संस्कार के लिए सामान्य व्यवस्था के साथ नीचे लिखे अनुसार विशेष तैयारी पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

1 मस्तक लेपन के लिए यथासम्भव गाय का दूध एवं दही पचास-पचास ग्राम भी बहुत है।

2 कलावे के लिए लगभग छः-छः इञ्च के तीन टुकड़ों के बीच में छोटे-छोटे कुश के टुकड़ों को बाँधकर रखना चाहिए।

3 प्रज्ञा संस्थानों-शाखाओं-मंदिरों को इस उद्देश्य के लिए कैंची, छुरा अलग से रखना चाहिए। उन्हीं का पूजन कराकर नाई से केश उतरवाना चाहिए।

4 बालक के लिए मुण्डन के बाद

नवीन वस्त्रों की व्यवस्था रखनी चाहिए।

5 बाल एकत्र करने के लिए गुँथे आँटे या गोबर की व्यवस्था रखनी चाहिए।

विशेष कर्मकाण्ड-

बालक एवं उसके अभिभावकों का मङ्गलाचरण से स्वागत करते हुए क्रमबद्ध रूप से निर्धारित प्राथमिक उपचार तथा रक्षाविधान तक का क्रम पूरा कर लेना चाहिए। उसके बाद क्रमशः विशेष कर्मकाण्ड कराये जाएँ।

॥ मस्तक लेपन ॥

क्रिया और भावना-

मन्त्र के साथ माता-पिता दूध, दही से बालक-बालिका के केश गीले करें। गर्मी की ऋतु हो, तो अच्छी तरह भी भिगो सकते हैं, अन्यथा थोड़े छींटे डाल करके

भी काम चलाया जा सकता है।

भावना करें कि मस्तिष्क के इस दिव्योपचार प्रसङ्ग में द्रव्यों के माध्यम से बालक के मस्तिष्क में शुभ देव-शक्तियों, देव-वृत्तियों का स्पर्श दिया जा रहा है। अशुभ के उच्छेदन तथा शुभ की स्थापना का कार्य स्नेह-प्रेम के आधार पर ही करेंगे। माता-पिता दूध-दही-जल मिश्रित पदार्थ की कटोरी हाथ में लेकर सूत्र दुहरायें-

ॐ हीनसंस्कारान् निवारयिष्यामि।

(बच्चे के हीन संस्कारों का निवारण करेंगे।) मन्त्र बोलते हुए बालक के केश गीला करें। मन्त्र-

ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या
आपउदन्तु ते तनूम्।
दीर्घायुत्वाय वर्चसे॥

-पार.गृ.सू.2.1.9

॥ त्रिशिखा बन्धन ॥

क्रिया और भावना-

एक-एक करके मन्त्रों के क्रम से निर्धारित केन्द्रों को कलावे से बाँधा जाए। तदनुरूप भावना की जाए। हाथ में कलावा लेकर सूत्र दुहरायें-

ॐ बहुमुखं विकासं करिष्ये।

(शरीर के साथ मस्तिष्क के बहुमुखी विकास की व्यवस्था बनायेंगे।)

ब्रह्म ग्रन्थि बन्धन-

सिर के पिछले भाग में दायीं ओर के बालों में मन्त्र के साथ कलावा बाँधें। भावना करें कि मस्तिष्क को रचना शक्ति के प्रतीक ब्रह्मा की शक्ति से देवों की साक्षी में प्रतिबद्ध किया जा रहा है। आसुरी शक्तियाँ इसका उपयोग न कर सकेंगी। यह उनका उपकरण न बन सकेगा, देवत्व की मर्यादा में ही इसका

विकास और सञ्चालन होगा।

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि
सीमतः सुरुचो वेनऽ आवः।
स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्यविष्ठाः
सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥ -13.3

विष्णु ग्रन्थि बन्धन-

पिछले हिस्से के बायें भाग के केशों में कलावा बाँधें, भावना करें कि मस्तिष्क के पोषण, सञ्चालन करने वाले केन्द्र भगवान् विष्णु की शक्ति से प्रतिबद्ध हो रहे हैं। उन पर असुरत्व का शासन न चल सकेगा। देव मर्यादा से नियन्त्रित ये केन्द्र सत्प्रवृत्तियों को ही पोषण देंगे।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्।
समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥-5.15

रुद्र ग्रन्थि बन्धन-

सिर के अगले भाग के केशों में मन्त्र के साथ कलावा बाँधें। भावना करें कि रुद्र-

शिव की शक्ति इस क्षेत्र पर आधिपत्य कर रही है। असुरता की दाल अब नहीं गलेगी। रुद्र की शक्ति विकारों को जला डालेगी और ईश्वरीय मर्यादा के अनुकूल कल्याणकारी अनुशासन लागू करेगी।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ
उतो तऽ इषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः॥-16.1

॥ छुरा पूजन ॥

क्रिया और भावना-

अभिभावक थाली या तश्तरी में रखे कैंची-छुरे की पूजा रोली, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से करें और उसके मूल में कलावा बाँध दें। भावना करें कि बालक के कुविचारों को काटने के लिए, उनकी काट करने में समर्थ पैने उपकरण-सद्विचारों की अभ्यर्थना कर रहे हैं। जिस प्रकार स्थूल बालों की सफाई के लिए ये औजार प्रभु

कृपा से मिले हैं, वैसे ही सूक्ष्म प्रवाह भी मिलेंगे। उनका उपयोग पूरी तत्परता, जागरूकता से करेंगे।

ॐ यत् क्षुरेण मज्ञयता
सुपेशसा वप्ता वपति केशान्।
छिन्धि शिरो मास्यायुः प्रमोषीः॥

-पा.गृ.स.2.1.18

॥ त्रिशिखा कर्त्तन॥

क्रिया और भावना-

पुरोहित स्वयं कैंची या उस्तरे से एक-एक करके मन्त्रों के उच्चारण के साथ-साथ तीनों ग्रन्थियों को क्रमशः काट दें। सभी लोग भावना प्रवाह पैदा करने में योगदान दें। प्रतिनिधि कैंची हाथ में लेकर सूत्र दुहरवायें- **ॐ दुष्प्रवृत्तीः उच्छेत्स्यामि।** (स्वभावजन्य दुष्प्रवृत्तियों का उच्छेदन करते रहेंगे।)तत्पश्चात् कलावा बँधे हुए बालों के तीनों अंश काटें।

ब्रह्म ग्रन्थि कर्त्तन के साथ-साथ भावना करें कि निर्माण की शक्ति विनाशक प्रवृत्तियों को काट रही है। अब रचनात्मक प्रवृत्तियों के लिए यह केन्द्र सुरक्षित रहेंगे।

ॐ येनावपत् सविता क्षुरेण
सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्।
तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्य
गोमानश्ववानयमस्तु प्रजावान्॥

-अथर्व.6.68.3

विष्णु ग्रन्थि कर्त्तन के साथ भावना करें, भगवान् विष्णु की शक्ति अपने प्रतिकूल प्रवृत्तियों का उन्मूलन-निवारण कर रही है। मस्तिष्क अब अनैतिक पोषण न दे सकेगा, नीतिमत्ता में ही प्रयुक्त होगा।

ॐ येन धाताबृहस्पतेः
अग्नेरिन्द्रस्य चायुषेऽवपत्।
तेन तऽ आयुषे वपामि
सुश्लोक्याय स्वस्तये॥

-आश्व.गृ.सू..1.17.12

रुद्र ग्रन्थि कर्त्तन के साथ यह भावना करें कि रुद्र त्रिपुरारि की प्रचण्ड शक्ति दुर्धर्ष, दुष्प्रवृत्तियों पर चोट कर रही है, अब उनका निवारण होगा; ताकि मस्तिष्क में दिव्य दृष्टि, दिव्यानुभूति की क्षमता विकसित हो सके।

ॐ येन भूयश्च रात्र्यां
ज्योक् च पश्याति सूर्यम्।
तेन तऽआयुषे वपामि
सुश्लोक्याय स्वस्तये॥

-आश्व.गृ.सू.1.17

॥नवीन वस्त्र पूजन॥

क्रिया और भावना-

एक थाली में रखकर बालक के नये वस्त्रों पर अक्षत-पुष्प मन्त्रोच्चार के साथ चढ़ाये जाएँ। भावना की जाए कि जिस प्रकार अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप वस्त्र

आच्छादनों की व्यवस्था करने की सामर्थ्य प्रभु ने दी है-वैसे ही अपने गौरव के अनुरूप व्यक्तित्व बनाने की सामर्थ्य भी मिल रही है। उस दिव्यता के प्रति वस्त्रों-प्रतीकों के पूजन द्वारा अपनी आस्था व्यक्त की जा रही है। सूत्र दुहरायें-ॐ संस्कृतिनिष्ठां विधास्यामि। (बच्चे को संस्कृति के प्रति निष्ठावान् बनायेंगे।) तदुपरान्त यह मन्त्र बोलते हुए वस्त्रों का पूजन करें।

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽ
ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ꣳ सि जज्ञिरे।
तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ -31.7

वस्त्र पूजन के बाद अग्नि स्थापन से गायत्री मन्त्र की आहुति देने तक का क्रम पूरा करके विशेष आहुतियाँ दी जाएँ।

॥ विशेष आहुति ॥

हवन सामग्री में थोड़ा मेवा, मिष्टान्न मिलाकर 5 आहुतियाँ निम्न मन्त्र से दें। भावना करें कि यज्ञीय ऊष्मा बालक को सुसंस्कारों से भर रही है।

ॐ भूर्भुवः स्वः।
अग्न आयूँ षि पवस ऽ
आ सुवोर्जमिषं च नः।
आरे बाधस्वदुच्छुनाँ स्वाहा॥
इदं अग्नये इदं न मम। - 19.38, 35.16

इसके बाद यज्ञ के शेष कृत्य पूरे कर लिये जाएँ। विसर्जन न किया जाए। नाई (मुण्डन करने वाले) द्वारा मुण्डन कर देने पर बालक को स्नान के बाद नये वस्त्र पहनाकर पुनः देवस्थल पर लाया जाता है। तब शिखा पूजन, स्वस्तिक लेखन और आशीर्वाद के बाद विसर्जन किया जाता है। यदि घर पर आयोजन है, तो इस बीच गीत, भजन-कीर्तन,

उद्बोधन का क्रम चलाते रहना चाहिए। सार्वजनिक स्थल पर हो, तो अन्य लोग बालक पर अक्षत, पुष्प वृष्टि करके प्रसाद लेकर विदा भी हो सकते हैं अथवा सर्वोपयोगी भजन-सत्संग का लाभ उठाते रह सकते हैं।

॥ मुण्डन कृत्य ॥

क्रिया और भावना- बच्चे को बहलाने-फुसलाने के साथ माता मानसिक रूप से गायत्री मन्त्र का जप करती रहे। भावना की जाए कि गर्भ से आये बालों को हटाने के साथ दिव्य सत्ता के प्रभाव से सारी मानसिक दुर्बलताएँ हट रही हैं। इस प्रक्रिया में सहायक हर शक्ति और हर व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता के भाव रखे जाएँ। भगवान् से प्रार्थना की जाए कि इस संस्कार से प्राप्त दिशा धारा के निर्वाह की क्षमता प्रदान करें। मंत्रोच्चार

के साथ केश उतारना प्रारम्भ किया जाए।

ॐ येन पूषा बृहस्पतेः वायोरिन्द्रस्य चावपत्। तेन ते वपामि ब्रह्मणा, जीवातवे जीवनाय दीर्घायुष्ट्वाय वर्चसे॥

-मं.ब्रा. 1.6.7

॥ शिखा पूजन ॥

क्रिया और भावना-

शिशु के माता-पिता से बालक के सिर में शिखा के स्थान पर रोली, चावल द्वारा शिखा-पूजन कराया जाए। भावना की जाए कि यह बालक ध्वजधारी सैनिक की तरह गौरव एवं तेजस्विता का धनी बनेगा। भारतीय संस्कृति की ध्वजा लेकर उसके अनुरूप उच्चतम लक्ष्यों को प्राप्त करके गौरवान्वित होगा।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि शिखामध्ये

तजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥ -सं.प्र.

॥ स्वस्तिक लेखन॥

क्रिया और भावना-

आचार्य या कोई सम्माननीय पूज्य व्यक्ति बालक के मुण्डित सिर पर रोली या चन्दन से शुभ चिह्न स्वस्तिक बनाए। मन्त्रोच्चार के साथ इस चिह्न के अनुरूप श्रेष्ठ प्रवृत्तियों की मस्तिष्क में स्थापना की भावना की जाए। संयुक्त सद्भाव एवं प्रभु अनुग्रह से एकता, समता, शान्ति, सरलता, प्रखरता, पवित्रता, सङ्कल्पशीलता, उदारता, प्रसन्नता, ज्ञान, परमार्थ जैसी सत्प्रवृत्तियों और श्रेष्ठ गुणों के स्थापन की भावभरी प्रार्थना की जाए। प्रतिनिधि रोली या चन्दन अनामिका अँगुली में लेकर सूत्र दुहरायें-

ॐ विचारान् संयन्तुं प्रेरयिष्यामि।

(बच्चे को विचार संयम के लिए प्रेरित करते रहेंगे।)

तदुपरान्त यह मन्त्र बोलते हुए बच्चे सिर पर स्वास्तिक बनायें।

ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ -25.19

इसके बाद स्विष्टकृत् हवन आदि शेष यज्ञकर्म पूरे किये जाएँ। आशीर्वाद, विसर्जन, जयघोष के साथ कार्यक्रम समाप्त किया।

विद्यारम्भ संस्कार

विशेष व्यवस्था-

विद्यारम्भ संस्कार के लिए सामान्य तैयारी के अतिरिक्त नीचे लिखी व्यवस्थाएँ पहले से ही बना लेनी चाहिए।

1 पूजन के लिए गणेशजी एवं माँ सरस्वती के चित्र या प्रतिमाएँ।

2 पट्टी, दवात और लेखनी, पूजन के लिए। बच्चे को लिखने में सुविधा हो, इसके लिए स्लेट, खड़िया भी रखी जा सकती है।

3 गुरु पूजन के लिए प्रतीक रूप में नारियल रखा जा सकता है। बालक के शिक्षक प्रत्यक्ष में हों, तो उनका पूजन भी कराया जा सकता है।

विशेष कर्मकाण्ड-

मङ्गलाचरण से लेकर रक्षाविधान तक के

क्रम पूरे करके विशेष कर्मकाण्ड कराया जाता है।

।।गणेश पूजन।।

क्रिया और भावना-

बालक के हाथ में अक्षत, पुष्प, रोली देकर मन्त्र के साथ गणपति जी के चित्र के सामने अर्पित कराएँ। भावना करें कि इस आवाहन-पूजन के द्वारा विवेक के अधिष्ठाता से बालक की भावना का स्पर्श हो रहा है। उनके अनुग्रह से बालक मेधावी और विवेकशील बनेगा। बच्चे के हाथ में अक्षत-पुष्प देकर सूत्र दुहरवायें-

ॐ विद्यां संवर्धयिष्यामि।

(बच्चे में शिक्षा के साथ-साथ विद्या का भी विकास करेंगे।)

तदुपरान्त मन्त्रोच्चारण के साथ पूजा वेदी पर उसे चढ़वा दें।

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे

प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥
ॐ गणपतये नमः। आवाहयामि स्थापयामि, ध्यायामि॥ -23.19

॥ सरस्वती पूजन ॥

क्रिया और भावना-

बालक के हाथ में अक्षत, पुष्प, रोली आदि देकर मन्त्रोपरान्त माँ सरस्वती के चित्र के आगे पूजा भाव से समर्पित कराएँ। भावना करें कि यह बालक कला, ज्ञान, संवेदना की देवी माता सरस्वती के स्नेह का पात्र बन रहा है। उनकी छत्रछाया का रसास्वादन करके यह ज्ञानार्जन में सतत रस लेता हुआ आगे बढ़ सकेगा। पुनः-अक्षत-पुष्प देकर सूत्र दुहरवायें-

ॐ कलां संवेदनशीलतां वर्धयिष्यामि।

(बच्चों में कलात्मकता और संवेदनशीलता का विकास करेंगे।)

तदुपरान्त मन्त्र बोलते हुए उसे पूजा-वेदी पर चढ़वा दें।

ॐ पावका नः सरस्वती
वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः॥
ॐ सरस्वत्यै नमः। आवाहयामि
स्थापयामि, ध्यायामि। -20.84

॥ उपकरणों-माध्यमों की पवित्रता ॥

शिक्षा की तीन अधिष्ठात्री देवियाँ- उपासना विज्ञान की मान्यताओं के आधार पर कलम की अधिष्ठात्री देवी 'धृति' दवात की अधिष्ठात्री देवी 'पुष्टि' और पट्टी की अधिष्ठात्री देवी 'तुष्टि' मानी गई है। षोडश मातृकाओं में धृति, पुष्टि तथा तुष्टि तीन देवियाँ उन तीन

भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो विद्या प्राप्ति के लिए आधारभूत हैं। विद्यारम्भ संस्कार में कलम-पूजन का मन्त्र बोलते समय धृति का आवाहन करते हैं। निर्धारित मन्त्रों में उन्हीं की वन्दना, अभ्यर्थना की गयी है। बच्चे एवं अभिभावकों के हाथ में अक्षत-पुष्प देकर सूत्र दुहरवायें-

ॐ विद्यासंसाधनमहत्त्वं स्वीकरिष्ये।

(विद्या विकास के साधनों की गरिमा का अनुभव करते रहेंगे।)

इसके बाद स्लेट, बत्ती, कलम-कॉपी पर मन्त्रोच्चारणपूर्वक चढ़वा दें।

॥ लेखनी पूजन ॥

क्रिया और भावना-

पूजन सामग्री बालक के हाथ में दी जाए। पूजा की चौकी पर स्थापित कलम पर उसे मन्त्र के साथ श्रद्धापूर्वक चढ़ाया

जाए। भावना की जाए कि धृति शक्ति बालक की विद्या के प्रति अभिरुचि को परिष्कृत कर रही है।

ॐ पुरुदस्मो विषुरूपऽ
इन्दुरन्तर्महिमानमानञ्जधीरः।
एकपदीं द्विपदीं त्रिपदीं चतुष्पदीम्
अष्टापदीं भुवनानु प्रथन्ताᳬ स्वाहा॥

-8.30

॥दवात पूजन॥

क्रिया और भावना-

पूजा वेदी पर स्थापित दवात पर बालक के हाथ से मन्त्रोच्चार के साथ पूजन सामग्री अर्पित कराई जाए। भावना की जाए कि पुष्टि शक्ति के सान्निध्य से बालक में बुद्धि की तीव्रता एवं एकाग्रता की उपलब्धि हो रही है।

ॐ देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीर्वयोधसं
पतिमिन्द्रमवर्द्धयन्।
जगत्या छन्दसेन्द्रियᳬ शूषमिन्द्रे वयो

दधद्वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥

-28.41

॥ पट्टी पूजन ॥

क्रिया और भावना-

बालक द्वारा मन्त्रोच्चार के साथ पूजा स्थल पर स्थापित पट्टी पर पूजन सामग्री अर्पित कराई जाए। भावना की जाए कि इस आराधना से बालक तुष्टि शक्ति से सम्पर्क स्थापित कर रहा है। उस शक्ति से परिश्रम, साधना करने की क्षमता का विकास होगा।

ॐ सरस्वती योन्यां
गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति।
अपाᳬरसेन वरुणो न साम्नेन्द्र ᳬ श्रियै
जनयन्नप्सु राजा॥ -19.94

॥ गुरु पूजन ॥

क्रिया और भावना-

मन्त्र के साथ बालक द्वारा गुरु के

अभाव में उनके प्रतीक का पूजन कराया जाए। भावना की जाए कि इस श्रद्धा प्रक्रिया द्वारा बालक में वे शिष्योचित गुण विकसित हो रहे हैं, जिनके आधार पर शिष्य भी धन्य हो जाता है और गुरु भी। गुरु तत्त्व की कृपा का भाजन बालक बना रहे। हाथ में अक्षत-पुष्प देकर बच्चे एवं अभिभावकों से सूत्र दुहरवायें-

ॐ आचार्यनिष्ठां वर्धयिष्यामि।

(शिक्षकों-गुरुजनों के प्रति निष्ठा को सतत बढ़ाते रहेंगे।)

मंत्र के साथ गुरु पूजन करें।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्
द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात
तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।
उपयामगृहीतोसि बृहस्पतये

त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा॥
ॐ श्री गुरवे नमः। आवाहयामि स्थापयामि, ध्यायामि।

-26.3, तैत्ति.सं. 1.8.22.12।

॥अक्षर लेखन एवं पूजन॥

क्रिया और भावना-

पट्टी पर बालक के हाथ से '**ॐ भूर्भुवः स्वः**' शब्द लिखाया जाए। खड़िया से उन अक्षरों को अध्यापक बना दें और बालक उस पर कलम फेरकर अक्षर बना दे अथवा अध्यापक और छात्र दोनों कलम पकड़ लें और उपर्युक्त पञ्चाक्षरी गायत्री मन्त्र को पट्टी पर लिख दें। ज्ञान का उदय अन्तःकरण में होता है। ज्ञान की प्रथम अभिव्यक्ति अक्षरों को पूजकर की जाती है। भविष्य में बच्चे में साधना के प्रति उमङ्ग पैदा की जाए। अक्षत, पुष्प लेकर अक्षर पूजन करें। सूत्र दुहरायें-

ॐ नीतिनिष्ठां वर्धयिष्यामि।

(बच्चे में नीति के प्रति निष्ठा की वृद्धि करते रहेंगे।)

मन्त्र-

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च। - 16.41

इसके बाद अग्नि स्थापन से लेकर गायत्री मन्त्र की आहुति तक का क्रम चले। बालक को भी उसमें सम्मिलित रखें।

॥ विशेष आहुति ॥

हवन सामग्री में कुछ मिष्टान्न मिलाकर पाँच आहुतियाँ निम्न मन्त्र से कराएँ। भावना करें, यज्ञीय ऊर्जा बालक के अन्दर संस्कार द्वारा पड़े प्रभाव को स्थिर और बलिष्ठ बना रही है।

ॐ सरस्वती मनसा पेशलं वसु

नासत्याभ्यां वयति दर्शतं वपुः।
रसं परिस्रुता न रोहितं
नग्नहुर्धीरस्तसरं न वेम स्वाहा॥
इदं सरस्वत्यै इदं न मम। -19.83

तत्पश्चात् यज्ञ के शेष क्रम **स्विष्टकृत** *(पृष्ठ 100-121)* से आगे पूरा करके आशीर्वचन, विसर्जन एवं जयघोष के बाद कार्यक्रम का समापन करें।

यज्ञोपवीत-दीक्षा संस्कार

यज्ञोपवीत बालक को तब देना चाहिए, जब उसकी बुद्धि और भावना का इतना विकास हो जाए कि इस संस्कार के प्रयोजन को समझकर उसके निर्वाह के लिए उत्साहपूर्वक लग सके।

यज्ञोपवीत से सम्बन्धित स्थूल-सूक्ष्म मर्यादाएँ इस प्रकार हैं-

यज्ञोपवीत गायत्री की मूर्तिमान् प्रतिमा है। गायत्री त्रिपदा है, गायत्री मन्त्र में तीन चरण हैं; इसी आधार पर यज्ञोपवीत में तीन लड़ें हैं। यज्ञोपवीत की प्रत्येक लड़ में तीन धागे होते हैं। यज्ञोपवीत में तीन गाँठों को **भूः**, **भुवः**, **स्वः** तीन व्याहृतियाँ माना गया है। गायत्री के '**ॐकार**' को बड़ी ब्रह्म ग्रन्थि कहा गया है। गायत्री के एक-एक पद को लेकर ही उपवीत की रचना हुई है।

इस प्रतिमा को शरीर मन्दिर में स्थापित करने पर उसकी पूजा-अर्चना करने का उत्तरदायित्व भी स्वीकार करना होता है। इसके लिए नित्य कम से कम एक माला गायत्री मन्त्र जप की साधना करनी चाहिए।

यज्ञोपवीत को व्रत बन्ध कहते हैं। व्रतों से बँधे बिना मनुष्य का उत्थान सम्भव नहीं। यज्ञोपवीत को व्रतशीलता का प्रतीक मानते हैं। इसीलिए इसे सूत्र (फार्मूला-सहारा) भी कहते हैं। यज्ञोपवीत के नौ धागे नौ गुणों के प्रतीक हैं। प्रत्येक धारण करने वाले को इन गुणों को अपने में बढ़ाने का निरन्तर ध्यान बना रहे, यह स्मरण जनेऊ के धागे दिलाते रहते हैं। गायत्री गीता (गायत्री महाविज्ञान भाग-2) के अनुसार गायत्री मन्त्र के नौ शब्दों में सन्निहित सूत्र इस प्रकार हैं-

1 **तत्-** यह परमात्मा के उस जीवन्त अनुशासन का प्रतीक है, जन्म और मृत्यु जिसके ताने-बाने हैं। इसे आस्तिकता-ईश्वर निष्ठा के सहारे जाना जाता है। उपासना इसका आधार है।

2 **सवितुर्-** सविता, शक्ति उत्पादक केन्द्र है। साधक में शक्ति विकास का क्रम चलना चाहिए। यह जीवन साधना से साध्य है।

3 **वरेण्यम्-** श्रेष्ठता का वरण, आदर्श-निष्ठा, सत्य, न्याय, ईमानदारी के रूप में यह भाव फलित होता है।

4 **भर्गो-** विकारनाशक तेज है, जो मन्यु-साहस के रूप में उभरता और निर्मलता, निर्भयता के रूप में फलित होता है।

5 **देवस्य-** दिव्यतावर्द्धक है। सन्तोष, शान्ति, निस्पृहता, संवेदना, करुणा

आदि के रूप में प्रकट होता है।

6 **धीमहि-** सद्गुण धारण का गुण, जो पात्रता विकास और समृद्धिरूप में फलित होता है।

7 **धियो-** दिव्य मेधा, विवेक का प्रतीक शब्द है, समझदारी, विचारशीलता, निर्णायक क्षमता आदि का संवर्द्धक है।

8 **यो न-** दिव्य अनुदानों के सुनियोजन, संयम का प्रतीक है। धैर्य, ब्रह्मचर्यादि का उन्नायक है।

9 **प्रचोदयात्-** दिव्य प्रेरणा, आत्मीयताजन्य सेवा साधना, सत्कर्त्तव्य निष्ठा का विकासक है।

यज्ञोपवीत के धागों में नीति का सम्पूर्ण सार सन्निहित कर दिया गया है। जैसे कागज और स्याही के सहारे किसी नगण्य से पत्र या तुच्छ सी लगने वाली पुस्तक में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ज्ञान-

विज्ञान भर दिया जाता है, उसी प्रकार सूत्र के इन नौ धागों में जीवन-विकास का सारा मार्गदर्शन समाविष्ट कर दिया गया है। इन धागों को कन्धे पर, कलेजे पर, हृदय पर, पीठ पर प्रतिष्ठित करने का प्रयोजन यह है कि सन्निहित शिक्षा का यज्ञोपवीत के धागे स्मरण कराते रहें, ताकि उन्हें जीवन व्यवहार में उतारा जा सके।

यज्ञोपवीत धारण करने के नियम

यज्ञोपवीत को माँ गायत्री और यज्ञ पिता की संयुक्त प्रतिमा मानते हैं। उसकी मर्यादा के कई नियम हैं, जैसे-

1 यज्ञोपवीत को मल-मूत्र विसर्जन के पूर्व दाहिने कान पर चढ़ा लेना चाहिए और हाथ स्वच्छ करके ही उतारना चाहिए। इसका स्थूल भाव यह है कि यज्ञोपवीत कमर से ऊँचा

हो जाए और अपवित्र न हो। अपने व्रतशीलता के सङ्कल्प का ध्यान इसी बहाने बार-बार किया जाए।

2 यज्ञोपवीत का कोई तार टूट जाए या 6 माह से अधिक समय हो जाए, तो बदल देना चाहिए। खण्डित प्रतिमा शरीर पर नहीं रखते। धागे कच्चे और गन्दे होने लगें, तो पहले ही बदल देना उचित है।

3 जन्म-मरण के सूतक के बाद इसे बदल देने की परम्परा है। जिनके गोद में छोटे बच्चे नहीं हैं, वे महिलाएँ भी यज्ञोपवीत सँभाल सकती हैं; किन्तु उन्हें हर मास मासिक शौच के बाद उसे बदल देना पड़ता है।

4 यज्ञोपवीत शरीर से बाहर नहीं निकाला जाता। साफ करने के लिए उसे पहने रहकर ही घुमाकर धो लेते हैं। भूल से उतर जाए, तो

प्रायश्चित की एक माला जप करने या बदल लेने का नियम है।

5 देव प्रतिमा की मर्यादा बनाये रखें। उसमें चाबी आदि न बाँधें।

बालक जब इन नियमों के पालन करने योग्य हो जाएँ, तभी उनका यज्ञोपवीत करना चाहिए।

विशेष व्यवस्था-

यज्ञोपवीत संस्कार के लिए यज्ञादि की सामान्य व्यवस्था के साथ-साथ नीचे लिखी व्यवस्थाओं पर भी दृष्टि रखनी चाहिए-

1 पुरानी परम्परा के अनुसार यज्ञोपवीत लेने वाले बालकों का मुण्डन करा दिया जाता था, उद्देश्य था शरीर की श्रृङ्गारिकता के प्रति उदासीनता। जिन्हें यज्ञोपवीत लेना हो, उनसे एक दिन पूर्व बाल कटवा-

छँटवा कर शालीनता के अनुरूप करा लेने का आग्रह किया जा सकता है।

2 जितनों का यज्ञोपवीत होना है, उसके अनुसार मेखला, कोपीन, दण्ड, यज्ञोपवीत, पीले दुपट्टों की व्यवस्था करा लेनी चाहिए।

मेखला और कोपीन संयुक्त रूप से दी जाती है। मेखला कहते हैं कमर में बाँधने योग्य नाड़े जैसे सूत्र को। कपड़े की सिली हुई सूत की डोरी या कलावे के लम्बे टुकड़े से मेखला बना लेनी चाहिए। कोपीन लगभग 4 इञ्च चौड़ी डेढ़ फुट लम्बी लँगोटी होती है। इसे मेखला के साथ टाँक कर भी रखा जा सकता है। दण्ड के लिए लाठी या ब्रह्म दण्ड जैसा रोल भी रखा जा सकता है। यज्ञोपवीत पीले रँगकर रखे जाने चाहिए। न रँग पाएँ, तो उनकी गाँठ

को हल्दी से पीला कर देना चाहिए। संस्कार कराने वालों से पहले से ही कहकर रखा जाए कि सभी या कम से कम एक नया वस्त्र धारण करके बैठें। नया दुपट्टा भी लेना पर्याप्त है। संस्कार कराने वाले हर व्यक्ति के लिए पीले दुपट्टे की व्यवस्था करा ही लेनी चाहिए।

3 गुरु पूजन के लिए लाल मशाल का चित्र रखना चाहिए। गुरु व्यक्ति नहीं चेतना रूप है, ऐसा समझकर युग शक्ति की प्रतीक मशाल को ही गुरु का प्रतीक मानकर रखना अधिक उपयुक्त है।

4 वेद का अर्थ है- ज्ञान। वेद पूजन के लिए वेद की पुस्तक उपलब्ध न हो, तो कोई पवित्र पुस्तक पीले वस्त्र में लपेट कर पूजा वेदी पर रख देनी चाहिए।

5 गायत्री, सावित्री एवं सरस्वती पूजन के लिए पूजन वेदी पर चावल की तीन छोटी-छोटी ढेरियाँ रख देनी चाहिए।

सामान्य प्रकरण से रक्षाविधान तक के उपचार पूरे करके विशेष कर्मकाण्डों को क्रमबद्ध रूप से कराया जाता है। समय और परिस्थितियों के अनुरूप प्रेरणाएँ एवं व्याख्याएँ भी की जानी चाहिए। क्रिया-निर्देश और भाव-संयोग का क्रम पूरी सावधानी के साथ बनाया जाए।

॥ मेखला-कोपीन धारण ॥

क्रिया और भावना-

मेखला और कोपीन एकत्रित रखकर आचार्य तीन बार गायत्री मन्त्र बोलते हुए उन पर जल के छींटे लगायें। भावना करें कि इनमें समय और तत्परता के संस्कार पैदा किये जा रहे हैं।

सिञ्चन के बाद उन्हें संस्कार कराने वालों के पास पहुँचा दिया जाए। वे उन्हें हाथों के सम्पुट में रखें। मन्त्रोच्चार के साथ भावना करें कि प्राण शक्ति के संरक्षण तथा सुनियोजन का उत्तरदायित्व हम पर आ रहा है। उसे हम साहस और प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करते हैं। उस दिशा में मिलने वाले हर विचार, सहयोग एवं भावना को हम सम्मान के साथ स्वीकार करते रहेंगे। मेखला, कोपीन के साथ दैवी संस्कार का वरण हम कर रहे हैं। मन्त्र पूरा होने पर उसे कमर में स्वयं बाँध लें या खोंस लें। लँगोट पहनने का अभ्यास बनाने का उनसे आग्रह भी किया जाए। सूत्र दुहरायें-

ॐ संयमशीलः तत्परश्च भविष्यामि।

(संयमशील और तत्पर रहेंगे।) मन्त्र बोलते हुए धारण करें।

ॐ इयं दुरुक्तं परिबाधमाना,
वर्णं पवित्रं पुनतीमऽ आगात्।
प्राणापानाभ्यां बलमादधाना,
स्वसादेवी सुभगा मेखलेयम्॥

-पार.गृ.सू.2.2.8

॥ दण्ड धारण ॥

क्रिया और भावना-

दण्ड पर गायत्री मन्त्र के साथ कलावा बाँध देना चाहिए। यह कार्य पहले से भी करके रखा जा सकता है और उसी समय भी किया जा सकता है। मन्त्रोच्चार के साथ दण्ड संस्कार कराने वालों को दिया जाए। वे उसे दोनों हाथों से लेकर मस्तक से लगाएँ। भावना करें कि अध्यात्म क्षेत्र के प्रखर अनुशासन को ग्रहण किया जा रहा है, इसके साथ देव शक्तियों द्वारा उसके अनुरूप प्रवृत्ति और शक्ति प्रदान की जा रही है। आचार्य निम्न मन्त्र

बोलते हुए ब्रह्मचारी को दण्ड प्रदान करें-सूत्र दुहरायें-

ॐ अनुशासनानि पालयिष्यामि।

(गुरु द्वारा निर्धारित अनुशासनों का पालन करेंगे।)

ॐ यो मे दण्डः परापतद्,
वैहायसोऽधिभूम्याम्।
तमहं पुनरादद आयुषे,
ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय॥

-पार.गृ.सू. 2.2.12

॥ यज्ञोपवीत पूजन ॥

यज्ञोपवीत देव प्रतिमा है। उसकी स्थापना के पूर्व उसकी शुद्धि तथा उसमें प्राण-प्रतिष्ठा का उपक्रम किया जाता है। जनेऊ को सबसे प्रथम पवित्र करना चाहिए। उसे शुद्ध जल से और यदि सम्भव हो, तो गङ्गाजल से धोया जाए, ताकि अब तक उस पर पड़े हुए स्पर्श संस्कार दूर हो जाएँ। मन्त्रोच्चार के साथ यज्ञोपवीत पर जल

छिड़कें, पवित्र करें, नमस्कार करें-

ॐ प्रजापतेर्यत्सहजं पवित्रं,
कार्पाससूत्रोद्भवब्रह्मसूत्रम्।
ब्रह्मत्वसिद्ध्यै च यशः प्रकाशं,
जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्मसूत्र॥

इसके बाद उसे दोनों हाथों के बीच रखकर 10 बार गायत्री मन्त्र का मानसिक जप किया जाए। इतना करने से वह पवित्र एवं अभिमन्त्रित हो जाता है। फिर हाथ में अक्षत, पुष्प लेकर यज्ञोपवीत का पूजन करें। भावना की जाए कि सूत्र की बनी इस देव प्रतिमा को शुद्ध एवं संस्कारवान् बनाकर उसमें सन्निहित देवत्व के प्रति अपनी भावना आस्था समर्पित की जा रही है।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वे देवासऽ इह मादयन्तामो3म्प्रतिठ॥ -2.13

॥ पञ्च देवावाहन ॥

शिक्षण और प्रेरणा-

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यज्ञ और सूर्य- इन पाँचों देवताओं को पाँच दिव्य भावनाओं का प्रतीक माना गया है। ब्रह्मा अर्थात् आत्मबल, विष्णु अर्थात् समृद्धि, महेश अर्थात् व्यवस्था, यज्ञ अर्थात् परमार्थ, सूर्य अर्थात् पराक्रम-इन पाँचों गुणों को देवता मानकर हम यज्ञोपवीत के माध्यम से अपने हृदय और कलेजे पर धारण करें अर्थात् उन्हें अपनी आस्था एवं प्रकृति का अङ्ग बनाएँ, तभी वास्तविक कल्याण का मार्ग मिलेगा। देवता भावनाओं के प्रतिबिम्ब होते हैं।

1 **ब्रह्मा-** जीवन के भौतिक और आत्मिक दोनों ही पहलू सुविकसित होने चाहिए। हमें आत्मबल से सम्पन्न होने के लिए संयमी,

सदाचारी, मधुरभाषी, शालीन, नेक, सज्जन, आस्तिक, सद्गुणी होना चाहिए, जिसका व्यक्तिगत जीवन पवित्र एवं सद्भावना युक्त है, उसी का आत्मबल बढ़ता है। यज्ञोपवीत में सर्वप्रथम ब्रह्मा के आवाहन एवं धारण करने का तात्पर्य इस मान्यता को हृदयङ्गम करना एवं उसके लिए प्रयत्नशील रहना ही है।

क्रिया और भावना- यज्ञोपवीत खोलकर उसे हाथ के दोनों अँगूठे एवं कनिष्ठिका में फँसाकर फैला लें, ताकि फिर से न उलझे। अब दोनों हाथों के सम्पुट में लें। मन्त्रोच्चार के साथ भावना करें कि आवाहित देवशक्ति का प्रवाह इस सूत्र में स्थापित हो रहा है। मन्त्र पूरा होने

पर हाथों को मस्तक से लगाएँ। सूत्र दुहरायें- **ॐ ब्रह्मा सृजनशीलतां ददातु।** (ब्रह्मा हमें सृजनशीलता प्रदान करें।)

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि
सीमतः सुरुचो वेनऽ आवः।
स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः
सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥
ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि।

-13.3, अथर्व. 5.6.1

2 **विष्णु-** विष्णु लक्ष्मी के स्वामी हैं, हमें भी दीन, दरिद्र, हेय, परावलम्बी, गई-गुजरी स्थिति में नहीं पड़े रहना चाहिए। स्वास्थ्य, शिक्षा, कुशलता आदि गुणों को बढ़ाना चाहिए, ताकि उसकी कीमत पर सुख-साधनों को, समृद्धि को

प्राप्त किया जा सके। समृद्धि उपलब्ध करने का सही मार्ग केवल एक ही है, अपनी सर्वाङ्गीण प्रतिभा एवं योग्यता को बढ़ाना। इस दिशा में जो जितना कर लेगा, उसे उस मूल्य पर आसानी से अधिक सुख-साधन मिल जायेंगे। समृद्धि को मनुष्य अपनी तथा दूसरों की सुविधा बढ़ाने में खर्च करे, तो उससे लोक एवं परलोक की सुख-शान्ति बढ़ेगी। यज्ञोपवीत में स्थापित विष्णु का यही सन्देश है। सूत्र दुहरायें- **ॐ विष्णुः पोषणक्षमतां ददातु।** (विष्णु हमें पोषण-क्षमता से युक्त बनावें।)

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा
नि दधे पदम्। समूढमस्य पा ँ
सुरे स्वाहा॥ ॐ विष्णवे नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि,
ध्यायामि।-5.15

3 **महेश-** महेश का अर्थ है- नियंत्रण, व्यवस्था, क्रमबद्धता, उचित का चुनाव। ब्रह्मा को उत्पादन का, विष्णु को पालन का और शिव को संहार का देवता माना गया है। संहार का अर्थ है- अनुपयोगिता एवं अनौचित्य का निवारण। हमारी आधी से अधिक शक्ति सामर्थ्य अव्यवस्था एवं अनौचित्य को अपनाये रहने से नष्ट होती है, इसे बचाया जाना चाहिए। यज्ञोपवीत में शिव देवता का आवाहन इन्हीं मान्यताओं को हृदयङ्गम करने के लिए किया जाता है। सूत्र दुहरायें- **ॐ शिवः अमरतां ददातु।** (शिव हमें अमरत्व प्रदान करें।)

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः। ॐ रुद्राय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। -16.1

4 **यज्ञ-** आत्मबल बढ़ाने के लिए एक अनिवार्य माध्यम परमार्थ है, यज्ञ इसी प्रवृत्ति का परिचायक है। धार्मिक व्यक्ति वही है, जिसके जीवन में सेवा, उदारता, सहायता एवं परोपकार की वृत्ति फूट पड़ती है, जिसे सभी अपने लगते हैं, जिसे सभी से प्रेम है, वही सच्चा अध्यात्मवादी कहा जायेगा। उसे अनिवार्यतः अपनी आकांक्षाओं और गतिविधियों में परमार्थ को प्रधानता देनी ही होगी। ब्रह्म और यज्ञ इन दो देवताओं की-वैयक्तिक जीवन की पवित्रता एवं लोक सेवा की प्रवृत्ति को अपनाने से आत्मिक बल बढ़ता है और मनुष्यत्व से देवत्व की ओर प्रगति होती है। यज्ञोपवीत खोलकर कनिष्ठिका व अँगुष्ठ में फँसाकर यज्ञ भगवान् के सामने करें।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः
तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
ॐ यज्ञपुरुषाय नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि,
ध्यायामि। -31.16

5 **सूर्य-** सूर्य अर्थात् तेजस्विता, पराक्रम, श्रमशीलता। सूर्य की तरह हम निरन्तर कार्य में संलग्न रहें, परिश्रम को अपना जीवन सहचर एवं गौरव का आधार मानें। आलस्य और प्रमाद को पास न फटकने दें। सदा जागरूक एवं चैतन्य रहें। पुरुषार्थी बनें। आत्महीनता एवं दीनता की भावना मन में न आने दें। तेजस्वी बनें। एक पैर से खड़े होकर पानी का लोटा सूर्य के

सामने लुढ़का देने से नहीं, सूर्य की सच्ची उपासना उसकी प्रेरणाओं को अपनाने से होती है। यज्ञोपवीत को लिए हुए दोनों हाथ ऊपर उठाएँ, सूर्य भगवान् का ध्यान करें-

ॐ आ कृष्णेन रजसा
वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना
देवो याति भुवनानि पश्यन्॥
ॐ सूर्याय नमः। आवाहयामि
स्थापयामि, ध्यायामि। -33.43

॥ यज्ञोपवीत धारण ॥

क्रिया और भावना-

पाँच यज्ञोपवीतधारी व्यक्ति मिलकर यज्ञोपवीत पहनाते हैं। भाव यह है कि इस दिशा में नया प्रयास, प्रवेश करने वालेक ोअ नुभवियोंक ास हयोगए वं मार्गदर्शन मिलता रहे। पहनाने वाले

जब यज्ञोपवीत पकड़ लें, तो धारण करने वाला उसे छोड़ दे। बायाँ हाथ नीचे कर ले और दाहिना हाथ ऊपर ही उठाये रहे। यज्ञोपवीत धारण करने से पहले सूत्र दुहरायें-

- **ॐ गायत्रीरूपं धारयामि।**

  (हम इस यज्ञोपवीत को गायत्री प्रतिमा के रूप में धारण कर रहे हैं।)

  ॐ यज्ञप्रतीकरूपं धारयामि।

  (हम इसे यज्ञ के प्रतीक रूप में धारण कर रहे हैं।)

- **ॐ गुरोः अनुशासनरूपं धारयामि।**

  (हम इसे गुरु के अनुशासन के रूप में धारण कर रहे हैं।) मन्त्र के साथ यज्ञोपवीत पहना दिया जाए। मन्दिर में प्रतिमा स्थापना जैसा दिव्य भाव बनाये रखें।

  ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं

प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं
यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

-पा.गृ.सू. 2.2.11

॥सूर्य दर्शन॥

क्रिया और भावना-

मन्त्रोच्चार के साथ सूर्य नारायण का ध्यान करते हुए तीन अञ्जलि या पात्र से तीन बार जल समर्पित करें तथा हाथजोड़कर नमस्कार करें, भावना करें कि जगदात्मा सूर्य जिस प्रकार सारी प्रकृति को शक्ति देते हैं, वैसे ही उनका सूक्ष्म प्रवाह हमें भी मिल रहा है, हम उससे धारण और नियोजन की सामर्थ्य पा रहे हैं।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः, स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥ -36.24

॥ त्रिपदा पूजन ॥

शिक्षण और प्रेरणा-

गायत्री के तीन चरण कहे गये हैं। यज्ञोपवीत की तीन लड़ें उनकी प्रतीक हैं। उन्हें सूत्र रूप में गायत्री, सरस्वती और सावित्री शक्तियों के रूप में जाना जाता है। इनकी प्रतिनिधि धाराएँ क्रमशः श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा हैं। ये मनुष्य के कारण, सूक्ष्म और स्थूल कलेवरों को नियन्त्रित, विकसित करने वाली हैं। इन्हीं के सहारे देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋणों से मुक्त हुआ जा सकता है। इन्हें ही भक्ति, ज्ञान और कर्म की धाराओं की गङ्गोत्री माना जाता है। इनका मर्म समझने तथा अनुसरण करने के भाव से त्रिपदा पूजन के अन्तर्गत इन्हीं तीन शक्तियों का पूजन किया जाता है।

क्रिया और भावना-

पूजन वेदी पर स्थापित चावल की तीन ढेरियों को गायत्री, सरस्वती एवं सावित्री का प्रतीक मानकर उनके मन्त्र बोलकर अक्षत, पुष्प उन पर चढ़ाएँ। भावना की जाए कि ऊँची सतह का पानी निचली सतह पर आता है। इन शक्तियों के आगे झुककर, उनका पूजन करके, उनके प्रवाह को हम प्राप्त कर रहे हैं। गायत्री पूजन के साथ श्रद्धा, सरस्वती के साथ प्रज्ञा और सावित्री के साथ निष्ठा सम्पदाओं के सम्वर्धन की भावना की जाए।

॥ गायत्री पूजन ॥

ॐ ता ँ सवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाहं
वृणे सुमतिं विश्वजन्याम्।
यामस्य कण्वो अदुहत्प्रपीना ँ
सहस्रधारां पयसा महीं गाम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गायत्र्यै नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

-17.74

॥ सरस्वती पूजन ॥

ॐ पावका: न सरस्वती
वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

-20.84

॥ सावित्री पूजन ॥

ॐ सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा
त्वष्ट्रा रूपैः पूष्णा पशुभिरिन्द्रेणास्मे
बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाग्निना
तेजसा सोमेन राज्ञा विष्णुना दशम्या
देवतया प्रसूतः प्र सर्पामि। -10.30
ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥ दीक्षा प्रकरण ॥

यज्ञोपवीत संस्कार के साथ दीक्षा अनिवार्य रूप से जुड़ी है। बहुत बार गुरु के प्रतिनिधि के रूप में आस्थावान् व्यक्तियों को दीक्षा देनी पड़ती है। दोनों ही प्रकरणों में दीक्षा के उद्देश्य, महत्त्व और मर्यादाओं को समझ लेना चाहिए।

महत्त्व और मर्यादाएँ-

दीक्षा पाने के लिए व्यक्ति बहुधा सहज श्रद्धावश पहुँच जाते हैं। दीक्षा के पूर्व उन्हें इस कृत्य का महत्त्व और उसकी मर्यादाएँ समझा देनी चाहिए। उसके मुख्य सूत्र ये हैं-

1 गुरु दीक्षा सामान्य कर्मकाण्ड नहीं, एक सूक्ष्म आध्यात्मिक प्रयोग है। उसके अन्तर्गत शिष्य अपनी श्रद्धा और सङ्कल्प के सहारे गुरु के समर्थ व्यक्तित्व के साथ जुड़ता है। कर्मकाण्ड

उस सूक्ष्म प्रक्रिया का एक अङ्ग है।

2 दीक्षा में समर्थ गुरु के विकसित प्राण का एक अंश शिष्य के अन्दर स्थापित किया जाता है। यह कार्य समर्थ गुरु ही कर सकता है। उन्हीं का प्राणानुदान दीक्षा लेने वालों को मिलता है, कर्मकाण्ड कराने वाला स्वयंसेवक मात्र होता है।

3 व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से आगे बढ़ता है, यह उसी प्रकार ठीक है, जैसे पौधा अपनी ही जड़ों से जीवित रहता है और बढ़ता है, किन्तु यह भी सत्य है कि वृक्ष की कलम सामान्य पौधे में बाँध देने पर उसके उत्पादन में भारी परिवर्तन हो जाता है। दीक्षा में साधक रूपी सामान्य पौधे पर गुरु रूपी श्रेष्ठ वृक्ष की टहनी प्राणानुदान के रूप में स्थापित की जाती है। साधक इसका

अनुपम लाभ उठा सकता है।

4 कलम बाँधना एक कार्य है। यह कार्य गुरु द्वारा किया जाता है। उसे रक्षित और विकसित करना दूसरा कार्य है, जिसके लिए शिष्य को पुरुषार्थ करना पड़ता है। दीक्षा लेने वालों को अपने इस दायित्व के प्रति जागरूक रहना चाहिए। इसके लिए गुरु के विचारों के सतत सान्निध्य में रहना आवश्यक है, मिशन की पत्रिकाओं से उनका मार्गदर्शन पाते रहना तथा तदनुरूप जीवन क्रम बनाने का प्रयास करना चाहिए।

5 दीक्षा के बाद गुरु- शिष्य परस्पर पूरक बन जाते हैं। गुरु की शक्ति शिष्य के उत्कर्ष के लिए लगती रहती है, पर यह तभी सम्भव है, जब शिष्य की शक्ति गुरु के कार्यों- लोकमङ्गल के लिए नियमित रूप

से लगती रहे। इसे देवत्व की साझेदारी कहा जा सकता है। शिष्य को अपने समय, पुरुषार्थ, प्रभाव, ज्ञान एवं धन का एक अंश नियमित रूप से गुरु के कार्य के लिए लगाना होता है। यह क्रम चलता रहे, तो लगाई हुई कलम का फलित होना अवश्यम्भावी है।

क्रम व्यवस्था-

यदि यज्ञोपवीत के साथ दीक्षा क्रम चलाना है, तो त्रिपदा पूजन के बाद गुरु पूजन-नमस्कार कराके दीक्षा दे दी जाए। यदि अलग से दीक्षा क्रम चलता है, तो नीचे लिखे क्रम से उपचार कराते हुए आगे बढ़ें।

1 पहले षट्कर्म - पवित्रीकरण, आचमन, शिखावन्दन, प्राणायाम, न्यास एवं भूमिपूजन कराएँ। इसके

साथ संक्षिप्त भावभरी सारगर्भित व्याख्याएँ की जाएँ।

2 षट्कर्म के बाद देवपूजन एवं सर्वदेव नमस्कार कराएँ।

3 नमस्कार के बाद हाथ में पुष्प, अक्षत, जल लेकर स्वस्तिवाचन कराया जाए। स्वस्तिवाचन के अक्षत, पुष्प एकत्रित करने के साथ ही नियुक्त स्वयंसेवकों द्वारा ही कलावा बाँधने एवं तिलक करने का क्रम चलाया जाए। उसके मन्त्र एवं व्याख्याएँ सञ्चालक बोलते रहें।

यदि दीक्षा क्रम यज्ञ के साथ चल रहा है, तो उपर्युक्त में से जो उपचार पहले कराये जा चुके हैं, उन्हें पुनः कराना आवश्यक नहीं। उस स्थिति में गुरु पूजन करके ही दीक्षा दी जाए।

॥ गुरु पूजन ॥

जिस प्रकार भगवान् मूर्ति नहीं एक चेतना है, उसी प्रकार गुरु को व्यक्ति नहीं चेतना रूप मानना चाहिए। जो ईश्वर को मूर्तियों, चित्रों तक सीमित मानता है, वह ईश्वरीय सत्ता का समुचित लाभ नहीं उठा सकता। इसी प्रकार जो गुरु को शरीर तक सीमित मानता है, वह गुरु सत्ता का लाभ नहीं उठा सकता। जिस प्रकार ईश्वर सर्वसमर्थ है, पर भक्त की मान्यता और भावना के अनुरूप ही प्रत्यक्ष फल देता है, वैसे ही गुरु भी शिष्य की आस्था के अनुरूप फलित होता है। यह ध्यान में रखकर गुरु वन्दना के साथ अन्तःकरण में गुरु चेतना के प्रकटीकरण होने की प्रार्थना की जानी चाहिए।

क्रिया और भावना-

गुरु के प्रतीक चित्र पर मन्त्र के साथ अक्षत-पुष्प चढ़ाकर उनका पूजन करें। फिर हाथ जोड़कर भावभरी वन्दना करें। भावना करें कि उनकी कृपा से उन्हें चेतना के रूप में समझने, अपनाने की क्षमता का विकास हो रहा है। हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहराते हुए गुरु चेतना का आवाहन करें-

ॐ परमात्मचेतनां गुरुरूपेण वृणे।

(परमात्म चेतना को हम गुरु रूप में धारण करते हैं।) हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर गुरुसता को नमन करें-

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्
द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्रजात तदस्मासु
द्रविणं धेहि चित्रम्। उपयामगृहीतोसि
बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा॥
ॐ श्री गुरवे नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि।

ततो नमस्कारं करोमि।

-26.3, तै.सं..8.22.2, ऋ.2.23.15

ॐ वन्दे बोधमयं
नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि,
चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य,
ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन,
तस्मै श्री गुरवे नमः॥
नमोऽस्तु गुरवे तस्मै,
गायत्रीरूपिणे सदा।
यस्य वागमृतं हन्ति,
विषं संसारसंज्ञकम्॥
मातृवत् लालयित्री च,
पितृवत् मार्गदर्शिका।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै,
श्रद्धाप्रज्ञायुता च या॥

॥ मन्त्र दीक्षा ॥

शिक्षण और प्रेरणा-

गायत्री मन्त्र सहज रूप से एक छन्द है, प्रार्थना है। गुरु जब उसके साथ अपने तप, पुण्य और प्राण को जोड़ देता है, तो वह मन्त्र बन जाता है। यह सब देने की सामर्थ्य जिसमें न हो, वह दीक्षा देने का प्रयास करे, तो निरर्थक रूप से पातक का भागी बनता है। स्वयंसेवक भाव से गुरु की ही चेतना का प्रवाह दीक्षित व्यक्ति से जोड़ने में अपनी सद्भावना का प्रयोग करना उचित है।

क्रिया और भावना-

अब साधकों को सावधान होकर बैठने को कहें। कमर सीधी, हाथ की अँगुलियाँ परस्पर फँसाकर हाथ के अँगूठों को सीधा रखते हुए परस्पर मिलाएँ। अँगूठे के नाखूनों पर साधक

अपनी दृष्टि टिकाएँ। यह स्थिति मन्त्र दीक्षा चलने तक बनी रहे। कहीं इधर-उधर न देखें। मन्त्र दीक्षा के बाद जब सिञ्चन हो जाए, तब दृष्टि हटाएँ और हाथ खोलें। उपर्युक्त मुद्रा बनाने के बाद दीक्षा कर्मकाण्ड कराने वाला स्वयंसेवक गुरु का ध्यान करते हुए गायत्री मन्त्र का एक-एक शब्द अलग-अलग करके बोले। दीक्षा लेने वाले उसे दुहराते चलें। इस क्रम से पाँच बार गायत्री मन्त्र दुहराया जाए।

भावना की जाए 'गुरु की दिव्य सामर्थ्य, उनके तप, पुण्य, और प्राण का अंश मन्त्राक्षरों के साथ साधक के अन्दर प्रविष्ट-स्थापित हो रहा है। उपयुक्त मनोभूमि में वह फलित होकर ही रहेगा।'

ॐ भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥ -36.3

॥ सिञ्चन- अभिषेक ॥

शिक्षण एवं प्रेरणा-

वृक्ष, बीज या कलम आरोपित करने के बाद उसमें पानी दिया जाता है। पानी उसके अनुरूप होना चाहिए अन्यथा तेल, साबुन, तेजाबयुक्त पानी पौधे को नष्ट करेगा। गुरु के अनुदानों का दिव्य रस-श्रेष्ठ कर्मों तथा उनके द्वारा निर्दिष्ट अनुशासनों के पालन में उल्लास की अनुभूति से सींचा जाता है। पेड़ लगे, फले-फूले यह भाव सींचने का है। अभिषेक राजाओं, योद्धाओं, सत्पुरुषों का किया जाता है। दीक्षा लेकर नया श्रेष्ठ जीवन प्रारम्भ किये जाने का अभिनन्दन करते हुए अभिषेक किया जाता है।

क्रिया और भावना-

कुछ स्वयंसेवक कलश लें। आम के पत्ते, कुश या पुष्प द्वारा मन्त्र के साथ जल के

छींटे दीक्षितों पर लगाएँ। भावना की जाए कि सिञ्चन के साथ दैवी शक्तियों, स्नेहियों के सद्भावों की वर्षा हो रही है, साधकों की साधना फलीभूत होने की स्थिति बन रही है।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः
तानऽ ऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसे॥
ॐ यो वः शिवतमो
रसः तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः॥
ॐ तस्माऽ अरं गमाम
वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जनयथा च नः॥

-36.14-16, 11.50-52

यदि केवल दीक्षा क्रम अलग से चल रहा है, तो सिञ्चन के बाद गुरु दक्षिणा सङ्कल्प कराएँ। यज्ञोपवीत के साथ दीक्षा है, तो यज्ञोपवीत के शेष कर्म पूरे

कराकर सङ्कल्प कराएँ।

॥ भिक्षाचरण ॥

क्रिया और भावना-

शिष्य दुपट्टे की झोली बनाकर भिक्षा माँगे। पहले माँ के पास जाए, कहे 'भवति भिक्षां देहि' फिर पिता के पास जाकर कहे '**भवान् भिक्षां देहि**'। फिर इसी प्रकार कहता हुआ अपने कुटुम्बियों महिलाओं-पुरुषों से याचना करें, जो मिले उसे गुरु के सम्मुख अर्पित कर दे। भिक्षा देने वालों के हाथों में अक्षत दे दिये जाएँ। अपनी इच्छा से वे कुछ द्रव्य डालना चाहें, तो डाल सकते हैं। '**भवति भिक्षां देहि**' (महिलाओं से) और 'भवान् भिक्षां देहि' (पुरुषों से) कहते हुए भिक्षा पूरी करके उपलब्ध सामान गुरु के सम्मुख चढ़ा दिया जाता है।

॥ वेद पूजन- अध्ययन ॥

वेदों का सार गायत्री है। गायत्री को ही वेदमाता, वेदबीज या वेदमूल कहते हैं। वेदमाता गायत्री के निर्देशों के अनुरूप, जीवन निर्माण की अपनी आस्था के प्रतीक रूप में वेद भगवान का पूजन किया जाता है।

क्रिया और भावना-

हाथ में पुष्प-अक्षत लेकर वेदों का प्रतीक पूजन किया जाए। फिर नीचे दिये प्रत्येक वेद के एक-एक मन्त्र बुलवाये जाएँ। आचार्य कहें, दीक्षित व्यक्ति दुहराएँ।

ॐ वेदोसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोभवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः।

देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित। मनसस्पतऽ इमं देव यज्ञ ँस्वाहा वाते धाः॥ ॐ वेदपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥ वेदाध्ययन ॥

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य
देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥
-ऋ.1.1.1

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः
सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ
आप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्राय भागं
प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्मा मा व
स्तेनऽ ईशत माघशꣳ सो
ध्रुवाअस्मिन् गोपतौ स्यात
बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि। -1.1

ॐ अग्न आ याहि वीतये
गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि॥ -साम.1.1.1

ॐ ये त्रिषप्ताः परियन्ति
विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो
अद्य दधातु मे॥ -अथर्व. 1.1.1

॥ विशेष-आहुति ॥

इसके बाद अग्नि स्थापन से लेकर गायत्री मन्त्र की आहुतियों तक के उपचार पूरे करें। स्विष्टकृत् आहुति के पूर्व विशेष आहुतियाँ प्रदान करें।

शिक्षण एवं प्रेरणा-

यज्ञोपवीत व्रतबन्ध है। व्रतशील तेजस्वी जीवन जीने का आरम्भ यहाँ से किया जाता है। इस व्रतशीलता के लिए पाँच व्रतपति देवताओं के नाम की आहुतियाँ डालते हैं। ये देवशक्तियाँ हैं- अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र और इन्द्र।

अग्नि से ऊष्मा, प्रकाश, ऊँचे उठना, सबको अपने जैसा बनाना तथा प्राप्त को वितरित करके अपने लिए कुछ शेष न रखना आदि प्रेरणाएँ प्राप्त होती हैं।

वायु से सतत गतिशीलता, जीवों की प्राण रक्षा के लिए स्वयं उन तक

पहुँचना, सहज उपलब्ध रहना, बादल, सुगन्धि जैसी सत्प्रवृत्तियों के प्रसार-वितरण का माध्यम बनने की प्रेरणाएँ उभरती हैं।

सूर्य से प्रकाश, नियमितता, सतत चलते रहना, बिना भेदभाव सब तक अपनी किरणें पहुँचाने जैसा श्रेष्ठ शिक्षण प्राप्त होता है।

चन्द्र स्वप्रकाशित नहीं, फिर भी प्रकाश देता है। ऐसी सत्प्रवृत्तियों के प्रतीक चन्द्रदेव से प्रकाशमयी शीतल प्रेरणाएँ प्राप्त करते हैं।

इन्द्र देवत्व के सङ्गठक हैं। बिखराव से ही देवत्व का पराभव होता है, देववृत्तियों के एकीकरण तथा हजार नेत्रों से सतत जागरूकता की प्रेरणा इन्द्रदेव से प्राप्त होती है।

क्रिया और भावना-

मन्त्र के साथ आहुतियाँ दें। प्रत्येक आहुति के साथ भावना करें कि इस देवशक्ति के पोषण के लिए यह हमारा योगदान है। वह हमें संरक्षण और मार्गदर्शन देंगे। यह वृत्तियाँ उनके आशीर्वाद से हमें मिल रही हैं, जिससे हमारा कल्याण होता है।

ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं
अनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा॥
इदं अग्नये इदं न मम।

ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं
अनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा॥
इदं वायवे इदं न मम।

ॐ सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।

तेनर्ध्यासमिदमहं
अनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा॥
इदं सूर्याय इदं न मम।
ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं
अनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा॥
इदं चन्द्राय इदं न मम।
ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं
अनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा॥

-मं.ब्रा. 1.6.9-13

इदं इन्द्राय व्रतपतये इदं न मम।

॥वैश्वानर - नमस्कार॥

हाथ जोड़कर अग्निदेव को नमस्कार करें। भावना करें कि यज्ञाग्नि जिसके सान्निध्य से देवत्व मिलता है, उसके प्रति

हम श्रद्धा प्रकट कर रहे हैं।

ॐ वैश्वानरो नऽ ऊतयऽ
आ प्र यातु परावतः।
अग्निर्नः सुष्टुतीरुप॥
ॐ वैश्वानराय नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

- 18.72

इसके बाद पूर्णाहुति आदि कृत्य कराये जाएँ। विसर्जन के पूर्व गुरु दक्षिणा सङ्कल्प करायें।

॥ गुरु दक्षिणा सङ्कल्प ॥

शिक्षण एवं प्रेरणा-

दीक्षा के साथ व्रतशीलता की शर्त जुड़ी है। व्रत कहते हैं, सुनिश्चित लक्ष्य के लिए सुनिश्चित साधना-क्रम बनाने को। जो व्रतशील नहीं, वह जीवन के ढर्रे को बदल नहीं सकता। उसे बदले बिना दीक्षा फलित नहीं होती। यह ढर्रा बदलने के

लिए गुरु दक्षिणा दी जाती है। अपने समय, प्रभाव, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश गुरु के निर्देशानुसार खर्च करने का सङ्कल्प ही गुरु दक्षिणा में किया जाता है। इसके लिए न्यूनतम एक रुपया तथा एक घण्टे का समय प्रतिदिन निकालना चाहिए। इससे अधिक करने की जिनकी स्थिति हो, वे महीने में एक दिन का वेतन दे सकते हैं। दीक्षा लेने वालों के सङ्कल्प पत्र पहले से भरवा लेने चाहिए। सङ्कल्प के साथ सङ्कल्प पत्र में उपर्युक्त बातों का स्मरण किया जाता है।

गुरु, दीक्षा के साथ अपनी शक्ति देता है, शिष्य दक्षिणा देकर अपनी पात्रता, प्रामाणिकता सिद्ध करता है। दीक्षा आहार प्रदान करने जैसा है। दक्षिणा उसे पचाने की क्रिया है। दीक्षा कलम लगाने जैसी प्रक्रिया है, दक्षिणा जड़ों का रस उस कलम तक पहुँचाकर उसे

विकसित फलित करने का उपक्रम है।

क्रिया और भावना-

साधकों के हाथ में अक्षत, पुष्प देकर दक्षिणा सङ्कल्प बोला जाए। भावना की जाए कि इस दिव्य आदान-प्रदान द्वारा गुरु-शिष्यक ाट यक्तित्वा मलकरए क नया व्यक्तित्व बन रहा है।

सङ्कल्प-

यज्ञोपवीत एवं दीक्षा के उपरान्त.....गोत्र और नाम तक यथावत् क्रम से बोला जाए। फिर आगे जोड़ें....

श्रुति स्मृति पुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं मम कायिक-वाचिक मानसिक ज्ञाताज्ञात-सकलदोष निवारणार्थं आत्मकल्याण-लोककल्याणार्थं-गायत्री महाविद्यायां श्रद्धापूर्वकं दीक्षितो भवामि।

तन्निमित्तकं युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा

आचार्येण वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मणा च निर्धारितानि अनुशासनानि स्वीकृत्य तयोः प्राणतपः पुण्यांशं स्वान्तःकरणे दधामि तत्साधयितुं च समय-प्रतिभा-साधनानां एकांशं.........नवनिर्माण कार्येषु प्रयोक्तुं गुरुदक्षिणायाः सङ्कल्पम् अहं करिष्ये।

(सङ्कल्प बोले जाने के बाद इतने व्रतों की घोषणा सहित संकल्प-पत्र, दक्षिणा, फल आदि गुरुदेव के प्रतीक के आगे चढ़वाये जाएँ। आचार्य की भूमिका निभा रहे स्वयंसेवक या कोई वरिष्ठ साधक कार्यकर्त्ता उन्हें तिलक करे। दीक्षित व्यक्ति सबको नमस्कार प्रणाम करे, सभी लोग उन पर शुभकामना, आशीर्वाद के अक्षत-पुष्प छोड़ें। जय घोष आदि के साथ संस्कार क्रम समाप्त किया जाए।)

विवाह संस्कार

संस्कार प्रयोजन-

विवाह दो आत्माओं का पवित्र बन्धन है। दो प्राणी अपने अलग-अलग अस्तित्वों को समाप्त कर एक सम्मिलित इकाई का निर्माण करते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों में परमात्मा ने कुछ विशेषताएँ और कुछ अपूर्णताएँ दे रखी हैं। विवाह सम्मिलन से एक-दूसरे की अपूर्णताओं को अपनी विशेषताओं से पूर्ण करते हैं, इससे समग्र व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इसलिए विवाह को सामान्यतया मानव जीवन की एक आवश्यकता माना गया है। एक-दूसरे को अपनी योग्यताओं और भावनाओं का लाभ पहुँचाते हुए गाड़ी में लगे हुए दो पहियों कीत रहप् गति-पथप रअ ग्रसरह ोते जाना विवाह का उद्देश्य है। वासना का

दाम्पत्य-जीवन में अत्यन्त तुच्छ और गौण स्थान है, प्रधानतः दो आत्माओं के मिलने से उत्पन्न होने वाली उस महती शक्ति का निर्माण करना है, जो दोनों के लौकिक एवं आध्यात्मिक जीवन के विकास में सहायक सिद्ध हो सके।

विशेष व्यवस्था-

विवाह संस्कार में देव पूजन, यज्ञ आदि से सम्बन्धित सभी व्यवस्थाएँ पहले से बनाकर रखनी चाहिए। सामूहिक विवाह हो, तो प्रत्येक जोड़े के हिसाब से प्रत्येक वेदी पर आवश्यक सामग्री रहनी चाहिए, कर्मकाण्ड ठीक से होते चलें, इसके लिए प्रत्येक वेदी पर एक-एक जानकार व्यक्ति भी नियुक्त करना चाहिए। एक ही विवाह है, तो आचार्य स्वयं ही देख-रेख रख सकते हैं। सामान्य व्यवस्था के साथ जिन वस्तुओं

की जरूरत विशेष कर्मकाण्ड में पड़ती है, उन पर प्रारम्भ में दृष्टि डाल लेनी चाहिए। उसके सूत्र इस प्रकार हैं।

- वर सत्कार के लिए सामग्री के साथ एक थाली रहे, ताकि हाथ, पैर धोने की क्रिया में जल फैले नहीं। मधुपर्क पान के बाद हाथ धुलाकर उसे हटा दिया जाए।
- यज्ञोपवीत के लिए पीला रँगा हुआ यज्ञोपवीत एक जोड़ा रखा जाए।
- विवाह घोषणा के लिए वर-वधू पक्ष की पूरी जानकारी पहले से ही नोट कर ली जाए।
- वस्त्रोपहार तथा पुष्पोपहार के वस्त्र एवं मालाएँ तैयार रहें।
- कन्यादान में हाथ पीले करने के लिए हल्दी, गुप्तदान के लिए गुँथा हुआ आटा (लगभग एक पाव) रखें।

- ग्रन्थिबन्धन के लिए हल्दी, पुष्प, अक्षत, दूर्वा और द्रव्य हों।
- शिलारोहण के लिए पत्थर की शिला या समतल पत्थर का एक टुकड़ा रखा जाए।
- हवन सामग्री के अतिरिक्त लाजा (धान की खीलें) रखनी चाहिए।
- वर-वधू के पाद प्रक्षालन के लिए परात या थाली रखी जाए।
- पहले से वातावरण ऐसा बनाना चाहिए कि संस्कार के समय वर और कन्या पक्ष के अधिक से अधिक परिजन, स्नेही उपस्थित रहें।
- सबके भाव संयोग से कर्मकाण्ड के उद्देश्य में रचनात्मक सहयोग मिलता है। इसके लिए व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों ही ढंग से आग्रह किए जा सकते हैं।
- विवाह के पूर्व यज्ञोपवीत संस्कार हो

चुकता है। अविवाहितों को एक तथा विवाहितों को जोड़ा यज्ञोपवीत पहनाने का नियम है।

- यदि यज्ञोपवीत न हुआ हो, तो नया यज्ञोपवीत और हो गया हो, तो एक के स्थान पर जोड़ा पहनाने का संस्कार विधिवत् किया जाना चाहिए। अच्छा हो कि जिस शुभ दिन को विवाह-संस्कार होना है, उस दिन प्रातःकाल यज्ञोपवीत धारण का क्रम व्यवस्थित ढंग से करा दिया जाए। विवाह-संस्कार के लिए सजे हुए वर के वस्त्र आदि उतरवाकर यज्ञोपवीत पहनाना अटपटा-सा लगता है। इसलिए उसको पहले ही पूरा कर लिया जाए। यदि वह सम्भव न हो, तो स्वागत के बाद यज्ञोपवीत धारण करा दिया जाता है। उसे वस्त्रों पर

ही पहना देना चाहिए, जो संस्कार के बाद अन्दर कर लिया जाता है।

- जहाँ पारिवारिक स्तर के परम्परागत विवाह आयोजनों में मुख्य संस्कार से पूर्व द्वारचार (द्वार पूजा) की रस्म होती है, वहाँ यदि हो-हल्ला के वातावरण को संस्कार के उपयुक्त बनाना सम्भव लगे, तो स्वागत तथा वस्त्र एवं पुष्पोपहार वाले प्रकरण उस समय पूरे कराये जा सकते हैं। विशेष आसन पर बिठाकर वर का सत्कार किया जाए। फिर कन्या को बुलाकर परस्पर वस्त्र और पुष्पोपहार सम्पन्न कराये जाएँ। परम्परागत ढंग से दिये जाने वाले अभिनन्दन-पत्र आदि भी उसी अवसर पर दिये जा सकते हैं। इसके कर्मकाण्ड का सङ्केत आगे किया गया है।
- पारिवारिक स्तर पर सम्पन्न किये

जाने वाले विवाह संस्कारों के समय कई बार वर-कन्या पक्ष वाले किन्हीं लौकिक रीतियों के लिए आग्रह करते हैं। यदि ऐसा आग्रह है, तो पहले से नोट कर लेना-समझ लेना चाहिए। पारिवारिक स्तर पर विवाह-प्रकरणों में वरेच्छा, तिलक (शादी पक्की करना), हरिद्रा लेपन (हल्दी चढ़ाना) तथा द्वारपूजन आदि के आग्रह उभरते हैं। उन्हें संक्षेप में दिया जा रहा है, ताकि समयानुसार उनका निर्वाह किया जा सके।

॥ पूर्व विधान ॥

॥ वर-वरण (तिलक) ॥

विवाह से पूर्व 'तिलक' का संक्षिप्त विधान इस प्रकार है- वर पूर्वाभिमुख तथा तिलक करने वाले (पिता, भाई आदि) पश्चिमाभिमुख बैठकर निम्नकृत्य

सम्पन्न करें- सामान्य प्रकरण से मङ्गलाचरण, षट्कर्म, तिलक, कलावा, कलशपूजन, गुरुवन्दना, गायत्री-गौरी-गणेश पूजन, सर्वदेव नमस्कार, स्वस्तिवाचन आदि सम्पन्न कर कन्यादाता वर का यथोचित स्वागत-सत्कार (पैर धुलाना, आचमन कराना तथा हल्दी से तिलक करके अक्षत लगाना) करें। तदुपरान्त 'वर' को प्रदान की जाने वाली समस्त सामग्री (थाल-थान, फल - फूल, द्रव्य - वस्त्रादि) कन्यादाता हाथ में लेकर सङ्कल्प मन्त्र बोलते हुए वर को प्रदान कर दें-

॥ सङ्कल्प ॥

...............(कन्यादाता) नामाऽहं ....(कन्या-नाम) नाम्न्या कन्यायाः (भगिन्याः) करिष्यमाण उद्वाहकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः

..............(वर का गोत्र) गोत्रोत्पन्नं ....(वर का नाम) नामानं वरं कन्यादानार्थं वरपूजनपूर्वकं त्वामहं वृणे, तन्निमित्तकं यथाशक्ति भाण्डानि, वस्त्राणि, फलमिष्टान्नानि द्रव्याणि च..............(वर का नाम) वराय समर्पये।

तत्पश्चात् क्षमा प्रार्थना, नमस्कार, विसर्जन तथा शान्ति पाठ करते हुए कार्यक्रम समाप्त करें।

॥हरिद्रालेपन॥

विवाह से पूर्व वर-कन्या को प्रायः हल्दी चढ़ाने का प्रचलन है, उसका संक्षिप्त विधान इस प्रकार है-सर्वप्रथम सामान्य प्रकरण से षट्कर्म, तिलक, कलावा, कलशपूजन, गुरुवन्दना, गौरी-गणेश पूजन, सर्वदेवनमस्कार, स्वस्तिवाचन करें। तत्पश्चात् निम्न मन्त्र बोलते हुए

वर/कन्या की हथेली- अङ्ग-अवयवों में (लोकरीति के अनुसार) हरिद्रालेपन करें -

ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती
परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्र
तनु सहस्रेण शतेन च॥ -13.20

इसके बाद वर के दाहिने हाथ में तथा कन्या के बायें हाथ में रक्षा सूत्र कङ्कण (पीले वस्त्र में कौड़ी, लोहे की अँगूठी, पीली सरसों, पीला अक्षत आदि बाँधकर बनाया गया।) निम्नलिखित मन्त्र से पहनाएँ-

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यꣳ
शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्मऽ आ बध्नामि शतशारदाय
आयुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥ -34.52

तत्पश्चात् क्षमा प्रार्थना, नमस्कार, विसर्जन, शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम पूर्ण करें।

॥ द्वार पूजा ॥

विवाह हेतु बरात जब द्वार पर आती है, तो सर्वप्रथम 'वर' का स्वागत-सत्कार किया जाता है, जिसका क्रम इस प्रकार है- 'वर' के द्वार पर आते ही आरती की प्रथा हो, तो कन्या की माता आरती कर लें। तत्पश्चात् 'वर' और कन्यादाता परस्पर अभिमुख बैठकर सामान्य प्रकरण से षट्कर्म, कलावा, तिलक, कलशपूजन, गुरुवन्दना, गौरी-गणेश पूजन, सर्वदेव नमस्कार, स्वस्तिवाचन करें। इसके बाद कन्यादाता वर सत्कार के सभी कृत्य-आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क आदि (विवाह संस्कार से) सम्पन्न कराएँ। तत्पश्चात् निम्नस्थ मन्त्रों से तिलक अक्षत लगाएँ।

तिलक-

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां,

नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां,
तामिहोपह्वये श्रियम्॥ -श्री.सू..9

अक्षत-

ॐ अक्षन्नमीमदन्त
ह्यव प्रियाऽ अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया
मती योजान्विन्द्र ते हरी॥ -3.51

माल्यार्पण एवं कुछ द्रव्य 'वर' को प्रदान करना हो, तो निम्नस्थ मन्त्रों से सम्पन्न करा दें-

माल्यार्पण-

मङ्गलं भगवान् विष्णुः,
मङ्गलं गरुडध्वजः।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षो,
मङ्गलायतनो हरिः॥

द्रव्यदान -

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे

भूतस्य जातः पतिरेकआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ -23.1

तत्पश्चात् क्षमाप्रार्थना, नमस्कार, देवविसर्जन एवं शान्तिपाठ करें।

विशेष कर्मकाण्ड॥

विवाह वेदी पर वर और कन्या दोनों को बुलाया जाए, प्रवेश के साथ मङ्गलाचरण '**ॐ भद्रं कर्णेभिः...**' *(पेज-24 से)* मन्त्र बोलते हुए उन पर पुष्पाक्षत डाले जाएँ। कन्या दायीं ओर तथा वर बायीं ओर बैठे। कन्यादान करने वाले प्रतिनिधि कन्या के पिता, भाई जो भी हों, उन्हें पत्नी सहित कन्या की ओर बिठाया जाए। पत्नी दाहिने और पति बायीं ओर बैठें। सभी के सामने आचमनी, पञ्चपात्र आदि उपकरण हों। पवित्रीकरण, आचमन, शिखावन्दन, प्राणायाम,

न्यास, पृथ्वी-पूजन आदि षट्कर्म सम्पन्न करा लिये जाएँ।

वर-सत्कार-

(अलग से द्वार पूजा में वर सत्कार कृत्य हो चुका हो, तो दुबारा करने की आवश्यकता नहीं है।) अतिथि रूप में आये हुए वर का सत्कार किया जाए। (1) आसन (2) पाद्य (3) अर्घ्य (4) आचमन (5) नैवेद्य आदि निर्धारित मन्त्रों से समर्पित किए जाएँ।

क्रिया और भावना-

स्वागतकर्त्ता हाथ में अक्षत लेकर भावना करें कि वर की श्रेष्ठतम प्रवृत्तियों का अर्चन कर रहे हैं। देव-शक्तियाँ उन्हें बढ़ाने-बनाये रखने में सहयोग करें।

ॐ साधु भवान् आस्ताम्,
अर्चयिष्यामो भवन्तम्। -पार.गृ. .3.4

वर दाहिने हाथ में अक्षत स्वीकार करते

हुए भावना करें कि स्वागतकर्त्ता की श्रद्धा पाते रहने के योग्य व्यक्तित्व बनाये रखने का उत्तरदायित्व स्वीकार कर रहे हैं। बोलें- '**ॐ अर्चय।**'

आसन-

स्वागतकर्त्ता आसन या उसका प्रतीक (कुश या पुष्प आदि) हाथ में लेकर निम्न मन्त्र बोलें। भावना करें कि वर को श्रेष्ठता का आधार-स्तर प्राप्त हो। हमारे स्नेह में उसका स्थान बने।

ॐ विष्टरो, विष्टरो, विष्टरः प्रतिगृह्यताम्।

-पार.गृ.सू. 1.3.6

वर कन्या के पिता के हाथ से विष्टर (कुश या पुष्प आदि) लेकर कहें-

ॐ प्रतिगृह्णामि।- पार.गृ.सू. 1.3.7

उसे बिछाकर बैठ जाएँ।

ॐ वर्ष्मोऽस्मि

समानानामुद्यतामिव सूर्यः।

इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति ॥ - पार.गृ.सू.1.3.8

पाद्य-

स्वागतकर्त्ता पैर धोने के लिए छोटे पात्र में जल लें। भावना करें कि ऋषियों के आदर्शों के अनुरूप सद्गृहस्थ बनने की दिशा में बढ़ने वाले पैर पूजनीय हैं।

कन्यादाता कहें-

ॐ पाद्यं, पाद्यं, पाद्यं प्रतिगृह्यताम्।

- पार.गृ.सू.1.3.6

वर कहें-

ॐ प्रतिगृह्णामि।- पार.गृ.सू.1.3.7

भावना करें कि आदर्शों की दिशा में चरण बढ़ाने की उमङ्ग इष्टदेव बनाये रखें। मंत्रोच्चार के साथ कन्यादाता वर के पैर धोयें।

ॐ विराजो दोहोऽसि,
विराजो दोहमशीय मयि,

पाद्यायै विराजो दोहः।

- पार.गृ.सू.1.3.12

अर्घ्य-

स्वागतकर्त्ता चन्दनयुक्त सुगन्धित जल पात्र में लेकर भावना करें कि सत्पुरुषार्थ में लगने का संस्कार वर के हाथों में जाग्रत् करने हेतु अर्घ्य दे रहे हैं। कन्यादाता कहें-

ॐ अर्घो, अर्घो, अर्घः प्रतिगृह्यताम्।

- पार.गृ.सू.1.3.6

जल पात्र स्वीकार करते हुए वर कहें-

ॐ प्रतिगृह्णामि।- पार.गृ.सू.1.3.7

भावना करें कि सुगन्धित जल सत्पुरुषार्थ के संस्कार दे रहा है। जल से हाथ धोएँ।

ॐ आपःस्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्रवानि।

ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत।

अरिष्टाअस्माकं वीरा मा परासेचि मत्पयः॥

-पार.गृ.सू.1.3.13-14

आचमन-

स्वागतकर्त्ता आचमन के लिए जल पात्र प्रस्तुत करें। भावना करें कि वर-श्रेष्ठ अतिथि का मुख उज्वल रहे, उनकी वाणी उनका व्यक्तित्व तदनुरूप बने।

कन्यादाता कहें-

ॐ आचमनीयम्, आचमनीयम्, आचमनीयम् प्रतिगृह्यताम्।

-पार.गृ.सू.1.3.6

वर कहें **-ॐ प्रतिगृह्णामि।**

- पार.गृ.सू.1.3.7

भावना करें कि मन, बुद्धि और अन्तःकरण तक यह भाव बिठाने का प्रयास कर रहे हैं। मंत्रोच्चार के साथ तीन बार आचमन करें।

ॐ आमागन् यशसा

स ँ सृज वर्चसा।
तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं
पशूनामरिष्टिं तनूनाम्॥

- पार.गृ.सू. 1.3.15

नैवेद्य-

एक पात्र में दूध, दही, शर्करा (मधु) और तुलसीदल डाल कर रखें। स्वागतकर्त्ता वह पात्र हाथ में लें। भावना करें कि वर की श्रेष्ठता बनाये रखने योग्य सात्विक, सुसंस्कारी और स्वास्थ्यवर्धक आहार उन्हें सतत प्राप्त होता रहे। कन्यादाता कहें-

ॐ मधुपर्को, मधुपर्को,
मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम्।

-पार.गृ.सू..1.3.6

वर पात्र स्वीकार करते हुए कहें-

ॐ प्रतिगृह्णामि। - पार.गृ.सू..1.3.7

वर मधुपर्क का पान करे। भावना करें कि अभक्ष्य के कुसंस्कारों से बचने, सत्पदार्थों

से सुसंस्कार अर्जित करते रहने का उत्तरदायित्व स्वीकार कर रहे हैं।

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परम ँ रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि्॥

-पार.गृ.सू.1.3.20

तत्पश्चात् जल से वर हाथ-मुख धोए। स्वच्छ होकर अगले क्रम के लिए बैठें। इसके बाद चन्दन धारण कराएँ। यदि यज्ञोपवीत धारण पहले नहीं कराया गया है, तो यज्ञोपवीत प्रकरण के आधार पर संक्षेप में उसे सम्पन्न कराया जाए। इसके बाद क्रमशः सामान्य प्रकरण *(पृष्ठ-41)* से कलशपूजन, सर्वदेव नमस्कार, षोडशोपचार पूजन, स्वस्तिवाचन, रक्षाविधान आदि सामान्य क्रम करा लिए जाएँ। पुनः संस्कार का विशेष प्रकरण चालू किया जाए।

विवाह घोषणा-

विवाह घोषणा के अन्तर्गत वर-कन्या के गोत्र, पिता-पितामह आदि के नामों का उल्लेख और घोषणा की जाती है कि ये दोनों अब विवाह सम्बन्ध में आबद्ध हो रहे हैं। इनका साहचर्य धर्मसङ्गत जन साधारण की जानकारी में घोषित किया हुआ माना जाए। बिना घोषणा के गुपचुप चलने वाले दाम्पत्य स्तर के प्रेम सम्बन्ध, नैतिक, धार्मिक एवं कानूनी दृष्टि से अवाञ्छनीय माने गये हैं। जिनके बीच दाम्पत्य सम्बन्ध हो, उसकी घोषणा सर्वसाधारण के समक्ष की जानी चाहिए। समाज की जानकारी से जो छिपाया जा रहा हो, वही व्यभिचार है। घोषणापूर्वक विवाह सम्बन्ध में आबद्ध होकर वर-कन्या धर्म परम्परा का पालन करते हैं।

ॐ स्वस्ति श्रीमन्नन्दनन्दन चरणकमल भक्ति सद् विद्या विनीत

निजकुलकमल-कलिका-प्रकाशनैक-भास्कर सदाचार सच्चरित्र सत्कुल सत्प्रतिष्ठा गरिष्ठस्य ....गोत्रस्य .... महोदयस्य प्रपौत्रः .... महोदयस्य पौत्रः.......... महोदयस्य पुत्रः॥ .... महोदयस्य प्रपौत्री .... महोदयस्य पौत्री ....महोदयस्य पुत्री प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये। स्वस्ति संवादेषूभयोर्वृद्धिः वरकन्ययोः चिरञ्जीविनौ भूयास्ताम्।

॥ मङ्गलाष्टक ॥

विवाह घोषणा के बाद, सस्वर मङ्गलाष्टक मन्त्र बोलें जाएँ। इन मन्त्रों में सभी श्रेष्ठ शक्तियों से मङ्गलमय वातावरण, मङ्गलमय भविष्य के निर्माण की प्रार्थना की जाती है। पाठ के समय सभी लोग भावनापूर्वक वर-वधू के लिए मङ्गल

कामना करते रहें। एक स्वयंसेवक उनके ऊपर पुष्पों की वर्षा करता रहे।

ॐ श्री मत्पङ्कजविष्टरो हरिहरौ,
वायुर्महेन्द्रोऽनलः,
चन्द्रो भास्कर वित्तपाल वरुण,
प्रेताधिपादिग्रहाः।
प्रद्युम्नो नलकूबरौ सुरगजः,
चिन्तामणिः कौस्तुभः,
स्वामी शक्तिधरश्च लाङ्गलधरः,
कुर्वन्तु वो मङ्गलम्॥ 1॥

गङ्गा गोमतिगोपतिर्गणपतिः,
गोविन्दगोवर्धनौ,
गीता गोमयगोरजौ गिरिसुता,
गङ्गाधरो गौतमः।
गायत्री गरुडो गदाधरगया,
गम्भीरगोदावरी,
गन्धर्वग्रहगोपगोकुलधराः,
कुर्वन्तु वो मङ्गलम्॥ 2॥

नेत्राणां त्रितयं महत्पशुपतेः,
अग्नेस्तु पादत्रयं,
तत्तद्विष्णुपदत्रयं त्रिभुवने,
ख्यातं च रामत्रयम्।
गङ्गावाहपथत्रयं सुविमलं,
वेदत्रयं ब्राह्मणं,
सन्ध्यानां त्रितयं द्विजैरभिमतं,
कुर्वन्तु वो मङ्गलम्॥ 3॥

वाल्मीकिः सनकः सनन्दनमुनिः,
व्यासो वसिष्ठो भृगुः,
जाबालिर्जमदग्निरत्रिजनकौ,
गर्गोंऽ गिरा गौतमः।
मान्धाता भरतो नृपश्च सगरो,
धन्यो दिलीपो नलः,
पुण्यो धर्मसुतो ययातिनहुषौ,
कुर्वन्तु वो मङ्गलम्॥ 4॥

गौरी श्रीकुलदेवता च सुभगा,
कद्रूसुपर्णाशिवाः,

सावित्री च सरस्वती च सुरभिः,
सत्यव्रतारुन्धती।
स्वाहा जाम्बवती च रुक्मभगिनी,
दुःस्वप्नविध्वंसिनी,
वेला चाम्बुनिधेः समीनमकरा,
कुर्वन्तु वो मङ्गलम्॥ 5॥

गङ्गा सिन्धु सरस्वती च यमुना,
गोदावरी नर्मदा,
कावेरी सरयू महेन्द्रतनया,
चर्मण्वती वेदिका।
शिप्रा वेत्रवती महासुरनदी,
ख्याता च या गण्डकी,
पूर्णाः पुण्यजलैः समुद्रसहिताः,
कुर्वन्तु वो मङ्गलम्॥ 6॥

लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा,
धन्वन्तरिश्चन्द्रमा,
गावः कामदुघाः सुरेश्वरगजो,
रम्भादिदेवाङ्गनाः।

अश्वः सप्तमुखः सुधा हरिधनुः,
शङ्खो विषं चाम्बुधे,
रत्नानीति चतुर्दश-प्रतिदिनम्,
कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ 7 ॥

ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः,
सूर्यो ग्रहाणां पतिः,
शक्रो देवपतिर्नलो नरपतिः,
स्कन्दश्च सेनापतिः।
विष्णुर्यज्ञपतिर्यमः पितृपतिः,
तारापतिश्चन्द्रमा,
इत्येते पतयस्सुपर्णसहिताः,
कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ 8 ॥

॥ परस्पर उपहार ॥

वस्त्रोपहार- वर पक्ष की ओर से कन्या को और कन्या पक्ष की ओर से वर को वस्त्र-आभूषण भेंट किये जाने की परम्परा है। यह कार्य श्रद्धानुरूप पहले ही हो जाता है। वर-वधू उन्हें पहनकर ही

संस्कार में बैठते हैं। यहाँ प्रतीक रूप से पीले दुपट्टे एक-दूसरे को भेंट किये जाएँ। यही ग्रन्थि बन्धन के भी काम आ जाते हैं। आभूषण पहिनाना हो, तो अँगूठी या मङ्गलसूत्र जैसे शुभ-चिह्नों तक ही सीमित रहना चाहिए।

दोनों पक्ष भावना करें कि एक-दूसरे का सम्मान बढ़ाने, उन्हें अलंकृत करने का उत्तरदायित्व समझने और निभाने के लिए सङ्कल्पित हो रहे हैं। नीचे लिखे मन्त्र के साथ परस्पर उपहार दिये जाएँ।

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै,
दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि।
शतं च जीवामि शरदः,
पुरूचीरायस्पोषमभि संव्ययिष्ये॥

- पार.गृ.सू. 2.6.20

पुष्पोहार (माल्यार्पण)-

वर-वधू एक-दूसरे को अपने अनुरूप स्वीकार करते हुए, पुष्प मालाएँ अर्पित

करते हैं। हृदय से वरण करते हैं। भावना करें कि देव शक्तियों और सत्पुरुषों के आशीर्वाद से वे परस्पर एक दूसरे के गले का हार बनकर रहेंगे। मन्त्रोच्चार के साथ पहले कन्या वर को फिर वर कन्या को माला पहिनाएँ।

ॐ यशसा माद्यावापृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पती। यशो भगश्च मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्॥ - पार.गृ.सू. 2.6.21, मा.गृ.सू.1.9.27

॥हस्तपीतकरण॥

क्रिया और भावना-

कन्या दोनों हथेलियाँ सामने कर दे। कन्यादाता गीली हल्दी उसकी हथेलियों पर मन्त्र के साथ मलें। भावना करें कि देव सान्निध्य में इन हाथों को स्वार्थपरता के कुसंस्कारों से मुक्त कराते हुए त्याग परमार्थ के संस्कार जाग्रत् किये जा रहे हैं।

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाꣳ सं परिपातु विश्वतः॥ -29.51

॥कन्यादान -गुप्तदान॥

क्रिया और भावना-

कन्या के हाथ हल्दी से पीले करके माता-पिता अपने हाथ में कन्या के हाथ, गुप्तदान का धन और पुष्प रखकर सङ्कल्प बोलते हैं और उन हाथों को वर के हाथों में सौंप देते हैं। वह इन हाथों को गम्भीरता और जिम्मेदारी के साथ अपने हाथों को पकड़कर स्वीकार-शिरोधार्य करता है।

भावना करें कि कन्या वर को सौंपते हुए उसके अभिभावक अपने समग्र अधिकार को सौंपते हैं। कन्या के कुल गोत्र अब पितृ परम्परा से नहीं, पति

परम्परा के अनुसार होंगे। कन्या को यह भावनात्मक पुरुषार्थ करने तथा पति को उसे स्वीकार करने या निभाने की शक्ति देवशक्तियाँ प्रदान कर रही हैं, इस भावना के साथ कन्यादान का सङ्कल्प बोला जाए। सङ्कल्प पूरा होने पर सङ्कल्पकर्त्ता कन्या के हाथ वर के हाथ में सौंप दें।

॥ कन्यादान-सङ्कल्प ॥

अद्येति.........नामाऽहं.........नाम्नीम् इमां कन्यां/भगिनीं सुस्नातां यथाशक्ति अलंकृतां गन्धादि - अर्चितां वस्त्रयुगच्छन्नां प्रजापति दैवत्यां शतगुणीकृत ज्योतिष्टोम-अतिरात्र-शतफल-प्राप्ति कामोऽहं .... नाम्ने विष्णुरूपिणे वराय भरण-पोषण-आच्छादन-पालनादीनां स्वकीय उत्तरदायित्व-भारम् अखिलं अद्य तव

पत्नीत्वेन तुभ्यं अहं सम्प्रददे।

वर उन्हें स्वीकार करते हुए कहे-

ॐ स्वस्ति।

॥गोदान॥

दिशा प्रेरणा-

गौ पवित्रता और परमार्थ परायणता की प्रतीक है। कन्या पक्ष वर को ऐसा दान दें, जो उन्हें पवित्रता और परमार्थ की प्रेरणा देने वाला हो। सम्भव हो, तो कन्यादान के अवसर पर गाय दान में दी जा सकती है। वह कन्या के व उसके परिवार के लोगों के स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयुक्त भी है। आज की स्थिति में यदि गौ देना या लेना असुविधाजनक हो, तो उसके लिए कुछ धन देकर गोदान की परिपाटी को जीवित रखा जा सकता है।

क्रिया और भावना-

कन्यादान करने वाले हाथ में सामग्री लें।

भावना करें कि वर-कन्या के भावी जीवन को सुखी समुन्नत बनाने के लिए श्रद्धापूर्वक श्रेष्ठ दान कर रहे हैं। मन्त्रोच्चार के साथ सामग्री वर के हाथ में दें।

ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा
गामनागामदितिं वधिष्ट॥

-ऋ.8.101.15, पार.गृ.सू. 1.3.27

॥मर्यादाकरण॥

क्रिया और भावना-

कन्यादान करने वाले अपने हाथ में जल, पुष्प, अक्षत लें। भावना करें कि वर को मर्यादा सौंप रहे हैं। वर मर्यादा स्वीकार करें, उसके पालन के लिए देव शक्तियों के सहयोग की कामना करें।

ॐ गौरीं कन्यामिमां पूज्य!
यथाशक्तिविभूषिताम्।

गोत्राय शर्मणे तुभ्यं,
दत्तां देवसमाश्रय॥
धर्मस्याचरणं सम्यक्,
क्रियतामनया सह।
धर्मे चार्थे च कामे च,
यत्त्वं नातिचरेर्विभो॥
वर कहे- नातिचरामि।

॥पाणिग्रहण॥

क्रिया और भावना-

मन्त्रोच्चार के साथ कन्या अपना हाथ वर की ओर बढ़ाये, वर उसे अँगूठा सहित (समग्र रूप से) पकड़ ले। भावना करें कि दिव्य वातावरण में परस्पर मित्रता के भाव सहित एक-दूसरे के उत्तरदायित्व स्वीकार कर रहे हैं।

ॐ यदैषि मनसा दूरं
दिशोऽनुपवमानो वा।
हिरण्यपर्णो वै कर्णः स

त्वा मन्मनसां करोतु असौ॥

-पार.गृ.सू.1.4.15

॥ग्रन्थिबन्धन॥

दिशा और प्रेरणा-

वर-वधू द्वारा पाणिग्रहण एकीकरण के बाद समाज द्वारा दोनों को एक गाँठ में बाँध दिया जाता है। दुपट्टे के छोर बाँधने का अर्थ है-दोनों के शरीर और मन से एक संयुक्त इकाई के रूप में एक नई सत्ता का आविर्भाव होना। अब दोनों एक-दूसरे के साथ पूरी तरह बँधे हुए हैं। ग्रन्थिबन्धन में धन, पुष्प, दूर्वा, हरिद्रा और अक्षत यह पाँच चीजें भी बाँधते हैं।

क्रिया और भावना-

ग्रन्थिबन्धन, आचार्य या प्रतिनिधि या कोई मान्य व्यक्ति करें। दुपट्टे के छोर एक साथ करके उसमें मङ्गल-द्रव्य रखकर गाँठ बाँध दी जाए। भावना की

जाए कि मङ्गल द्रव्यों के मङ्गल संस्कार सहित देवशक्तियों के समर्थन तथा स्नेहियों की सद्भावना के संयुक्त प्रभाव से दोनों इस प्रकार जुड़ रहे हैं, जो सदा जुड़े रहकर एक-दूसरे की जीवन लक्ष्य यात्रा में पूरक बनकर चलेंगे-

ॐ समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो
हृदयानि नौ। सं मातरिश्वा सं धाता
समु देष्ट्री दधातु नौ॥

-ऋ.10.85.47, पार.गृ.सू. 1.4.14

॥वर-वधू की प्रतिज्ञाएँ॥

क्रिया और भावना-

वर-वधू स्वयं प्रतिज्ञाएँ पढ़ें, यदि सम्भव न हो, तो आचार्य एक-एक करके प्रतिज्ञाएँ व्याख्या सहित समझाएँ।

॥वर की प्रतिज्ञाएँ॥

धर्मपत्नीं मिलित्वैव,
ह्येकं जीवनमावयोः।

अद्यारभ्य यतो मे त्वम्,
अर्द्धाङ्गिनीति घोषिता॥ 1॥

आज से धर्मपत्नी को अर्द्धाङ्गिनी घोषित करते हुए, उसके साथ अपने व्यक्तित्व को मिलाकर एक नये जीवन की सृष्टि करता हूँ। अपने शरीर के अङ्गों की तरह धर्मपत्नी का ध्यान रखूँगा।

स्वीकरोमि सुखेन त्वां,
गृहलक्ष्मीमहन्ततः।
मन्त्रयित्वा विधास्यामि,
सुकार्याणि त्वया सह॥ 2॥

प्रसन्नतापूर्वक गृहलक्ष्मी का महान् अधिकार सौंपता हूँ और जीवन के निर्धारण में उनके परामर्श को महत्त्व दूँगा।

रूप-स्वास्थ्य-स्वभावान्तु,
गुणदोषादीन् सर्वतः।
रोगाज्ञान-विकारांश्च,

तव विस्मृत्य चेतसः ॥ 3 ॥

रूप, स्वास्थ्य, स्वभावगत गुण-दोष एवं अज्ञानजनित विकारों को चित्त में नहीं रखूँगा, उनके कारण असन्तोष व्यक्त नहीं करूँगा। स्नेहपूर्वक सुधारने या सहन करते हुए आत्मीयता बनाये रखूँगा।

सहचरो भविष्यामि,
पूर्णस्नेहः प्रदास्यते।
सत्यता मम निष्ठा च,
यस्याधारं भविष्यति ॥ 4 ॥

पत्नी का मित्र बनकर रहूँगा और पूरा-पूरा स्नेह देता रहूँगा। इस वचन का पालन पूरी निष्ठा और सत्य के आधार पर करूँगा।

यथा पवित्रचित्तेन,
पातिव्रत्य त्वया धृतम्।
तथैव पालयिष्यामि,

पत्नीव्रतमहं ध्रुवम्॥ 5॥

पत्नी के लिए जिस प्रकार पतिव्रत की मर्यादा कही गयी है, उसी दृढ़ता से स्वयं पत्नीव्रत धर्म का पालन करूँगा। चिन्तन और आचरण दोनों से ही परनारी से वासनात्मक सम्बन्ध नहीं जोड़ूँगा।

गृहस्यार्थव्यवस्थायां,
मन्त्रयित्वा त्वया सह।
सञ्चालनं करिष्यामि,
गृहस्थोचित-जीवनम्॥ 6॥

गृह व्यवस्था में धर्म-पत्नी को प्रधानता दूँगा। आमदनी और खर्च का क्रम उसकी सहमति से करने की गृहस्थोचित जीवनचर्या अपनाऊँगा।

समृद्धि-सुख-शान्तीनां,
रक्षणाय तथा तव।
व्यवस्थां वै करिष्यामि,

स्वशक्तिवैभवादिभिः ॥ 7 ॥

धर्मपत्नी की सुख-शान्ति तथा प्रगति-सुरक्षा की व्यवस्था करने में अपनी शक्ति और साधन आदि को पूरी ईमानदारी से लगाता रहूँगा।

यत्नशीलो भविष्यामि,
सन्मार्गसेवितुं सदा।
आवयोः मतभेदांश्च,
दोषान्संशोध्य शान्तितः ॥ 8 ॥

अपनी ओर से मधुर भाषण और श्रेष्ठ व्यवहार बनाये रखने का पूरा-पूरा प्रयत्न करूँगा। मतभेदों और भूलों का सुधार शान्ति के साथ करूँगा। किसी के सामने पत्नी को लाञ्छित-तिरस्कृत नहीं करूँगा।

भवत्यामसमर्थायां,
विमुखायाञ्च कर्मणि।
विश्वासं सहयोगञ्च,

मम प्राप्स्यसि त्वं सदा॥ 9॥

पत्नी के असमर्थ या अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाने पर भी अपने सहयोग और कर्त्तव्य पालन में रत्ती भर भी कमी न रखूँगा।

॥कन्या की प्रतिज्ञाएँ॥

स्वजीवनं मेलयित्वा,
भवतः खलु जीवने।
भूत्वा चार्द्धाङ्गिनी नित्यं,
निवत्स्यामि गृहे सदा॥ 1॥

अपने जीवन को पति के साथ संयुक्त करके नये जीवन की सृष्टि करूँगी। इस प्रकार घर में हमेशा सच्चे अर्थों में अर्द्धांगिनी बनकर रहूँगी।

शिष्टतापूर्वकं सर्वैः,
परिवारजनैः सह।
औदार्येण विधास्यामि,
व्यवहारं च कोमलम्॥ 2॥

पति के परिवार के परिजनों को एक ही शरीर के अङ्ग मानकर सभी के साथ शिष्टता बरतूँगी, उदारतापूर्वक सेवा करूँगी, मधुर व्यवहार करूँगी।

त्यक्त्वालस्यं करिष्यामि,
गृहकार्ये परिश्रमम्।
भर्तुर्हर्षं हि ज्ञास्यामि,
स्वीयामेव प्रसन्नताम्॥ 3॥

आलस्य को छोड़कर परिश्रमपूर्वक गृह कार्य करूँगी। इस प्रकार पति की प्रगति और जीवन विकास में समुचित योगदान करूँगी।

श्रद्धया पालयिष्यामि,
धर्मं पातिव्रतं परम्।
सर्वदैवानुकूल्येन,
पत्युरादेशपालिका॥ 4॥

पतिव्रत धर्म का पालन करूँगी, पति के प्रति श्रद्धा-भाव बनाये रखकर

सदैव उनके अनूकूल रहूँगी। कपट-दुराव न करूँगी, निर्देशों के अविलम्ब पालन का अभ्यास करूँगी।

सुश्रूषणपरा स्वच्छा,
मधुर-प्रियभाषिणी।
प्रतिजाने भविष्यामि,
सततं सुखदायिनी॥ 5॥

सेवा, स्वच्छता तथा प्रियभाषण का अभ्यास बनाये रखूँगी। ईर्ष्या, कुढ़न आदि दोषों से बचूँगी और सदा प्रसन्नता देने वाली बनकर रहूँगी।

मितव्ययेन गार्हस्थ्य-
सञ्चालने हि नित्यदा।
प्रयतिष्ये च सोत्साहं,
तवाहमनुगामिनी॥ 6॥

फिजूलखर्ची से बचकर मितव्ययितापूर्वक गृहस्थी का संचालन नियमितरूप से करूँगी। उत्साहपूर्वक

पति की अनुगामिनी बनने का प्रयास करूँगी।

देवस्वरूपो नारीणां,
भर्त्ता भवति मानवः।
मत्वेति त्वां भजिष्यामि,
नियता जीवनावधिम्॥ 7॥

नारी के लिए पति, देव स्वरूप होता है- यह मानकर मतभेद भुलाकर, सेवा करते हुए जीवन भर सक्रिय रहूँगी, कभी भी पति का अपमान न करूँगी।

पूज्यास्तव पितरो ये,
श्रद्धया परमा हि मे।
सेवया तोषयिष्यामि,
तान्सदा विनयेन च॥ 8॥

जो पति के पूज्य और श्रद्धा पात्र हैं, उन्हें सेवा द्वारा और विनय द्वारा सदैव सन्तुष्ट रखूँगी।

विकासाय सुसंस्कारैः,
सूत्रैः सद्भाववर्द्धिभिः।
परिवारसदस्यानां,
कौशलं विकसाम्यहम्॥ 9॥

परिवार के सदस्यों में सुसंस्कारों के विकास तथा उन्हें सद्भावना के सूत्रों में बाँधे रहने का कौशल अपने अन्दर विकसित करूँगी।

यज्ञीय प्रक्रिया-

शपथ ग्रहण के बाद उनकी श्रेष्ठ भावनाओं के विकास और पोषण के लिए यज्ञीय वातावरण निर्मित किया जाता है। अग्नि स्थापना से गायत्री मन्त्र आहुति तक का क्रम सम्पन्न करें। गायत्री मन्त्र की 9, 12 या 24 आहुतियाँ दी जाएँ। इसके बाद प्रायश्चित होम कराया जाए।

प्रायश्चित्त होम-

वर-वधू हवन सामग्री से आहुति दें। भावना करें कि प्रायश्चित्त आहुति के साथ पूर्व दुष्कृत्यों की धुलाई हो रही है। स्वाहा के साथ आहुति डालें, **इदं न मम** के साथ हाथ जोड़कर नमस्कार करें-

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्
देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा
द्वेषा ँ सि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥
इदं अग्नीवरुणाभ्यां इदं न मम। -21.3

ॐ स त्वं नो अग्नेवमो भवोती
नेदिष्ठो अस्या ऽ उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुण ँ रराणो वीहि
मृडीक ँ सुहवो नऽ एधि स्वाहा॥
इदं अग्नीवरुणाभ्यां इदं न मम। -21.4

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च
सत्यमित्वमयाऽ असि।

अया नो यज्ञं वहास्यया
नो धेहि भेषजꣳस्वाहा॥
इदं अग्नये अयसे इदं न मम।

-का.श्रौ.सू. 25.1.11

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः
पाशा वितता महान्तः तेभिर्नोऽअद्य
सवितोत विष्णुः विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः
स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे
विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः
स्वर्केभ्यश्च इदं न मम।

-का.श्रौ.सू. 25.1.11

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं
वि मध्यम ꣳ श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो
अदितये स्याम स्वाहा। -12.12
इदं वरुणायादित्यायादितये
च इदं न मम।

॥ शिलारोहण ॥

दिशा एवं प्रेरणा-

शिलारोहण के द्वारा पत्थर पर पैर रखते हुए प्रतिज्ञा करते हैं कि जिस प्रकार अङ्गद ने अपना पैर जमा दिया था, उसी तरह हम पत्थर की लकीर की तरह अपना पैर उत्तरदायित्वों को निबाहने के लिए जमाते हैं। यह धर्मकृत्य खेल-खिलौने की तरह नहीं किया जा रहा, जिसे एक मखौल समझकर तोड़ा जाता रहे, वरन् यह प्रतिज्ञाएँ पत्थर की लकीर की तरह अमिट बनी रहेंगी, ये चट्टान की तरह अटूट एवं चिरस्थाई रखी जायेंगी।

क्रिया और भावना-

मन्त्र बोलने के साथ वर-वधू अपने दाहिने पैर को शिला पर रखें, भावना करें कि उत्तरदायित्वों के निर्वाह करने तथा

बाधाओं को पार करने की शक्ति हमारे सङ्कल्प और देव अनुग्रह से मिल रही है।

ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्व ँ स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः॥ -पार.गृ.सू.1.7.1

॥लाजाहोम एवं परिक्रमा (भाँवर)॥

क्रिया और भावना-

लाजा होम और परिक्रमा का मिला-जुला क्रम चलता है। शिलारोहण के बाद वर-वधू खड़े-खड़े गायत्री मन्त्र से एक आहुति समर्पित करें। अब मन्त्र के साथ परिक्रमा करें। वधू आगे, वर पीछे चलें।

एक परिक्रमा पूरी होने पर लाजाहोम की एक आहुति करें। आहुति करके दूसरी परिक्रमा पहले की तरह मन्त्र बोलते हुए करें। इसी प्रकार लाजाहोम की दूसरी आहुति करके

तीसरी परिक्रमा तथा तीसरी आहुति करके चौथी परिक्रमा करें। इसके बाद गायत्री मन्त्र की आहुति देते हुए तीन परिक्रमाएँ वर को आगे करके परिक्रमा मन्त्रब ोलतेह ुएक राईज ाएँ।अ गली सातवीं परिक्रमा की समाप्ति पर गायत्री मंत्र से आहुति दें। आहुति के साथ भावना करें कि बाहर यज्ञीय ऊर्जा तथा अन्तःकरण में यज्ञीय भावना तीव्रतर हो रही है। परिक्रमा के साथ भावना करें कि यज्ञीय अनुशासन को केन्द्र मानकर, यज्ञाग्नि को साक्षी करके आदर्श दाम्पत्य के निर्वाह का सङ्कल्प कर रहे हैं।

॥लाजाहोम॥

ॐ अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत।
स नोऽ अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा
पतेः स्वाहा॥ इदं अर्यम्णे अग्नये
इदं न मम।

ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजा नावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्ताम् ज्ञातयो मम स्वाहा॥ इदं अग्नये इदं न मम।

ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ, समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियं स्वाहा॥ इदं अग्नये इदं न मम।

-पार.गृ.सू.1.6.2

॥ परिक्रमा मन्त्र ॥

ॐ तुभ्यमग्रे पर्यवहन्त्सूर्यां वहतुना सह। पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह॥ -ऋ.10.85.38, पार.गृ.सू. 1.7.3

॥सप्तपदी॥

क्रिया और भावना-

वर-वधू खड़े हों। प्रत्येक कदम बढ़ाने से पहले देव शक्तियों की साक्षी का मन्त्र बोला जाता है, उस समय वर-वधू हाथ

जोड़कर ध्यान करें। उसके बाद चरण बढ़ाने का मन्त्र बोलने पर पहले दायाँ कदम बढ़ाएँ। इसी प्रकार एक-एक करके सात कदम बढ़ाये जाएँ। भावना की जाए कि योजनाबद्ध-प्रगतिशील जीवन के लिए देव साक्षी में सङ्कल्पित हो रहे हैं। सङ्कल्प और देव अनुग्रह का संयुक्त लाभ जीवन भर मिलता रहेगा।

1 अन्न वृद्धि के लिए पहली साक्षी-

ॐ एको विष्णुर्जगत्सर्वं,
व्याप्तं येन चराचरम्।
हृदये यस्ततो यस्य,
तस्य साक्षी प्रदीयताम्॥

पहला चरण-

ॐ इष एकपदी भव सा
मामनुव्रता भव।
विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै,
बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः॥ 1॥

2 **बल वृद्धि के लिए दूसरी साक्षी-**

ॐ जीवात्मा परमात्मा च,
पृथ्वी-आकाशमेव च।
सूर्यचन्द्रद्वयोर्मध्ये,
तस्य साक्षी प्रदीयताम्॥

दूसरा चरण-

ॐ ऊर्जे द्विपदी भव
सा मामनुव्रता भव।
विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै,
बहूँस्ते सन्तु जरदष्टय:॥2॥

3 **धन वृद्धि के लिए तीसरी साक्षी-**

ॐ त्रिगुणाश्च त्रिदेवाश्च,
त्रिशक्ति: सत्परायणा:।
लोकत्रये त्रिसन्ध्याया:,
तस्य साक्षी प्रदीयताम्॥

तीसरा चरण-

ॐ रायस्पोषाय त्रिपदी
भव सा मामनुव्रता भव।

विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै,
बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥ 3 ॥

4 सुख वृद्धि के लिए चौथी साक्षी-

ॐ चतुर्मुखस्ततो ब्रह्मा,
चत्वारो वेदसम्भवाः।
चतुर्युगाः प्रवर्तन्ते,
तेषां साक्षी प्रदीयताम् ॥

चौथा चरण-

ॐ मायो भवाय चतुष्पदी
भव सा मामनुव्रता भव।
विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै,
बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः ॥ 4 ॥

5 प्रजा पालन के लिए पाँचवीं साक्षी-

ॐ पञ्चमे पञ्चभूतानां,
पञ्चप्राणैः परायणाः।
तत्र दर्शनपुण्यानां,
साक्षिणः प्राणपञ्चधाः ॥

पाँचवाँ चरण-

ॐ प्रजाभ्यां पञ्चपदी भव
सा मामनुव्रता भव।
विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै,
बहूँस्ते सन्तु जरदष्टय: ॥ 5 ॥

6 **ऋतु व्यवहार के लिए छठवीं साक्षी-**

ॐ षष्ठे तु षड्ऋतूणां च,
षण्मुख: स्वामिकार्तिक:।
षड्रसा यत्र जायन्ते,
कार्तिकेयाश्च साक्षिण: ॥

छठवाँ चरण-

ॐ ऋतुभ्य: षट्पदी भव
सा मामनुव्रता भव।
विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै,
बहूँस्ते सन्तु जरदष्टय: ॥ 6 ॥

7 मित्रता वृद्धि के लिए सातवीं साक्षी-

ॐ सप्तमे सागराश्चैव,
सप्तद्वीपाः सपर्वताः।
येषां सप्तर्षिपत्नीनां,
तेषामादर्शसाक्षिणः॥

सातवाँ चरण-

ॐ सखे सप्तपदी भव
सा मामनुव्रता भव।
विष्णुस्त्वानयतु पुत्रान् विन्दावहै,
बहूँस्ते सन्तु जरदष्टयः॥ 7॥
-पार.गृ.सू.1.8.1-2, आ.गृ.सू. 1.7.19

॥ आसन परिवर्तन ॥

सप्तपदी के पश्चात् आसन परिवर्तन करते हैं। अब तक वधू दाहिनी ओर थी अर्थात् बाहरी व्यक्ति जैसी स्थिति में थी। अब सप्तपदी होने के पश्चात्

प्रतिज्ञाओं में आबद्ध हो जाने के उपरान्त वह घरवाली अपनी आत्मीय बन जाती है, इसलिए उसे बायीं ओर बैठाया जाता है। बायें से दायें लिखने का क्रम है। बायाँ प्रथम और दाहिना द्वितीय माना जाता है। सप्तपदी के बाद अब पत्नी को प्रमुखता प्राप्त हो गयी । लक्ष्मी-नारायण, उमा-महेश, सीता-राम, राधे-श्याम आदि नामों में पत्नी को प्रथम, पति को द्वितीय स्थान प्राप्त है। दाहिनी ओर से वधू का बायीं ओर आना, अधिकार हस्तान्तरण है। बायीं ओर के बाद पत्नी गृहस्थ जीवन की प्रमुख सूत्रधार बनती है।

ॐ इह गावो निषीदन्तु,

इहाश्वा इह पूरुषाः।

इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ,

इह पूषा निषीदतु॥ -पा.गृ.सू. 1.8.10

॥ पाद प्रक्षालन ॥

आसन परिवर्तन के बाद गृहस्थाश्रम के साधक के रूप में वर-वधू का सम्मान पाद प्रक्षालन करके किया जाता है। कन्या पक्ष की ओर से प्रतिनिधि स्वरूप कोई दम्पति या अकेले व्यक्ति पाद प्रक्षालन करे। पाद प्रक्षालन करने वालों का पवित्रीकरण-सिञ्चन किया जाए। हाथ में हल्दी, दूर्वा, थाली में जल लेकर प्रक्षालन करें। प्रथम मन्त्र के साथ तीन बार वर-वधू के पैर पखारें, फिर दूसरे मन्त्र के साथ यथा श्रद्धा भेंट दें।

ॐ या ते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी,
गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता,
तनूर्जारघ्नीं ततऽएनां करोमि,
सा जीर्य त्वं मया सह।

-पार.गृ.सू.1.11

ॐ ब्रह्मणा शालां निमितां
कविभिर्निर्मितां मिताम्।

इन्द्राग्नी रक्षतां शालाममृतौ सोम्यं सदः ॥ -अथर्व. 9.3.19

॥ ध्रुव-सूर्य ध्यान ॥

ध्रुव स्थिर तारा है। अन्य सब तारागण गतिशील रहते हैं, पर ध्रुव अपने निश्चित स्थान पर ही स्थिर रहता है। अन्य तारे उसकी परिक्रमा करते हैं। ध्रुव दर्शन का अर्थ है- दोनों अपने-अपने परम पवित्र कर्त्तव्यों पर उसी तरह दृढ़ रहेंगे, जैसे कि ध्रुव तारा स्थिर है। कुछ कारण उत्पन्न होने पर भी इस आदर्श से विचलित न होने की प्रतिज्ञा को निभाया जाए, व्रत को पाला जाए और सङ्कल्प को पूरा किया जाए। ध्रुव स्थिर चित्त रहने की अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ रहने की प्रेरणा देता है। इसी प्रकार सूर्य की अपनी प्रखरता, तेजस्विता, महत्ता सदा स्थिर रहती है। वह अपने निर्धारित पथ पर ही

चलता है, यही हमें करना चाहिए। यही भावना पति-पत्नी करें।

॥ सूर्य ध्यान (दिन में) ॥

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥ -36.24

॥ ध्रुव ध्यान (रात में) ॥

ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि,
ध्रुवैधि पोष्ये मयि।
मह्यं त्वादात् बृहस्पतिर्मयापत्या,
प्रजावती सञ्जीव शरदः शतम्॥

-पार.गृ.सू.1.8.19

॥ शपथ आश्वासन ॥

पति-पत्नी एक दूसरे के सिर या कन्धे पर दाहिना हाथ रखकर समाज के सामने शपथ लेते हैं, आश्वासन देकर अन्तिम

प्रतिज्ञा करते हैं कि वे निस्सन्देह निश्चित रूप से एक-दूसरे को आजीवन ईमानदार, निष्ठावान् और वफादार रहने का विश्वास दिलाते हैं। पिछले दिनों पुरुषों का व्यवहार स्त्रियों के साथ छली-कपटी और विश्वासघातियों जैसा रहा है। रूप, यौवन के लोभ में कुछ दिन मीठी बातें करते हैं, पीछे क्रूरता एवं दुष्टता पर उतर आते हैं। पग-पग पर उन्हें सताते और तिरस्कृत करते हैं। प्रतिज्ञाओं को तोड़कर आर्थिक एवं चारित्रिक उच्छृङ्खलता बरतते हैं और पत्नी की इच्छा की परवाह नहीं करते। समाज में ऐसी घटनाएँ कम घटित नहीं होतीं। ऐसी दशा में ये प्रतिज्ञाएँ औपचारिकता मात्र रह जाने की आशङ्का हो सकती है। सन्तान न होने पर या लड़कियाँ होने पर लोग दूसरा विवाह करने पर उतारू हो जाते हैं।

पति सिर या कन्धे पर दाहिना हाथ रखकर कसम खाता है कि दूसरे दुरात्माओं की श्रेणी में उसे न गिना जाए। इस प्रकार पत्नी भी अपनी निष्ठा के बारे में पति को इस शपथ-प्रतिज्ञा द्वारा विश्वास दिलाती है।

ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि,
मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु।
मम वाचमेकमना जुषस्व,
प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्॥

- पार.गृ.सू. 1.8.8

॥सुमङ्गली-सिन्दूरदान॥

मन्त्र के साथ वर अँगूठी सलाका या सिक्के से वधू की माँग में सिन्दूर तीन बार लगाए। भावना करे कि मैं वधू के सौभाग्य को बढ़ाने वाला सिद्ध होऊँ-

ॐ सुमंगलीरियं वधूरिमाᳬ समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्त्वा याथास्तं विपरेतन। 'सुभगा स्त्री सावित्र्यास्तव

सौभाग्यं भवतु॥

-पार.गृ.सू.1.8.9

॥मङ्गलतिलक॥

वधू वर को मङ्गल तिलक करे। भावना करे कि पति का सम्मान करते हुए उनके गौरव को बढ़ाने वाली सिद्ध होऊँ-

ॐ स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै
सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय
आदित्यासो भवन्तु नः॥ -ऋ. 5.51.12

इसके पश्चात् स्विष्टकृत् होम से क्षमा-प्रार्थना तक के कृत्य सम्पन्न करें।

॥आशीर्वाद॥

वर-कन्या दोनों हाथ जोड़कर सभी समुपस्थित जनों को प्रणाम करें। पुष्प वर्षा के रूप में सभी उपस्थित महानुभाव अपनी शुभकामनाएँ-आशीर्वाद वर-वधू को प्रदान करें-

गणपतिः गिरिजा वृषभध्वजः,
षण्मुखो नन्दीमुखडिमडिमा।
मनुज-माल-त्रिशूल-मृगत्वचः,
प्रतिदिनं कुशलं वरकन्ययोः॥ 1॥

रविशशी-कुज-इन्द्र-जगत्पतिः,
भृगुज-भानुज-सिन्धुज-केतवः।
उडुगणा-तिथि-योग च राशयः,
प्रतिदिनं कुशलं वरकन्ययोः॥ 2॥

वरुण-इन्द्र कुबेर-हुताशनाः,
यम-समीरण-वारण-कुञ्जराः।
सुरगणाः सुराश्च महीधराः,
प्रतिदिनं कुशलं वरकन्ययोः॥ 3॥

सुरसरी-रविनन्दिनि-गोमती,
सरयुतामपि सागर-घर्घरा।
कनकयामयि-गण्डकि-नर्मदा,
प्रतिदिनं कुशलं वरकन्ययोः॥ 4॥

हरिपुरी-मथुरा च त्रिवेणिका,

बदरि-विष्णु-बटेश्वर-कौशला।
मय-गयामपि-दर्दर-द्वारका,
प्रतिदिनं कुशलं वरकन्ययोः ॥ 5 ॥

भृगुमुनिश्च पुलस्ति च अङ्गिरा,
कपिलवस्तु-अगस्त्य च नारदः।
गुरुवसिष्ठ-सनातन-जैमिनी,
प्रतिदिनं कुशलं वरकन्ययोः ॥ 6 ॥

ॐ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः,
सामवेदो ह्यथर्वणः।
रक्षन्तु चतुरो वेदा,
यावच्चन्द्र दिवाकरौ ॥

इसके बाद देव विसर्जन करके कृत्य समाप्त किया जाए।

वानप्रस्थ संस्कार

ढलती उम्र का परम पवित्र कर्त्तव्य है- वानप्रस्थ। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ जैसे ही हलकी होने लगें, घर को चलाने के लिए बड़े बच्चे समर्थ होने लगें और अपने छोटे भाई-बहिनों की देखभाल करने लगें, तब वयोवृद्ध आदमियों का एक मात्र कर्त्तव्य यही रह जाता है कि वे पारिवारिक जिम्मेदारियों से धीरे-धीरे हाथ खीचें और क्रमशः वह भार समर्थ लड़कों के कन्धों पर बढ़ाते चलें। ममता को परिवार की ओर से शिथिल कर समाज की ओर विकसित करते चलें। सारा समय घर के ही लोगों के लिए खर्च न कर दें, वरन् उसका कुछ अंश क्रमशः अधिक बढ़ाते हुए समाज के लिए समर्पित करते चलें।

विशेष व्यवस्था-

वानप्रस्थ संस्कार जितने व्यक्तियों का हो, उनके लिए समुचित आसन तैयार रखे जाएँ। वानप्रस्थ परम्परा को महत्त्व देने की दृष्टि से उनके लिए सुसज्जित मञ्च बनाया जा सके, तो बनाना चाहिए। पूजन की सामान्य सामग्री के साथ-साथ संस्कार के लिए प्रयुक्त विशेष वस्तुओं को पहले से देख-सँभाल लेना चाहिए। उनका विवरण इस प्रकार है-

- वानप्रस्थों को पीले रंग के वस्त्रों में पहले से तैयार रखना चाहिए।
- पञ्चगव्य एक पात्र में पहले से तैयार रहे।
- संस्कार कराने वाले जितने व्यक्ति हों, उतने
  1. पीले यज्ञोपवीत
  2. पंचगव्य पान कराने के लिए छोटी कटोरियाँ

3 मेखला-कोपीन (कमरबन्द सहित लँगोटी)

4 (हाथ में लेने योग्य गोल दण्ड) रूल एवं

5 पीले दुपट्टे तैयार रखे जाएँ

- ऋषि पूजन के लिए सात कुशाएँ एक साथ बँधी हुई।
- वेदपूजन हेतु वेद या कोई पवित्र पुस्तक पीले कपड़े में लपेटी हुई।
- यज्ञ पुरुष पूजन के लिए कलावा लपेटा हुआ नारियल का गोला।
- अभिषेकके लिएस्‍वच्छल ोटेय ा कलश एक जैसे, कम से कम 5, अधिक 24 तक हों, तो अच्छा है। अभिषेक के लिए कन्याएँ अथवा सम्माननीय साधकों को पहले से निश्चित कर लेना चाहिए।
- वानप्रस्थ लेने वालों को विधिवत् स्नान करके, पीत वस्त्र पहनकर,

संस्कार स्थल पर आने के लिए कहा जाए। प्रवेश एवं आसन ग्रहण के समय पुष्प-अक्षत वृष्टि के साथ मङ्गलाचरण का मंत्र बोला जाए।

- सबके यथास्थान बैठ जाने पर नपे-तुले शब्दों में संस्कार का महत्त्व तथा उसके महान् उत्तरदायित्वों पर सबका ध्यान दिलाकर भावनापूर्वक कर्मकाण्ड प्रारम्भ कराएँ।

॥ विशेष कर्मकाण्ड ॥

- प्रारम्भ में षट्कर्म के बाद ही सङ्कल्प करा दिया जाए। तिलक और रक्षासूत्र बन्धन के उपचार करा दिये जाएँ।
- समय की सीमा का ध्यान रखते हुए सामान्य प्रकरण, पूजन आदि को समुचित विस्तार या संक्षेप में किया जाए।

- रक्षाविधान के बाद विशेष कर्मकाण्ड इस प्रकार कराये जाएँ।

॥सङ्कल्प॥

क्रिया और भावना-

सङ्कल्प के लिए अक्षत, जल, पुष्प हाथ में दिये जाएँ। भावना करें कि देवसंस्कृति के मेरुदण्ड वानप्रस्थ जीवन का शुभारम्भ करने के लिए अपने अन्तरङ्ग और अन्तरिक्ष की सद्शक्तियों से सहयोग की प्रार्थना करते हुए साहस भरी घोषणा कर रहे हैं-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्त्तैक देशान्तर्गते.......क्षेत्रे.......स्थले मासानां

मासोत्तमेमासे......मासे........ पक्षे.......तिथौ.......वासरे.......गोत्रोत्पा :.......नामाऽहं स्वजीवनं व्यक्तिगतं न मत्वा सम्पूर्ण- समाजस्य एतत् इति ज्ञात्वा, संयम-स्वाध्याय-उपासनेषु विशेषतश्च लोकसेवायां निरन्तरं मनसा वाचा कर्मणा च संलग्नो भविष्यामि इति सङ्कल्पं अहं करिष्ये।

॥यज्ञोपवीत परिवर्तन॥

नये जीवन की ओर पहला कदम त्याग, पवित्रता, तेजस्विता एवं परमार्थ के प्रतीक व्रतबन्ध स्वरूप यज्ञोपवीत का नवीनीकरण किया जाता है।

यज्ञोपवीत का सिञ्चन करके पाँच देव शक्तियों के आवाहन स्थापन के उपरान्त उसे धारण कर लिया जाता है, पुराना उतार दिया जाता है। यह क्रम यज्ञोपवीत संस्कार प्रकरण में दिया गया

है। सुविधा की दृष्टि से मन्त्रादि यहाँ भी दिये जा रहे हैं।

॥यज्ञोपवीत सिञ्चन॥

मन्त्र बोलते हुए यज्ञोपवीत पर जल छिड़कें, पवित्र करें, नमस्कार करें-

ॐ प्रजापतेर्यत्सहजं पवित्रं,
कार्पाससूत्रोद्भवब्रह्मसूत्रम्।
ब्रह्मत्वसिद्ध्यै च यशः प्रकाशं,
जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्मसूत्रम्॥

॥पञ्चदेवावाहन॥

मन्त्रों के साथ यज्ञोपवीत में विभिन्न देवताओं का आवाहन करें-सूत्र दुहरायें-

ॐ ब्रह्मा सृजनशीलतां ददातु। (ब्रह्मा हमें सृजनशीलता प्रदान करें।)

1 **ब्रह्मा-**

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि
सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्यविष्ठाः

सतश्चयोनिमसतश्च विवः॥
ॐ ब्रह्मणे नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि। -13.3

2 **विष्णु-**

ॐ विष्णुः पोषणक्षमतां ददातु।
(विष्णु हमें पोषण क्षमता से युक्त बनावें।)
ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे
त्रेधा नि दधे पदम्।
समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा॥
-5.15
ॐ विष्णवे नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि।

3 **शिव-**

ॐ शिवः अमरतां ददातु।
(शिव हमें अमरत्व प्रदान करें।)
ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ
उतो तऽ इषवे नमः।

बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ -16.1
ॐ रुद्राय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

4 **यज्ञपुरुष-**

यज्ञोपवीत खोल लें। दोनों हाथों की कनिष्ठा और अँगूठे से फँसाकर सीने की सीध में करें, फिर यज्ञ भगवान का आवाहन करें। सूत्र दुहरायें-

ॐ यज्ञदेवः सत्पथे नियोजयेत्।
(यज्ञदेव हमें सत्कर्म सिखायें।)

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः
तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र
पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ -31.16
ॐ यज्ञपुरुषाय नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

5 सूर्य-

फिर दोनों हाथ ऊपर उठाकर सूर्यदेव का आवाहन करें- सूत्र दुहरायें-

ॐ सवितादेवता तेजस्वितां वर्धयेत्। (सविता हमें तेजस्वी बनायें।)

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो
निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो
याति भुवनानि पश्यन्॥ -33.43

ॐ सूर्याय नमः। आवाहयामि स्थापयामि, ध्यायामि।

॥यज्ञोपवीतधारण॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं,
प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं,
यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

-पार.गृ.सू.2.2.11

॥ जीर्णोपवीत विसर्जन ॥

ॐ एतावद्दिन पर्यन्तं,
ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात्ते परित्यागो,
गच्छ सूत्र यथासुखम्॥

॥ पञ्चगव्य पान ॥

क्रिया और भावना-

पञ्चगव्य की कटोरी बायें हाथ में लें और दाहिने हाथ की मध्यमा अँगुली से मन्त्रोच्चार के साथ उसे घोलें-चलाएँ। भावना करें कि इन गौ द्रव्यों को दिव्य चेतना से अभिमन्त्रित कर रहे हैं।

ॐ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं
दधि सर्प्पिः कुशोदकम्।
निर्दिष्टं पञ्चगव्यं तु
पवित्रं मुनिपुङ्गवैः॥

कटोरी दाहिने हाथ में लेकर मन्त्रोच्चार के साथ पान करें। भावना करें

कि दिव्य संस्कारों से पापों की जड़ पर प्रहार और पुण्यों को उभारने का क्रम आरम्भ हो रहा है, जो निष्ठापूर्वक चलाया जाता रहेगा।

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे
तिष्ठति मामके।
प्राशनात्पञ्चगव्यस्य
दहत्वग्निरिवेन्धनम्॥

॥मेखला-कोपीन धारण॥

क्रिया और भावना-

मेखला-कोपीन हाथों के सम्पुट में ली जाए। मन्त्रोच्चार के साथ भावना की जाए कि तत्परता, सक्रियता तथा संयमशीलता का वरण किया जा रहा है। मन्त्र पूरा होने पर उसे कमर में बाँध लें। सूत्र दुहरायें- **ॐ संयमशीलः तत्परश्च भविष्यामि।** (संयमशील और तत्पर रहेंगे।)

ॐ इयं दुरुक्तं परिबाधमाना
वर्णं पवित्रं पुनतीमऽआगात्।
प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसा देवी
सुभगा मेखलेयम्॥ -पागृसू. 2.2.8

धर्मदण्डधारण-

दण्ड दोनों हाथों से पकड़ें। भूमि के समानान्तर हृदय की सीध में स्थिर करें। मन्त्र पूरा होने पर मस्तक से लगाएँ और दाहिनी ओर रख लें। भावना करें कि धर्म चेतना को जीवन्त, व्यवस्थित एवं अनुशासित रखने का महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व स्वीकार किया जा रहा है। इसके साथ दिव्य शक्तियाँ ब्राह्मणत्व और ब्रह्मवर्चस प्रदान कर रही हैं। सूत्र दुहरायें-

ॐ अनुशासनानि पालयिष्यामि।

(गुरु द्वारा निर्धारित अनुशासनों का पालन करेंगे।)

ॐ यो मे दण्डः परापत

द्वैहायसोऽधिभूम्याम्।
तमहं पुनराददऽआयुषे ब्रह्मणे
ब्रह्मवर्चसाय॥ -पार.गृ.सू.2.2.12

पीतवस्त्रधारण-

दोनोंह ाथोंक ीह थेलियाँस ीधीक रके दुपट्टा लें। मन्त्र के साथ ध्यान करें कि सत् शक्तियों से पवित्रता, शौर्य और त्याग का संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। मन्त्र पूरा होने पर दुपट्टा कन्धों पर धारण कर लें। सूत्र दुहरायें-

ॐ अहन्तां उत्सृज्य विनम्रतां धारयिष्ये।

(अहन्ता को त्यागकर विनम्रता अपनाऊँगा)

ॐ सूर्यो मे चक्षुर्वातः
प्राणोऽन्तरिक्षमात्मा पृथिवी शरीरम्।
अस्तृतो नामाहमयमस्मि स आत्मानं
नि दधे द्यावापृथिवीभ्यां गोपीथाय॥

-अथर्ववेद 5.9.7

ऋषिपूजन-

हाथ में पुष्प-अक्षत लेकर ऋषियों का ध्यान कर मन्त्रोच्चारण के साथ भावना करें कि हम भी उन्हीं की परिपाटी के व्यक्ति हैं, उनके गौरव के अनुरूप बनने के लिए अपने पुरुषार्थ के साथ उनके अनुग्रह की प्रार्थना कर रहे हैं, उसे पाकर अन्याय उन्मूलन के मोर्चे को सुदृढ़ बनायेंगे। सूत्र दुहरायें-

ॐ सामान्यजनमिव निर्वाहं करिष्यामि। (औसत नागरिक के स्तर के सहारे देवत्व की ओर बढ़ूँगा।)

ॐ इमावेव गोतमभरद्वाजौ,
अयमेव गोतमोऽयं भरद्वाजऽ,
इमावेव विश्वामित्रजमदग्नी,
अयमेव विश्वामित्रोऽयं जमदग्निः,
इमावेव वसिष्ठकश्यपौ,
अयमेव वसिष्ठोऽयं कश्यपो,
वागेवात्रिर्वाचा ह्यन्नमद्यतेऽत्तिः,

हवै नामैतद्यदत्रिरिति,
सर्वस्यात्ता भवति,
सर्वमस्यान्नं भवति य एवं वेद।

-बृह.उ. 2.2.4

ॐ सप्तऋषीनभ्यावर्ते।
ते मे द्रविणं यच्छन्तु ते मे
ब्राह्मणवर्चसम्।
ॐ ऋषिभ्यो नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

-अथर्व. 10.5.39

वेदपूजन-

पूजन सामग्री हाथ में लें। मन्त्रोच्चार के साथ भावना करें कि ज्ञान की सनातन धारा के वर्तमान युग के अनुरूप प्रवाह को अपने लिए तथा सारे समाज के लिए पतित पावनी माँ गङ्गा की तरह प्रवाहित करने के लिए अपनी भूमिका निर्धारित की जा रही है। अज्ञान का निवारण इसी से सम्भव होगा। सूत्र दुहरायें-

ॐ ज्ञानक्रान्तेः अनुगमनं करिष्यामि।
(विचार क्रान्ति का अनुगमन करूँगा।)
ॐ वेदोसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोभवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः। देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित। मनसस्पतऽ इमं देव यज्ञँ स्वाहा वाते धाः॥ ॐ वेदपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

-2.21

यज्ञपुरुष पूजन-

पूजन सामग्री हाथ में लें। मन्त्र के साथ भावना करें कि धर्म और देवत्व के प्रमुख आधार को अङ्गीकार करते हुए, उसे पुष्ट और प्रभावशाली बनाया जा रहा है।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः
तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ यज्ञपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। -31.16

व्रत धारण-

व्रतशीलता के लिए कुछ देवशक्तियों को साक्षी करके व्रतशील बनने की घोषणा की जाती है। इन्हें अपना प्रेरक, निरीक्षक और नियंत्रक बनाना पड़ता है। सम्बन्धित देवशक्तियों की प्रेरणाएँ इस प्रकार हैं-

अग्निदेव-

ऊर्जा के प्रतीक। ऊर्जा, स्फुरणा, गर्मी, प्रकाश से भरे-पूरे रहने, अन्यों तक उसे फैलाने, दूसरों को अपने जैसा बनाने, ऊर्ध्वगामी-आदर्शनिष्ठ रहने, यज्ञीय चेतना के वाहन बनने की प्रेरणा के स्रोत।

वायुदेव-

स्वयं प्राणरूप, किन्तु बिना अहङ्कार

सबके पास स्वयं पहुँचते हैं। कोई स्थान खाली नहीं छोड़ते, निरन्तर गतिशील। सुगन्धित और मेघों जैसे परोपकारी तत्त्वों के विस्तारक सहायक।

सूर्यदेव-

जीवनी शक्ति के निर्झर, तमोनिवारक, जागृति के प्रतीक, पृथ्वी को सन्तुलन और प्राण-अनुदान देने वाले, स्वयं प्रकाशित, सविता देवता।

चन्द्रदेव-

स्वप्रकाशित नहीं, पर सूर्य का ताप स्वयं सहन करके शीतल प्रकाश जगती पर फैलाने वाले, तप अपने हिस्से में-उपलब्धियाँ सबके लिए।

इन्द्रदेव-

व्रतपति देवों में प्रमुख, देव प्रवृत्तियों-शक्तियों को सङ्गठित-सशक्त बनाये रखने के लिए सतत जागरूक, हजार

आँखों से सतर्क रहने की प्रेरणा देने वाले।

क्रिया और भावना-

हाथ में क्रमशः अक्षत-पुष्प लेकर व्रत धारण का सूत्र दुहराकर देवों की साक्षी में उन्हें नमन करते हुए हर बार पूजा वेदी पर चढ़ा दिया जाये-सूत्र-

1 **ॐ आयुष्यार्धं नियोजयिष्ये।** (आधा जीवन परमार्थ में लगाऊँगा।)

2 **ॐ संयमादर्शयुतं सुसंस्कृतं व्यक्तित्वं रचयिष्ये।** (संयमी, आदर्शयुक्त एवं सुसंस्कृत व्यक्तित्व बनाऊँगा।)

3 **ॐ युगधर्मणे सततं चरिष्यामि।** (युग धर्म के परिपालन के लिए सतत गतिशील रहूँगा।)

4 **ॐ विश्वपरिवारसदस्यः भविष्यामि।** (विशाल विश्वपरिवार का सदस्य बनूँगा।)

5 **ॐ सत्प्रवृत्तिसंवर्धनाय दुष्प्रवृत्युन्मूलनाय पुरुषार्थं नियोजयिष्ये।** (सत्प्रवृत्ति संवर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन में अपना पुरुषार्थ नियोजित रहेगा।)

परिव्राजक मन्त्रोच्चार के समय दोनों हाथ ऊपर उठाकर रखें। भावना करें कि हाथ उठाकर व्रतशीलता की साहसिक घोषणा कर रहे हैं, साथ ही सत्प्रवृत्तियों को अपना हाथ थमा रहे हैं। वे हमें मार्गदर्शक की तरह प्रेरणा एवं सहारा देती रहेंगी। एक देवता का मन्त्र पूरा होने पर हाथ जोड़कर नमस्कार करें, फिर

पहले जैसी मुद्रा बना लें।

ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं अनृतात्
सत्यमुपैमि॥ ॐ अग्नये नमः॥ 1॥

ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं अनृतात्
सत्यमुपैमि॥ ॐ वायवे नमः॥ 2॥

ॐ सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते
प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं अनृतात्
सत्यमुपैमि॥
ॐ सूर्याय नमः॥ 3॥

ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं अनृतात्
सत्यमुपैमि॥

ॐ चन्द्राय नमः ॥ 4 ॥

ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं अनृतात्
सत्यमुपैमि ॥
ॐ इन्द्राय नमः ॥ 5 ॥

-मं.ब्रा.1.6.9-13

अभिषेक-

निर्धारित मात्रा में कन्याएँ या संस्कारवान् व्यक्ति कलश लेकर मन्त्रोच्चार के साथ साधकों का अभिषेक करें। भावना करें कि ईश्वरीय ऋषिकल्प जीवन के अनुरूप स्थापनाओं, बीजरूप प्रवृत्तियों को सींचा जा रहा है, समय पाकर वे फूलें-फलेंगी। जीवन के श्रेष्ठतम रस में भागीदारी के लिए परमात्म सत्ता से प्रार्थना की जा रही है, अनुदानों को धारण किया जा रहा है।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः
ता नऽ ऊर्जे दधातन।
महे रणाय चक्षसे॥
ॐ यो वः शिवतमो रसः तस्य
भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥
ॐ तस्माऽ अरं गमाम वो यस्य
क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥

अभिषेक के बाद अग्निस्थापना करके विधिवत् यज्ञ किया जाए। स्विष्टकृत् के पूर्व सात विशेष आहुतियाँ दी जाएँ। भावना की जाए कि युग देवता एक विशाल यज्ञ चला रहे हैं। उस यज्ञ में समिधा, द्रव्य बनकर हम भी सम्मिलित हो रहे हैं, उनसे जुड़कर हमारा जीवन धन्य हो रहा है।

ॐ ब्रह्म होता ब्रह्म
यज्ञा ब्रह्मणा स्वरवो मिताः।
अध्वर्युर्ब्रह्मणो जातो
ब्रह्मणोऽन्तर्हितं हविः स्वाहा॥

इदं अग्नये इदं न मम। -अथर्व.19.42.1

प्रव्रज्या-

परिव्राजक का काम है चलते रहना। रुके नहीं, लक्ष्य की ओर बराबर चलता रहे, एक सीमा में न बँधे, जन-जन तक अपने अपनत्व और पुरुषार्थ को फैलाए ।ज ेप रिव्राजकल ेकमङ्गलके लिए सङ्कीर्णता के सीमा बन्धन तोड़कर गतिशील नहीं होता, सुख-सुविधा छोड़कर तपस्वी जीवन नहीं अपनाता, वह पाप का भागीदार होता है। यज्ञ की चार परिक्रमाएँ चरैवेति मन्त्रों के साथ करें। भावना करें कि हम सच्चे परिव्राजक बनकर गतिशीलों को मिलने वाले दिव्य अनुदानों के उपयुक्त सत्पात्र बन रहे हैं।

ॐ नाना श्रान्ताय श्रीरस्ति,
इति रोहित शुश्रुम।
पापो नृषद्वरो जन,
इन्द्र इच्चरतः सखा॥

चरैवेति चरैवेति।
ॐ पुष्पिण्यौ चरतो जङ्घे,
भूष्णुरात्मा फलग्रहिः।
शेरेऽस्य सर्वे पाप्मानः,
श्रमेण प्रपथे हताः॥
चरैवेति चरैवेति।
ॐ आस्ते भग आसीनस्य,
ऊर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः।
शेते निपद्यमानस्य,
चराति चरतो भगः॥
चरैवेति चरैवेति।
ॐ कलिः शयानो भवति,
सञ्जिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठँस्त्रेताभवति,
कृतं सम्पद्यते चरन्॥
चरैवेति चरैवेति।
ॐ चरन् वै मधु विन्दति,
चरन् स्वादुमुदुम्बरम्।
सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं,

यो न तन्द्रयते चरन् ॥

चरैवेति चरैवेति। -ऐतरेय ब्राह्मण 7.15

इसके बाद यज्ञ समापन पूर्णाहुति आदि उपचार कराये जाएँ। अन्त में मन्त्रों के साथ पुष्प अक्षत की वर्षा करें, शुभ कामना-आशीर्वाद आदि दें।

जन्मदिवस संस्कार

जन्मदिन संस्कार यज्ञ के साथ ही मनाया जाना चाहिए। अन्तःकरण को प्रभावित करने की यज्ञ की अपनी क्षमता विशेष है; परन्तु चूँकि इसे जन-जन का आन्दोलन बनाना है, इसलिए यदि परिस्थितियाँ अनुकूल न हों, तो केवल दीपयज्ञ करके भी जन्मदिन संस्कार कराये जा सकते हैं। नीचे लिखी व्यवस्थाएँ पहले से बनाकर रखी जाएँ।

पञ्च तत्त्व पूजन के लिए चावल की पाँच छोटी ढेरियाँ पूजन वेदी पर बना देनी चाहिए। पाँच तत्त्वों के लिए पाँच रङ्ग के चावल भी रँगकर अलग-अलग छोटी डिबियों या पुड़ियों में रखे जा सकते हैं। उनकी रङ्गीन ढेरियाँ लगा देने से शोभा और भी अच्छी बन जाती है।

तत्त्वों के क्रम और रङ्ग इस प्रकार हैं-

1 **पृथ्वी-** हरा

2 **वरुण-** काला

3 **अग्नि-** लाल

4 **वायु-** पीला

5 **आकाश-** सफेद

इसी क्रम से ढेरियाँ लगाकर रखनी चाहिए।

दीपदान-

जन्मोत्सव के लिए दीपक बनाकर रखें जाएँ। जितने वर्ष पूरे किये हों, उतने छोटे दीपक तथा नये वर्ष का थोड़ा बड़ा दीपक बनाया जाए। दीपक आटे के भी बनाये जा सकते हैं और मिट्टी के भी रखे जा सकते हैं। अभाव में मोमबत्तियों के टुकड़े भी प्रयुक्त किये जा सकते हैं, उन्हें थाली या ट्रे में सुन्दर आकारों में सजाकर रखना चाहिए। व्रत धारण में

क्या व्रत लिया जाना है? इसकी चर्चा पहले से ही कर लेनी चाहिए।

॥ विशेष कर्मकाण्ड ॥

अन्य संस्कारों की तरह **मङ्गलाचरण** से **रक्षाविधान** *(पृष्ठ 24-78)* तक के उपचार पूरे किये जाएँ। इसके बाद क्रमशः ये कर्मकाण्ड कराये जाएँ।

॥ पञ्चतत्त्व पूजन ॥

क्रिया और भावना-

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें-

ॐ श्रेयसां पथे चरिष्यामि।

(जीवन को कल्याणकारी मार्ग पर चलायेंगे।)

प्रत्येक तत्त्व के पूजन के पूर्व उसकी प्रेरणाएँ उभारी जाएँ। हाथ में अक्षत, पुष्प देकर मन्त्रोच्चार के साथ सम्बन्धित प्रतीक पर अर्पित कराएँ। भावना की जाए कि सृष्टि रचना के इन घटकों के

अन्दर जो सूक्ष्म संस्कार हैं, वे पूजन के द्वारा साधक को प्राप्त हो रहे हैं।

पृथ्वी-

पृथ्वी माता हमें उर्वरता और सहनशीलता दें।

ॐ मही द्यौः पृथिवी च नऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥
ॐ पृथिव्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। -8.32

जल-

वरुण देवता हमें शीतलता और सरसता दें।

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानः तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा नऽ आयुः प्रमोषीः॥
ॐ वरुणाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। -18.49

अग्नि-

अग्नि देवता हमें तेजस् और वर्चस् प्रदान करें।

ॐ त्वं नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्॥

ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। -21.3

वायु-

वायु देवता हमें गतिशीलता और जीवनी शक्ति प्रदान करें।

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरᳬ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

ॐ वायवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। -27.28

आकाश-

आकाश देवता हमें उदात्त और महान् बनायें।

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां, त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा॥

ॐ आकाशाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। -7.11

॥दीपदान॥

क्रिया और भावना-

थाली में सजाये दीपकों को क्रमशः प्रज्वलित किया जाए। भावना की जाए कि मनुष्य कितने भी कम साधनों में जी रहा हो, छोटे से नाचीज दीपक की तरह सबका प्रिय प्रकाशदाता बन सकता है। छोटी-सी पात्रता, थोड़ा-सा स्नेह और जरा-सी वर्तिका (लगन) को ठीक क्रम से सजाकर

ज्योतिदान प्राप्त कर सकता है। ज्योतित जीवन की कामना, प्रार्थना करते हुए दिव्य शक्तियों द्वारा उसकी पूर्ति की भावना की जानी चाहिए।सूत्र दुहरायें-

ॐ परमार्थमेव स्वार्थ मनिष्ये।

(परमार्थ को ही स्वार्थ मानेंगे।)

भावसूत्र-

- दीपक की तरह हमें अखण्ड पात्रता प्राप्त हो।
- हमें अक्षय स्नेह की प्राप्ति हो।
- हमारी निष्ठा उर्ध्वमुखी हो।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा। -3.9

॥व्रतधारण॥

अगला क्रम जन्मोत्सव का व्रत धारण

है। व्रतों के बन्धन में बँधा हुआ व्यक्ति ही किसी उच्च लक्ष्य की ओर दूर तक अग्रसर हो सकने में समर्थ होता है। मनुष्य को शुभ अवसरों पर भावनात्मक वातावरण में देवताओं की उपस्थिति में-अग्नि की साक्षी में व्रतधारण करने चाहिए और उनका पालन करने के लिए साहस एकत्रित करना चाहिए।

शिक्षण एवं प्रेरणा-

दुष्प्रवृत्तियों का त्याग, व्रतशीलता का आरम्भिक चरण है। मांसाहार, तम्बाकू, भाँग, गाँजा, अफीम, शराब आदि नशों का सेवन; व्यभिचार, चोरी, बेईमानी, जुआ, फैशन-परस्ती, आलस्य, गन्दगी, क्रोध, चटोरापन, कामुकता, शेखीखोरी, कटुभाषण, ईर्ष्या, द्वेष, कृतघ्नता आदि बुराइयों को जो अपने में

विद्यमान हों, उन्हें छोड़ना चाहिए। कितनी ही भयानक कुरीतियाँ हमारे समाज में ऐसी हैं, जो अतीव हेय होते हुए भी धर्म के नाम पर प्रचलित हैं।

किसी वंश में जन्म लेने के कारण किसी को नीच मानना, स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा अनाधिकारिणी समझना, विवाहों में उन्मादी की तरह पैसे की होली जलाना, दहेज, मृत्युभोज, देवताओं के नाम पर पशुबलि, भूत-पलीत, टोना-टोटका, अन्धविश्वास, शरीर को छेदना या गोदना, गाली-गलौज की असभ्यता, बाल-विवाह, अनमेल विवाह, श्रम का तिरस्कार आदि अनेक सामाजिक कुरीतियाँ हमारे समाज में प्रचलित हैं। इन मान्यताओं के विरुद्ध-विद्रोह करने की आवश्यकता है। इन्हें तो स्वयं हमें ही त्यागना चाहिए। इसी प्रकार अनेक

बुराइयाँ हो सकती हैं। उनमें से जो अपने में हों, उन्हें सङ्कल्पपूर्वक त्यागने के लिए जन्मदिन का शुभ अवसर बहुत ही उत्तम है।

यदि इस प्रकार की बुराइयाँ न हों, उन्हें पहले से ही छोड़ा जा चुका हो, तो अपने में सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्द्धन का व्रत इस अवसर पर ग्रहण करना चाहिए। रात को जल्दी सोना, प्रातः जल्दी उठना, व्यायाम, नियमित उपासना, स्वाध्याय, गुरुजनों का चरण स्पर्शपूर्वक अभिवादन, सादगी, मितव्ययिता, प्रसन्न रहने की आदत, मधुर भाषण, दिनचर्या निर्धारण, निरालस्य, परिवार निर्माण के लिए नियमित समय देना, लोकसेवा के लिए समयदान आदि अनेक सत्कार्य ऐसे हो सकते हैं, जो अपने गुण, कर्म, स्वभाव में सम्मिलित किये जाने चाहिए।

इस प्रकार कम से कम एक अच्छी आदत अपनाने का सङ्कल्प लेना चाहिए और कम से कम एक बुराई भी उसी अवसर पर छोड़ देनी चाहिए। ये दुष्प्रवृत्तियाँ छोड़ने और सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने का क्रम यदि हर जन्मदिन पर चलता रहे, तो कुछ ही वर्षों में उसका परिणाम व्यक्तित्व में कायाकल्प की तरह दृष्टिगोचर होने लगेगा और जन्मोत्सवों का क्रम जीवन में दैवी वरदान की तरह मङ्गलमय परिणाम प्रस्तुत कर सकेगा।

क्रिया और भावना-

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर सूत्र दुहरायें-

ॐ महत्त्वाकांक्षां सीमितं विधास्यामि।

(हम महत्त्वाकांक्षाओं को संयमित रखेंगे।) लिये गये व्रतों की घोषणा की जाए। उनका स्मरण रखते हुए व्रतपति

देवशक्तियों से उनकी वृत्ति एवं शक्ति सहित मार्गदर्शन की याचना करें। दोनों हाथ उठाकर व्रतधारण करें। एक देवता का मन्त्र पूरा होने पर हाथ जोड़कर नमस्कार करें, फिर पहले जैसी मुद्रा बना लें।

ॐ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं अनृतात्
सत्यमुपैमि॥ ॐ अग्नये नमः॥ 1॥

ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं अनृतात्
सत्यमुपैमि॥ ॐ वायवे नमः॥ 2॥

ॐ सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं अनृतात्
सत्यमुपैमि॥ ॐ सूर्याय नमः॥ 3॥

ॐ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं अनृतात्
सत्यमुपैमि॥ ॐ चन्द्राय नमः॥ 4॥

ॐ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
तेनर्ध्यासमिदमहं अनृतात्
सत्यमुपैमि॥ ॐ इन्द्राय नमः॥ 5॥

-मं.ब्रा.1.6.9-13

॥ विशेष आहुति॥

व्रत धारण के बाद यज्ञादि क्रम से पूरे किये जाएँ। गायत्री मन्त्र की आहुति के बाद महामृत्युञ्जय मन्त्र की आहुतियाँ दी जाएँ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे
सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय
माऽमृतात् स्वाहा॥

इदं महामृत्युञ्जयाय इदं न मम।

-3.60, ऋग्वेद 7.59.12

इसके बाद यज्ञ के शेष उपचार से पूरा करके आशीर्वाद आदि के साथ समापन किया जाए।

विवाह दिवस संस्कार

क्यों और कैसे ?

नया उल्लास नया आरम्भ- पति-पत्नी को नये वर्ष में नये उल्लास एवं नये आनन्द से परिपूर्ण जीवन बनाने-बिताने की नई प्रेरणा के साथ अपना नया कार्यक्रम बनाना चाहिए। अब तक वैवाहिक जीवन अस्त-व्यस्त रहा हो, तो रहा हो; पर अब अगले वर्ष के लिए यह प्रेरणा लेनी चाहिए, ऐसी योजना बनानी चाहिए कि वह अधिकाधिक उत्कृष्ट एवं आनन्ददायक हो। उस दिन को अधिक मनोरञ्जक बनाने के लिए छुट्टी के दिन के रूप में मनोरञ्जक कार्यक्रम के साथ बिताने की व्यवस्था बन सके, तो वैसा भी करना चाहिए। केवल कर्मकाण्ड की दृष्टि से ही नहीं, भावना-उल्लास और उत्साह की दृष्टि से भी विवाह दिन की

अभिव्यक्तियों को नवीनीकरण के रूप में मना सकें, ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए।

यह तथ्य ध्यान में रखें- गृहस्थ एक प्रकार का प्रजातन्त्र है, जिसमें तानाशाही की गुञ्जाइश नहीं, दोनों को एक-दूसरे को समझना, सहना और निबाहना होगा। दोनों में से जो हुक्म चलाना भर जानता है, अपना पूर्ण आज्ञानुवर्ती बनाना चाहता है, वह गृह-शान्ति में आग लगाता है। दो मनुष्य अलग-अलग प्रकृति के ही होते और रहते हैं, उनका पूर्णतया एक में घुल-मिल जाना सम्भव नहीं। जिनमें अधिक सामञ्जस्य और कम मतभेद दिखाई पड़ता हो, समझना चाहिए कि वे सद्गृहस्थ हैं। मतभेद और प्रकृति भेद का पूर्णतया मिट सकना तो कठिन है। सामान्य स्थिति में कुछ न कुछ विभेद

बना ही रहता है, इसे जो लोग शान्ति और सहिष्णुता के साथ सहन कर लेते हैं, वे समन्वयवादी व्यक्ति ही गृहस्थ का आनन्द ले पाते हैं।

भूलना न चाहिए कि हर व्यक्ति अपना मान चाहता है। दूसरे का तिरस्कार कर उसे सुधारने की आशा नहीं की जा सकती। अपमान से चिढ़ा हुआ व्यक्ति भीतर ही भीतर क्षुब्ध रहता है। उसकी शक्तियाँ रचनात्मक दिशा में नहीं, विघटनात्मक दिशा में लगती हैं। पति या पत्नी में से कोई भी गृह व्यवस्था के बारे में उपेक्षा दिखाने लगे, तो उसका परिणाम आर्थिक एवं भावनात्मक क्षेत्रों में विघटनात्मक ही होता है। दोनों के बीच यह समझौता रहना चाहिए कि यदि किसी कारणवश एक को क्रोध आ जाए, तो दूसरा तब तक चुप रहेगा, जब तक कि दूसरे का क्रोध शान्त न हो जाए।

दोनों पक्षों का क्रोधपूर्वक उत्तर-प्रत्युत्तर अनिष्टकर परिणाम ही प्रस्तुत करता है। इन तथ्यों को दोनों ही ध्यान में रखें।

व्रत धारण की आवश्यकता- जिस प्रकार जन्मदिन के अवसर पर कोई बुराई छोड़ने और अच्छाई अपनाने के सम्बन्ध में प्रतिज्ञाएँ की जाती हैं, उसी तरह विवाह दिवस के उपलक्ष में पतिव्रत और पत्नीव्रत को परिपुष्ट करने वाले छोटे-छोटे नियमों को पालन करने की कम से कम एक-एक प्रतिज्ञा इस अवसर पर लेनी चाहिए। परस्पर 'आप या तुम' शब्द का उपयोग करना 'तू' का अशिष्ट एवं लघुता प्रकट करने वाला सम्बोधन न करना जैसी प्रतिज्ञा तो आसानी से ली जा सकती है।

पति द्वारा इस प्रकार की प्रतिज्ञाएँ ली जा सकती हैं- जैसे-

1 कटुवचन या गाली आदि का प्रयोग न करना।

2 कोई दोष या भूल हो, तो उसे एकान्त में ही बताना-समझाना, बाहर के लोगों के सामने उसकी तनिक भी चर्चा न करना।

3 युवती-स्त्रियों के साथ अकेले में बात न करना।

4 पत्नी पर सन्तानोत्पादन का कम से कम भार लादना।

5 उसे पढ़ाने के लिए कुछ नियमित व्यवस्था बनाना।

6 खर्च का बजट पत्नी की सलाह से बनाना और पैसे पर उसका प्रभुत्व रखना।

7 गृह व्यवस्था में पत्नी का हाथ बँटाना।

8 उसके सद्‍गुणों की समय-समय पर प्रशंसा करना।

9 बच्चों की देखभाल, साज-सँभाल, शिक्षा-दीक्षा पर समुचित ध्यान देकर पत्नी का काम सरल करना।

10 पर्दा का प्रतिबन्ध न लगाकर उसे अनुभवी-स्वावलम्बी होने की दिशा में बढ़ने देना।

11 पत्नी की आवश्यकताओं, सुविधाओं पर समुचित ध्यान देना आदि।

पत्नी द्वारा भी इसी प्रकार की प्रतिज्ञाएँ की जा सकती हैं- जैसे-

1 छोटी-छोटी बातों पर कुढ़ने, झल्लाने या रूठने की आदत छोड़ना।

2 बच्चों से कटु शब्द कहना, गाली देना या मारना-पीटना बन्द करना।

3 सास, ननद, जिठानी आदि बड़ों को कटु शब्दों में उत्तर न देना।

4 हँसते-मुस्कराते रहने और सहन कर लेने की आदत डालना, परिश्रम

से जी न चुराना, आलस्य छोड़ना।

5 साबुन, सुई, बुहारी इन तीनों को दूर न जाने देना, सफाई और मरम्मत की ओर पूरा ध्यान रखना।

6 उच्छृङ्खल फैशन बनाने में पैसा या समय तनिक भी खर्च न करना।

7 पति से छिपा कर कोई काम न करना।

8 अपनी शिक्षा-योग्यता बढ़ाने के लिए नित्य कुछ समय निकालना।

9 पति को समाज सेवा एवं लोकहित के कार्यों में भाग लेने से रोकना नहीं, वरन् प्रोत्साहित करना।

10 स्वास्थ्य के नियमों का पालन करने में उपेक्षा न बरतना।

11 घर में पूजा का वातावरण बनाये रखना, भगवान् की पूजा, आरती और भोग का नित्य क्रम रखना।

12 पर्दा के बेकार बन्धन की उपेक्षा करना।

13 पति, सास आदि के नित्य चरण स्पर्श करना। आदि-आदि।

हर दाम्पत्य जीवन की अपनी-अपनी समस्याएँ होती हैं। अपनी कमजोरियों, भूलों, दुर्बलताओं और आवश्यकताओं को वे स्वयं अधिक अच्छी तरह समझते हैं, इसलिए उन्हें स्वयं ही यह सोचना चाहिए कि किन बुराइयों-कमियों को उन्हें दूर करना है और किन अच्छाइयों को अभ्यास में लाना है। उपस्थित लोगों के सामने अपने सङ्कल्प की घोषणा भी करनी चाहिए; ताकि उन्हें उसके पालने में लोक-लाज का ध्यान रहे, साथ ही जो उपस्थित हैं, उन्हें भी वैसी प्रतिज्ञाएँ करने के लिए प्रोत्साहन मिले।

संस्कार क्रम-

विवाह दिवसोत्सव, विवाह संस्कार के संक्षिप्त संस्करण के रूप में मनाया जाता है। उसी कर्मकाण्ड प्रक्रिया का सहारा लेकर उसे नीचे लिखे क्रम से कराया जाना चाहिए- मङ्गलाचरण, षट्कर्म, कलश पूजन आदि कृत्य सम्पन्न करके देवशक्तियों और सत्पुरुषों की साक्षी में सङ्कल्प करें।

सङ्कल्प

............नामाऽहं दाम्पत्य जीवनस्य पवित्रता-मर्यादयोः रक्षणाय त्रुटीनाञ्च प्रायश्चित्त करणाय उज्ज्वलभविष्यत् हेतवे स्व उत्तरदायित्व पालनाय सङ्कल्पं अहं करिष्ये।

सङ्कल्प के बाद समय की सीमा का ध्यान रखते हुए देवपूजन, स्वस्तिवाचन आदि क्रम विस्तृत या संक्षिप्त रूप से

करायें। सामान्य क्रम पूरा हो जाने पर विवाह पद्धति के मन्त्रों का प्रयोग करते हुए नीचे लिखे क्रम से निर्धारित विशेष उपचार संक्षिप्त व्याख्या के साथ कराये जाएँ।

1 **परस्पर उपहार-सूत्र दुहरायें-**

ॐ अधिकार अपेक्षया
कर्त्तव्यं प्रधानं मनिष्ये।
(कर्त्तव्यों को महत्त्व देंगे-अधिकारों की उपेक्षा करेंगे।)
ॐ परिधास्यै यशोधास्यै,
दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि।
शतं च जीवामि शरदः,
पुरूचीरायस्पोषमभि संव्ययिष्ये॥

2 **माल्यार्पण-**

ॐ यशसा माद्यावापृथिवी
यशसेन्द्रा बृहस्पती।
यशो भगश्च मा विदद्यशो

मा प्रतिपद्यताम् ॥
-पार.गृ.सू.2.6.21,मा.गृ.सू.1.9.27

3 **ग्रन्थिबन्धन-सूत्र दुहरायें-**
ॐ द्विशरीरं एकप्राणं भविष्यामि।
(हम दो शरीर एक प्राण होकर रहेंगे।)
ॐ समञ्जन्तु विश्वे देवाः
समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता
समु देष्ट्री दधातु नौ ॥
-ऋ.10.85.47, पार.गृ.सू.1.4.14

4 **पाणिग्रहण-सूत्र दुहरायें-**
ॐ परस्परं सम्भावयिष्यामि।
(एक-दूसरे को सम्मान देंगे और सुयोग्य बनायेंगे।)
ॐ यदैषि मनसा दूरं
दिशोऽनुपवमानो वा।
हिरण्यपर्णो वै कर्णः स त्वा

मन्मनसां करोतु असौ॥

5 आश्वास्तना-सूत्र दुहरायें-

ॐ कुटुम्बं आदर्श विधास्यामि।

(परिवार के वातावरण को आदर्शमय बनायेंगे।)

ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्॥

- पार.गृ.सू.1.8.8

6 आहुति-

यज्ञ करें तो अग्निस्थापना, गायत्री मन्त्राहुति, महामृत्युञ्जय मन्त्राहुति एवं प्रायश्चित्ताहुति करके पूर्णाहुति करें। यदि यज्ञ करने की स्थिति न हो, तो दीपयज्ञ करें। पाँच दीप सजाकर रखें, गायत्री मन्त्र बोलते हुए उन्हें प्रकाशित करें।

प्रायश्चित्त आहुति के प्रथम मन्त्र के साथ पति-पत्नी दीपों की ओर अपनी हथेलियाँ करें, जैसे घृत अवघ्राण के समय करते हैं।

7 एकीकरण-

पति-पत्नी एक-एक दीपक उठाएँ। मन्त्र पाठ के साथ ज्योतियों को मिलाकर एक ज्योति करें। भावना करें कि हम अपने व्यक्तित्वों को एक दूसरे के साथ इसी प्रकार एकाकार करने का प्रयास करेंगे। दैवी अनुग्रह और स्वजनों के सद्भाव उसमें सहायक होंगे। सूत्र दुहरायें-

ॐ द्विशरीरं एकप्राणं भविष्यामि।

(हम दो शरीर एक प्राण होकर रहेंगे।)

भावना करें कि हम दो शरीर

होते हुए भी भावनात्मक रूप से एक बने रहेंगे। दो वर्तिकाओं को एक में मिलायें।

ॐ समानी व आकूतिः
समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो
यथा वः सुसहासति॥ -अथर्व. 6.64.3

फिर सभी लोग मङ्गल मन्त्र बोलते हुए पुष्पवृष्टि करें, शुभकामना-आशीर्वाद दें। विसर्जन, जयघोष एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन किया जाए।

आशौच (सूतक) विचार

सनातन धर्म मानने वालों के बीच जन्म-मरण के प्रसङ्गों में परिवार वालों को सूतक या आशौच की स्थिति से गुजरने की मान्यता प्रचलित है। इस क्रम में कुछ ऐसी परिपाटियाँ चल पड़ी हैं जिनके कारण आज की परिस्तियों में लोगों को बहुत कठिनाइयाँ होती है। ज्यादातर वह परिपाटियाँ लोक रीतियों पर आधारित होता हैं, और उन्हें समय-परिस्थितियों के अनुसार बदल दिया जाना उचित है। यथार्थ ज्ञान के अभाव में भोले-धर्म भीरु नर-नारी, किसी अनिष्ट या विसंगति से बचने के लिए उन्हें शास्त्रोक्त मानकर, किसी विसंगति के अनिवार्य भय से उनसे चिपके रहना चाहते हैं। इस भ्रम जनित, कष्टकर और अव्यावहारिक स्थिति से परिवारों को निकालना जरूरी हो गया है।

युगऋषि, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्री राम शर्मा आचार्य जी ने युग निर्माण अभियान के क्रम में तमाम धार्मिक रूढ़ियों-अन्धविश्वासों को समाप्त किया है। इस क्रम में उन्होंने यह ध्यान भी रखा है कि आध्यात्मिक नियमों का निर्वाह और जन-भावनाओं का सम्मान रखते हुए केवल विकृत रूढ़ियों को हटाया जाय। ऐसे ही कुछ कदम जन्म-मरण सूतक-सम्बन्धी मान्यताओं को ठीक करने के लिए उठाये जाने जरूरी हो गये हैं। उसी उद्देश्य के साथ जन-मान्यताओं के परिशोधन के निमित्त यह विचार मंथन सुधीपाठकों के सामने रखा जा रहा है।

यथार्थ समझें- यह स्पष्ट है कि धर्मिक परम्पराएँ कुछ सनातन नियमों तथा कुछ सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार बनायी जाती

हैं। समय बीतने के साथ सामाजिक परिस्थितियाँ बदल जाती हैं, इस लिए पुराने समय की अनेक उपयोगी परिपाटियाँ-अन्ध रूढ़ियाँ बनकर सताने लगती हैं। उनसे जुड़ें सनातन सिद्धान्तों को सुरक्षित रखते हुए सामाजिक विसंगतियों से बचते हुए उनके स्वरूप को सुधारते रहना जरूरी हो जाता है। विभिन्न सामाजिक संगठनों ने इस दिशा में अनेक सफल प्रयोग किये हैं।

जैसे-कभी विवाहों का क र्मकाण्ड तीन दिनों तक चलाया जाता था, अब उसे औसतन एक-डेढ़ घण्टे में पूरा कर दिया जाता है। यज्ञोपवीत सहित अन्य तमाम संस्कारों की जटिलताएँ समाप्त करकें उन्हें जनसुलभ और प्रभावशाली बना दिया गया है। संस्कारों को तीर्थ स्थलों और यज्ञीय आन्दोलनों में सम्पन्न

कराकर मूहूर्त्त वाद की तमाम विसंगतियों से समाज को बाहर निकाला जा रहा है। जन्म-मरण के सूतक के सन्दर्भ में ऐसा कुछ करना आवश्यक है।

सूतक-आशौच है क्या?

किसी घर में किसी शिशु का जन्म या किसी का निधन हो जाता है उस परिवार के सदस्यों को सूतक या अशुचि (शुद्धि) की स्थिति में बिताने होते हैं। धर्म ग्रन्थों में इस स्थिति को आशौच, आशुच्य तो सूतक कहा गया है। निधारित अवधि के बाद शुद्धि कर्म करने पर वे सहज स्थिति में आते हैं। शुद्धि के बाद ही परिजन वेदविहित अथवा धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न कर सकते है।

सूतक क्यों-

इस क्रम में दो प्रश्न उठते हैं।

- जन्म-मरण के प्रसगों में उस कुल परिवार के किन व्यक्तियों पर सूतक (आशौच) क्यों लागू होता है?
- इसे कितने दिन तक चलना चाहिए। सूतक क्यों लगता है -(क) इस सम्बन्ध में बहुत कम विचार मिलते हैं। सहज विवेक के आधार पर इसके दो स्वरूप बनते हैं।

1 बाहरी अशुद्धि-

जन्म-मरण के क्रम में स्वाभाविक स्वरूप से क्षेत्र और वातावरण में गन्दगी फैलती है। इससे अशुद्धि की स्थिति बनती है। धार्मिक कृत्य शुद्धि के बाद ही किए जाने चाहिए।

2 मानसिक विक्षोभ-

जन्म-मरण के क्रम में परिजनों के

मन सहज स्थिति में नहीं रहते। उनमें राग, शोक, भय आदि का प्रभाव बना रहता है। ऐसी विक्षोभ की अस्त-व्यस्त मानसिकता में धार्मिक प्रयोग सिद्ध नहीं होते। इसलिए उन विक्षोभों शमन तक उन प्रयोगो को रोक रखना उचित रहता है।

हारीत स्मृति का कथन है-

कुल का मरणाशौच होता है, क्योंकि मरण से वह विक्षुब्ध (दुखी-निराश) होता है। जब कोई नया जीवन प्रकट होता है, तो कुल वृद्धि होती है। सन्तुष्टि-सुख की अनुभूति होती है। स्पष्ट है कि हारीत ने परिजनो के मानसिक स्थिति को महत्त्व देते हुए मत व्यक्त किया है।

थियोसॉफि कल सोसाइटी- के विद्वानों का मत कुछ इस प्रकार मिलता

है कि स्थूल शरीर त्यागने के बाद चेतना का प्राण शरीर कुछ दिनों तक बना रहता है, वह अपने स्वजनों कि आस-पास मोहवश मँडराता रहता है, इससे उसकी मानसिकता और वहाँ का सूक्ष्म वातावरण प्रभावित होता है। इनके मत से समझदार-सुलझे हुए व्यक्तियों को मोह नहीं होता, इसलिए उनका प्राण शरीर जल्दी ही गल जाता है। मोह-ग्रस्त व्यक्तियों को 10 दिन तक का समय लगता है। (सम्भवतः इसीलिए शुद्धि की सामान्यः अवधि 10 दिन रखी होगी।)

॥ सूतक की अवधि ॥

सूतक आशौच की अवधि कितनी हो इस सम्बन्ध में बहुत से मत-मतान्तर मान्यताएँ हैं।

विवेक के अनुसार - तो परिस्थितियों के हिसाब से अवधि निश्चित की जानी

चाहिए। यदि जन्म-मरण प्रसंग घर की घटनाये जगह अस्पतालों में होते हैं तो स्थूल अशुद्धि का प्रभाव घर पर और घरवालों पर बहुत कम पड़ता है। जो प्रभाव हो उसे एक या दो दिन में मुक्त हुआ जा सकता है। घर पर होने पर भी 2-3 दिन में सफाई-शुचिता हो सकती है।

मानसिक - शुचिता तो व्यक्ति भेद से होती है।इसलिए इसकी अवधि निश्चित करना कठिन है। शास्त्रमत भी इस सन्दर्भ में कुछ इस प्रकार है, देखें-दक्ष स्मृति (5/2-3) ने आशौच के दस भेद बताये हैं,जैसे-तात्कालिक शौच वाला (केवल स्नान करने से समाप्त), एक दिन, तीन दिन, चार दिन, छः दिन, दस दिन, बारह दिन, एक पक्ष, एक मास एवं जीवन भर।

यथा-सद्यःशौचं

तथैकाहस्त्र्यहश्चतुरहस्तथा। षड्दशद्वादशाहाश्च पक्षो मासस्तथैव च।। मरणान्तं तथा चान्यद् दश पक्षास्तु सूतके। -दक्ष-5/2-3

उक्त कथन में '**एकाह**' का अर्थ है- दिन और रात दोनों। '**सद्यः**' का सामान्य अर्थ है 'उसी या इसी समय तत्क्षण या तात्कालिक या शीघ्र आदि'।

स्मृतियों में इस विषय में विभिन्न मत पाये जाते हैं और वे मध्यकाल की परम्पराओं से इतने भिन्न हैं कि मिताक्षरा (याज्ञवल्क्य स्मृति 3/22) ने चारों वर्णों के लिए आशौच से सम्बन्धित अवधियों को पराशर, शातातप, वसिष्ठ एवं अंगिरा से उद्धृत कर उनका क्रम बैठाने में असमर्थता प्रकट की है।कहा है उनके समय की प्रथाओं एवं ऋषियों के आदर्शों में भिन्नता है- 'मदन परिजात (पृ.392) भी मिताक्षरा का समर्थन

करता है और इस विरोध से हटने की अन्य विधियाँ उपस्थित करता है।'

स्मृतियों ने एक ही समस्या को किस प्रकार लिया है, इसके विषय में दो उदाहरण दिये जा सकते हैं। अत्रि (83), पराशर (3/4) एवं दक्ष (6/6)ने व्यवस्था दी है कि वैदिक अग्निहोत्री ब्राह्मण जिसने वेद पर अधिकार प्राप्त कर लिया है,(वेदों काअ ध्ययन त थात दनुसारज ीवन-यापन का क्रम बनाता है) वह जन्म-मरण के आशौच से एक दिन में मुक्त हो सकता है। जिसने वेद पर अधिकार प्राप्त कर लिया है, किन्तु श्रोताग्नियाँ नहीं स्थापित की है, वह तीन दिनों में तथा जिसने दोनों नहीं किये हैं, वह दस दिनों में मुक्त हो जाता है। मनुस्मृति 5/59 ने भी इसी प्रकार कई विकल्प दिया है।

आज की स्थिति में 'वेदज्ञ और श्रोताग्नियाँ स्थापित करने वाले कितने

मिलेंगे,' सम्भवतःशास्त्रकर्ता का आशय यही होगा कि जिनके अन्तकरण जितने शुद्ध हैं, वे उतनी ही जल्दी शुद्ध हो सकते हैं। अस्तु; आज की स्थिति में परिभाषाएँ आज के विवेक के अनुसाार निर्धारित करनी होंगी।

सम्बन्ध और परिस्थिति भेद से-

आशौच (सूतक)की अवधि के बारे में परस्पर सम्बन्धों और परिस्थितियों के अनुसार भी बहुत मतान्तर मिलते हैं। उदाहरण देखें -

पारस्करगृह्यसूत्र (3/10/29-30) ने कहा है कि मरणाशौच सामान्यतः तीन रातों तक रहता है, किन्तु यदि मृत बच्चा पुत्र है तो माता-पिता को, तीन दिनों का, और यदि मृत बच्चा लड़की है तो एक दिन का आशौच करना पड़ता है (देखिए याज्ञ. 3/23; शंखस्मृति 15/4; अत्रिस्मृति 95 एवं आशौचदशक, श्लोक

2)। यदि बच्चा दाँत निकलने के पश्चात्, किन्तु चूडाकर्म के पूर्व अर्थात् तीसरे वर्ष के अन्त में मर जाय तो सपिण्डों को एक दिन एवं एक रात्रि का सूतक मानना चाहिए।

यदि बच्चा लड़की हो तो सपिण्ड लोग उसके तीसरे वर्ष की मृत्यु पर स्नान करके पवित्र हो जाते हैं। यदि चूडाकरण के पश्चात् और उपनयन या विवाह के बीच मृत्यु हो तो पिता एवं सपिण्ड तीन दिनों तक आशौच मानते हैं। किन्तु समानोदक लोग स्नान के उपरान्त पवित्र हो जाते हैं। उपनयन के उपरान्त सभी सपिण्ड लोग मृत्यु पर 10 दिनों का (गौतम. 14/1, मनु. 5/59, आशौचक दशक, 2) एवं समानोदक तीन दिनों का आशौच मनाते हैं। कुछ एक का कहना है कि विवाहित कन्या अपने पिता के ग्राम के अतिरिक्त कहीं और मरती है तो

माता-पिता को पक्षिणी (दो रात एवं मध्य में एक दिन या दो दिन एवं मध्य में एक रात) का आशौच होता है। विवाहित कन्या अपने माता-पिता का अन्त्यकर्म करती है, तो पक्षिणी का आशौच होता है।

उक्त प्रकरण में शुद्धि की विभिन्न मर्यादाओं के साथ यह तथ्य भी स्पष्ट होता है कि शास्त्रों के अनुसार बेटियाँ भी अपने माता-पिता का अन्त्यकर्म (अन्तिम संस्कार और उससे सम्बन्धित कर्म) सम्पन्न कर सकती हैं। उन्हें केवल दो रात एवं मध्य में एक दिन मध्य की रात (पक्षिणी) का आशौच होता है(गौतम. 14/1, मनु. 5/59 आशोचक दशक-2)।

विष्णु धर्मसूत्र (22/32-34) का कथन है कि विवाहित स्त्री के लिए माता-पिता का आशौच नहीं लगता, किन्तु जब वह पिता के घर में बच्चा

जनती है या मर जाती है तो क्रम से एक या तीन दिनों का आशौच लगता है। यदि मामा मर जाता है तो भाञ्जा एवं भाञ्जी एक पक्षिणी का आशौच निभाते हैं। यदि मामा भाञ्जे के घर में मरता है तो भाञ्जे के लिए आशौच तीन दिनों का, यदि मामा का उपनयन नहीं हुआ हो या वह किसी अन्य ग्राम में मरता है तो आशौच एक दिन का होता है।

पुत्री की पुत्री के मरने पर नाना और नानी को आशौच नहीं लगता, इन विषयों में सामान्य नियम यही है कि उपनयन संस्कृत पुरुष एवं विवाहित स्त्री ही माता-पिता के अतिरिक्त किसी अन्य सम्बन्धी की मृत्यु पर आशौच मनाते हैं (अर्थात् उपनयन संस्कारविहीन पुरुष तथा अविवाहित स्त्री माता या पिता की मृत्यु पर ही नियम पालन करते हैं)।

दामाद के घर में श्वशुर या सास के मरने पर दामाद को तीन दिनों का तथा अन्यत्र मरने से एक पक्षिणी का आशौच लगता है। दामाद की मुत्यु पर श्वशुर एवं सास एक दिन का आशौच करते हैं या केवल स्नान करने मात्र से शुद्ध हो जाते हैं, (यदि दामाद ससुराल में मरते तो) किन्तुस ुसरालम ेंम रनेप रश्व शुरव सास को तीन दिनों का आशौच करना पड़ता है। साले के मरने पर (यदि वह उपनयन संस्कृत हो) एक दिन का आशौच होता है, यदि साला उपनयन संस्कार-विहीन हो या किसी अन्य ग्राम में मर जाय तो केवल स्नान कर लेना पर्याप्त है।

मौसी के मरने पर व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) को एक पक्षिणी का आशौच करना चाहिए , यही नियम फूफी (बुआ) के मरने पर लागू होता है; किन्तु फूफी,

पिता की माता-बहिन (पिता की उम्र से बड़ी बहन) हो तो स्नान ही पर्याप्त है। फूफी या मौसी व्यक्ति के घर में मर जाय तो आशौच तीन दिनों का होता है।

जब आचार्य मरता है, तो शिष्य को तीन दिनों के लिए आशौच करना पड़ता है, किन्तु वह दूसरे गाँव में मरता है, तो एकि दनक ाअ ाशौचक रनाप ड़ताहै (गौतम. 14/26 एवं 52 तथा मनु. 5/80)।

आचार्य पत्नी एवं आचार्य पुत्र की मृत्यु पर एक दिन का आशौच निश्चित किया गया है- (विष्णु धर्म सूत्र 22/44)।

गुरु (वैदिक मन्त्रों की शिक्षा देता है) की मृत्यु पर तीन दिन का और जब वह किसी अन्य ग्राम में मरता है, तो एक पक्षिणी का आशौच लगता है। उस शिक्षक की मृत्यु पर जो व्याकरण, ज्योतिष एवं वेदों के अन्य अंगों की

शिक्षा देता है, एवं एक दिन का आशौच करना पड़ता है। देखिए गौतम. (14/19-20) जो सहाध्यायी (सहपाठी)या आश्रित श्रोत्रिय की मृत्यु पर एक दिन का आशौच निर्धारित है।

जब तक ग्राम से शव बाहर नहीं जाता, सारा गाँव आशौच में रहता है। (आपस्तम्बधर्मसूत्र 1/3/14) के मत से ग्राम में शव रहने पर वेद का अध्ययन रोक दिया जाता है। जब उस गाँव में 400 से अधिक ब्राह्मण निवास करते हैं तो यह नियम नहीं लागू नहीं होता, किन्तु इतना जोड़ा है कि कस्बे में इस की छूट है।

मिताक्षरा (याज्ञ. स्मृति 3/1) ने आशौच को पुरुषगत आशौच कहा जाता है, जो काल, स्नान आदि से दूर होता है, जो मृत को पिण्ड, जल आदि देने का प्रमुख कारण है और जो वैदिक अध्यापन तथा अन्य कृत्यों को छोड़ने

का कारण बनता है। आशौच से सम्बन्धित अवधियों को पराशर, शातातप, वसिष्ठ एवं अंगिरा से उद्धृत कर उनका क्रम बैठाने में असमर्थता प्रकट की है और उद्घोष किया है कि उसके समय की प्रथाओं एवं ऋषियों के आदेशों में भिन्नता है। 'मदनपारिजात (पृ. 392) मिताक्षरा का समर्थन करता है।' बृहस्पति (हारलता, पृ. 5; हरदत्त, गौतम. के 14/1 की टीका में) के मत से वेदज्ञ एवं आहिताग्नि तीन दिनों में शुद्ध हो जाता है।

शांखायन श्रौत सूत्र एवं मनुस्मृति ने दृढ़तापूर्वक कहा है कि आशौच के दिनों को आलस्य द्वारा बढ़ाना नहीं चाहिए। (मनु. 5/84)। श्रद्धा त्याग-विहीन (जो अविश्वासी या अधार्मिक एवं दया-दाक्षिण्य से हीन) है, वह मरणान्त या भस्मान्त (भस्म हो जाने अर्थात् मर

जाने के उपरान्त चिता पर राख जो जाने) तक अशुद्ध रहता है। कूर्म पुराण (उत्तर, 23/9) ने व्यवस्था दी है-

'क्रियाहीनस्य मूर्खस्य
महारोगिण एव च।
यथेष्टाचरणस्येह
मरणान्तमशौचकम्॥

(हारलता पृ.15)।

उक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि यह नियम परिस्थितियों के अनुसार विवेकपूर्वक निर्धारित करना उचित है। छोटे गाँवों में शोक का वातावरण पूरे गाँव में छा जाता है, किन्तु बड़े गाँव-कस्बे में अथवा अधिक संख्या में ब्राह्मण होने पर वह स्थिति नहीं बनती, इसलिए वहाँ नियमों में छूट मिलती है।

विशेष प्रसङ्गों में-

विष्णुपुराण (3/13/7) में ऐसी व्यवस्था

है कि शिशु की मृत्यु पर या देशान्तर में किसी की मृत्यु पर, या पण्डित या यति (संन्यासी) की मृत्यु पर, या जल, अग्नि या फाँसी पर लटका कर मर जाने वाले आत्मघातक की मृत्यु पर सद्यःशौच होता है। गौतम स्मृति (14/42) तथा वामनपुराण (14/99) में भी यही मत व्यक्त किये गये हैं।

याज्ञवल्क्य स्मृति (3/28-29)के मतस`य ज्ञके ि लयेव रण ि कयेग ये पुरोहितों को, जब उन्हें मधुपर्क दिया जा चुका हो,जनन या मरण की स्थिति में, सद्यःशौच (स्नान द्वारा शुद्धि)करना पड़ता है।यही बात उन लोगों के लिए भी है जो सोमयाग जैसे वैदिक यज्ञों के लिए दीक्षित हो चुके हैं, जो किसी दान ग्रह में भण्डारे में भोजन दान करते रहते हैं, जो चान्द्रायण जैसे व्रत या स्नातकधर्म-पालन में लगे रहते हैं, जो ब्रह्मचारी

(आश्रम के कर्तव्यों में संलग्न) हैं, जो प्रतिदिन गौ, सोने आदि के दान में लगे रहते हैं(दान के समय)जो ब्रह्मज्ञानी (संन्यासी) हैं, देते समय विवाह वैदिक यज्ञों, युद्ध(उनके लिए जो अभी युद्ध भूमि में जाने वाले हैं), (आक्रमण के कारण) देश में विप्लव के समय तथा दुर्भिक्ष या आपातकाल में मरने वालों के लिए भी सद्यःशौच होता है।

गौतम स्मृति (14/43-44) का कथन है कि राजाओं (नहीं तो उनके कर्तव्यों में बाधा पड़ेगी) एवं ब्राह्मणों के लिए सद्यःशौच होता है। यही बात शंख-स्मृति लिखित है, (राजा धर्म्यायतनं सर्वेषां तस्मादनवरुद्धः प्रेतप्रसवदोषैः) ने भी कहीं है। (शुद्धिकल्पतरु पृ. 62 में)। 'सद्यःशौच राजा की उस स्थिति के लिए व्यवस्थिति है, जो पूर्व जन्मों के सद्गुणों से प्राप्त होती है, अतः इस

नियम की व्यवस्था उसकी इस स्थिति के कारण ही है।

गोभिलस्मृति (3/64-65) का कथन है कि सूतक में ब्रह्मचारी को अपने विशिष्ट कर्म (वेदाध्ययन एवं व्रत) नहीं छोड़ने चाहिए, दीक्षित होने पर यजमान को यज्ञ-कर्म नहीं छोड़ना चाहिए, प्रायश्चित करने वाले को कृच्छ आदि नहीं त्यागना चाहिए, ऐसे लोग पिता-माता के मरने पर भी अशुद्धि को प्राप्त नहीं होते।

कूर्मपुराण (उत्तरार्ध पृ. 23/61) का कथन है कि नैष्ठिक ब्रह्मचारी (जो जीवन भर वेदाध्ययन करते रहते हैं और गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट नहीं होते) एवं यति (संन्यासी) के विषय में मृत्यु पर आशौच नहीं होता। मिताक्षरा (याज्ञवल्क्य स्मृति 3/28) का कथन है कि ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ एवं संन्यास के

आश्रमों के विषय में किसी भी समय या किसी भी विषय में आशौच नहीं लगता। संन्यासियों एवं ब्रह्मचारियों को माता-पिता की मृत्यु पर वस्त्रसहित स्नान मात्र कर लेना चाहिए (धर्मसिन्धु पृ. 442)।उन लोगों के विषय में, जो लगातार दान-कर्म में संलग्न रहते हैं या व्रतादि करते रहते हैं, केवल तभी आशौच नहीं लगता, जब कि वें उन विशिष्ट कृत्यों में लगे रहते हैं, किन्तु जब वे अन्य कर्मों में व्यस्त रहते हैं या अन्य लोगों के साथ दैनिक कर्म में संयुक्त रहते हैं तब आशौच से मुक्ति नहीं मिलती।

उदाहरणार्थ- पराशर स्मृति (3/20-21) का कथन है कि- शिल्पी (यथा चित्रकार या धोबी या रंगसाज), कारुक (नौकर-चाकर आदि) करने वाले, सत्र(गवामयन आदि)में लगे

रहने के कारण पवित्र हो गये लोग, वह ब्रह्मण जो आहिताग्नि (श्रोताग्नियों को प्रतिष्ठित करने वाला) है, सद्यःशौच करते हैं, राजा भी आशौच नहीं करता, और वह भी (यथा राजा का पुरोहित), जिसे राजा अपने काम के लिए वैसा नहीं करने देना चाहता। परोहित कार्य व्यवस्था अर्न्तगत सोपा गया है उन्हे आशौच स्थिति आने पर भी अपने सहज क्रम करते रह सकते है देखें- (पराशर स्मृति 3/20-21)।

गौतम स्मृति (14/11) एवं शंख-लिखित ने व्यवस्था दी है कि उनके लिए सद्यःशौच होता है, जो आत्महन्ता होते हैं और अपने प्राण महायात्रा (हिमालय आदि में जाकर), उपवास, कृपाण जैसे अस्त्रों, अग्नि, विष या जल से या फाँसी पर लटक जाने से, (रस्सी से झूल कर) या प्रपात में कूदकर जान गवाँ देते हैं।

समीक्षात्मक चिन्तन

उक्त सभी प्रकरणों का विवेचन विवेकपूर्वक करने से निम्नानुसार निष्कर्ष निकलते हैं।

आशौच का सम्बन्ध क्षेत्र तथा वातावरण को स्वच्छ बनाने तथा विक्षुब्ध मानसिकता को सन्तुलन में लाने के प्रयासों से है। परिवार एवं समाज की व्यवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए शुद्धि के लिए समय और कर्मकाण्ड का निर्धारण किया जाता रहा है। 'मदन पारिजात' ने तो इस सम्बन्ध में अपना मत बहुत स्पष्टता से व्यक्त कर दिया है, देखें-

लोकसमाचारादनादरणीयमिति केचन।
अथवा देशाचारतो व्यवस्था।
उत गुणवदगुणद्विषये यथाक्रमं न्यूनाधिककल्पाश्रयेण निर्वाहः।
किंवा आपदनापद्भेदेन व्यवस्था।

-मदनपारिजात पृ.-392

अर्थात्- इस सन्दर्भ में विभिन्न व्यवस्थाओं को लोकाचार या देशाचार के अनुसार उचित महत्व देना चाहिए। अथवा इनसे प्रभावित व्यक्तियों के गुणों-अवगुणों पर विचार करके सूझ-बूझ के साथ इनका कम या अधिक निर्वाह करना चाहिए। अथवा इन्हें आपदाओं आदि के अनुसार प्रयुक्त होने या न होने योग्य मान लेना चाहिए। युगऋषि के मार्गदर्शन के अनुसार युगतीर्थ- शान्तिकुञ्ज हरिद्वार में इसी प्रकार विवेकपूर्वक सूतक-शुद्धि का क्रम औसतन 3 दिन में सम्पन्न करा दिया जाता है।

आज के व्यस्त जीवन में श्राद्ध-शुद्धि की लम्बी अवधि के कर्मों का निर्वाह अधिकांश व्यक्तियों के लिए नहीं है, इसलिए अतिव्यस्तता के कारण-उत्तर भारत के अनेक शहरों में तीन दिन

में ही सभी कर्म सम्पन्न किए-कराये जाने लगे हैं। जहाँ परिपाटियों के अनुसार लम्बी अवधि के कठिन क्रम किए कराए जाते हैं, वहाँ लोग बहुत परेशानियाँ अनुभव करते हैं। श्राद्धकर्म श्रद्धा आधारित होते हैं तभी उनका उचित लाभ मिलता है। जहाँ मजबूरी-लाचारी -परेशानी के भाव आ जाते हैं वहाँ श्रद्धाभाव पीछे खिसक जाते हैं और कर्मकाण्डों का अधिक प्रभाव नहीं पड़ता । इसलिए उचित यहीं है कि मन में से भय या असमंजस निकालकर, विवेकपूर्वक उक्त प्रक्रियाओं का समुचित निर्वाह किया जाय। इस सन्दर्भ में नीचे लिखे अनुसार निर्धारण को अपनाया जा सकता है।

जन्म और मरण के सूतकों के क्रम में स्थान और वातावरण की शुद्धि के प्रयास विवेकपूर्वक शीघ्र से शीघ्र पूरे

किए जायें। इससे सम्बन्धित स्थानों और वस्त्रों की सफाई, भली प्रकार हो। इसके लिए नीम की पत्तियाँ उबालकर तैयार पानी, लाल दवा, फिनायल जैसी सहज सुलभ दवाओं और यज्ञोपचार का उपयोग किया जा सकता है।

मानसिक सन्तुलन लाने के लिए सामूहिक जप, कथा-कीर्तन आदि का सहारा लिया जाय। मृत्यु प्रकरण में इस हेतु कुछ लोग परम्परागत ढंग से गरुड़ पुराण का पाठ करवाते हैं। वह बुरा तो नहीं, किन्तु आज के समय में उससे एक रूढ़िवाद का निर्वाह भर हो पाता है। परिवार के लोग उतने लम्बे प्रकरण को न तो सुन पाते हैं और न मरणोत्तर जीवन का सत्य समझ कर उसका लाभ उठा पाते हैं।

इस सन्दर्भ में एक विनम्र सुझाव है कि युगऋषि की लिखी एक छोटी

पुस्तक है- ''मरने के बाद हमारा क्या होता है।'' उसे लगभग एक डेढ़ घण्टे में पढ़ा, सुनाया या समझाया जा सकता है। यदि कोई अध्ययनशील-विचारशील व्यक्ति प्रभावित परिजनों को वह विषय सुना समझा दे, तो उससे बहुत अच्छे ढंग से अपना उद्देश्य पूरा हो सकता है।

अन्त्येष्टि के बाद तीन दिन में श्राद्ध सहित शुद्धि का क्रम पूरा कर लिया जाय। इसके साथ ही यदि परिजनों की भावना है और व्यवस्था बन सकती है तो 10 या 13 दिन तक मृतक का चित्र रखकर उसके सामने तेल का अखण्ड दीपक जलाया जाय। परिवार के सदस्य और स्नेही परिजन वहाँ प्रतिदिन कम से कम एक घण्टा इष्टमन्त्र या नाम का सामूहिक जाप करें। मृतात्मा की शान्ति-सद्गति के लिए प्रार्थना करें। श्राद्ध कर्म शास्त्रसम्मत तथा

विज्ञानसम्मत हैं, इसे पूरी श्रद्धा के साथ पूरा किया जाय। इसके लिए संक्षिप्त सर्वसुलभ और प्रभावशाली पद्धति युग निर्माण मिशन द्वारा तैयाार कर दी गयी है। सच्चे श्राद्ध के कई लाभ होते हैं, जैसे-

- अपने पितरों की सन्तुष्टि और सद्गति के लिए अपनी सामर्थ्य भर श्रद्धापूर्वक प्रयास करना हर व्यक्ति का धर्म-कर्तव्य बनता है। इसे पूरा करने वालों की श्रद्धा विकसित होती है, कर्तव्य पूर्ति का सन्तोष मिलता है और पितृदोष जैसी विसंगतियों से बच जाते हैं।
- श्राद्ध कर्म करने वालों को सन्तुष्ट पितरों के स्नेह अनुदान सहज ही मिलते रहते हैं।
- श्रद्धा-कृतज्ञता के भावों का विस्तार होता है, उससे सूक्ष्म वातावरण अनुकूल बनता है तथा नई पीढ़ी में

भी वे भाव सहजता से जाग जाते हैं। श्राद्ध के साथ जुड़ी कुरीतियों, अन्ध परम्पराओं (जैसे- खर्चीले-मृतकभोज, आशौच की मनगढ़न्त परिपाटियों आदि) को महत्व न देकर उनका निर्वाह विवेकपूर्वक किया जाय।

- हर समाज एवं हर वर्ग के प्रगतिशील, भावनाशील, समझदार व्यक्ति इस दिशा में जन-जागरूकता लाने तथा परिपाटियों को विवेक सम्पन्न बनाने के लिए विशेष प्रयास करें।

जीवित श्राद्ध विधान

सनातन धर्म में यह भी व्यवस्था है कि कोई व्यक्ति चाहे तो अपने जीवन काल में ही श्राद्ध कर्म को स्वयं सम्पन्न कर सकता है। इस प्रक्रिया को 'जीवित श्राद्ध' कहा जाता है। जिन्होंने 'जीवित श्राद्ध' कर लिया हो, उनके परिवार वालों को यह छूट रहती है कि चाहे तो आशौच आदि का निर्वाह करें या ना करें। तात्पर्य यह है कि उस परिवार के परिजनो पर आशौच के नियम अनिवार्यतः लागू नही होते। यदि श्रद्धावश वे श्राद्धकर्म आदि करना चाहे तो कर भी सकते हैं। महात्मागांधी राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के सर सञ्चालक गुरु गोलवरकर जी आदि ने अपना श्राद्धकर्म (जीवित श्राद्ध) स्वयं किया था। शान्तिकुञ्ज द्वारा भी अनेक

व्यक्तियों का जीवित श्राद्ध सम्पन्न कराया गया है।

मर्यादाएँ-

प्रत्येक संस्कार की तरह स्व-श्राद्ध की भी कुछ मर्यादाएँ हैं। करने वालों को इन्हें भली प्रकार समझ लेना चाहिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में धर्मविज्ञान के विभागाध्यक्ष महामहोपाध्याय श्री प्रभुदत्त शास्त्री कृत संस्कृत में मुद्रित पुस्तक 'जीविच्छ्राद्ध प्रयोग' में उल्लेख है कि यह प्रयोग को किसी भी वर्ण के नर-नारी सम्पन्न कर सकते हैं। जो यह प्रयोग करना चाहें, उन्हें इससे पहले निम्नाङ्कित कार्य कर लेने चाहिए-

- अपनी जानकारी के आधार पर अपने सभी प्रकार के ऋणों से मुक्त हो लें। अपेक्षित लेन-देन पूरा करके, मन हलका कर लें।

- जाने-अनजाने में अपने द्वारा हुए पातकों से मुक्त होने के लिए प्रायश्चित्त, गोदान सहित दस महादान आदि सम्पन्न कर लें।

प्रायश्चित्त के प्रत्यक्ष

- अपने जीवन की समीक्षा पूरी ईमानदारी से करें, यदि कहीं किसी का अधिकार छीना हो, किसी को पीड़ा पहुँचाई हो, अनधिकार चेष्टा की हो; तो उसे अपने इष्ट एवं गुरु के सामने निष्कपट भाव से स्वीकार करें।
- जिस स्तर की भूलें की हों, उनके अनुरूप जप-तप अनुष्ठान सङ्कल्पपूर्वक करें।
- अपने द्वारा प्रकृति, व्यक्ति या समाज को जितनी क्षति पहुँचाई गयी हो, उसकी पूर्ति अपनी सामर्थ्य भर

ईमानदारी से करने का प्रयास करें।

- अपनी मनोभूमि और व्यवस्था कुछ इस प्रकार बना लें कि स्व-श्राद्ध के बाद लगभग निष्काम, निरपेक्ष जीवन जी सकें।
- निर्देशित क्रमानुसार यह प्रयोग किया-कराया जा सकता है।

प्रयोग विधि-

यह प्रयोग किसी भी माह के कृष्ण पक्ष की द्वादशी तिथि से प्रारम्भ करके अमावस्या तिथि को पूर्ण किये जाने का विधान है।

कृष्ण द्वादशी (प्रथम दिन) का कृत्य

आवश्यक सामग्री-

प्रायश्चित्त विधान के लिए-अक्षत, पुष्प, रोली, कलावा, यज्ञोपवीत, गंगाजल या शुद्धजल, गोदुग्ध, गो दधि, गोघृत, शहद, हल्दी, कुश, यज्ञभस्म, मिट्टी,

गोबर, गोमूत्र, मिट्टी के दीपक 10 नग या स्टील की कटोरी 10 नग, तौलिया- या गमछा- 2 नग, पञ्चपात्र, आचमनी, दान करने हेतु गाय सहित सभी आवश्यक वस्तुएँ।

प्रयोग करने वाला व्यक्ति द्वादशी के दिन उपवास (फलाहार-शाकाहार, या एक बार अस्वाद भोजन) करे।

कृष्ण द्वादशी के दो प्रमुख कर्मकाण्ड

1 प्रायश्चित्त विधान।

2 गाय सहित दस महादान।

कर्मकाण्ड (जीवित श्राद्ध विधान)

मङ्गलाचरण, पवित्रीकरण से स्वस्तिवाचन *(पेज 24-75)* प्रारम्भिक कर्मकाण्ड से सम्पन्न करायें, तत्पश्चात् तीर्थ आवाहन करें।

॥ तीर्थ आवाहनम् ॥

ॐ पुष्करादीनि तीर्थानि,

गंगाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि,
स्नानकाले सदा मम॥
त्वं राजा सर्वतीर्थानां,
त्वमेव जगतः पिता।
याचितं देहि मे तीर्थं,
तीर्थराज नमोऽस्तु ते॥
अपामधिपतिस्त्वं च,
तीर्थेषु वसतिस्तव।
वरुणाय नमस्तुभ्यं,
स्नानानुज्ञां प्रयच्छ मे।
गंगे च यमुने चैव,
गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि,
जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

॥दशविध स्नान॥

भावना और प्रेरणा-

1 भस्म से स्नान करने की भावना यह

है कि शरीर भस्मान्त है। कभी भी मृत्यु आ सकती है, इसलिए सम्भावित मृत्यु को स्मरण रखते हुए, भावी मरणोत्तर जीवन की सुख-शान्ति के लिए तैयारी आरम्भ की जा रही है।

2 मिट्टी से स्नान का मतलब है कि जिस मातृभूमि का असीम ऋण अपने ऊपर है, उससे उऋण होने के लिये देशभक्ति का, मातृभूमि की सेवा का व्रत ग्रहण किया जा रहा है।

3 गोबर से तात्पर्य है- गोबर की तरह शरीर को खाद बनाकर संसार को फलने-फूलने के लिए उत्सर्ग करना।

4 गोमूत्र क्षार प्रधान रहने से मलिनता नाशक माना गया है। रोग कीटाणुओं को नष्ट करता है। इस स्नान में शारीरिक और

मानसिक दोष-दुर्गुणों को हटाकर भीतरी और बाहरी स्वच्छता की नीति हृदयंगम करनी चाहिए।

5 दुग्ध स्नान में जीवन को दूध-सा धवल, स्वच्छ, निर्मल, सफेद, उज्ज्वल बनाने की प्रेरणा है।

6 दधि स्नान का अर्थ है- नियन्त्रित होना, दूध पतला होने से इधर-उधर ढुलकता है, पर दही गाढ़ा होकर स्थिर बन जाता है। भाव करें-अब अपनी रीति-नीति दही के समान स्थिर रहे।

7 घृत स्नान की भावना है, चिकनाई। जीवन क्रम को चिकना-सरल बनाना, जीवन में प्यार की प्रचुरता भरे रहना।

8 सर्वौषधि (हल्दी) स्नान का अर्थ है-अवांछनीय तत्त्वों से संघर्ष। हल्दी रोग-कीटाणुओं का नाश

करती है, शरीर एवं मन में जो दोष-दुर्गुण हों, समाज में जो भी विकृतियाँ दीखें, उनसे संघर्ष करने को तत्पर होना।

9 कुशाओं के स्पर्श का अर्थ है- तीक्ष्णतायुक्त रहना। अनीति के प्रति नुकीले, तीखे बने रहना।

10 मधु स्नान का अर्थ है- समग्र मिठास। सज्जनता, मधुर भाषण आदि सबको प्रिय लगने वाले गुणों का अभ्यास। दस स्नानों का कृत्य सम्पन्न करने से दिव्य प्रभाव पड़ता है। उनके साथ समाविष्ट प्रेरणा से आन्तरिक उत्कर्ष में सहायता मिलती है।

भस्मस्नानम्

ॐ प्रसद्य भस्मना
योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।

सᳪं सृज्य मातृभिष्ट्वं
ज्योतिष्मान् पुनराऽसदः ॥ -12.38

मृत्तिकास्नानम्

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् ।
समूढस्य पाᳪं सुरे स्वाहा ॥ -5.15

गोमयस्नानम्

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि
मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः । मा
नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः
सदमित् त्वा हवामहे ॥ -16.16

गोमूत्रस्नानम्

ॐ भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ -36.3

दुग्धस्नानम्

ॐ आ प्यायस्व समेतु ते
विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ।

भवा वाजस्य सङ्गथे॥ -12.112

दधिस्नानम्

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं
जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुख करत्प्र णऽ
आयूꣳषि तारिषत्॥ -23.32

घृतस्नानम्

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां
वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य
हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो
विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ -6.19

सर्वौषधिस्नानम्

ॐ ओषधयः समवदन्त
सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ꣳ
राजन् पारयामसि॥ -12.96

कुशोदकस्नानम्

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोः
बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि
बृहस्पतेष्ट्वसाम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥
-9.30

मधुस्नानम्

ॐ मधु वाता ऽ ऋतायते
मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
ॐ मधु नक्तमुतोषसो
मधुमत्पार्थिव ँ रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता।
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिः
मधुमाँ2अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः। -13.27 से 29

॥शुद्धोदकस्नानम्॥

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो
मणिवालस्तऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥

-24.3

यज्ञोपवीतधारणम् से **रक्षासूत्रम्** तक *(पेज 35-39)* में देखें।

॥ हेमाद्रि सङ्कल्प ॥

क्रिया और भावना-

हाथों में सङ्कल्प के अक्षत-पुष्प दें तथा भावनापूर्वक सङ्कल्प दुहराने का आग्रह करें। भावना करें कि हम विशाल तन्त्र के एक छोटे, किन्तु प्रामाणिक पुर्जे हैं। विराट् सृष्टि ईश्वरीय योजना, देव संस्कृति के अनुरूप हमें बनना है, ढलना है। हमारे सङ्कल्प के साथ वातावरण की शुचिता और देव अनुग्रह का योगदान मिल रहा है। परमात्म सत्ता की प्रतिनिधि आत्मसत्ता पुलकित-

हर्षित होकर सक्रिय हो रही है।

ॐ विष्णुर्विष्णु:र्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे भूर्लोके जम्बूद्वीपान्तर्गते भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते.....क्षेत्रे.....मासा नां मासोत्तमेमास.....मासे.....पक्षे .....तिथौ.....वासरे.....गोत्रोत्पन्नः..... नामाहं ज्ञाताज्ञात-स्तेय-अनृतभाषण-नैष्ठुर्य-सङ्कीर्णभाव-असमानता-कपट-विश्वासघात-कटूक्ति-पति-पत्नी व्रतोत्सर्ग-ईर्ष्या-द्वेष-कार्पण्य-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य-जनक-जननी गुर्वादि-पूज्यजन-अवज्ञा-जाति-लिङ्गादि-जनित-उच्चनीचादि असमता-मादकपदार्थ सेवन-सुरापन-मांसादि अभक्ष्यआहार-आलस्य-अतिसङ् ग्रह-

द्यूतक्रीडा-इन्द्रिय-असंयमानां स्वकृतचतुर्विंशति संख्यकानां दोषाणां परिहारार्थं प्रायश्चित्त सङ्कल्पं अहं करिष्ये।

धेनु सहित दश महादान-

1 गाय (जैसी स्थिति हो, योग्य व्यक्ति या संस्था को गो दान किया जाय अथवा गौ सेवा के लिए दान किया जाय)

2 भूमि (यदि अपने पास स्वयं सँभालने से अधिक भूमि हो, तो उसका कुछ अंश किसी भूमिहीन या लोकसेवी संस्था को दान दें)

3 धन (जरूरत मन्दों को दान दें)

4 वस्त्र (वस्त्रहीनों को दान दें)

5 निवास (किसी सत्पात्र को आवास देना या उसके आवास की मरम्मत कराना)

6 अन्न (भूखों को भोजन कराएँ)

7 शिक्षा (गरीब छात्रों को स्कॉलर शिप आदि व्यवस्था बनाएँ)

8 स्वास्थ्य (व्यायाम शाला आदि के निर्माण में योगदान दें)

9 स्वच्छता (सार्वजनिक स्थलों में योगदान)

10 ब्रह्मभोज में सत्साहित्य बाँटें। उक्त ये सभी दान किसी सत्पात्र पुरुष या लोकसेवी संस्था को अपनी आर्थिक स्थिति देखकर ही दें।

॥गो-आवाहन॥

ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा
गामनागामदितिं वधिष्ट॥-ऋ.8.101,15
ॐ गोभ्यः नमः। जलं, गन्धाक्षतं,
पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि।

॥ गो प्रार्थना ॥

हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र से गो माता की प्रार्थना करें।

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः,
सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च,
पवित्राभ्यो नमोनमः॥
गावो ममाग्रतः सन्तु,
गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे सर्वतः सन्तु,
गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

॥ गोपाल पूजन ॥

ॐ वसुदेव सुतं देवं,
कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकी परमानन्दं,
कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥

॥ आचार्य पूजन ॥

ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय,

गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय,
गोविन्दायनमो नमः॥

॥ सवत्स गो सहित दशमहादान का सङ्कल्प॥

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णेराज्ञया प्रवर्तमानस्य, अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धेश्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वमन्वन्तरे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैक-देशान्तर्गते.....क्षेत्रे.....नद्यास्तटे....स्थले .....विक्रम संवत्सरे मासानां मासोत्तमे मासे....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे... .गोत्रोत्पन्नः नामाहं मम श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्तये ज्ञाताज्ञात अनेक जन्मार्जित पाप शमनार्थ धन-धान्य-आयुः आरोग्य निखिल वाञ्चित सिद्धये

पितृणां जीविच्छ्राद्ध-स्वश्राद्ध तृप्ति-मुक्ति हेतु निरतिशयानन्द ब्रह्मलोकावाप्तये च इमां सुपूजितां सालङ्कारां सवत्सां गो सहित दश महादान सत्पात्र पुरुष अथवा लोकसेवी संस्थायाः निमित्तं तुभ्यमहं सम्प्रददे।

सङ्कल्प के पश्चात् शान्तिपाठ करते हुए कृष्ण द्वादशी (प्रथम दिन का क्रम समाप्त करें।)

कृष्ण त्रयोदशी (द्वितीय दिन) का कृत्य- (देवपूजन)

आवश्यक सामग्री-

2 मीटर सफेद वस्त्र, यज्ञोपवीत 5 नग, छाता, उपानह (जूता, चट्टी, खड़ाऊँ), आँवला, ताँबे के दो गिलास या दो कटोरी, तीन कलश स्टील, पीतल, कलावा,पुष्प, अक्षत, रोली, पञ्चपात्र, आचमनी, काले तिल 250 सौ ग्राम,

अगरबत्ती, माचिस, रूईबत्ती, दीपक, मिष्टान्न, कपूर।

त्रयोदशी के दिन प्रातःकाल सुसज्जित पूजा स्थली के सामने तीन कलश (मुख्य कलश से भिन्न) सफेद वस्त्र में स्थापित करें। कलशों के नीचे किसी चौड़े (मिट्टी या धातु की प्लेट) पात्र में काले तिल भरकर रखें।उत्तर दिशा में सोम, मध्य में यम तथा दक्षिण में अग्नि के प्रतीक तीन कलश स्थापित करें। मध्य वाले कलश के पास यज्ञोपवीत, छत्र (छतरी), उपानह (जूता+चट्टी, खड़ाऊँ), तिल एवं आँवला भी रखें। अपने दैनिक उपासना क्रम से निवृत्त होकर यह विशिष्ट पूजन प्रारम्भ करें।

॥ विशिष्ट देवपूजन ॥

देव पूजन का क्रम पवित्रीकरण से स्वस्तिवाचन तक देवपूजन में

कर्मप्रधान देवों के रूप में सोम, यम एवं अग्निदेव का भी आवाहन करें। अब तीनों कलशों के लिए क्रमशः एक-एक मन्त्र बोलकर उन्हें स्पर्श करें। तीन कलशों के तीन प्रधान देवों (सोम, यम, अग्नि) का आवाहन निम्न मन्त्रों से करें।

॥ सोम देवता का आवाहन ॥

ॐ सोमस्य त्विषिरसि
तवेव मे त्विषिर्भूयात्।
मृत्योःपाह्योजोसि सहोस्यमृतमसि॥
ॐ सोमाय नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि। -10.15

॥ यम देवता का आवाहन ॥

ॐ सुगन्नुपन्थां प्रतिशन्नऽ एहि
ज्योतिष्मध्येह्यजरन्नऽ आयुः।
अपैतु मृत्युममृतं मऽ आगात्
वैवस्वतोनोऽ अभयं कृणोतु।
ॐ यमाय नमः। आवाहयामि,

स्थापयामि, ध्यायामि ॥

॥ अग्नि देवता का आवाहन ॥

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्
देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा
द्वेषा ँ सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्।
ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि ॥ -21.3

आवाहनोपरान्त **पञ्चोपचार विधि** से पूजन करें। **पुरुषसूक्त** *(पृष्ठ 186-198)* से भी **षोडशोपचार पूजन** कर सकते हैं।

॥ पञ्चोपचार पूजनम् ॥

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, जलं,
गन्धाक्षतं, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं
समर्पयामि।

इसके बाद श्राद्ध करने वाले साधक उत्तर दिशा की ओर मुख करके सव्य

स्थिति (यज्ञोपवीत बायें कन्धे पर) में 30 मिनट गायत्री महामन्त्र का जप करें। जप पूरा होने पर कुश या पवित्र नदी या स्थल की रेत बिछाकर उस पर पिण्डदान करें। पिण्डदान के लिए देखें।

प्रत्येक पिण्ड पर सूत्र-कलावा चढ़ायें। काले तिल से भरे ताँबे के दो पात्रों में से एक देवों के निमित्त और दूसरा पितरों के निमित्त अर्पित करें। तत्पश्चात् शान्तिपाठ के साथ सिञ्चन कर सूर्यार्घ्य दें।

यह कर्म पूरा होने तक उष्ण-शीत पेय (जलपान) या फल ही लें तथा एक ही बार (दोपहर बाद तथा सूर्यास्त से पहले) सात्विक आहार ग्रहण करें। तथा दिन में मौन, स्वाध्याय, मनन, चिन्तन में ही अपना समय बिताएँ। सायंकाल सूर्यास्त के समय पुनः गायत्री मन्त्र का जप करें। षट्कर्म आदि करके पहले 10 मिनट गायत्री महामन्त्र, फिर 10 मिनट

नारायण गायत्री और बाद में दस मिनट पुनः गायत्री मन्त्र का जप करें तत्पश्चात् सूर्यार्घ्य देकर समापन करें।

॥नारायण (विष्णु) गायत्री मन्त्र॥

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो नारायणः प्रचोदयात्।

रात्रि में आठ बजे के बाद पुनः उक्त क्रम से गायत्री महामन्त्र, नारायण गायत्री एवं गायत्री महामन्त्र का जप करें।

॥नारायण (विष्णु) गायत्री मन्त्र॥

ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

रात्रि में यथा शक्ति जागरण करते हुए काया की नश्वरता तथा जीवन की अनश्वरता का चिन्तन करते हुए इष्ट या गायत्री मन्त्र का मानसिक जप करते-करते निद्रा देवी की गोद में जायें।

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। -36.3

कृष्ण चतुर्दशी (तृतीय दिन) का कृत्य- (स्व-अन्त्येष्टि)

आवश्यक सामग्री-

कुश, शुद्ध पुआल (पैरा) या सूखी घास 1 लोटा, 1 गिलास, यज्ञ कुण्ड, माचिस, रूई बत्ती, कपूर, घी 1 कि.ग्रा., काले तिल 250 ग्राम, अक्षत 250 ग्राम, कलावा, लोहे के टुकड़े, हवन सामग्री 1 कि.ग्रा., मिष्टान्न, नारियल गोला 2 नग, मिट्टी के कुल्हड़ 15 नग दोने-40 नग, पत्तल 12 नग, गोदुग्ध 1 कि.ग्रा. मूँग 250 ग्राम, चावल 500 ग्राम, काले तिल 150 ग्राम, पके चावल (भात) 500 ग्राम, समिधा (आम की लकड़ी) 5 कि.ग्रा. छोटी-छोटी।

प्रातःकाल स्नान उपासनादि क्रम से निवृत्त हों। पूजन एवं कर्मकाण्ड सामग्री

सहित किसी शुद्ध जलाशय, नदी आदि के तट पर जायें।

कुश और शुद्ध पुआल-घास आदि से मनुष्याकृति का प्रतीकात्मक पुतला (लगभग एक हाथ-15 इञ्च प्रमाण का) बनायें। पुतला बनाने में बाँधने के लिए ऊन का प्रयोग करें। उसके ऊपर जौ के आटे का लेप कर दें। अपनी सुविधानुसार पुतला पहले से तैयार करके भी ले जा सकते हैं अथवा उसी स्थान पर पहुँचकर भी बना सकते हैं।

जिस स्थान पर स्व-अन्त्येष्टि कर्म करना है, उस स्थान और कर्म सामग्री को साधनादि पवित्रीकरण मन्त्र द्वारा जल से सिञ्चन करें।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः
पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि
जातवेदः पुनीहि मा॥ -19.39

पुनः नीचे लिखे मन्त्र से उस क्षेत्र में जौ, लोहे के टुकड़े तथा कलावा के टुकड़े बिखेरें।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिविषश्चाम्यसौ॥ -9.30

अब किसी धातु के कुण्ड में या फिर छोटी वेदिका बनाकर उसमें अग्नि स्थापन मन्त्र से अग्नि स्थापित करें।

॥अग्निस्थापनम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे। अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ2 आ सादयादिह। -3.5, 22.17

ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि, गन्धाक्षतं,

पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि।

जौ, तिल, चावलयुक्त हवन सामग्री द्वारा तीन आहुतियाँ गायत्री मन्त्र से समर्पित करें।

॥गायत्री मन्त्राहुतिः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः
प्रचोदयात्, स्वाहा। इदं गायत्र्यै
इदं न मम्। -36.3

पुनः उपर्युक्त मन्त्र- **ॐ देवस्य त्वा सवितुः**..... से उस क्षेत्र में जौ, लोहे के टुकड़े तथा कलावा के टुकड़े बिखेरें, जहाँ पुतले का संस्कार करेंगे।

पुतले के आकार के अनुरूप चिता बनायें तथा पुतले को उस पर लिटा दें, एक पात्र में जल लेकर उसमें सभी तीर्थों का आवाहन करें।

॥ तीर्थ आवाहन मन्त्र ॥

अयोध्या मथुरा माया,
काशी काञ्ची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव,
सप्तैता मोक्षदायिका॥
ॐ पुष्करादीनि तीर्थानि,
गङ्गाद्याः सरिस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि,
पूजाकाले सदा मम॥

निम्न मन्त्र से चिताक्षेत्र तथा पुतले को सिञ्चित करें।

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो
मणिवालस्त ऽ आश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय
पशुपतये कर्णा यामाऽ अवलिप्ता
रौद्रा नभोरूपाःपार्जन्याः॥ -24.3

अब अपसब्य होकर निम्न मन्त्र से छोटी मशाल बनाकर उसे वेदिका की अग्नि से प्रज्वलित करें।

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
विश्वानि देववयुनानि विद्वान्
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां
ते नम उक्तिं विधेम। -5.36

चिता की सात परिक्रमा करें तथा उसके साथ एक-एक समिधा पुतले पर रखते चलें। सिर की तरफ से रखते हुए क्रमशः पैरों तक (सिर, गर्दन, छाती, पेट, कूल्हे, घुटने, पञ्जे आदि स्थानों) पर रखें।

प्रज्वलित अग्नि में गायत्री मन्त्र से 5, 9, 12, 24 आहुतियाँ दें।तथा **ॐ आयुर्यज्ञेन............मन्त्र** से आहुतियाँ प्रदान करें।

॥गायत्री मन्त्राहुतिः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्, स्वाहा।
इदं गायत्र्यै इदं न मम्। -36.3

॥ शरीर यज्ञ मन्त्राहुतिः ॥

क्रिया और भावना-

एक-एक मन्त्र से आहुति देते हुए भावना करें कि हमारा व्यक्तित्व यज्ञीय धारा के योग्य बने।

1 ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

2 ॐ प्राणो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

3 ॐ अपानो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

4 ॐ व्यानो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

5 ॐ उदानो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

6 ॐ समानो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

7 ॐ चक्षुर्यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

8 ॐ श्रोतं यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

9 ॐ वाग्यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

10 ॐ मनो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

11 ॐ आत्मा यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

12 ॐ ब्रह्म यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

13 ॐ ज्योतिर्यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

14 ॐ स्वर्यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

15 ॐ पृष्ठं यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

16 ॐ यज्ञो यज्ञेन कल्पता ँ स्वाहा।

17 ॐ सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा
द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा।
आ पो वा गच्छ यदि तत्र ते
हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः
स्वाहा। -ऋग्वेद 10.16.3

॥ पूर्णाहुतिः ॥

पूर्णाहुति मन्त्र से पूर्णत्व का भाव करते हुए पुतले के सिर के पास कपाल क्रिया के रूप में नारियल का गोला समर्पित करें।

**ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्
पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥
ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ँ
शतक्रतो स्वाहा। -3.49**

ॐ सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा।

॥ वसोर्धारा ॥

बचे हुए घृत को वसोर्धारा के रूप में नारियल एवं पुतले के ऊपर इस भाव से छोड़ें कि स्नेह की निर्झरणी जीवन में सदा प्रवाहित होती रहे।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा। -1.3

मिट्टी के तीन सकोरों (कुल्हड़) या तीन दोनों में मूँग, तन्दुल (चावल) में काले तिल मिलाकर भरें और स्व तृप्ति हेतु क्रमशः तीन बलि (भोज्य पदार्थ) गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए समर्पित करें। इसके बाद पन्द्रह मिनट निकट बैठकर गायत्री महामन्त्र एवं महामृत्युञ्जय मन्त्र का जप करें।

॥ शान्ति मन्त्र ॥

अब दूध एवं जल के मिश्रण से सिञ्चन करके पुतले की अग्नि को नीचे लिखे मन्त्रों से शान्त करें।

ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽ
ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥-18.36

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं ँशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥-36.17

नोट- (इस सम्बन्ध में शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित 'अन्त्येष्टि विधान' पुस्तक का भी सहारा ले सकते हैं)

इसके बाद पुनः स्नान करके दक्षिण दिशा की ओर मुख करके अपसब्य होकर यमादि देवों को जलाञ्जलि प्रदान करें।

ॐ यमादिचतुर्दशदेवाः आगच्छन्तु गृह्णन्तु एतान् जलाञ्जलीन्।

ॐ यमाय नमः ॥ 3 ॥

ॐ धर्मराजाय नमः ॥ 3 ॥

ॐ मृत्यवे नमः ॥ 3 ॥

अन्तकायः नमः ॥ 3 ॥

ॐ वैवस्वताय नमः ॥ 3 ॥

ॐ कालाय नमः ॥ 3 ॥

ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ॥ 3 ॥

ॐ औदुम्बराय नमः ॥ 3 ॥

ॐ दध्नाय नमः ॥ 3 ॥

ॐ नीलाय नमः ॥ 3 ॥

ॐ परमेष्ठिने नमः ॥ 3 ॥

ॐ वृकोदराय नमः ॥ 3 ॥

ॐ चित्राय नमः ॥ 3 ॥

ॐ चित्रगुप्ताय नमः ॥ 3 ॥

बायाँ घुटना भूमि से टिकाकर कुशाग्र से दक्षिण दिशा में (अपसब्य स्थिति में) तीन अञ्जलि जल नीचे लिखे

मन्त्र से प्रदान करें।

ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे, महाकालाय धीमहि। तन्नो यमः प्रचोदयात्।

यम गायत्री

जल से बाहर आकर सूखे वस्त्र पहन लें। मिट्टी के छोटे कुल्हड़ में जल भरें तथा उसमें काले तिल भी थोड़े से मिला लें। रुद्रदेव का ध्यान करते हुए नीचे लिखे मन्त्र से उस जल को भूमि पर बिखेरें।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतो तऽ
इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥-16.1

अब पके हुए चावल (भात) में काले तिल मिलाकर दस पिण्ड बनायें। दोने में एक-एक करके पिण्ड रखें, उन्हें क्रमशः निम्न विधि से समर्पित करें।

1 सिर के लिए पिण्ड रखकर एक अञ्जलि जल छोड़ें।

2 कान, आँख एवं नासिका के लिए

पिण्ड रखकर दो अञ्जलि जल छोड़ें।

3 गला,कन्धा,भुजा,वक्ष के लिए पिण्ड रखकर तीन अञ्जलि जल छोड़ें।

4 नाभि, लिङ्ग, गुदा के लिए पिण्ड रखकर चार अञ्जलि जल छोड़ें।

5 घुटना, पिण्डली, पैर के लिए पिण्ड रखकर पाँच अञ्जलि जल छोड़ें।

6 सभी मर्म स्थलों के लिए पिण्ड रखकर छः अञ्जलि जल छोड़ें।

7 सभी नस-नाड़ियों के लिए पिण्ड रखकर सात अञ्जलि जल छोड़ें।

8 दाँत एवं रोमादि के लिए पिण्ड रखकर आठ अञ्जलि जल छोड़ें।

9 पूर्णत्व, भूख-प्यास आदि के लिए पिण्ड रखकर दस अञ्जलिजल छोड़ें।

नीचे लिखे मन्त्र से पिण्डों पर जल सिञ्चन करें।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः तानऽ

ऊर्जेदधातन। महे रणाय चक्षसे।
ॐ यो वः शिवतमो रसः तस्य
भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।
ॐ तस्मा ऽअरं गमाम वो यस्य
क्षयाय जिन्वथ। आपोजनयथा च नः॥

-11.50-52

॥सूर्यार्घ्यदान॥

ॐ सूर्यदेव! सहस्रांशो,
तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या,
गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥
ॐ सूर्याय नमः,
आदित्याय नमः,
भास्कराय नमः।

उक्त कृत्य पूर्ण हुआ, अब घर पहुँचें, सूर्यास्त से पहले एक बार सात्विक भोजन लें। शाम के समय गोधूलि वेला में घर के द्वार के पास जीव की तृप्ति के लिए एक पात्र में दूध मिला जल

समर्पित करें। पुष्प एवं दीपक निवेदित करें। प्रकृति का दर्शन करें, सब जगह अपनी आत्म-चेतना के विस्तार का भाव करें।

रात्रि में भूमि पर दरी, कम्बल आदि बिछाकर उसके नीचे तीन कुश दक्षिणाग्र करके रखें। रात्रि में उत्तर दिशा की ओर सिर तथा दक्षिण दिशा की ओर पैर करके शयन करें।

अमावस्या (चतुर्थ दिन) का कृत्य

आवश्यक सामग्री-

तर्पण, पिण्डदान हेतु-दो तसले स्टील या पीतल के, काले तिल 250 ग्रा. अक्षत, पुष्प, रोली, कलावा, अगरबत्ती, माचिस रूईबत्ती, कुश, दूध 1 कि.ग्रा. दही 250 ग्राम, शहद 10 ग्राम, गुँथा आटा 1 कि.ग्रा., जल 5 लीटर, जौ 250 ग्राम।

यज्ञ हेतु-
शाकल्य 1 कि. ग्रा., जौ, तिल, चावल सभी ढाई-ढाई सौ ग्राम, देशी घी 500 ग्राम, अगरबत्ती, माचिस, कपूर, समिधा 5 कि.ग्रा. कलावा, रोली, पुष्प, गुरुदेव-गायत्री माता (इष्टदेव) का चित्र, यज्ञकुण्ड 10 कटोरी, 10 प्लेट स्टील या 20 नग दोने, पंखा, मिष्टान्न, ऋतुफल, गुड़ (खाँड़) आदि।

प्रातःकाल उठकर नित्य कर्म, उपासनादि से निवृत्त हों। तर्पण-पिण्डदान आदि श्राद्धकर्म करें।

॥तर्पण-पिण्डदान॥

पवित्रीकरण से रक्षाविधान तक पृष्ठ 9 से 27 का क्रम सम्पन्न करके ही तर्पण-पिण्डदान करें।

॥कुशपवित्रीधारण॥

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः

प्रसुवऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

-1.12,10.6

॥सर्वतीर्थ आवाहन॥

ॐ गयादीनि च तीर्थानि,
ये च पुण्याः शिलोच्चयाः।
कुरुक्षेत्रं च गंगा च,
यमुना च सरिद्वरा॥
कौशिकी चन्द्रभागा च,
सर्व पाप प्रणाशिनी।
नन्दाभद्राऽवकाशा च,
गण्डकी सरयूस्तथा॥
भैरवं च वराहं च,
तीर्थं पिण्डारकं तथा।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि,
चत्वारः सागरास्तथा।
प्रेतस्यास्य प्रशान्त्यर्थं,
अस्मिन्स्तोये विशन्तुवै॥

ॐ तीर्थ देवताभ्यो नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥

॥यम आवाहन॥

हाथ में यव (जौ)-अक्षत-पुष्प लेकर जीवन-मृत्यु चक्र का अनुशासन बनाये रखने वाले तन्त्र के अधिष्ठाता यमदेव का आवाहन करें-भावना करें कि यम का अनुशासन हम सबके लिए कल्याणकारी बने।

ॐ यमाय त्वा मखाय
त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे।
देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु
पृथिव्याः स ँ स्पृशस्पाहि।
अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि॥ -37.11
ॐ यमाय नमः। आवाहयामि,
स्थापयामि, ध्यायामि।

॥पितृ आवाहन-पूजन॥

हाथ में जौ, तिल, अक्षत लेकर मृतात्मा

के आवाहन की भावना करें और प्रधान दीपक की लौ में उसे प्रकाशित हुआ देखें। मन्त्रोच्चार के बाद हाथ में रखे जौ, तिल, आदि पूजा चौकी पर छोड़ दिये जाएँ। आवाहित पितृ का स्वागत-सम्मान षोडशोपचार या पञ्चोपचार पूजन द्वारा किया जाए।

ॐ विश्वे देवासऽ आगत शृणुता
म इमꣳहवम्। एदं बर्हिर्निषीदत।
ॐ विश्वे देवाः शृणुतेम ꣳ हवं
मे ये अन्तरिक्षे यऽ उप द्यवि ष्ठ।
ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा
आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम्।

-7.34,33.53

ॐ पितृभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥तर्पण॥

दिशा एवं प्रेरणा-

आवाहन, पूजन, नमस्कार के उपरान्त तर्पण किया जाता है। जल में दूध, जौ, तिल, चन्दन डाल कर तर्पण कार्य में प्रयुक्त करते हैं। मिल सके तो गंगा जल भी डाल देना चाहिए।

तर्पण को छः भागों में विभक्त किया गया है-

1 **देव तर्पण**

2 **ऋषि तर्पण**

3 **दिव्य मानव तर्पण**

4 **दिव्य पितृ तर्पण**

5 **यम तर्पण**

6 **मनुष्य पितृ तर्पण**

सभी तर्पण नीचे लिखे क्रम से किये जाते हैं।

॥ देव तर्पण ॥

यजमान दोनों हाथों की अनामिका अंगुली में पवित्री धारण करें।

ॐ आगच्छन्तु महाभागाः,
विश्वेदेवा महाबलाः।
ये तर्पणेऽत्र विहिताः,
सावधाना भवन्तु ते॥

जल में चावल डालें। कुश-मोटक सीधे लें। यज्ञोपवीत सव्य (बायें कन्धे पर) सामान्य स्थिति में रखें। तर्पण के समय अञ्जलि में जल भरकर सभी अंगुलियों के अग्र भाग से अर्पित करें। इसे देवतीर्थ मुद्रा कहते हैं। प्रत्येक देवशक्ति के लिए एक-एक अञ्जलि जल पूर्वाभिमुख होकर देते चलें।

ॐ ब्रह्मादयो देवाः आगच्छन्तु
गृह्णन्तु एतान् जलाञ्जलीन्।
ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्।
ॐ विष्णुस्तृप्यताम्।
ॐ रुद्रस्तृप्यताम्।
ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्।
ॐ देवास्तृप्यन्ताम्।

ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्।
ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्।
ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्।
ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्।
ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्।
ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्।
ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यन्ताम्।
ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्।
ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्।
ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्।
ॐ नागास्तृप्यन्ताम्।
ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्।
ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्।
ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्।
ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्।
ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्।
ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्।
ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्।
ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्।

ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्।
ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्।
ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्।
ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्।
ॐ भूतग्रामः चतुर्विधस्तृप्यताम्।

॥ऋषि तर्पण॥

दूसरा तर्पण ऋषियों के लिए है। व्यास, वसिष्ठ, याज्ञवल्क्य, कात्यायन, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र, नारद, चरक, सुश्रुत, पाणिनि, दधीचि आदि के प्रतिश्र ाद्धाक ीअ भिव्यक्तिऋ षित र्पण द्वारा की जाती है। ऋषियों को भी देवों की तरह देवतीर्थ मुद्रा से एक-एक अञ्जलि जल दिया जाता है।

ॐ मरीच्यादि दशऋषयः
आगच्छन्तु गृह्णन्तु एतान् जलाञ्जलीन्।
ॐ मरीचिस्तृप्यताम्।
ॐ अत्रिस्तृप्यताम्।

ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्।
ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्।
ॐ पुलहस्तृप्यताम्।
ॐ क्रतुस्तृप्यताम्।
ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्।
ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्।
ॐ भृगुस्तृप्यताम्।
ॐ नारदस्तृप्यताम्।

॥ दिव्य-मनुष्य तर्पण ॥

दिव्य मनुष्य तर्पण उत्तराभिमुख होकर किया जाता है। जल में जौ डालें। जनेऊ कण्ठ में माला की तरह रखें। कुश हाथों में आड़े कर लें। अञ्जलि में जल भरकर कनिष्ठा (छोटी उँगली) की जड़ के पास से जल छोड़ें, इसे प्राजापत्य तीर्थ मुद्रा कहते हैं। प्रत्येक सम्बोधन के साथ दो-दो अञ्जलि जल दें-

ॐ सनकादयः दिव्यमानवाः

आगच्छन्तु गृह्णन्तु एतान् जलाञ्जलीन्।
ॐ सनकस्तृप्यताम् ॥ 2 ॥
ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् ॥ 2 ॥
ॐ सनातनस्तृप्यताम् ॥2 ॥
ॐ कपिलस्तृप्यताम् ॥2 ॥
ॐ आसुरिस्तृप्यताम् ॥ 2 ॥
ॐ वोढुस्तृप्यताम् ॥ 2 ॥
ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् ॥ 2 ॥

॥ दिव्य-पितृ-तर्पण ॥

इसके लिए दक्षिणाभिमुख हों। वामजानु (बायाँ घुटना मोड़कर बैठें) जनेऊ अपसव्य (दाहिने कन्धे पर सामान्य से उलटी स्थिति में) रखें। कुशा दुहरे कर लें। जल में जौ, तिल डालें। अञ्जलि में जल लेकर दाहिने हाथ के अँगूठे के सहारे जल गिराएँ। इसे पितृतीर्थ मुद्रा कहते हैं। प्रत्येक पितृ को तीन-तीन अञ्जलि जल दें।

ॐ कव्यवाडादयो दिव्यपितरः
आगच्छन्तु गृह्णन्तु एतान् जलाञ्जलीन्।
ॐ कव्यवाडानलस्तृप्यताम्।
इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा)
तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥
ॐ सोमस्तृप्यताम्,
इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा)
तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥
ॐ यमस्तृप्यताम्,
इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा)
तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥
ॐ अर्यमा तृप्यताम्।
इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा)
तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥
ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम्।
इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा)
तेभ्यः स्वधा नमः॥ 3॥
ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम्।
इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा)

तेभ्यः स्वधा नमः ॥ 3 ॥
ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् ।
इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा)
तेभ्यः स्वधा नमः ॥ 3 ॥

॥ यम तर्पण ॥

दिव्य पितृ तर्पण की तरह पितृतीर्थ से तीन-तीन अञ्जलि जल यमों को भी दिया जाता है ।

ॐ यमादिचतुर्दशदेवाः आगच्छन्तु
गृह्णन्तु एतान् जलाञ्जलीन् ।
ॐ यमाय नमः ॥ 3 ॥
ॐ धर्मराजाय नमः ॥ 3 ॥
ॐ मृत्यवे नमः ॥ 3 ॥
ॐ अन्तकाय नमः ॥ 3 ॥
ॐ वैवस्वताय नमः ॥ 3 ॥
ॐ कालाय नमः ॥ 3 ॥
ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ॥3 ॥
ॐ औदुम्बराय नमः ॥3 ॥

ॐ दध्नाय नमः ॥ 3 ॥
ॐ नीलाय नमः ॥3 ॥
ॐ परमेष्ठिने नमः ॥ 3 ॥
ॐवृकोदरायनमः ॥3 ॥
ॐ चित्राय नमः ॥ 3 ॥
ॐ चित्रगुप्ताय नमः ॥ 3 ॥

तत्पश्चात् निम्न मन्त्रों से यम देवता को नमस्कार करें-

ॐ यमाय धर्मराजाय,
मृत्यवे चान्तकाय च।
वैवस्वताय कालाय,
सर्वभूतक्षयाय च॥
औदुम्बराय दध्नाय,
नीलाय परमेष्ठिने।
वृकोदराय चित्राय,
चित्रगुप्ताय वै नमः॥

॥ मनुष्य-पितृ-तर्पण ॥

इसके बाद अपने परिवार से सम्बन्धित

दिवंगत नर-नारियों का क्रम आता है।

1 पिता, बाबा (दादा) परबाबा (परदादा) माता, दादी, परदादी।

2 नाना, परनाना, बूढ़े परनाना, नानी, परनानी, बूढ़ी परनानी।

3 पत्नी, पुत्र, पुत्री, चाचा, ताऊ, मामा, भाई, बुआ, मौसी, बहिन, सास, ससुर, गुरु, गुरुपत्नी, शिष्य, मित्रअ ादि ाय हत ीनव ंशावलियाँ तर्पण के लिए हैं। पहले स्वगोत्र तर्पण किया जाता है।

..... **गोत्रोत्पन्नाः अस्मत् पितरः आगच्छन्तु गृह्णन्तु एतान् जलाञ्जलीन्।**

अस्मत्पिता (पिता) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥

अस्मत्पितामहः (दादा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो रुद्ररूपस्तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥

अस्मत्प्रपितामहः (परदादा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो आदित्यरूपस्तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥ अस्मन्माता (माता) अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा गायत्रीरूपा तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ 3॥ अस्मत्पितामही (दादी) अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा सावित्रीरूपा तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ 3॥ अस्मत्प्रपितामही (परदादी) अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा लक्ष्मीरूपा तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ 3॥ अस्मत्सापत्नमाता (सौतेली माँ) अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ 3॥

॥ द्वितीय गोत्र तर्पण॥

इसके बाद द्वितीय गोत्र मातामह आदि का तर्पण करें। यहाँ यह भी पहले की भाँति निम्नलिखित वाक्यों को तीन-तीन बार पढ़कर तिल सहित जल की तीन-तीन अञ्जलियाँ पितृतीर्थ से दें-

अस्मन्मातामहः (नाना) **अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥**

अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) **अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो रुद्ररूपस्तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥**

अस्मद्वृद्धप्रमातामहः (बूढ़े परनाना) **अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो आदित्यरूपस्तृप्यतां। इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥**

अस्मन्मातामही (नानी) **अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा लक्ष्मीरूपा तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं**

तस्यै स्वधा नमः॥ 3॥

अस्मत्प्रमातामही (परनानी) **अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा रुद्ररूपा तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ 3॥**

अस्मद्वृद्धप्रमातामही (बूढ़ी परनानी) **अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा आदित्यरूपा तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ 3॥**

॥ इतर तर्पण ॥

जिनको आवश्यक है, केवल उन्हीं के लिए तर्पण कराया जाए-

अस्मत्पत्नी अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्।
इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ 3॥

अस्मत्सुतः (बेटा) **अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्।**
इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥

अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकी देवी दा अमुकसगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ 3 ॥

अस्मत्पितृव्यः (चाचा या ताऊ) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वुसरूपस्तृप्यताम्।
इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥3 ॥

अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वुसरूपस्तृप्यताम्।
इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥ 3 ॥

अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वुसरूपस्तृप्यताम्।
इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥3 ॥

अस्मत्सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वुसरूपस्तृप्यताम्।
इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥ 3 ॥

अस्मत्पितृभगिनी (बुआ) अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्।

इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥3॥
अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी
देवी दा अमुक सगोत्रा वसुरूपा
तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं
तस्यै स्वधा नमः ॥ 3 ॥
अस्मदात्मभगिनी (अपनी बहिन)
अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा वसुरूपा
तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं
तस्यै स्वधा नमः ॥ 3 ॥
अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहिन)
अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा
वसुरूपा तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं
तस्यै स्वधा नमः ॥ 3 ॥
अस्मत् श्वशुरः (श्वसुर) अमुकशर्मा
अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्।
इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः ॥ 3 ॥
अस्मत् श्वसुरपत्नी (सास) अमुकी देवी
दा अमुक सगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्।
इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः ॥ 3 ॥

अस्मद्गुरु अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥

अस्मद् आचार्यपत्नी अमुकी देवी दा अमुक सगोत्रा वसुरूपा तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ 3॥

अस्मत् शिष्यः अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥

अस्मत्सखा (मित्र) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥

अस्मद् आप्तपुरुषः (सम्मानीय पुरुष) अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥

अस्मद् पतिः अमुकशर्मा अमुकसगोत्रो वसुरूपस्तृप्यताम्। इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ 3॥

निम्न मन्त्र से पूर्व विधि से प्राणिमात्र की तुष्टि के लिए जल धार छोड़ें-

ॐ देवासुरास्तथा यक्षा,
नागा गन्धर्वराक्षसा:।
पिशाचा गुह्यका: सिद्धा:,
कूष्माण्डास्तरव: खगा:॥
जलेचरा भूनिलया,
वाय्वाधाराश्च जन्तव:।
प्रीतिमेते प्रयान्त्वाशु,
मद्दत्तेनाम्बुनाखिला:॥
नरकेषु समस्तेषु,
यातनासु च ये स्थिता:।
तेषामाप्यायनायैतद्,
दीयते सलिलं मया॥
ये बान्धवाऽबान्धवा वा,
येऽन्यजन्मनि बान्धवा:।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु,
ये चास्मत्तोयकांक्षिण:।
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं,

देवर्षिपितृमानवाः।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे,
मातृमातामहादयः॥
अतीतकुलकोटीनां,
सप्तद्वीपनिवासिनाम्।
आब्रह्मभुवनाल्लोकाद्,
इदमस्तु तिलोदकम्।
ये बान्धवाऽबान्धवा वा,
येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु,
मया दत्तेन वारिणा॥

॥ भीष्म तर्पण ॥

अन्त में भीष्म तर्पण किया जाता है। ऐसे परमार्थ परायण महामानव, जिन्होंने उच्च उद्देश्यों के लिए अपना वंश चलाने का मोह नहीं किया, भीष्म उनके प्रतिनिधि माने गये हैं, ऐसी सभी श्रेष्ठात्माओं को जलदान दें-

ॐ वैयाघ्रपदगोत्राय,
सांकृतिप्रवराय च।
गङ्गापुत्राय भीष्माय,
प्रदास्येऽहं तिलोदकम्॥
अपुत्राय ददाम्येतत्,
सलिलं भीष्मवर्मणे॥

॥वस्त्र निस्पीडन॥

शुद्ध वस्त्र जल में डुबोएँ और बाहर लाकर मन्त्र को पढ़ते हुए अपसव्य भाव से अपने बायें भाग में भूमि पर उस वस्त्र को निचोड़ें (यदि घर में किसी मृत पुरुष का वार्षिक श्राद्ध कर्म हो, तो वस्त्र-निष्पीडन नहीं करना चाहिए।)

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता,
अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तम्,
वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

॥देवार्घ्यदान॥

अब सव्य होकर पूर्व दिशा में मुख करें। नीचे लिखे मन्त्रों से देवार्घ्यदान करें।

प्रथम अर्घ्य

सृष्टि निर्माता ब्रह्मा को-

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि
सीमतः सुरुचो वेनऽ आवः।
स बुन्ध्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः
सतश्च योनिमसतश्च वि वः। -13.3
ॐ ब्रह्मणे नमः॥

दूसरा अर्घ्य

पोषणकर्त्ता भगवान् विष्णु को-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे
त्रेधा नि दधे पदम्।
समूढमस्य पाᳬसुरे स्वाहा॥
ॐ विष्णवे नमः॥ -5.15

तीसरा अर्घ्य

अनुशासन-परिवर्तन के नियन्ता शिव-

रुद्र-महादेव को-

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतो
तऽ इषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः॥
ॐ रुद्राय नमः॥ -16.1

चौथा अर्घ्य

भूमण्डल के चेतना-केन्द्र सवितादेव सूर्य को-

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः
प्रचोदयात्॥ ॐ सवित्रे नमः॥ -36.3

पाँचवाँ अर्घ्य

प्रकृति का सन्तुलन बनाये रखने वाले देव-मित्र के लिए-

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो
देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्॥
ॐ मित्राय नमः॥ -11.62

छठवाँ अर्घ्य

तर्पण के माध्यम से वरुणदेव के लिए-

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी
हवमद्या च मृडय।
त्वामवस्युरा चके।
ॐ वरुणाय नमः। -21.1

नमस्कार-अब खड़े होकर पूर्व की ओर से दिग्देवताओं को क्रमशः निर्दिष्ट दिशाओं में नमस्कार करें-

'ॐ इन्द्राय नमः' प्राच्यै॥
'ॐ अग्नये नमः' आग्नेय्यै।
'ॐ यमाय नमः' दक्षिणायै॥
'ॐ निर्ऋतयेनमः' नैर्ऋत्यै॥
'ॐ वरुणाय नमः' पश्चिमायै॥
'ॐ वायवे नमः' वायव्यै॥
'ॐ सोमाय नमः' उदीच्यै॥
'ॐ ईशानाय नमः' ऐशान्यै॥
'ॐ ब्रह्मणे नमः' ऊर्ध्वायै॥
'ॐ अनन्ताय नमः' अधरायै॥

इसके बाद जल में नमस्कार करें-

ॐ ब्रह्मणे नमः।

ॐ अग्नये नमः।

ॐ पृथिव्यै नमः।

ॐ ओषधिभ्यो नमः।

ॐ वाचे नमः।

ॐ वाचस्पतये नमः।

ॐ महद्भ्यो नमः।

ॐ विष्णवे नमः।

ॐ अद्भ्यो नमः।

ॐ अपाम्पतये नमः।

ॐ वरुणाय नमः।

॥सूर्योपस्थान॥

मस्तक और हाथ गीले करें। सूर्य की ओर मुख करके हथेलियाँ कन्धे से ऊपर करके सूर्य की ओर करें। सूर्यनारायण का ध्यान करते हुए मन्त्र पाठ करें। अन्त में नमस्कार करें और मस्तक-मुख

आदि पर हाथ फेरें।

ॐ अदृश्रमस्य केतवो विरश्मयो जनाँ2 अनु। भ्राजन्तो अग्नयो यथा।
उपयामगृहीतोसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय।
सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोहं मनुष्येषु भूयासम्॥ -8.40

॥मुखमार्जन- स्वतर्पण॥

मन्त्र के साथ यजमान अपना मुख धोये, आचमन करे। भावना करें कि अपनी काया में स्थित जीवात्मा की तुष्टि के लिए भी प्रयास करेंगे।

ॐ सं वर्चसा पयसा सन्तनूभिः अगन्महि मनसा स ँ शिवेन।
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायः अनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्॥ -2.24

॥पितृयज्ञ॥

पिण्डदान का कृत्य पितृयज्ञ के अन्तर्गत

किया जाता है। जिस प्रकार तर्पण में जल के माध्यम से अपनी श्रद्धा व्यक्त की जाती है, उसी प्रकार हविष्यान्न के माध्यम से अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति की जानी चाहिए। मरणोत्तर संस्कार में 12 पिण्डदान किये जाते हैं-जौ या गेहूँ के आटे में तिल, शहद, घृत, दूध मिलाकर लगभग पचास-पचास ग्राम आटे के पिण्ड बनाकर एक पत्तल पर रख लेने चाहिए। सङ्कल्प के बाद एक-एक करके यह पिण्ड जिस पर रखे जा सकें, ऐसी एक पत्तल समीप में रख लेनी चाहिए।

छः तर्पण जिनके लिए किये गये थे, उनमें से प्रत्येक वर्ग के लिए एक-एक पिण्ड है। सातवाँ पिण्ड मृतात्मा के लिए है। अन्य पाँच पिण्ड उन मृतात्माओं के लिए हैं, जो पुत्रादि रहित हैं, अग्निदग्ध हैं, इस या किसी अन्य जन्म के बन्धु हैं, उच्छिन्न कुल, वंश वाले हैं, उन सबके

निमित्त ये पाँच पिण्ड समर्पित हैं। ये बारहों पिण्ड पक्षियों के लिए अथवा गाय के लिए किसी उपयुक्त स्थान पर रख दिये जाते हैं। मछलियों को चुगाये जा सकते हैं। पिण्ड रखने के निमित्त कुश बिछाते हुए निम्न मन्त्र बोलें।

ॐ कुशोऽसि कुश पुत्रोऽसि,
ब्रह्मणा निर्मितः पुरा।
त्वय्यर्चितेऽ र्चितः सोऽस्तु,
यस्याहं नाम कीर्तये॥

॥ पिण्ड समर्पण प्रार्थना ॥

पिण्ड तैयार करके रखें, हाथ जोड़कर पिण्ड समर्पण के भाव सहित नीचे लिखे मन्त्र बोले जाएँ-

ॐ आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता,
मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः।
वंशद्वये ये मम दासभूता,
भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च॥

मित्राणि शिष्याः पशवश्च वृक्षाः,
दृष्टाश्च स्पृष्टाश्च कृतोपकाराः।
जन्मान्तरे ये मम संगताश्च,
तेषां स्वधा पिण्डमहं ददामि॥

॥ पिण्डदान ॥

पिण्ड दाहिने हाथ में लिया जाए। मन्त्र के साथ पितृतीर्थ मुद्रा से दक्षिणाभिमुख होकर पिण्ड किसी थाली या पत्तल में क्रमशः स्थापित करें-

1 प्रथम पिण्ड- देवताओं के निमित्त

ॐ उदीरतामवरऽ उत्परासऽ
उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं यऽ ईयुरवृका ऋतज्ञाः ते
नोऽवन्तु पितरो हवेषु। -19.49

2 दूसरा पिण्ड -ऋषियों के निमित्त

ॐ अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वाऽ
अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयꣳ सुमतौ यज्ञियानामपि

भद्रे सौमनसे स्याम ॥ -19.50

3 तीसरा पिण्ड- दिव्य मानवों के निमित्त-

ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासः अग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तः अधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ -19.58

4 चौथा पिण्ड- दिव्य पितरों के निमित्त-

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन् ॥ -2.34

5 पाँचवाँ पिण्ड- यम के निमित्त-

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोमीमदन्त

पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः
शुन्धध्वम् ॥ -19.36

6 छठवाँ पिण्ड- मनुष्य-पितरों के निमित्त-

ॐ ये चेह पितरो ये च नेह
याँश्च विद्म याँ2 उ च न प्रविद्म।
त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः
स्वधाभिर्यज्ञꣳ सुकृतं जुषस्व ॥19.67

7 सातवाँ पिण्ड- मृतात्मा के निमित्त-

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः
पितरः शोषाय नमो वः पितरो
जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै
नमो वः पितरो घोराय, नमो वः
पितरो मन्यवे नमो वः पितरः
पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त
सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो
वासऽ आधत्त। -2.32

8 आठवाँ पिण्ड- पुत्रदार रहितों के

निमित्त-

ॐ पितृवंशे मृता ये च,
मातृवंशे तथैव च।
गुरुश्वसुरबन्धूनां,
ये चान्ये बान्धवाः स्मृताः॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः,
पुत्रदारविवर्जिताः।
तेषां पिण्डो मया दत्तो,
ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु॥

9 नौवाँ पिण्ड- उच्छिन्न कुलवंश वालों के निमित्त-

ॐ उच्छिन्नकुलवंशानां,
येषां दाता कुले नहि।
धर्मपिण्डो मया दत्तो,
ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु॥

10 दसवाँ पिण्ड- गर्भपात से मर जाने वालों के निमित्त-

ॐ विरूपा आमगर्भाश्च,

ज्ञाताज्ञाताः कुले मम।
तेषां पिण्डो मया दत्तो,
ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु॥

11 ग्यारहवाँ पिण्ड- अग्निदग्धों के निमित्त-

ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा, ये
प्रदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु, धर्मपिण्डं
ददाम्यहम्॥

12 बारहवाँ पिण्ड- इस जन्म या अन्य जन्म के बन्धुओं के निमित्त-

ॐ ये बान्धवाऽबान्धवा वा,
ये ऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
तेषां पिण्डो मया दत्तो,
ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु॥

यदि तीर्थ श्राद्ध में, पितृपक्ष में से एक से अधिक पितरों की शान्ति के लिए पिण्ड अर्पित करने हों, तो नीचे लिखे वाक्य में पितरों के

नाम-गोत्र आदि जोड़ते हुए वाञ्छित संख्या में पिण्डदान किये जा सकते हैं।

.... गोत्रस्य अस्मद् .... नाम्नो, अक्षयतृप्त्यर्थं इदं पिण्डं तस्मै स्वधा॥

पिण्ड समर्पण के बाद पिण्डों पर क्रमशः दूध, दही और शहद चढ़ाकर पितरों से तृप्ति की प्रार्थना की जाती है।

1 निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पिण्ड पर दूध चढ़ाएँ-

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु
पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।

-18.36

पिण्डदाता निम्नाङ्कित मन्त्रांश को दुहराएँ-

ॐ दुग्धम्। दुग्धम्। दुग्धम्।
तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्॥

2 निम्नाङ्कित मन्त्र से पिण्ड पर दही

चढ़ाएँ-

ॐ दधिक्राव्णोऽ अकारिषं
जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखाकरत्प्रण
आयु ँ षि तारिषत्। -23.32

पिण्ड दाता निम्नाङ्कित मन्त्रांश दुहराएँ-

ॐ दधि। दधि। दधि। तृप्यध्वम्।
तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।

3 नीचे लिखे मन्त्रों के साथ पिण्डों पर शहद चढ़ाएँ-

ॐ मधुवाताऽऋतायते
मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
ॐ मधु नक्तमुतोषसो,
मधुमत्पार्थिवँ रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता।
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिः

मधुमाँ2अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः। -13.27-29

पिण्डदानकर्त्ता निम्नाङ्कित मन्त्रांश को दुहराएँ-

ॐ मधु। मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।तृप्यध्वम्।

॥भूतयज्ञ-पञ्चबलि॥

भूतयज्ञ के निमित्त पञ्चबलि प्रक्रिया की जाती है। विभिन्न योनियों में संव्याप्त जीव चेतना की तुष्टि हेतु भूतयज्ञ किया जाता है। अलग-अलग पत्तों या एक ही बड़ी पत्तल पर, पाँच स्थानों पर भोज्य पदार्थ रखे जाते हैं। उड़द-दाल की टिकिया तथा दही इसके लिए रखा जाता है। पाँचों भाग रखें। क्रमशः मन्त्र बोलते हुए एक-एक भाग पर अक्षत छोड़कर बलि समर्पित करें।

1 गोबलि- पवित्रता की प्रतीक गऊ के

निमित्त-

ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः,
पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं,
गावस्त्रैलोक्यमातरः॥
इदं गोभ्यः इदं न मम।

2 कुक्कुरबलि- कर्त्तव्यनिष्ठा के प्रतीक श्वान के निमित्त-

ॐ द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ,
वैवस्वतकुलोद्भवौ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि,
स्यातामेतावहिंसकौ॥
इदं श्वभ्यां इदं न मम॥

3 काकबलि- मलीनता निवारक काक के निमित्त-

ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या, याम्या वै नैर्ऋतास्तथा।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु,

भूमौ पिण्डं मयोज्झितम्।
इदं वायसेभ्यः इदं न मम॥

4 देवादिबलि- देवत्व संवर्धक शक्तियों के निमित्त-

ॐ देवाः मनुष्याः पशवो वयांसि,
सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसंघाः।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता,
ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्॥
इदं अन्नं देवादिभ्यः इदं न मम।

5 पिपीलिकादिबलि- श्रमनिष्ठा एवं सामूहिकता की प्रतीक चीटियों के निमित्त-

ॐ पिपीलिकाः कीटपतङ्काद्याः,
बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः।
तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयान्नं,
तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु॥
इदं अन्नं पिपीलिकादिभ्यः
इदं न मम॥

बाद में गोबलि गऊ को, कुक्कुरबलि श्वान को, काकबलि पक्षियों को, देवबलि कन्या को तथा पिपीलिकादि बलि चींटी आदि को खिला दिया जाए।

॥ मनुष्ययज्ञ-श्राद्ध सङ्कल्प ॥

कन्या भोजन, दीन-अपाहिज, अनाथों को जरूरत की चीजें देना, इस प्रक्रिया के प्रतीकात्मक उपचार हैं। इसके लिए तथा लोक हितकारी पारमार्थिक कार्यों के लिए किये जाने वाले दान की घोषणा श्राद्ध सङ्कल्प के साथ की जानी चाहिए।

॥ सङ्कल्पः ॥

...................नामाहं.....................नामकमृतात्मनःशान्ति-सद्गति-निमित्तं लोकोपयोगिकार्यार्थं................परिमाणे धनदानस्य कन्याभोजनस्य वा श्रद्धापूर्वकं सङ्कल्पं अहं करिष्ये॥

सङ्कल्प के बाद निम्न मन्त्र बोलते हुए अक्षत-पुष्प देव वेदी पर चढ़ाएँ।

ॐ उशन्तस्त्वा निधीमहि उशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशतऽ आ वह पितॄन्हविषेऽअत्तवे॥ ॐ दक्षिणामारोह त्रिष्टुप् त्वावतु बृहत्साम पञ्चदशस्तोमो ग्रीष्मऽऋतुः क्षत्रं द्रविणम्॥

-19.70, 10.11

॥ क्षमा प्रार्थना ॥

अद्य मे सफलं
जन्मभवत्पादाभिवन्दनात्।
अद्य मे गोत्रजाः सर्वे
गतोवोऽनुग्रहाद्विवम्॥
पत्र शाकादिदानेन क्लेशिता यूयमीदृशाः। तत्कलेशजातं चित्तात्तु विस्मृत्यान्तुमर्हथ॥ मन्त्र हीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वराः। श्राद्धं सम्पूर्णतां यातु प्रसादाद्भवतां मम॥

॥ विसर्जन ॥

पिण्ड विसर्जन-

नीचे लिखे मन्त्र के साथ पिण्डों पर जल सिञ्चित करें।

ॐ देवा गातुविदो गातुं
वित्त्वा गातुमित।
मनसस्पतऽ इमं देव
यज्ञ ँ स्वाहा वाते धाः॥ -8.21

पितृ विसर्जन-

पितरों का विसर्जन तिलाक्षत छोड़ते हुए करें।

ॐ यान्तु पितृगणाः सर्वे,
यतः स्थानादुपागताः।
सर्वे ते हृष्टमनसः,
सर्वान् कामान् ददन्तु मे॥
ये लोकाः दानशीलानां,
ये लोकाः पुण्यकर्मणाम्।
सम्पूर्णान् सर्वभोगैस्तु,

तान् व्रजध्वं सुपुष्कलान् ॥
इहास्माकं शिवं शान्तिः,
आयुरारोग्यसम्पदः ।
वृद्धिः सन्तानवर्गस्य,
जायतामुत्तरोत्तरा ॥ -अन्त्य.दी. पृ.120

देव विसर्जन-

अन्त में पुष्पाक्षत छोड़ते हुए देव विसर्जन करें।

ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे,
पूजामादाय मामकीम् ।
इष्ट कामसमृद्ध्यर्थं,
पुनरागमनाय च ॥

पञ्चयज्ञ पूरे करने के बाद अग्नि स्थापना करके गायत्री यज्ञ सम्पन्न करें, फिर नीचे लिखे मन्त्र से 3 विशेष आहुतियाँ दें।

ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे, महाकालाय धीमहि। तन्नो यमः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं यमाय इदं न मम॥

इसके बाद स्विष्टकृत्-पूर्णाहुति आदि करते हुए समापन करें। विसर्जन के पूर्व पितरों तथा देवशक्तियों के लिए भोज्य पदार्थ थाली में सजाकर नैवेद्य अर्पित करें, फिर क्रमशः क्षमा प्रार्थना, पिण्ड विसर्जन, पितृ विसर्जन तथा देव विसर्जन करें।

॥ शय्यादान ॥

आवश्यक सामग्री-

एक चारपाई, श्वेत चादर, दरी या गद्दा, तकिया, रजाई, वस्त्र, स्वर्ण, चाँदी अन्न, मिष्टान्न, छाता, उपानह (चट्टी या खड़ाऊँ), यज्ञोपवीत, बर्तन एवं दक्षिणा विदाई के समय। (उक्त ये सभी दान श्रद्धापूर्वक जो आप दे सकते हों, अपना बजट देखकर, अन्धश्रद्धा या दबाव में आकर नहीं, अपनी इच्छानुसार किसी सत्पात्र या लोकसेवी संस्था को ही दें।)

किसी सत्पात्र को अथवा ब्रह्मकर्म में रत किसी लोकसेवी संस्था के प्रतिनिधि को बुलायें। उनके ऊपर अक्षत-पुष्प डालते हुए ब्रह्म आवाहन मन्त्र से उनका सम्मान करें। तदनन्तर उन्हें आसन देकर उनका सम्मान करें, तिलक-माल्यार्पण आदि करके शय्या आदि तथा श्रद्धादान उन्हें भेंट करें। अपने वित्त (सामर्थ्य)के अनुसार अन्य दानादि भी समर्पित करें। उन्हें भोजन-मिष्टान्न आदि से सन्तुष्ट करें।

॥ आचार्य पूजन ॥

ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय,
गो ब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय,
गोविन्दाय नमो नमः॥

ब्रह्मभोज, सत्साहित्य आदि का भी सङ्कल्प करें।

आचार्य यजमान को तिलक कर आशीर्वाद दें। यजमान सभी उपस्थित जनों को प्रणाम अभिवादन करें। कार्यक्रम समाप्त करें।

॥ आशीर्वचन ॥

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु,
पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रुभ्यो भयनाशोऽस्तु
मित्राणामुदयस्तव॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमा
नं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुण्यलाभं
शतसंवत्सरं दीर्घमाहुः॥

॥ सर्वदेव नमस्कारः ॥

ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये,
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

मातृषोडशी

जो बालक-बालिकाएँ अपनी माँ का अन्तिम संस्कार करते हैं, उन्हें परम्परा अनुसार मातृषोडशी संस्कार भी करना चाहिए।

क्रिया भावना-

मातृषोडशी हेतु एक पत्तल में आटे के 16 पिण्ड (जौ, तिल, चावल मिलाकर) दक्षिणभिमुख होकर श्रद्धापूर्वक समर्पित करें।

माता का आवाहन-

हे माता! आपने गर्भ धारण करने से लेकर जन्म देने के बाद शैशवकाल तक मेरा पालन किया। मैं कुशा पर आपका तिलोदक से आवाहन करता हूँ।

आगर्भज्ञानपर्यन्तं पालितो

यत्त्वया ह्यहम्।

आवाहयामि त्वां मातर्दर्भपृष्ठे तिलोदकैः॥

माता को पिण्डदान-

हे माँ! गर्भावस्था में ऊँची-नीची भूमि पर चलते हुए आपको जो कष्ट हुआ, उसके निष्क्रमण के लिए मैं यह मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ॥1॥

गर्भे दुर्गमने दुःखं विषमेभूमिवर्त्मनि।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥1॥

जब तक पुत्र जन्म नहीं ले लेता, तब तकम ाताश ोकाकुलर हतीह ै,उ सके निष्क्रमण के लिए मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ॥2॥

यावत्पुत्रो न भवति तावनमाताथ शोचते। तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥2॥

हे माता! आपने प्रसव की वेदना से प्रत्येक मास में काफी कष्ट उठाया। उसके निष्क्रमण के लिए मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ॥3॥

मासि मासि कृतं कष्टं वेदनाप्रसवेषु च। तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ 3॥

प्रसव के पूर्व अवस्था में दसवें माह में आपको अत्यन्त पीड़ा हुई थी, उसके निष्क्रमण के लिए मैं यह मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ॥4॥

यत्पूर्णे दशमे मासि चात्यन्तं मातृपीडनम्। तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ 4॥

कभी-कभी जब पुत्र पैरों की ओर से जन्म लेता है, तो माता को अत्यन्त वेदना होती है। उसके निष्क्रमण के लिए मैं मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ॥5॥

पद्भ्यां प्रजायते पुत्रो
जनन्याः परिवेदनम्।
तस्या निष्क्रमणार्थाय
मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ 5॥

प्रसव हो जाने पर दुर्बलता के कारण माता जितना कष्ट सहती है, उसके निष्क्रमण के लिए मैं मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ॥6॥

शैथिल्ये प्रसवे प्राप्ते
माता विन्दति दृष्कृतम्।
तस्या निष्क्रमणार्थाय
मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ 6॥

माता! प्रसव के उपरान्त विविध प्रकार के कड़ुवे द्रव्यों (कड़वी औषधियों) के काढ़े पीती है, उसके निष्क्रमण के लिए मैं मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ॥7॥

पिबन्ती कटुद्रव्याणि क्काथानि
विविधानि च।

तस्या निष्क्रमणार्थाय
मातृपिण्डं ददाम्यहम् ॥ 7 ॥

तीन रात तक उपवास करने से माता की देह सूख जाती है, उसके निष्क्रमण के लिए मैं मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ ॥8॥

अग्निना शुष्कदेहा वै त्रिरात्रं पोषणेन च।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं
ददाम्यहम् ॥ 8 ॥

रात्रि के समय शिशु के मल-मूत्र के कारण कर्मठ माताएँ दुःख से मानो टूट जाती हैं, उससे उऋण होने हेतु मैं यह मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ ॥9॥

रात्रौ मूत्रपुरीषाभ्यां भिद्यन्ते
मातृकर्मठाः। तस्या निष्क्रमणार्थाय
मातृपिण्डं ददाम्यहम् ॥ 9 ॥

जो माता दिन-रात शिशु के पोषण के लिए स्तनपान कराती रहती है, उससे उऋण होने के लिए मैं मातृपिण्ड प्रदान

करता हूँ ॥ 10 ॥

दिवा रात्रौ च या माता ददाति निर्भरस्तनम्। तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम् ॥ 10 ॥

जो माता गर्भ धारण के समय प्रसव के पश्चात् माघ मास की सर्दी, वैशाख-ज्येष्ठ की गर्मी तथा शिशिर ऋतु में अत्यन्त कष्ट उठाती है, उससे उऋण होने के लिए मैं मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ ॥ 11।

माघे मासि निदाघे च
शिशिरेऽत्यन्तदुःखिता।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं
ददाम्यहम् ॥ 11 ॥

भूख से पीड़ित बच्चे के लिए माता अपने हिस्से का जो भोजन प्रदान कर देती है, उसके निष्क्रमण के लिए मैं यह मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ ॥ 12 ॥

क्षुधया विह्वले पुत्रे ह्यन्नं
माता प्रयच्छति।
तस्या निष्क्रमणार्थाय
मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ 12॥

पुत्र के बीमार पड़ने पर माता हाय-हाय करके जो क्रन्दन करती है, उसके निष्क्रमण के लिए मैं यह मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ॥ 13॥

पुत्रो व्याधिसमायुक्तो
माता हा क्रन्दकारिणी।
तस्या निष्क्रमणार्थाय
मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ 13॥

महाभयंकर यम के द्वार पर जाते हुए मार्ग में माता जो शोकाकुल होती है, उसके निष्क्रमण के लिए मैं यह मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ॥ 14॥

यमद्वारे महाघोरे पथि माता च शोचति।
तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं

ददाम्यहम् ॥ 14 ॥

जब तक पुत्र बच्चा रहता है, तब तक माता-अल्पाहार करती रहती है, उसके निष्क्रमण के लिए मैं यह मातृपिण्ड प्रदान करता हूँ ॥ 15 ॥

अल्पाहारस्य कारिणी यावत्पुत्रश्च बालकः । तस्या निष्क्रमणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम् ॥ 15 ॥

मृत्यु के समय माता को असाध्य शारीरिक कष्ट हुए, उस ऋण से उऋण होने के लिए मैं यह अन्तिम पिण्ड समर्पित करता हूँ ॥ 16 ॥

गात्रभङ्गो भवेन्मातुः
मृत्युरेव न संशयः ।
तस्या निष्क्रमणार्थाय
मातृपिण्डं ददाम्यहम् ॥ 16 ॥

दीपयज्ञ- युगयज्ञ विधान

॥ पवित्रीकरणम् ॥

ॐ पवित्रता मम/ मनःकाय/
अन्तःकरणेषु/ संविशेत्।
ॐ पवित्रता नः/ सन्मार्गं नयेत्।
ॐ पवित्रता नः/ महत्तां प्रयच्छतु।
ॐ पवित्रता नः/ शान्तिं प्रददातु।

॥ प्राणायामः ॥

ॐ विश्वानि देव सवितः दुरितानि
परासुव। यद्भद्रं तन्न ऽ आ सुव॥ -30.3

॥ चन्दनधारणम् ॥

ॐ मस्तिष्कं/ शान्तं भूयात्।
ॐ अनुचितः आवेशः/ मा भूयात्।
ॐ शीर्षं / उन्नतं भूयात्।
ॐ विवेकः / स्थिरी भूयात्।

॥ सङ्कल्पसूत्रधारणम् ॥

ॐ ईशानुशासनम् / स्वीकरोमि।

ॐ मर्यादां / चरिष्यामि।
ॐ वर्जनीयं / नो चरिष्यामि।

कलशपूजनम्-

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः.............

गुरुवन्दना-

ॐ अखण्ड मण्डलाकारं,
व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन,
तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
यथा सूर्यस्य कान्तिस्तु,
श्रीरामे विद्यते हि या।
सर्वशक्ति स्वरूपायै,
देव्यै भगवत्यै नमः ।।
ॐ श्री गुरवे नमः।
आवाहयामि स्थापयामि, ध्यायामि।

।।देवनमस्कारः।।

ॐ सर्वाभ्यो/ देवशक्तिभ्यो नम।
ॐ सर्वेभ्यो/देवपुरुषेभ्यो नमः।

ॐ सर्वेभ्यो/महाप्राणेभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो/महारुद्रेभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो/आदित्येभ्यो नमः।
ॐ सर्वाभ्यो/मातृशक्तिभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्य/तीर्थेभ्यो नमः।
ॐ महाविद्यायै नमः।
ॐ एतत्कर्मप्रधान/
श्रीमन्महाकालाय न मः।

॥पञ्चोपचारपूजनम्॥

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः/ गन्धाक्षतं/
पुष्पाणि/ धूपं/ दीपं/ नैवेद्यं समर्पयामि।
दोनों हाथ जोड़कर नमन करें-
ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय......

॥अग्निस्थापनम्॥

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो
भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥ -5.36

॥ गायत्री स्तवनम् ॥

ॐ यन्मण्डलं दीप्तिकरं
विशालं...... (पृष्ठ 80 पर देखें।)

॥ गायत्री मन्त्राहुतिः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥
इदं गायत्र्यै इदं न मम। -36.3

॥ पूर्णाहुतिः ॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्
पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते
स्वाहा॥ -बृह.उ. 5.1.1; 3.49
ॐ सर्वं वै पूर्ण ँस्वाहा।

॥ नीराजनम् (आरती) ॥

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति,
परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा,

तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय॥
ॐ यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः,
स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः,
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैः,
गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा,
पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः,
देवाय तस्मै नमः॥

॥शान्ति-अभिसिञ्चनम्॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः
शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वꣳ शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।
सर्वारिष्ट-सुशान्तिर्भवतु। -36.17

॥ विसर्जनम् ॥

ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे,
पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं,
पुनरागमनाय च॥

इसके पश्चात् जयघोष अन्त में प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम समाप्त किया जाए।

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंङ्काशं,
काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिसर्वपापघ्नं,
प्रणतोऽस्मिदिवाकरम्॥

भावार्थ- जपा कुसुम-सी लाल कान्ति वाले कश्यप के आत्मज, अन्धकार के शत्रु तथा समस्त पापों के नाशक सूर्य भगवान् को नमस्कार है।

दधिशङ्खषाराभं,
क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं,
शम्भुर्मुकुटभूषणम्॥

भावार्थ- दही, शङ्ख एवं तुषार जैसी श्वेत दीप्तिवाले, समुद्र से उत्पन्न, शिवजी के मुकुट के आभूषण, चन्द्रदेव को प्रणाम है।

धरणीगर्भसम्भूतं,

विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्ति हस्तं तं,
मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥

भावार्थ-पृथ्वी से उत्पन्न, बिजली की-सी प्रभा वाले, शक्तिधारी कुमार, मङ्गलदेव को प्रणाम है।

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं,
रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं,
तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

भावार्थ- प्रियङ्गु केसर की कली, श्याम वर्ण, सौम्य आकृति और अनेक सौम्य गुणों से परिपूर्ण, बुधदेव को प्रणाम है।

देवानां च ऋषीणां च,
गुरुं काञ्चन सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं,
तं नमामि बृहस्पतिम्॥

भावार्थ- देवताओं और ऋषियों के गुरु, कञ्चन जैसी प्रभा, बुद्धि के भण्डार, तीनों लोकों के स्वामी, बृहस्पति देव को प्रणाम है।

हिमकुन्दमृणालाभं,
दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं,
भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

भावार्थ- बर्फ , कुन्द, मृणाल की आभा वाले, दैत्यों के गुरु, सर्व शास्त्रों के ज्ञाता, शुक्रदेव को प्रणाम है।

नीलाञ्जनसमाभासं,
रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं,
तं नमामि शनैश्चरम्॥

भावार्थ- काले अञ्जन की दीप्ति, सूर्य-पुत्र तथा यमराज के बड़े भाई जिनकी उत्पत्ति सूर्य की छाया से हुई है,

उन शनि महाराज को प्रणाम है।

अर्धकायं महावीर्यं,
चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं,
तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥

भावार्थ - केवल आधी देह रहने पर भी महान साहसी, चन्द्र-सूर्य को त्रस्त कर देने वाले, सिंहिका से उत्पन्न राहु देवता को प्रणाम है।

पलाशपुष्पसङ्काशं,
तारकाग्रह मस्तकम्।
रौद्र रौद्रात्मकं घोरं,
तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

भावार्थ- पलाश के फूल की तरह लाल दीप्ति, समस्त तारकाओं में श्रेष्ठ रौद्र रूपधारी और रौद्रात्मक घोर केतु को प्रणाम है।

इति व्यासमुखोद् गीतं,
यः पठेत्सुसमाहितः।
दिवावा यदि वा रात्रौ,
विघ्नशान्तिर्भविष्यति॥

भावार्थ- व्यासदेव के मुख से गाये हुए इस स्तोत्र का जो श्रद्धा से पाठ करता है, उसकी सारी बाधाएँ समाप्त हो जाती हैं।

नर नारी नृपाणां च,
भवेद्दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषां,
आरोग्यं पुष्टिवर्द्धनम्॥

भावार्थ- जन साधारण और सामन्तों के बुरे स्वप्न भी मिट जाते हैं। ऐश्वर्य, धन-धान्य, आरोग्य की वृद्धि होती है।

गायत्री मन्त्र के 24 देवता

1 **गणेश गायत्री-**

ॐ एक दन्ताय विद्महे ,वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो बुद्धिः प्रचोदयात्।

2 **नृसिंह गायत्री-**

ॐ उग्रनृसिंहाय विद्महे, वज्रनखाय धीमहि। तन्नो नरसिंहः प्रचोदयात्।

3 **विष्णु गायत्री-**

ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

4 **शिव गायत्री-**

ॐ पञ्चवक्त्राय विद्महे, महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

5 **कृष्ण गायत्री-**

ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे,
वासुदेवाय धीमहि।
तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्।

6 राधा गायत्री-

ॐ वृषभानुजायै विद्महे,
कृष्ण प्रियायै धीमहि।
तन्नो राधा प्रचोदयात्।

7 लक्ष्मी गायत्री-

ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे,
विष्णुप्रियायै धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

8 अग्नि गायत्री-

ॐ महाज्वालाय विद्महे,
अग्निदेवाय धीमहि।
तन्नो अग्निः प्रचोदयात्।

9 इन्द्र गायत्री-

ॐ सहस्रनेत्राय विद्महे,
वज्रहस्ताय धीमहि
तन्नः इन्द्रः प्रचोदयात्।

10 सरस्वती गायत्री-

ॐ सरस्वत्यै विद्महे,
ब्रह्मपुत्र्यै धीमहि।
तन्नो देवीः प्रचोदयात्।

11 दुर्गा गायत्री-

ॐ गिरिजायै विद्महे, शिवप्रियायै
धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।

12 हनुमान् गायत्री-

ॐ अञ्जनीसुताय विद्महे ,
वायुपुत्राय धीमहि।
तन्नो मारुतिः प्रचोदयात्।

13 पृथ्वी गायत्री-

ॐ पृथ्वीदेव्यै विद्महे, सहस्रमूर्त्यै
धीमहि। तन्नो पृथ्वी प्रचोदयात्।

14 सूर्य गायत्री-

ॐ भास्कराय विद्महे,
दिवाकराय धीमहि।
तन्नः सूर्य्यःप्रचोदयात्।

15 राम गायत्री-

ॐ दाशरथये विद्महे,
सीता वल्लभाय धीमहि।
तन्नो राम:प्रचोदयात्।

16 सीता गायत्री-

ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे,
भूमिजायै धीमहि।
तन्न: सीता प्रचोदयात्।

17 चन्द्र गायत्री-

ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे,
अमृत-तत्वाय धीमहि।
तन्नश्चन्द्र: प्रचोदयात्।

18 यम गायत्री-

ॐ सूर्य पुत्राय विद्महे,
महाकालाय धीमहि।
तन्नो यम: प्रचोदयात्।

19 ब्रह्मा गायत्री-

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे,
हंसारूढाय धीमहि ।
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।

20 वरुण गायत्री-

ॐ जलबिम्बाय विद्महे,
नीलपुरुषाय धीमहि।
तन्नो वरुणः प्रचोदयात्।

21 नारायण गायत्री-

ॐ नारायणाय विद्महे,
वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो नारायणः प्रचोदयात्।

22 हयग्रीव गायत्री-

ॐ वाणीश्वराय विद्महे,
हयग्रीवाय धीमहि।
तन्नो हयग्रीवः प्रचोदयात्।

23 हंस गायत्री-

ॐ परमहंसाय विद्महे,

महाहंसाय धीमहि।
तन्नो हंसः प्रचोदयात्।

24 तुलसी गायत्री-
ॐ तुलस्यै विद्महे,
विष्णुप्रियायै धीमहि।
तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।

25 महाकाल गायत्री-
ॐ प्रखर प्रज्ञाय विद्महे,
महाकालाय धीमहि।
तन्नः श्रीरामः प्रचोदयात्।

वेद एवं देव स्थापना

आर्ष ग्रन्थों, वेद, उपनिषद्, प्रज्ञोपनिषद् (प्रज्ञापुराण) आदि की स्थापना विधिपूर्वक, श्रद्धा भरे वातावरण में कराई जाय। स्थापना के साथ उसके नियमित (न्यूनतम) अध्ययन का संकल्प भी कराया जाय। संक्षिप्त प्रारूप इस प्रकार है-

सर्वप्रथम षट्कर्म, तिलक, रक्षासूत्र, कलशपूजन, दीपपूजन, गुरु- गायत्री आवाहन, सर्वदेव नमस्कार, स्वस्तिवाचन, तक की प्रक्रिया पूरी करके पूजावेदी पर वेदपुरुष का आवाहन करें।

ॐ वेदोसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोभवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः।
देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित। मनसस्पतऽ इमं देव यज्ञ ॅंस्वाहा वाते धाः॥ -2.21

ॐ वेदपुरुषाय नमः।
आवाहयामि स्थापयामि, ध्यायामि।

दोनों हाथ से स्पर्श करें, प्राण प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो3म्प्रतिष्ठ॥ -2.13

इसके पश्चात् पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार पूजन करा देना चाहिए। तत्पश्चात् सम्भव हो, तो यज्ञ अथवा दीपयज्ञ की प्रक्रिया जोड़ें। कर्मकाण्ड का कोई अंश घटाना या बढ़ाना हो, तो विवेकपूर्वक कर लें।

देवस्थापना के क्रम में गुरुदेव ने पूजनपूर्वक गायत्री मन्त्र, गायत्री माता का चित्र, युग शक्ति की प्रतीक मशाल, पञ्चदेव चित्र आदि की स्थापना का क्रम चलाया था। इसे एक प्रकार से चित्रों की

प्राण प्रतिष्ठा माना जाता है। श्रद्धापूर्वक स्थापना से उपासना स्थल में दिव्यता का सञ्चार होता है। स्थापना के साथ वहाँ परिवार जनों द्वारा नियमित पूजा उपासना का क्रम चलाने की शर्त रखी जाती है। वेद स्थापना की ही तरह कर्मकाण्ड की सारी प्रक्रिया पूरी करें। केवल वेदपुरुष के स्थान पर महाकाल एवं महाशक्ति या सम्बन्धित इष्टदेव का आवाहन करें।

महाकाल आवाहन

ॐ प्रखर प्रज्ञाय विद्महे महाकालाय धीमहि। तन्नः श्रीरामः प्रचोदयात्॥

महाशक्ति आवाहन

ॐ सजल श्रद्धाय विद्महे महाशक्त्यै धीमहि। तन्नो भगवती प्रचोदयात्॥

विशेष-आहुतिः

सर्वत्र जलवर्षा के सन्तुलन के लिए-

ॐ जलबिम्बाय विद्महे,
नीलपुरुषाय धीमहि।
तन्नो वरुणः प्रचोदयात्, स्वाहा॥
इदं वरुणाय इदं न मम॥ -व.गा.

प्राकृतिक आपदाओं एवं युद्ध में
दिवङ्गत आत्माओं की शान्ति के लिए-

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो
भवत्वर्यमा। शं नऽ इन्द्रो बृहस्पतिः
शं नो विष्णुरुरुक्रमः, स्वाहा।
इदं दिवङ्गतानां शान्त्यर्थं इदं न मम।

अनिष्ट निवारण के लिए-

ॐ पञ्चवक्त्राय विद्महे,
महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्,
स्वाहा। इदं रुद्राय इदं न मम॥ -रु.गा.

सविता देवता के विधेयात्मक लाभ प्राप्ति के लिए-

ॐ भास्कराय विद्महे,
दिवाकराय धीमहि।
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्,
स्वाहाः। इदं सूर्याय इदं न मम।

नोट- कर्मकाण्डों का विस्तृत स्वरूप समझने के लिए शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित कर्मकाण्ड भास्कर का सहारा लेना चाहिए।

लोकप्रिय मन्त्र

1 प्रातःकाल जागने पर दोनों हाथों का दर्शन करते हुए (करदर्शनम्):-

कराग्रे वसते लक्ष्मीः,
करमूले सरस्वती।
करमध्ये तु गोविन्दः,
प्रभाते करदर्शनम्॥

भावार्थ- हाथ के अग्रभाग में सम्पन्नता की देवी लक्ष्मी रहती हैं। हाथ के मूल (कलाई) में विद्या की देवी सरस्वती वास करती हैं। हाथ के मध्य में सभी इन्द्रियों को वश में करने वाले स्वयं गोविन्द वास करते हैं। इसलिए सुबह उठते ही हाथों का दर्शन करना चाहिए।

2 स्नान के समय भावना करें हे नदियो! आप सभी मेरे इस स्नान

जल में पधारें :-

समुद्रवसने देवि! पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि! नमस्तुभ्यं, पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

भावार्थ- जिन देवी ने समुद्र रूपी वस्त्र धारण किये हों, पर्वत रूपी जिनके स्तन हों, जो विष्णु की पत्नी हैं, ऐसी हे माँ ! मेरे पैर आपको स्पर्श कर रहे हैं, आप मुझे क्षमा करें।

3 **गङ्गे च यमुने चैव,**
गोदावारि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी,
जलेऽस्मिन् सन्निधं कुरु ॥

4 तिलक लगाने हुए (चन्दन धारणम्)-

चन्दनस्य महत्पुण्यं,
पवित्रं पाप नाशनम्।

आपदां हरते नित्यं
लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा।।

5 दीपक अथवा कोई प्रकाश प्रज्वलित करते हुए (दीप पूजनम):-

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।
सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।।
अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।
सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।।
ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः
स्वाहा।।

6 सायं प्रकाश करते समय (ज्योतिवन्दन)-

शुभं करोति कल्याणं,
आरोग्य धनसम्पदः।
शत्रूणां भय नाशाय,
दीप ज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

7 कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ करने से पहले (गणेश-वन्दना)-

वक्रतुण्ड महाकाय
सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव!
सर्वकार्येषु सर्वदा॥
गजाननं भूतगणादि सेवितं,
कपित्थजम्बूफल चारुभक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाश कारकं,
नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम्॥
सुमुखश्चैकदन्तश्च,
कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो,
विघ्ननाशो विनायकः।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो,
भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि,
यः पठेच्छृणुयादपि ।
विद्यारम्भे विवाहे च,

प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे सङ्कटे चैव,
विघ्नस्तस्य न जायते ॥

9 सर्वकल्याण हेतु प्रार्थना-

ॐ सर्वेषां स्वस्तिं भवतु,
सर्वेषां शान्तिर्भवतु।
सर्वेषां पूर्णं भवतु,
सर्वेषां मङ्गलं भवतु।।

भावार्थ- हे प्रभो ! विश्व के सर्व प्राणी एक दूसरे के हेतु कल्याणकारी हों, सर्व को शान्ति प्राप्त हो, सभी सम्पूर्णता एवं निपुणता प्राप्त करें, सर्व मङ्गल हो- कल्याण हो।

10 विश्वकल्याणार्थ प्रार्थना-

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,

मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥

भावार्थ-हे प्रभो! विश्व के समस्त प्राणी सुखी हों, सभी निरोगी हो, सभी शुभ एवं कल्याणमय (सकारात्मक) देखें, कभी किसी कोई पीड़ा एवं दुःख न हो। विश्व में सर्वत्र शान्ति हो।

11 विश्वकल्याण की भावना का मन्त्र (किसी भी शुभकार्य में)-

ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः
स्वस्ति नः पूषाः विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योअरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ -25.19

12 सुप्रभात में शुभकामना : ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा नवग्रहों से मङ्गल कामना के लिए (किसी शुभ कार्य अथवा पूजा के प्रारम्भ में प्रार्थना)।

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी,
भानुः शशीभूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः,
सर्वेग्रहाः शान्तिकराभवन्तु।।

13 प्रभु को साष्टाङ्ग प्रणाम करते हुए (साष्टाङ्ग नमस्कार)-

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये,
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्नेपुरुषाय शाश्वते,
सहस्रकोटी युगधारिणे नमः।।

14 विश्व में शान्ति एवं सर्व कल्याण के लिए (शान्ति पाठ)-

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः। वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्व ँ शान्तिः
शान्तिरेवशान्तिःसामा शान्तिरेधि।।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि
परा सुव। यद्भद्रं तन्न ऽ आ सुव ।।
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!
सर्वारिष्टसुशान्तिर्भवतु।।

15 सूर्य को अर्घ्य देते समय-
ॐ सूर्यदेव सहस्रांशो,
तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या,
गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥
ॐ सूर्याय नमः,
आदित्याय नमः,
भास्कराय नमः।।

17 अपनी दैनिक पढ़ाई प्रारम्भ करने के पूर्व (सरस्वती वन्दना)-
या कुन्देन्दु तुषारहार धवला,
या शुभ्र वस्त्रावृता।
या वीणा वर दण्ड मण्डितकरा,
या श्वेत पद्मासना।

या ब्रह्माच्युत शङ्कर प्रभृतिभिः,
देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती,
निःशेष जाड्यापहा॥

भावार्थ-जो चमेली के पुष्पों के समान कान्तिमय हैं, जिनका श्वेत हार हिम की बूँदों के समान है, जो श्वेत वस्त्रों को धारण किये हैं, जिनकी सुन्दर हथेलियों एवं भुजाओं में ज्ञान की वीणा सुशोभित है, जो श्वेत कमलपुष्प के आसन पर विराजमान हैं। जो ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के लिए भी सदा वन्दनीय हैं, ऐसी विद्या की देवी माँ सरस्वती, आप मेरे अज्ञान, आलस्य एवं प्रमाद को जड़-मूलसहित दूर कर मेरी रक्षा करें।

18 भोजन के पूर्व (ब्रह्मार्पणम्)

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः

ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं
ब्रह्म-कर्म-समाधिना ।।
हर्रिदाता हर्रिभोक्ता
हर्रिअन्नं प्रजापति ।
हरिः सर्व शरीरस्थो
भोक्ते भुज्यते हरिः ।।

19 गुरु-शिष्य प्रार्थना

गुरु और शिष्य, शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के बीच पवित्र एवं सम्मान की भावना का विकास होना आवश्यक है, इस प्रार्थना में गुरु-शिष्य ईश्वर से विनती करते हैं कि-

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु ।
सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा
विद्विषावहै ॥
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः !!!

भावार्थ : हे प्रभो! हम दोनों की रक्षा करें। हम दोनों का पालन करें। हमारे संग हमें सर्व शक्तियों से पूर्ण करें। हमारा विद्यार्जन दैवी एवं तेजस्वी हो। हमारा आपस में कभी द्वेष न हो।

शिव-शक्ति वन्दना

ॐ रुद्राः स ँसृज्यपृथिवीं
बृहज्ज्योतिः समीधिरे।
तेषां भानुरजस्रऽ इच्छुक्रो
देवेषु रोचते॥ -11.54

ॐ याते रुद्र शिवा तनूः
शिवा विश्वाहा भेषजी।
शिवा रुतस्य भेषजी तया
नो मृड जीवसे॥ -16.49
ॐ शिव-शक्त्यै एक रूपिण्यै नमः

श्री कृष्ण वन्दना

ॐ वंशी विभूषितकरान्नवनीरदाभात्

पीताम्बरा तरुणविम्बफलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात्
कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥
ॐ श्रीकृष्णाय नमः।

शिवाभिषेक:

माहात्म्य बोध-

महाशिवरात्रि पर्व भगवान् शिव की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए प्रसिद्ध है। निश्चित रूप से उन्हें प्रसन्न करने के लिए मनुष्य को उनके अनुरूप ही बनना पड़ता है। सूत्र है- 'शिवो भूत्वा शिवं यजेत्' अर्थात् शिव बनकर शिव की पूजा करें, तभी उनकी कृपा प्राप्त हो सकती है। यह भाव गहराई से साधकों को हृदयङ्गम कराया जा सके तथा शिव की विशेषताओं को सही रूप से ध्यान में लाया जा सके, तो वास्तव में साधना के आश्चर्यजनक परिणाम मिलने लगें।

शिवजी के प्रति जन साधारण में बहुत आकर्षण है; किन्तु उनके सम्बन्ध में भ्रान्तियाँ भी खूब हैं, इसलिए शिव की साधना के नाम पर ही अशिव

आचरण होते रहते हैं। शिवरात्रि पर्व पर सामूहिक आयोजन के माध्यम से फैली भ्रान्तियों का निवारण करते हुए शिव की गरिमा के अनुरूप उनके स्वरूप पर जन आस्थाएँ स्थापित की जा सकती हैं। ऐसा करना व्यक्तिगत पुण्य अर्जन और लोककल्याण दोनों दृष्टियों से बहुत महत्त्व रखता है।

शिव का अर्थ है- शुभ, शङ्कर का अर्थ है कल्याण करने वाला। शुभ और कल्याणकारी चिन्तन, चरित्र एवं आकांक्षाएँ बनाना ही शिव आराधना की तैयारी अथवा शिव सान्निध्य का लाभ है। शिवलिङ्ग का अर्थ होता है- शुभ प्रतीक चिह्न-बीज। शिव की स्थापना लिङ्ग रूप में की जाती है,फिर वही क्रमशः विकसित होता हुआ सारे जीवन को आवृत कर लेता है। शिव अपने लिए कठोर दूसरों के लिए उदार हैं। यह

अध्यात्म साधकों के लिए आदर्श सूत्र है। स्वयं न्यूनतम साधनों से काम चलाते हुए , दूसरों को बहुमूल्य उपहार देना, स्वयं न्यूनतम में भी मस्त रहना, शिवत्व का प्रामाणिक सूत्र है।

नशीली वस्तुएँ आदि शिव को चढ़ाने की परिपाटी है। मादक पदार्थ सेवन अकल्याणकारी हैं, किन्तु उनमें औषधीय गुण भी हैं। शिव को चढ़ाने का अर्थ हुआ- उनके शिव-शुभ उपयोग को ही स्वीकार करना, अशुभ व्यसन रूप का त्याग करना। ऐसी अगणित प्रेरणाएँ शिव विग्रह के साथ जुड़ी हुई हैं। त्रिनेत्र विवेक से कामदहन, मस्तक पर चन्द्रमा मानसिक सन्तुलन, गङ्गा-ज्ञान प्रवाह, भूत आदि पिछड़े वर्गों को स्नेह देना आदि प्रकरण युग निर्माण साहित्य में जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े हैं, उनका उपयोग विवेकपूर्वक प्रेरणा-प्रवाह पैदा करने में किया जा सकता है।

॥ पूर्व व्यवस्था ॥

शिवरात्रि पर्व के लिए सामूहिक आयोजन में मञ्च पर शिव जी का चित्र सजाएँ। कामदहन, गङ्गावतरण, विषपान जैसे चित्रों का उपयोग किया जा सकता है। शिव पञ्चायतन, जिसमें शिवपरिवार तथा गण भी हों, ऐसा चित्र मिल सके, तो और भी अच्छा है। पूजन सामग्री के साथ पूजन के लिए किसी प्रतिनिधि को बिठाया जाए।

॥ पर्व पूजन क्रम ॥

प्रारम्भिक यज्ञीय कर्मकाण्ड से षट्कर्म, सर्वदेव नमस्कार, स्वस्तिवाचन आदि कृत्य पूरे कर लिए जाएँ। तत्पश्चात् भगवान् शिव, उनके परिवार और गणादि का आवाहन किया जाए।

॥ शिव आवाहन ॥

ॐ रुद्राः स ँ सृज्यपृथिवीं
बृहज्ज्योतिः समीधिरे।
तेषां भानुरजस्रऽ इच्छुक्रो
देवेषु रोचते॥ -11.54
ॐ याते रुद्र शिवा तनूः
शिवा विश्वाहा भेषजी।
शिवा रुतस्य भेषजी तया
नो मृड जीवसे॥
ॐ श्री शिवाय नमः।
आवाहयामि स्थापयामि, ध्यायामि।
-16.49

॥ शिव परिवार आवाहन ॥

शिवजी का परिवार आदर्श परिवार है, सभी अपने-अपने व्यक्तित्व के धनी तथा स्वतन्त्र रूप से उपयोगी हैं। अर्धाङ्गिनी-असुरनिकन्दिनी-भवानी, ज्येष्ठ पुत्र-देव सेनापति कार्तिकेय तथा कनिष्ठ पुत्र प्रथम पूज्य-गणपति हैं। शिव के

आराधक को शिव परिवार जैसा श्रेष्ठ संस्कार युक्त परिवार निर्माण के लिए तत्पर होना चाहिए। भावना करें कि पारिवारिक आदर्श का प्रवाह हमारे बीच प्रवाहित हो रहा है।

अक्षत, पुष्प लेकर शिव परिवार का आवाहन करें। (गणेश, गौरी, आदि की प्रतिमा न होने पर पूजन सामग्री शिवलिंग पर ही समर्पित करें।)

॥गणेश आवाहनम्॥

ॐ लम्बोदर ! नमस्तुभ्यं,
सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव,
सर्वकार्येषु सर्वदा॥

ॐ एकदन्ताय विद्महे,
वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥
ॐ श्री गणपतये नमः।

आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥ भवानी आवाहनम् ॥

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय
स्वाहा व्यानाय स्वाहा।
अम्बे अम्बिकेम्बालिके
न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां
काम्पीलवासिनीम् ॥ - 23.18
ॐ नमो देव्यै महादेव्यै
शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः
प्रणताः स्म ताम् ॥
ॐ श्री गौर्यै नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥ नन्दीश्वर आवाहनम् ॥

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्
मातरं पुरः। पितरश्च प्रयन्त्स्वः ॥
ॐ नन्दीश्वराय नमः। आवाहयामि,

स्थापयामि, ध्यायामि॥ -3.6

॥ स्वामी कार्तिकेय आवाहनम् ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽ उद्यन्त्
समुद्राद्रुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू
उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥ -29.12
ॐ श्री स्कन्दाय नमः।
आवाहयामि,स्थापयामि, ध्यायामि।

॥गण आवाहनम् ॥

ॐ भद्रो नो अग्निराहुतो
भद्रारातिः, सुभग भद्रो अध्वरः।
भद्राऽ उत प्रशस्तयः॥ -15.38
ॐ सर्वेभ्यो गणेभ्यो नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥सर्प आवाहनम् ॥

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च
पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये
दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।

ॐ सर्पेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि॥ -13.6

अब एकादश रुद्रों एवं एकादश शक्तियों के नाम मन्त्रों से भगवान् श्रीसाम्बसदाशिव को हाथ जोड़कर नमन करें।

॥एकादश- रुद्र नमन॥

ॐ अघोराय नमः

ॐ पशुपतये नमः

ॐ शर्वाय नमः

ॐ विरूपाक्षाय नमः

ॐ विश्वरूपिणे नमः

ॐ त्र्यम्बकाय नमः

ॐ कपर्दिने नमः

ॐ भैरवाय नमः

ॐ शूलपाणये नमः

ॐ ईशानाय नमः

ॐ महेश्वराय नमः

ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥ एकादश-शक्ति नमन ॥

ॐ उमायै नमः
ॐ शङ्करप्रियायै नमः
ॐ पार्वत्यै नमः
ॐ गौर्य्यै नमः
ॐ काल्यै नमः
ॐ कालिन्द्यै नमः
ॐ कोटर्य्यै नमः
ॐ विश्वधारिण्यै नमः
ॐ ह्रां नमः
ॐ ह्रीं नमः
ॐ गङ्गादेव्यै नमः
ॐ एकादश शक्तिभ्यो नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

अब शिव परिवार सहित सभी देव शक्तियों का पञ्चोपचार विधि से पूजन करें।

ॐ श्री शिवपरिवारेभ्यो नमः।
आवाहयामि, स्थापयामि।
जलं, गन्धाक्षतं, पुष्पाणि, धूपं,
दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि।

॥ अथ अष्टोत्तरशत शिवनाम स्मरणम् ॥

विनियोगः- एक आचमनी जल लें।

ॐ अस्य श्री शिवाष्टोत्तरशतनाम मन्त्रस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्ब सदाशिव प्रीतये अष्टोत्तरशतनामभिः शिवस्मरणे विनियोगः।

जल छोड़ दें। अब हाथ जोड़कर भगवान् श्रीसाम्बसदाशिव का ध्यान करें।

शान्ताकारं शिखरि शयनं
नीलकण्ठं सुरेशम्।

विश्वाधारं स्फटिक सदृशं
शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्॥
गौरीकान्तं त्रितयनयनं
योगिभिर्ध्यानगम्यम्।
वन्दे शम्भुं भवभयहरं
सर्वलोकैकनाथम्॥

॥श्रीसदाशिव पूजनम्॥

अब भगवान् शिव का पूजन करने के लिये सम्बन्धित सामग्री हाथ में लें, मन्त्रोच्चार के साथ अथवा पूरा होने पर समर्पित कर दें।

॥ध्यानम्॥

ॐ वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं,
वन्दे जगत्कारणम्।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं,
वन्दे पशूनाम्पतिम्॥
वन्दे सूर्यशशाङ्क वह्निनयनं,
वन्दे मुकुन्दप्रियम्।

वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं,
वन्दे शिवं शङ्करम् ॥
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
ध्यानम् समर्पयामि।

॥ आवाहनम् ॥

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः
सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ँ सर्वतस्पृत्वा अत्यतिष्ठद्
दशाङ् गुलम् ॥-31.1
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
आवाहयामि, स्थापयामि।

॥ आसनम् ॥

ॐ पुरुषऽ एवेदँ सर्वं
यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो
यदन्नेनातिरोहति ॥ - 31.2
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
आसनं समर्पयामि।

॥ पाद्यम् ॥

ॐ एतावानस्य महिमातो
ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि
त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ - 31.3
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
पाद्यं समर्पयामि।

॥ अर्घ्यम् ॥

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽ उदैत्पुरुषः
पादोस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्
साशनानशने अभि ॥ - 31.4
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
अर्घ्यं समर्पयामि।

॥ आचमनम् ॥

ॐ ततो विराडजायत
विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत

पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥ -31.5

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

॥स्नानम् ॥

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः
सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान्
आरण्या ग्राम्याश्च ये ॥ - 31.6

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, स्नानं समर्पयामि।

शिवलिंग अच्छी तरह से साफ कर लें। स्नान में प्रयुक्त दूध, दही, घी, मधु, शर्करा आदि को इकट्ठा कर प्रसाद स्वरूप सबको वितरित कर दें।

॥पयः स्नानम् (दुग्ध) ॥

ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽ
ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्। -18.36

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, पयःस्नानं समर्पयामि।

॥दधिस्नानम्॥

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं
जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र णऽ
आयूꣳषि तारिषत्॥ -23.32

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दधिस्नानं समर्पयामि।

॥घृतस्नानम्॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानःपिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशःप्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ -6.19

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, घृतस्नानं समर्पयामि।

॥मधुस्नानम्॥

ॐ मधु वाताऽ ऋतायते मधु क्षरन्ति

सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
ॐ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्
पार्थिवꣳरजः। मधुद्यौरस्तु नःपिता।
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिः मधुमाँ2अस्तु
सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
मधुस्नानं समर्पयामि। -13.27-28

॥शर्करास्नानम्॥

ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त
ꣳ समाहितम्। अपा ꣳ रसस्य यो
रसस्तं वो गृह्णामि उत्तममुपयाम
गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते
योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। -9.3
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
शर्करास्नानं समर्पयामि।

॥पञ्चामृतस्नानम्॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि
यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पञ्चधा सो
देशेभवत्सरित् ॥ -34.11
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय
नमः,पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

॥शुद्धोदकस्नानम् ॥

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो
मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः
श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये
कर्णा यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा
नभोरूपाः पार्जन्याः ॥ -24.3
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

॥गन्धोदकस्नानम् ॥

(हल्दी, चन्दन आदि से)
ॐ अᳬं शुना ते अᳬं
शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु
मदाय रसो अच्युतः। -20.27

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,गन्धोदक स्नानं समर्पयामि।

(पुनः शुद्ध जल से स्नान करायें। **ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो....** अन्य उपस्थित जन जलाभिषेक करें, इस बीच ॐ नमःशिवाय का पाठ करते रहें।)

॥महाभिषेकस्नानम्॥

शृङ्गी या लोटे से भगवान् शिव के ऊपर जलधार छोड़ें, महाभिषेक स्नान करायें। जब तक मन्त्र चलता रहे, जलधार बनाये रखना चाहिए।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ
उतो तऽ इषवे नमः।
बाहुभ्यामुतते नमः॥ 1॥

या ते रुद्र शिवा
तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया
गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥2॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा
हि ँ सीः पुरुषं जगत्॥ 3॥
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ँ
सुमनाऽ असत्॥ 4॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च
यातुधान्योऽधराचीः परा सुव॥ 5॥

असौ यस्ताम्रो अरुणऽ
उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैन ँरुद्राऽ अभितो दिक्षु श्रिताः
सहस्रशोऽवैषा ँहेडऽ ईमहे॥ 6॥

असौ योऽवसर्पति
नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः
स दृष्टो मृडयाति नः॥ 7॥

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय
सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं
तेभ्योऽकरं नमः॥ 8॥

प्रमुञ्च धन्वनस्
त्वमुभयोरार्त् न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्तऽइषवः
परा ता भगवो वप॥ 9॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो
विशल्यो बाणवाँ2 उत।
अनेशन्नस्य याऽ
इषवऽआभुरस्य
निषङ्गधिः॥ 10॥

या ते हेतिर्मीढुष्टम
हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान् विश्वतस्
त्वमयक्ष्मया परि भुज॥ 11॥

परि ते धन्वनो
हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो यऽ इषुधिस्तवारे
अस्मन्निधेहि तम् ॥ 12 ॥

अवतत्य धनुष्ट्व ँ
सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा
शिवो नः सुमना भव ॥ 13 ॥

नमस्तऽ आयुधायानातताय
धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो
बाहुभ्यां तव धन्वने ॥ 14 ॥

मा नो महान्तमुत मा नो
अर्भकं मा नऽउक्षन्तमुत
मा नऽ उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत
मातरं मा नः प्रियास्तन्वो
रुद्र रीरिषः ॥ 15 ॥

मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा
नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो
वधीर्हविष्मन्तः सदमित्
त्वा हवामहे॥ 16॥ -16.1-16

(पुनः शुद्ध जल से स्नान करायें। ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो....)

॥वस्त्रम्॥

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽ
ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ঁ सि जज्ञिरे तस्माद्
यजुस्तस्मादजायत॥ -31.7

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

॥यज्ञोपवीतम्॥

ॐ तस्मादश्वा ऽ अजायन्त ये के
चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्
तस्माज्ज्ञाता ऽ अजावयः॥ -31.8

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

॥ गन्धम् ॥

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्
पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽअयजन्त साध्या ऽ
ऋषयश्च ये ॥ -31.9
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
गन्धं विलेपयामि।

॥ भस्मम् ॥

ॐ प्रसद्य भस्मना
योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
स ँ सृज्य मातृभिष्ट्वं
ज्योतिष्मान् पुनरासदः ॥ -12.38
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
भस्मम् विलेपयामि।

॥ अक्षतान् ॥

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽ

अधूषत। अस्तोषत
स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती
योजान्विन्द्र ते हरी॥ -3.51
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
अक्षतान् समर्पयामि।

॥पुष्पाणि॥

ॐ यत् पुरुषं व्यदधुः
कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं
बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ -31.10
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ बिल्वपत्रार्पणम् ॥

ॐ त्रिदलं त्रिगुणाकारं,
त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मपाप संहारं,
बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य,

स्पर्शनं पापनाशनम् ।
अघोरपाप संहारं,
बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
बिल्वपत्रं समर्पयामि ।

ध्यान के बाद भगवान् शिव के आगे लिखे 108 नामों से शिवलिंग पर बिल्व पत्र चढ़ायें अथवा पुष्पाक्षत आदि से भगवान् शिव का पूजन करें, नमन करें । (कोई बिल्वपत्र चढ़ाना चाहें तो प्रत्येक नाम के साथ समर्पित करते चलें ।)

ॐ शिवाय नमः
ॐ महेश्वराय नमः
ॐ शम्भवे नमः
ॐ पिनाकिने नमः
ॐ शशिशेखराय नमः
ॐ वामदेवाय नमः
ॐ विरूपाक्षाय नमः
ॐ कपर्दिने नमः

ॐ नीललोहिताय नमः

ॐ शङ्कराय नमः

ॐ शूलपाणिने नमः

ॐ खट्वाङ्गिने नमः

ॐ विष्णुवल्लभाय नमः

ॐ शिपिविष्टाय नमः

ॐ अम्बिकानाथाय नमः

ॐ श्री कण्ठाय नमः

ॐ भक्तवत्सलाय नमः

ॐ भवाय नमः

ॐ शर्वाय नमः

ॐ त्रिलोकेशाय नमः

ॐ शितिकण्ठाय नमः

ॐ शिवाप्रियाय नमः

ॐ उग्राय नमः

ॐ कपालिने नमः

ॐ कामारये नमः

ॐ अन्धकासुर सूदनाय नमः

ॐ गङ्गाधराय नमः

ॐ ललाटाक्षाय नमः

ॐ कालकालाय नमः

ॐ कृपानिधये नमः

ॐ भीमाय नमः

ॐ परशुहस्ताय नमः

ॐ मृगपाणये नमः

ॐ जटाधराय नमः

ॐ कैलासवासिने नमः

ॐ कवचिने नमः

ॐ कठोराय नमः

ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः

ॐ वृषाङ्काय नमः

ॐ वृषभारूढाय नमः

ॐ भस्मोद् धूलितविग्रहाय नमः

ॐ सामप्रियाय नमः

ॐ स्वरमयाय नमः

ॐ त्रयीमूर्तये नमः

ॐ अनीश्वराय नमः

ॐ सर्वज्ञाय नमः

ॐ परमात्मने नमः
ॐ सोमलोचनाय नमः
ॐ सूर्यलोचनाय नमः
ॐ अग्निलोचनाय नमः
ॐ हविर्यज्ञमयाय नमः
ॐ सोमाय नमः
ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
ॐ सदाशिवाय नमः
ॐ विश्वेश्वराय नमः
ॐ वीरभद्राय नमः
ॐ गणनाथाय नमः
ॐ प्रजापतये नमः
ॐ हिरण्यरेतसे नमः
ॐ दुर्धर्षाय नमः
ॐ गिरीशाय नमः
ॐ गिरिशाय नमः
ॐ अनघाय नमः
ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः
ॐ भर्गाय नमः

ॐ गिरिधन्विने नमः
ॐ गिरिप्रियाय नमः
ॐ कृत्तिवाससे नमः
ॐ पुराराातये नमः
ॐ भगवते नमः
ॐ प्रमथाधिपाय नमः
ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
ॐ जगद्व्यापिने नमः
ॐ जगद्गुरवे नमः
ॐ व्योमकेशाय नमः
ॐ महासेन जनकाय नमः
ॐ चारुविक्रमाय नमः
ॐ रुद्राय नमः
ॐ भूतपतये नमः
ॐ स्थाणवे नमः
ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः
ॐ दिगम्बराय नमः
ॐ अष्टमूर्तये नमः

ॐ अनेकात्मने नमः
ॐ सात्त्विकाय नमः
ॐ शुद्धविग्रहाय नमः
ॐ शाश्वताय नमः
ॐ खण्डपरशवे नमः
ॐ अजपाश विमोचकाय नमः
ॐ मृडाय नमः
ॐ पशुपतये नमः
ॐ देवाय नमः
ॐ महादेवाय नमः
ॐ अव्ययाय नमः
ॐ प्रभवे नमः
ॐ पूषदन्तभिदे नमः
ॐ अव्यग्राय नमः
ॐ दक्षाध्वर हराय नमः
ॐ हराय नमः
ॐ भगनेत्रभिदे नमः
ॐ अव्यक्ताय नमः
ॐ सहस्राक्षाय नमः

ॐ सहस्रपदे नमः

ॐ अपवर्गप्रदाय नमः

ॐ अनन्ताय नमः

ॐ तारकाय नमः

ॐ परमेश्वराय नमः

॥ दूर्वाङ्कुरम् ॥

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती
परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण
शतेन च॥ -13.20

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दूर्वांकुरम् समर्पयामि।

यदि पूजन में शमी पत्र, भाँग, धतूरा-मदार, इत्र आदि चढ़ाना हो तो दूर्वांकुरम् के पश्चात् **त्र्यम्बकम् यजामहे .... मन्त्र** बोलकर समर्पित कर दें।

॥ सौभाग्य द्रव्याणि ॥

(कुमकुम, अबीर, गुलाल)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया
हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान्
पुमा ँ सं परि पातु विश्वतः॥ -29.51
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि।

॥धूपम्॥

ॐ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्
बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ
शूद्रोअजायत॥ -31.11
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
धूपं आघ्रापयामि।

॥दीपम्॥

ॐ चन्द्रमा मनसो जातः
चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च
मुखादग्निरजायत॥ -31.12

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि।

॥नैवेद्यम्॥

ॐ नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्ष ँ
शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा
लोकाँ2 अकल्पयन्॥ -31.13

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

॥ऋतुफलम्॥

ॐ याः फलिनीर्याऽ अफलाऽ
अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो
मुञ्चन्त्व ँ हसः॥ -12.89

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, ऋतुफलं समर्पयामि।

॥ताम्बूलपूगीफलानि॥

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा

यज्ञमतन्वत।
वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽ
इध्मः शरद्धविः॥ -31.14
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
ताम्बूलपूगीफलानि समर्पयामि।

॥दक्षिणा॥

ॐ सप्तास्यासन् परिधयः त्रिः
सप्त समिधः कृताः।
प्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽ अबध्नन्
पुरुषं पशुम्॥ -31.15
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
दक्षिणां समर्पयामि।

।।अशिव त्याग सङ्कल्प।।

अशुभ तत्त्वों का भी शुभ योग सम्भव है। कुछ ओषधियों में मादकता और विषैलापन भी होता है, उसे व्यसन न बनने दें। ओषधियों के प्रयोग तक

उनकी छूट है। व्यसन बन गये हों, तो उन्हें छोड़ें, शिवजी को चढ़ाएँ। सङ्कल्प करें कि इनका अशिव उपयोग नहीं करेंगे। मन्त्र के साथ अशिव पदार्थ छुड़वाए जाएँ, बाद में इन्हें जमीन में गाड़ दिया जाए-

ॐ अमङ्गलानां शमनं,
शमनं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वप्नानाशनं धन्यं,
प्रपद्येऽहं शिवं शुभम्॥

तत्पश्चात् अशिव त्याग का सङ्कल्प करें।

...............नामाऽहं शिवरात्रिपर्वणि भगवतः शिवप्रीतये तत्सन्निधौ अशिव-चिन्तन-आचरण-व्यवहार त्यागानां निष्ठापूर्वकं सङ्कल्पमहं करिष्ये। तत्प्रतीकरूपेण.....दोषं त्यक्तुं सङ्कल्पयिष्ये।

सङ्कल्प के अक्षत-पुष्प सभी लोग

पुष्पाञ्जलि के रूप में पंक्ति बनाकर भगवान् को चढ़ाएँ। बाद में यज्ञ अथवा दीपयज्ञ करके क्रम समाप्त किया जाए।

॥मन्त्र-पुष्पाञ्जलिः॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः
तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः॥ -31.16
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने
नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यम्।
कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

दोनों हाथ जोड़कर नमन करें।

ॐनमोऽस्त्वनन्तायसहस्रमूर्तये,
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।

सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्रकोटी युगधारिणे नमः॥

यदि कालसर्प योग दोष निवारण हेतु पूजन किया गया है, तो मंत्र पुष्पाञ्जलि के बाद अग्नि स्थापन कर यज्ञीय प्रक्रिया जोड़ें।गायत्री मंत्र की 11 एवं महामृत्युञ्जय मन्त्र की 27 आहुतियाँ प्रदान करें। पूर्णाहुति कर आरती सम्पन्न करें।

॥आरती॥

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति,
परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा,
तस्मै नमोविघ्नविनाशनाय॥
ॐ यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः,
स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः,
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः,
गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा,

पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः,
देवाय तस्मै नमः॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं,
संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे,
भवं भवानी सहितं नमामि॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव-देव॥

(सभी लोग व्यक्तिगत या सामूहिक आरती लें।)

॥ क्षमा-प्रार्थना ॥

ॐ आवाहनं न जानामि,
नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि,
क्षमस्व परमेश्वर!॥ 1॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं,
भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव!
परिपूर्णं तदस्तु मे॥ 2॥

अनेन कृतेन श्रीशिवाभिषेक कर्मणा,
श्रीभवानी शङ्करमहारुद्रः
प्रीयताम् न मम॥ 3॥

सबके कल्याण हेतु शुभकामना करें-

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥1॥

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां,
विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेज आयुष्यमारोग्यं,
देहि मे हव्यवाहन॥ -लौगा.स्मृ.

॥ शान्ति-अभिषिञ्चनम् ॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वꣳ शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

सर्वारिष्टसुशान्तिर्भवतु। -36.17

(अन्य उपस्थित जन पुष्प-बिल्वपत्रादि चढ़ायें, इस बीच पञ्चाक्षर स्तोत्र, महाकालाष्टक आदि का पाठ, शिव कीर्तन किया जाय। प्रतिष्ठित मूर्ति का विसर्जन नहीं किया जाता)।

॥ ॐ श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु ॥

प्रतिष्ठित शिवलिंग न हो तो धातु, पत्थर या मिट्टी आदि की प्रतिमा बनाकर प्राण प्रतिष्ठा हेतु स्वस्तिवाचन के पश्चात् दायें हाथ में पुष्प लेकर शिवलिंग (गणेश,

पार्वती हों तो उनका भी) स्पर्श करें।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु।
विश्वेदेवास ऽ इह मादयन्तामो3म्प्रतिष्ठ - 2.13

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु,
अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै, मामहेति च कश्चन॥ -प्रति.म.पृ.352

पूजन की समाप्ति पर विसर्जन कर दें।

॥ विसर्जनम् ॥

ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे,
पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकाम समृद्ध्यर्थं,
पुनरागमनाय च॥

।। आरती शिव जी की ।।

आरती त्रिशूलधारी की,
कृपानिधि त्रितापहारी की।

जमा जब असुरों का डेरा,
लगाया विपदा ने फेरा॥
जगत् को पापों ने घेरा,
धरा ने व्याकुल हो टेरा।
शम्भु दो त्राण, मिटे अज्ञान।
शक्ति उभरी त्रिपुरारी की॥
आरती त्रिशूलधारी की ....

दोषमय हुआ मनुज चिन्तन,
दिव्य गुण छोड़ हुआ निर्धन।
दीन-हीनों जैसा जीवन,
निराशा ग्रसित मनुज का मन।
देवता विकल, साधना सफल।
हुई लीला अवतारी की॥
आरती त्रिशूलधारी की ....

बन गये शिव प्रज्ञा-अवतार,
दूर करने को युग का भार।
शिवगणों को करने तैयार,
साथ ले जगदम्बा का प्यार॥
गही युग डोर, दिया झकझोर।
बजी धुन डमरूधारी की॥
आरती त्रिशूलधारी की ....

कृपा कर महाकाल आए,
सभी शिवगण हैं हर्षाए।
भावनाशील दौड़ धाये,
लोकहित में आगे आए॥
चाहते भक्ति और शिव शक्ति।
वन्दना संकटहारी की॥
आरती त्रिशूलधारी की ....

।। शिव स्तुति ।।

ॐ जय शिव ओङ्कारा,
ओ3म् जय शिव ओङ्कारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव,
त्रिगुणात्मक धारा॥
ॐ जय....................

चतुरानन एकानन
पञ्चानन राजे।
हंसासन, गरुडासन,
वृषवाहन साजे॥
ॐ जय....................

दो भुज चार चतुर्भुज,
दशभुज अति सोहे।
त्रिगुण स्वरूप निरखते,
त्रिभुवन जन मोहे॥
ॐ जय....................

अक्षमाला वनमाला,

मुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद् चन्दे,
भोले शुभकारी॥
ॐ जय...................

श्वेताम्बर पीताम्बर,
बाघाम्बर अङ्गे।
सनकादिक देवादिक,
भूतादिक सङ्गे॥
ॐ जय...................

करके मध्य कमण्डलु,
चक्र त्रिशूल धर्त्ता।
जग सर्जक जग पालक,
परिवर्तन कर्त्ता॥
ॐ जय...................

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव,
प्रेरक सुविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित,
ये तीनों एका॥

ॐ जय.....................

त्रिगुण स्वामी की आरती,
जो कोई नर गावे।
आयु-प्राण-यश-सम्पति,
शुभ सद्गति पावे॥
ॐ जय.....................

॥ शिवपञ्चाक्षर स्तोत्र ॥

शिव पञ्चाक्षर मंत्र है '**नमः शिवाय**'। इस स्तोत्र के पाँचों पद क्रमशः पञ्चाक्षर मंत्र के एक एक अक्षर से प्रारम्भ होने वाले भगवान् शिव के सम्बोधनों से युक्त हैं, पर प्रचलित पञ्चाक्षर स्तोत्र में कही कमियाँ भाषित होती थीं, जैसे सम्बद्ध अक्षर वाले शिव के सम्बोधन हर पद में कम ही थे, गण दोष के कारण गायन में लय भी बाधित होती थी। उन कमियों को दूर करते हुए यह स्तोत्र

'वेद विभाग,

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय,
गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज'
ने प्रस्तुत किया है। आशा है,
यह स्तोत्र शिव भक्तों को रुचेगा।

नागेन्द्रहाराय नगेश्वराय,
न्यग्रोधरूपाय नटेश्वराय।
नित्याय नाथाय निजेश्वराय,
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥ 1॥

मृत्युञ्जयायादि-महेश्वराय,
मखान्तकायागमवन्दिताय।
मत्स्येन्द्रनाथाय महीधराय,
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥ 2॥

शिवाय सौराष्ट्रशुभेश्वराय,
श्रीसोमनाथाय शिवाप्रियाय।
शान्ताय सत्यं शशिशेखराय,
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥ 3॥

वेदाय विश्वार्चनवेङ्कटाय,

विश्वाय विष्णोरपिवन्दिताय।
व्यालाय व्याघ्राय वृषध्वजाय,
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥ 4॥

यज्ञस्वरूपाय युगेश्वराय,
योगीन्द्रनाथाय यमान्तकाय।
यूनां यविष्ठाय यतीश्वराय,
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥ 5॥

॥ श्रीमहाकालाष्टकम् ॥

असम्भवं सम्भव-कर्तुमुद्यतं,
प्रचण्ड-झञ्झावृतिरोधसक्षमम्।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं,
परं महाकालममुं नमाम्यहम्॥ 1॥

यदा धरायामशान्तिः प्रवृद्धा,
तदा च तस्यां शान्तिं प्रवर्धितुम्।
विनिर्मितं शान्तिकुञ्जाख्यतीर्थकं,
परं महाकालममुं नमाम्यहम्॥ 2॥
अनाद्यनन्तं परमं महीयसं,
विभोःस्वरूपं परिचाययन्मुहुः।

युगानुरूपं च पथं व्यदर्शयत्,
परं महाकालममुं नमाम्यहम् ॥ 3 ॥

उपेक्षिता यज्ञमहादिकाः क्रियाः,
विलुप्तप्रायं खलु सान्ध्यमाह्निकम्।
समुद्धृतं येन जगद्धिताय वै,
परं महाकालममुं नमाम्यहम् ॥ 4 ॥

तिरस्कृतं विस्मृतमप्युपेक्षितं,
आरोग्यवाहं यजनं प्रचारितुम्।
कलौ कृतं यो रचितुं समुद्यतः,
परं महाकालममुं नमाम्यहम् ॥ 5 ॥
तपः कृतं येन जगद्धिताय वै,
विभीषिकायाश्च जगन्नु रक्षितुम्।
समुज्ज्वला यस्य भविष्य-घोषणा,
परं महाकालममुं नमाम्यहम् ॥ 6 ॥

उदार-नम्रं हृदयं नु यस्य यत्,
तथैव तीक्ष्णं गहनं च चिन्तनम्।
ऋषेश्चरित्रं परमं पवित्रकं, परं
महाकालममुं नमाम्यहम् ॥ 7 ॥

जनेषु देवत्ववृतिं प्रवर्द्धितुं,
नभोधरायाश्च विधातुमक्षयम्।
युगस्य निर्माण कृता च योजना,
परं महाकालममुं नमाम्यहम्॥ 8॥

यः पठेच्चिन्तयेच्चापि,
महाकाल-स्वरूपकम्।
लभेत परमां प्रीतिं,
महाकालकृपादृशा॥ 9॥

॥ श्री महाकालाष्टक॥ (पद्यानुवाद)

असम्भव पराक्रम के हेतु तत्पर,
विध्वंस का जो करता दलन है।
नवयुग सृजन पुण्य सङ्कल्प जिनका,
ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ 1॥

भू पर भरी भ्रान्ति की आग के बीच,
जो शक्ति के तत्त्व करता चयन है।
विकसित किये शान्तिकुञ्जादि युगतीर्थ,
ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ 2॥

अनादि अनुपम अनश्वर अगोचर,
जिनका सभी भाँति अनुभव कठिन है।
युग शक्ति का बोध सबको कराया,
ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ 3॥

विस्मृत-उपेक्षित पड़ी साधना का,
जिनने किया जागरण-उन्नयन है।
घर-घर प्रतिष्ठित हुई वेदमाता,
ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ 4॥

यज्ञीय विज्ञान, यज्ञीय जीवन,
जो सृष्टि-पोषक दिव्याचरण है।
उसको उबारा प्रतिष्ठित बनाया,
ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ 5॥

मनुष्यता के दुःख दूर करने,
तपकर कमाया परम पुण्य धन है।
उज्ज्वल भविष्यत् की घोषणा की,
ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ 6॥

अनीति भञ्जक शुभ कोप जिनका,

शुभ ज्ञानयुत श्रेष्ठ चिन्तन गहन है।
ऋषि कल्प जीवन जिनका परिष्कृत,
ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ 7॥

देवत्व मानव-मन में जगाकर,
सङ्कल्प भू पर अमरपुर सृजन है।
युग की सृजन योजना के प्रणेता,
ऐसे महाकाल को नित नमन है॥ 8॥

महाकालकीप्रेरणा,
श्रद्धायुतचितलाय।
नरपावे सद्गति परं,
त्रिविधताप मिट जायँ॥ 9॥

॥ श्रीरुद्राष्टकम् ॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम्॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥ 1॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं।

गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम् ॥
करालं महाकाल कालं कृपालं।
गुणागार संसार सारं नतोऽहम् ॥ 2 ॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गम्भीरं।
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरम् ॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगङ्गा।
लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥ 3 ॥

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं।
प्रसन्नानं नीलकण्ठं दयालम् ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं।
प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ॥ 4 ॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं।
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ॥
त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं।
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥ 5 ॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी।
सदासज्जनानन्ददाता पुरारी ॥

चिदानन्दसन्दोह मोहापहारी।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥ 6॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं।
भजंतीह लोके परे वा नराणाम्॥
न तावत् सुखं शान्ति सन्तापनाशं।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्॥ 7॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां।
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्॥
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं।
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥ 8॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं,
विप्रेणहरतुष्टये।
ये पठन्तिनराभक्त्या,
तेषां शम्भुःप्रसीदति॥ 9॥